पाकिस्तानी

पंज सूरह

क़ुरआनी आयात, अहादीस और इस्लामी वज़ाइफ़ पर आधारित

अव्राद व वज़ाइफ़ का मज्मूआ

क़ुरआनी सूरतों और अहादीसे नबवी (सल्ल०) पर मुश्तमिल

पाकिस्तानी पंज सूरह

फ़ेह्‌रिस्त मज्‌मूए वज़ाइफ़
क़ुरआनी सूरतों के नाम के साथ

मज्मून	पेज	मज्मून	पेज
दुरूद शरीफ़	4	सूरए फ़ज्र प० 30	88
अल्हम्दु शरीफ़	5	सूरए शम्स से आख़िर तक,प०30	89
मुख़्तलिफ़ आयाते क़ुरआनी	6	अस्नाद अस्माए हुस्ना	101
दुआए नूर	15	अस्माउल् हुस्ना	102
दुआए नूर,हदीस शरीफ़	17	अस्नाद अस्माए नबी सल्ल०	105
वज़ाइफ़े नमाज़	18	नबी सल्ल० के अस्माए मुक़द्दसा	106
परेशानी दूर करने की दुआ	19	अस्माए याज़्दा ग़ौसुल् अअ्ज़म	109
रात के अमलियात	20	अस्माए गरामी ग़ौसुल् अअ्ज़म	112
लौहे क़ुरआनी	21	क़सीदए ग़ौसिया	114
कुव्वते हाफ़िज़ा की दुआ	22	अबरादे अब्दिल् क़ादिर जीलानी	117
क़ुरआन पढ़ने की फ़ज़ीलत	23	ख़त्म शरीफ़ कबीरे ग़ौसिया	118
सूरए कहफ़ प० 15-16	25	ख़त्म शरीफ़ ग़ौसिया	122
सूरए मर्यम प० 16	37	अह्‌द नामा	126
सूरए सज्दह प० 21	44	अस्नाद दुआए गंजुल्-अर्श	127
सूरए यासीन प० 22-23	47	दुआए गंजुल्-अर्श	130
सूरए दुख़ान प० 25	52	अस्नाद क़द्हे मुअज़्ज़म	138
सूरए मुहम्मद प० 26	55	पाँचों नमाज़ों के बाद की तस्बीहात	140
सूरए फ़त्ह प० 26	59	दुआए क़द्हे मुअज़्ज़म	141
सूरए क़ाफ़ प० 26	63	दुआए हबीब	150
सूरए रहमान प० 27	66	आयातुल् ख़ौफ़ व आयातुल् हरस	152
सूरए वाक़िअह प० 27	69	चेहल काफ़	161
सूरए हश्र प० 28	72	दुआए जमीला	162
सूरए जुमा प० 28	76	दुआए सुर्यानी	165
सूरए तग़ाबुन प० 28	77	फ़ातिहा का तरीक़ा	172
सूरए मुल्क प० 29	80	औराद के मसाइल	177
सूरए मुज़्ज़म्मिल प० 29	82	फ़ज़ाइल दुरूदे ताज	179
सूरए मुद्दस्सिर प० 29	84	दुरूदे ताज	180
सूरए नबा प० 30	86	दुरूदे तुनज्जीना	182

मज़्मून	पेज	मज़्मून	पेज
दुरूदे माही	183	मस्नून दुआएँ	316
अस्नाद दुरूदे मुक़द्दस	185	क़ुरआनी दुआएँ	334
दुरूदे मुक़द्दस	187	ख़ज़ाना आयाते नूर	345
दुरूदे लाखी	192	फ़ज़ाइले दुरूद शरीफ़	357
अस्नाद दुरूदे अकबर	197	दुरूदे नारिया	360
दुरूदे अकबर हिस्सा अव्वल	199	ख़ुसूसी अवराद	362
दुरूदे अकबर हिस्सा दोम	208	कलिमाते ख़ैर	383
दुरूदे अकबर हिस्सा सोम	221	हुरूफ़ुन्नास	384
दुरूदे अकबर हिस्सा चहारुम	238	एक अहम दुरूद	387
अस्नाद हफ़्त हैकल	241	नअ्त शरीफ़	388
हफ़्त हैकल	244	दुआ का बयान	389
शश् क़ुफ़्ल	249	ज़िकरुल्लाह की फ़ज़ीलत	392
अस्नाद मुसब्बआते अशर	252	दुआ के आदाब	400
इलाजुल् आज़म	254	ज़िकरुल्लाह के आदाब	404
बुरी नज़र का इलाज	268	क़बूलियते दुआ के अवक़ात	407
आयाते शिफ़ा	272	एक अहम दुरूद शरीफ़	417
मुतफ़र्रिक़ दुआएँ	277	दुआए ख़ैर	418
दुआए अमन सय्यिदुल् इस्तिग़फ़ार	282	दुआए मुस्तजाब	420
शश् (6) कलिमे	284	दुआए क़ुनूत	423
वुज़ू का बयान	288	दुआए अल्-मन्ज़िल	424
अज़ान का बयान	289	दुआउ ख़तिमल्-क़ुरआन	425
नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा	291	हर महीने के नवाफ़िल,रोज़े,वज़ाइफ़	426
तरावीह की तस्बीह	300	रसूल सल्ल० के फ़रमान	472
नमाज़ क़ज़ाए हाजात	301	पाँचों नमाज़ों के बाद पढ़ने की सूरतें	473
फ़ज़ाइल दुरूद शरीफ़	302	दुआइया अश्‌आर	474
दुआए इस्तिख़ारा	303	रसूल सल्ल० की प्यारी प्यारी बातें	475
मुजर्रब दुआ	304	मुनाजात	476
अस्नाद दुआए अय्यामे बीज़े मुकर्रम	305	मुफ़ीद और कार आमद बातें	478
दुआए अय्यामे बीज़े मुकर्रम	307	माँ की अज़्मत	480
5 आयाते शरीफ़ा के बयान में	311	ख़त्मे ख़्वाजगान	483
		[illegible]	487
मुजर्रब दुआ	315	[illegible]	488

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ
سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ اَصْحٰبِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ

✻

नीचे लिखे हुए दुरूद शरीफ़ की बेशुमार फ़ज़ीलतें हैं। पढ़ने का यह तरीक़ा है:

जुमा की नमाज़ के बाद मदीना मुनव्वरा की तरफ़ मुँह करके 101 बार पढ़ें। कुछ जुमे भी न बीतने पाएँगे कि उसके असरात ज़ाहिर होने शुरू हो जाएँगे। यह बात तजुर्बे से साबित हुई है कि पढ़ने वाले को बेसरो-सामानी (साधन न होने) के बावजूद अल्लाह के फ़ज़्ल से बैतुल्लाह (काबा) का हज और अल्लाह के हबीब (सल्ल०) के रौज़-ए-मुबारक की ज़ियारत का शर्फ़ हासिल हुआ।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَاٰلِهٖ

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلٰوةً وَّسَلَامًا عَلَيْكَ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ

✻

सूरत फ़ातिहा मक्की है इस में सात आयते हैं और एक रुकूअ है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ जो बडा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○

सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो सारे जहान का पालने वाला है

الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ○

बडा मेहरबान निहायत रहम वाला है कियामत के दिन का मालिक है।

اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ○ اِهْدِنَا

(ऐ अल्लाह) हम तेरी ही इबादत करते है और तुझही से मदद मागते है। हमे सीधे

الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ○ صِرَاطَ الَّذِيْنَ

रास्ते पर चलने की तौफीक दे रास्ता उन लोगो का

اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ

जिन पर तूने इनाम किया न उन लोगो का रास्ता जो (तेरे)

عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ○ ع

ग़जब मे मुब्तला हुए और न गुमराहो का।

क़ुरआन की मुख़्तलिफ़ आयतें व सूरतें

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓ ﴿١﴾ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛۚ فِيْهِ ۛۚ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٢﴾
الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا
رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٣﴾ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ
اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿٤﴾ اُولٰٓئِكَ عَلٰى
هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۚ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٥﴾

(बक़रह, 1-5)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ۚ
لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۗ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ
عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۗ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا
يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ
الْعَظِيْمُ ﴿٢٥٥﴾

لَآ اِكْرَاهَ فِى الدِّيْنِ ۙ قَدْ تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ ۚ فَمَنْ
يَّكْفُرْ بِالطَّاغُوْتِ وَ يُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ
بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى لَا انْفِصَامَ لَهَا ۗ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٥٦﴾
اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۬ۗ
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْلِيٰٓئُهُمُ الطَّاغُوْتُ يُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ اِلَى
الظُّلُمٰتِ ۗ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٥٧﴾

(बक़रह, 255-257)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۗ وَاِنْ تُبْدُوْا مَا
فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ۗ فَيَغْفِرُ لِمَنْ
يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٨٤﴾
اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَ
الْمُؤْمِنُوْنَ ۗ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۣ
لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۣ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَ
اَطَعْنَا ۡ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ﴿٢٨٥﴾

لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا
اكْتَسَبَتْ ؕ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا
تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا
وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ٭ وَاغْفِرْ لَنَا ٭
وَارْحَمْنَا ٭ اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝۲۸۶

(बक़रह, 284-286)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِى الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ
وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ ؗ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ
تَشَآءُ ؕ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ؕ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۝۲۶
تُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَتُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ ۫ وَتُخْرِجُ
الْحَىَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَىِّ ۫ وَتَرْزُقُ مَنْ
تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝۲۷

(आले इमरान, 26-27)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا ۠ وَاذْكُرُوْا نِعْمَتَ
اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ
فَاَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهٖٓ اِخْوَانًا ۚ وَكُنْتُمْ عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ
النَّارِ فَاَنْقَذَكُمْ مِّنْهَا ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ
تَهْتَدُوْنَ ۝۱۰۳

(आले इमरान, 103)

तर्जुमा : ओर मज़बूत पकड़ो रस्सी अल्लाह की सब मिलकर और फूट न डालो और याद करो एहसान अल्लाह का अपने ऊपर जबकि थे तुम आपरा में दुश्मन फिर तुम्हारे दिलों को आपस में जोड़ दिया अब हो गए उसकी मेहरबानी से भाई-भाई। और तुम थे किनारे पर एक आग के गड्ढे के, फिर तुमको उस से निजात दी। इसी तरह खोलता है अल्लाह तुमपर आयतें, ताकि तुम रास्ता पा लो।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِىْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَ

يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَاللّٰهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣١﴾

तर्जुमा : कह दो, ''अगर तुम मुहब्बत रखते हो अल्लाह से तो मेरी राह पर चलो, ताकि मुहब्बत करे तुमसे अल्लाह, और बख़्शे तुम्हारे गुनाह। और अल्लाह बख़्शनेवाला, मेहरबान है।''

(आले-इम्रान- 31)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَ
النَّهَارِ لَاٰيٰتٍ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿١٩٠﴾ الَّذِينَ يَذْكُرُونَ اللّٰهَ
قِيٰمًا وَّقُعُودًا وَّعَلٰى جُنُوبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُونَ فِي خَلْقِ
السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا سُبْحٰنَكَ
فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿١٩١﴾ رَبَّنَا إِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ
أَخْزَيْتَهُ وَمَا لِلظّٰلِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ﴿١٩٢﴾ رَبَّنَا إِنَّنَا سَمِعْنَا
مُنَادِيًا يُّنَادِي لِلْإِيمَانِ أَنْ اٰمِنُوا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا رَبَّنَا
فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْأَبْرَارِ ﴿١٩٣﴾

رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ ﴿١٩٤﴾ فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِّي
لَآ أُضِيعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثٰى بَعْضُكُمْ
مِّنْ بَعْضٍ فَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَأُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَ
أُوذُوا فِي سَبِيلِي وَقٰتَلُوا وَقُتِلُوا لَأُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ
وَلَأُدْخِلَنَّهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ
اللّٰهِ وَاللّٰهُ عِنْدَهُ حُسْنُ الثَّوَابِ ﴿١٩٥﴾ لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِينَ
كَفَرُوا فِي الْبِلَادِ ﴿١٩٦﴾ مَتَاعٌ قَلِيلٌ ثُمَّ مَأْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ وَ
بِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٩٧﴾ لٰكِنِ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِي
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِينَ فِيهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ
وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّلْأَبْرَارِ ﴿١٩٨﴾ وَإِنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ
يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِمْ
خٰشِعِينَ لِلّٰهِ لَا يَشْتَرُونَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيلًا أُولٰئِكَ
لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ إِنَّ اللّٰهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿١٩٩﴾
يٰأَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا اصْبِرُوا وَصَابِرُوا وَرَابِطُوا وَاتَّقُوا اللّٰهَ

لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝

(आले इम्रान, 190 - 200)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ
حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ
حَسْبِيَ اللّٰهُ ۖ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ
الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ۝

(तौबह 128 - 129)

तर्जुमा : आया है तुम्हारे पास रसूल तुम्हीं में से, भारी है उसपर जो तुमको तक्लीफ़ पहुँचे। लालची है तुम्हारी भलाई पर। वह ईमान वालों पर निहायत शफ़ीक़ मेहरबान है। फिर भी अगर वे मुँह मोड़ें तो कह दो कि काफ़ी है मुझको अल्लाह, किसी की बन्दगी नहीं उसके सिवा, उसी पर मैंने भरोसा किया और वही मालिक है अर्शे अज़ीम का।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ

هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ۝ هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ
اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ
الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ۭ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ هُوَ اللّٰهُ
الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۭ يُسَبِّحُ
لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ
الْحَكِيْمُ ۝

(हश्र, 22 - 24)

तर्जुमा : वह अल्लाह है जिसके सिवा बन्दगी नहीं किसी की। वह बादशाह है पाक ज़ात सब ऐबों से सालिम अमान देने वाला पनाह में लेने वाला ज़बर्दसत दबदबे वाला अज़मत वाला पाक है अल्लाह उनके शरीक बतलाने से, वह अल्लाह है बनाने वाला निकाल खड़ा करने वाला सूरत खींचनेवाला उसी के हैं सब नाम अच्छे। पाकी बोल रहा है उसकी जो कुछ है आसमानो में और ज़मीन में। और वही है ज़बरदस्त हिक्मतों वाला।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ وَمَنْ يُّؤْمِنْ
بِاللّٰهِ يَهْدِ قَلْبَهٗ ۭ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝

(तग़ाबुन, 11)

तर्जुमा : नहीं पहुँचती कोई तक्लीफ़ अल्लाह के हुक्म के बिना, और जो कोई ईमान लाए अल्लाह पर, वह राह बतलाए उस के दिल को, और अल्लाह को सब कुछ मालूम है।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

وَمَنْ يَتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۝ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ۚ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ۚ اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ۚ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ۝ (तलाक़, 2-3)

तर्जुमा : और जो कोई अल्लाह से डरेगा वह उसके लिए परेशानी से निकलने (की राह) पैदा कर देगा। और उसको एसी जगह से रोज़ी देगा जहाँ से (वहम व) गुमान भी न हो। और जो अल्लाह पर भरोसा रखेगा तो वह उसके लिए काफी होगा। अल्लाह अपने काम को (जो वह करना चाहता है) पूरा कर देता है। अल्लाह ने हर चीज़ का एक अन्दाज़ा मुक़र्रर कर रखा है।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

وَلَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۙ وَقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَرَسُوْلُهٗۤ ۙ اِنَّاۤ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوْنَ ۝ (तौबह, 59)

तर्जुमा : अच्छा तरीक़ा यह है कि जो कुछ अल्लाह, रसूल के हाथ से दिलवाए, उसपर आदमी राज़ी हो और सब्र करे, और सिर्फ़ ख़ुदा पर भरोसा करे और समझे कि अगर अल्लाह चाहेगा तो अपने फ़ज़्ल से बहुत कुछ अ़ता फ़रमा देगा। मतलब यह है कि ख़त्म होने वाली दुनिया के साज़ो-सामान को अपना मक़सद न बनाए, सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की क़ुर्बत और ख़ुशी का तालिब हो और जो खुली और छुपी दौलत ख़ुदा और रसूल (सल्ल०) की सरकार से मिले उसी पर राज़ी और मुतमइन रहे।

अस्नाद दुआए नूर

एक दिन पैगम्बरे ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना मुनव्वरा की मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे कि हज़रत जिबरील (अलैहि०) आए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुदा तआला ने आपको सलाम कहा है और यह तोहफ़ा "दुआए नूर" का आपकी उम्मत के लिए भेजा है, कि यह दुआ पहले की उम्मतों के लिए न भेजी थी, मगर तुम्हारी उम्मत के लिए बख़्शिश का सबब करके भेजता हूँ। इस दुआ [illegible] वाला और पास रखने वाला सुख और चैन से दुनिया में रहेगा और ईमान की सलामती के साथ उसे मौत आएगी और क़ियामत के दिन उसका चेहरा चौधवीं तारीख़ के चांद जैसा रौशन और चमकता होगा, वह बीमार भी न होगा, हमेशा सेहत व सलामती से रहेगा, अगर जंग (जिहाद) पर जाएगा तो फ़तह और (अल्लाह की तरफ़ से) मदद मिलेगी, और तीर व तलवार और बन्दूक़ उस पर असर न करेगी, और कोई मुश्किल उस पर न पड़ेगी, अगर सफ़र पर जाएगा तो ठीक-ठाक वापस लौटेगा, और बादशाह के पास जाएगा तो सुर्ख़-रु होगा, और इस दुआ को पास रखने वाले पर अल्लाह तआला की नज़रे रहमत होगी।

दुआए नूर

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ يَا نُوْرُ تَنَوَّرْتَ بِالنُّوْرِ وَالنُّوْرُ فِيْ نُوْرِ نُوْرِكَ يَا نُوْرُ
اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلَيْنَا وَادْفَعْ عَنَّا بَلَآءَنَا يَا رَءُوْفُ لَبَّيْكَ وَاكْرِمْ
لَبَّيْكَ وَاَنْ يَّبْعَثَ مَنْ فِي الْقُبُوْرِ اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنَا خَيْرَ الدِّيْنِ
مَعَ الْقُرْبِ وَالْاِخْلَاصِ وَالْاِسْتِقَامَةِ بِلُطْفِكَ وَصَلَّى
اللّٰهُ عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ
وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ
سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَبُّنَا وَرَبُّ الْمَلٰٓئِكَةِ وَالرُّوْحِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ
وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيْرٌ يَآ اَللّٰهُ يَا رَحْمٰنُ يَا رَحِيْمُ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ يَا ذَا
الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ يَا نُوْرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَا لَآ اِلٰهَ اِلَّا

اَنْتَ عَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَاَنْتَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ اَللّٰهُمَّ
اغْفِرْ لِيْ بِحُرْمَةِ هٰذِهِ الْاَسْمَآءِ وَاصْرِفْ عَنِّي الضَّرَّآءَ
وَالْبَلَآءَ وَالْهُمُوْمَ وَالْغُمُوْمَ وَجَمِيْعَ الْاٰفَاتِ وَمِنْ اَوْلَادِيْ
وَاٰبَآئِيْ وَاُمَّهَاتِيْ وَاَقْرِبَآئِيْ وَعَشِيْرَتِيْ فَاِنَّ عَلَيْكَ فِيْ
جَمِيْعِ الْاُمُوْرِ اِعْتِمَادِيْ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ
مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ اَجْمَعِيْنَ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ

हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की
सही हदीस शरीफ़:

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ اَحَدًا صَمَدًا لَمْ يَلِدْ
وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ

इन मुबारक और बा बरकत कलिमात को दस बार सच्चे दिल से पढ़ने वाले को खुशखबरी हो कि बीस लाख नेकियां उसके आमाल नामे में लिखी जाती हैं। अल्लाह जल्ल शानुहू का किस कदर अज़ीम इनाम और एहसान है कि ईमानवालों पर रहमतों की बारिश बरसाता है।

हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद पढ़ने की दुआ

رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ

एक बार

तर्जुमा : ऐ मेरे परवरदिगार! (हमारी ग़लतियों) को माफ कर और (हमारे हाल पर) रहम फ़रमा और तू (सब) रहम करने वालों से बेहतर (रहम करने वाला) है ।

हर सुन्नत नमाज़ के बाद पढ़ने की दुआ

اَللّٰهُمَّ اَعِنَّا عَلٰى ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ

तर्जुमा : ऐ अल्लाह ! हम (पर ज़रूरी है कि) तेरा जिक्र करें और तेरा शुक्र अदा करें और तेरी अच्छी इबादत करें।

हर एक नमाज़ पूरी करने के बाद की दुआ

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لِىْ فِى الْمَوْتِ وَفِىْ مَا بَعْدَ الْمَوْتِ

5 बार

तर्जुमा : ऐ अल्लाह ! मेरी मौत के वक़्त और मेरी मौत के बाद बरकत दे।

اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ

5 बार

तर्जुमा : बेशक अल्लाह की रहमत नज़्दीक है नेक काम करने वालों से।

اَللّٰهُمَّ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ

15 बार

तर्जुमा : ऐ अल्लाह ! निजात दे मुझे दोजख से ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يَا مُفَتِّحَ الْاَبْوَابِ وَ يَا مُسَبِّبَ الْاَسْبَابِ

ऐ खोलनेवाले दरवाज़ों के और ऐ सबब पैदा करनेवाले असबाब के

وَيَا مُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ وَ الْاَبْصَارِ

और ऐ फेरने वाले दिलों के और निगाहों के

وَ يَا غِيَاثَ الْمُسْتَغِيْثِيْنَ

और ऐ फरियाद सुनने वाले फरियाद करने वालों के

وَيَا دَلِيْلَ الْمُتَحَيِّرِيْنَ وَيَا مُفَرِّحَ الْمَحْزُوْنِيْنَ

और ऐ रास्ता बतानेवाले भटके हुओं के ओर ऐ खुशी देनेवाले गमगीनो के

اَغِثْنِىْ اَغِثْنِىْ اَغِثْنِىْ

मेरी फ़रियाद सुन ले ! मेरी फ़रियाद सुन ले ! मेरी फरियाद सुन ले !

تَوَكَّلْتُ عَلَيْكَ يَا رَبِّىْ وَفَوَّضْتُ اِلَيْكَ اَمْرِىْ

भरोसा किया मैंने तुझपर ऐ मेरे परवरदिगार! और सौंप दिया मैंने तुझको अपना काम

يَا رَبُّ يَا رَبُّ يَا رَبُّ

ऐ परवरदिगार! ऐ परवरदिगार! ऐ परवरदिगार!

يَا اَللّٰهُ

ऐ अल्लाह !

يَا بَاسِطُ يَا رَزَّاقُ يَا فَتَّاحُ يَا كَرِيْمُ

ऐ खुशहाली बख्शनेवाले! ऐ रोज़ी देनेवाले! ऐ रहमत के दरवाजे खोलनेवाले! ऐ करम!

तमाम परेशानियों के लिए कीमया है।

कोई मुनासिब वक़्त मुकर्रर करके हर दिन 21 बार पढ़ें ।

रात को सोते वक़्त के अ़मलियात

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक बार हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वज्हहू से इरशाद फ़रमाया कि ऐ अ़ली (रज़ि०) ! रात को हर दिन पाँच काम करके सोया करो ।

1- चार हज़ार दीनार सद्क़ा करके सोया करो !

2- एक क़ुरआन शरीफ़ पढ़कर सोया करो !

3- जन्नत की क़ीमत देकर सोया करो !

4- दो लड़ने वालों में मेल कराकर सोया करो !

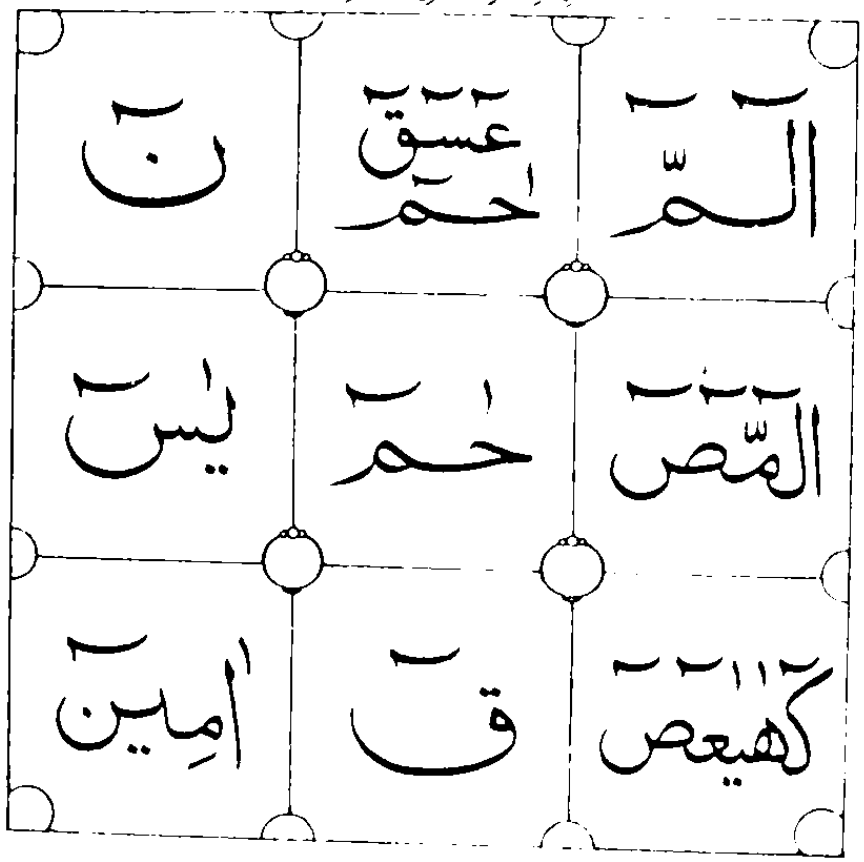
5- एक हज करके सोया करो !

हज़रत अ़ली (रज़ि०) ने अ़र्ज़ किया, या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! यह तो मुश्किल है, मुझसे कैसे हो सकेगा? फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि चार बार सूरए फ़ातिहा पढ़कर सोया करो, इसका सवाब चार हज़ार दीनार के बराबर है। तीन बार कुलहुवल्लाह (सूरए इख़्लास) पढ़ कर सोया करो इसका सवाब एक क़ुरआन शरीफ पढ़ने के बराबर है। दस बार इस्तिग़फ़ार पढ़ कर सोया करो, इसका सवाब दो लड़ने वालों में मिलाप कराने के बराबर होगा। दस बार दुरूद शरीफ़ पढ़कर सोया करो, जन्नत की क़ीमत अदा होगी। चार बार तीसरा कलिमा पढ़कर सोया करो, एक हज का सवाब मिलेगा।

इसपर हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वज्हहू ने [illegible] या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! [illegible] अमलियात करके सोया करूंगा।

लौहे क़ुरआनी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○



इसके देखने वालों की सब मुशकिलें आसान हो जाएंगी, सुबह इसको देख कर जो भी काम शुरू किया जाएगा, पूरा होगा और ग़ैबी तरीक़ों से रिज़्क़ की दौलत आने लगेगी।

(इन्शाअल्लाह)

إن شاء الله

क़ुव्वते हाफ़िज़ा बढ़ाने की दुआएँ

क़ुरआन मजीद या किताब पढ़ने से पहले यह दुआ पढ़ लिया करें :

بِسْمِ اللّٰهِ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ
وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ عَدَدَ كُلِّ حَرْفٍ
كُتِبَ وَيُكْتَبُ اَبَدَ الْاٰبِدِيْنَ وَدَهْرَ الدَّاهِرِيْنَ وَصَلَّى
اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلَّمَ

कुछ बुज़ुर्गों ने कहा है कि अगर कोई शख़्स यह ख़्वाहिश रखता हो कि वह अपना पढ़ा हुआ एक हर्फ़ भी न भूले तो वह अपना सबक़ पढ़ने या किताब का मुतालआ शुरू करते वक़्त एक बार यह दुआ पढ़ ले :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا
رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

क़ुरआने करीम पढ़ने की फ़ज़ीलत

हर दिन क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत किया करो इसलिए कि:

(1) हदीस शरीफ़ में आया है :

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया क़ुरआन शरीफ़ पढ़ा करो, इसलिए कि यह क़ुरआन क़ियामत के दिन क़ुरआन पढ़ने वालों की शिफ़ाअ़त करने के लिए आएगा ।

(2) हदीसे क़ुदसी में आया है कि :

अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं जिस शख़्स को क़ुरआन शरीफ़ (की तिलावत करने, याद करने या ग़ौर व फ़िक्र करने और तफ़्सीर व तर्जुमा वग़ैरा करने) की मश्ग़ूलियत ने मेरे ज़िक्र और मुझसे दुआएँ माँगने से रोक दिया (यानी ज़िक्र करने और दुआ माँगने की फ़ुर्सत न मिली) तो मैं उस शख़्स को उससे ज़्यादा देता हूँ जो मैं दुआएँ (और हाजतें) माँगने वालों को देता हूँ (यानी उसकी तमाम हाजतें और मुरादें पूरी कर देता हूँ) और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

अल्लाह के कलाम (क़ुरआन मजीद) को तमाम कलामों पर ऐसी ही फ़ज़ीलत है जैसी ख़ुद अल्लाह तआ़ला को अपनी तमाम मख़्लूक़ पर ।

(3) एक और हदीस में आया है कि :

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया तुम क़ुरआन को सीखो (और उसका इल्म हासिल करो) और उसको पढ़ो-पढ़ाओ, इसलिए कि क़ुरआन की मिसाल उस शख़्स के बारे

में जिसने क़ुरआन सीखा (और उसका इल्म हासिल किया) फिर उसको पढ़ा-पढ़ाया भी और उसके रास्ते पर चला भी (ख़ास कर तहज्जुद की नमाज़ में पढ़ा) ऐसी है जैसे मुश्क से भरी हुई एक (मुँह खुली) थैली, जिसकी महक हर जगह पहुँचती हो। और उस शख़्स के बारे में जो क़ुरआन को सीखता तो है (और उसका इल्म भी हासिल करता है) मगर (रात को बेख़बर पड़ा) सोता रहता है (न तहज्जुद में क़ुरआन पढ़ता है और न उसपर अमल करता है) हालाँकि उसके (दिल में) क़ुरआन मौजूद (व महफ़ूज़) है, ऐसी है जैसे एक मुश्क से भरी हुई थैली जिसका मुँह मज़बूती से बांध दिया गया हो।



سُوْرَةُ الْكَهْفِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ مِائَةٌ وَّعَشْرُ اٰيٰتٍ وَّاثْنَا عَشَرَ رُكُوْعًا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْۤ اَنْزَلَ عَلٰى عَبْدِهِ الْكِتٰبَ وَ لَمْ
يَجْعَلْ لَّهٗ عِوَجًا ۝ قَيِّمًا لِّيُنْذِرَ بَاْسًا شَدِيْدًا مِّنْ لَّدُنْهُ
وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ
اَجْرًا حَسَنًا ۝ مَّاكِثِيْنَ فِيْهِ اَبَدًا ۝ وَّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ قَالُوا اتَّخَذَ
اللّٰهُ وَلَدًا ۝ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ وَّلَا لِاٰبَآئِهِمْ ؕ كَبُرَتْ
كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ؕ اِنْ يَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا ۝ فَلَعَلَّكَ
بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلٰۤى اٰثَارِهِمْ اِنْ لَّمْ يُؤْمِنُوْا بِهٰذَا
الْحَدِيْثِ اَسَفًا ۝ اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا
لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ۝ وَاِنَّا لَجٰعِلُوْنَ مَا عَلَيْهَا
صَعِيْدًا جُرُزًا ۝ اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيْمِ
كَانُوْا مِنْ اٰيٰتِنَا عَجَبًا ۝ اِذْ اَوَى الْفِتْيَةُ اِلَى الْكَهْفِ
فَقَالُوْا رَبَّنَاۤ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّهَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا
رَشَدًا ۝ فَضَرَبْنَا عَلٰۤى اٰذَانِهِمْ فِى الْكَهْفِ سِنِيْنَ عَدَدًا ۝

ع ثُمَّ بَعَثْنٰهُمْ لِنَعْلَمَ اَیُّ الْحِزْبَیْنِ اَحْصٰی لِمَا لَبِثُوْٓا اَمَدًا ﴿۱۲﴾
نَحْنُ نَقُصُّ عَلَیْكَ نَبَاَهُمْ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّهُمْ فِتْیَةٌ اٰمَنُوْا
بِرَبِّهِمْ وَزِدْنٰهُمْ هُدًی ﴿۱۳﴾ وَّرَبَطْنَا عَلٰی قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا
فَقَالُوْا رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَاۡ مِنْ دُوْنِهٖۤ
اِلٰهًا لَّقَدْ قُلْنَآ اِذًا شَطَطًا ﴿۱۴﴾ هٰۤؤُلَآءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا
مِنْ دُوْنِهٖۤ اٰلِهَةً ؕ لَوْ لَا یَاْتُوْنَ عَلَیْهِمْ بِسُلْطٰنٍۭ بَیِّنٍ ؕ
فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰی عَلَی اللّٰهِ كَذِبًا ﴿۱۵﴾ وَاِذِ اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ
وَمَا یَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ فَاْوٗۤا اِلَی الْكَهْفِ یَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ
مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَیُهَیِّئْ لَكُمْ مِّنْ اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا ﴿۱۶﴾ وَتَرَی
الشَّمْسَ اِذَا طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْیَمِیْنِ وَاِذَا
غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِیْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ؕ ذٰلِكَ
مِنْ اٰیٰتِ اللّٰهِ ؕ مَنْ یَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ یُّضْلِلْ
ع فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِیًّا مُّرْشِدًا ﴿۱۷﴾ وَتَحْسَبُهُمْ اَیْقَاظًا وَّهُمْ رُقُوْدٌ ۖۗ
وَّنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْیَمِیْنِ وَذَاتَ الشِّمَالِ ۖۗ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ
ذِرَاعَیْهِ بِالْوَصِیْدِ ؕ لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَیْهِمْ لَوَلَّیْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا

وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ﴿۱۸﴾ وَكَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ لِیَتَسَآءَلُوْا
بَیْنَهُمْ ؕ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ ؕ قَالُوْا لَبِثْنَا یَوْمًا اَوْ
بَعْضَ یَوْمٍ ؕ قَالُوْا رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ؕ فَابْعَثُوْٓا اَحَدَكُمْ
بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖۤ اِلَی الْمَدِیْنَةِ فَلْیَنْظُرْ اَیُّهَآ اَزْكٰی طَعَامًا
فَلْیَاْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِّنْهُ وَلْیَتَلَطَّفْ وَلَا یُشْعِرَنَّ بِكُمْ
اَحَدًا ﴿۱۹﴾ اِنَّهُمْ اِنْ یَّظْهَرُوْا عَلَیْكُمْ یَرْجُمُوْكُمْ اَوْ یُعِیْدُوْكُمْ
فِیْ مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوْٓا اِذًا اَبَدًا ﴿۲۰﴾ وَكَذٰلِكَ اَعْثَرْنَا عَلَیْهِمْ
لِیَعْلَمُوْٓا اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاَنَّ السَّاعَةَ لَا رَیْبَ فِیْهَا ۚۤ
اِذْ یَتَنَازَعُوْنَ بَیْنَهُمْ اَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوْا عَلَیْهِمْ بُنْیَانًا ؕ
رَبُّهُمْ اَعْلَمُ بِهِمْ ؕ قَالَ الَّذِیْنَ غَلَبُوْا عَلٰۤی اَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ
عَلَیْهِمْ مَّسْجِدًا ﴿۲۱﴾ سَیَقُوْلُوْنَ ثَلٰثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ ۚ وَیَقُوْلُوْنَ
خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًۢا بِالْغَیْبِ ۚ وَیَقُوْلُوْنَ سَبْعَةٌ وَّ
ثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ ؕ قُلْ رَّبِّیْۤ اَعْلَمُ بِعِدَّتِهِمْ مَّا یَعْلَمُهُمْ اِلَّا قَلِیْلٌ ۬ۥ
فَلَا تُمَارِ فِیْهِمْ اِلَّا مِرَآءً ظَاهِرًا ۪ وَّلَا تَسْتَفْتِ فِیْهِمْ مِّنْهُمْ
اَحَدًا ﴿۲۲﴾ وَلَا تَقُوْلَنَّ لِشَایْءٍ اِنِّیْ فَاعِلٌ ذٰلِكَ غَدًا ﴿۲۳﴾ اِلَّاۤ

اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۙ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ اِذَا نَسِيْتَ وَقُلْ عَسٰٓى اَنْ
يَّهْدِيَنِ رَبِّيْ لِاَقْرَبَ مِنْ هٰذَا رَشَدًا ۝٢٤ وَلَبِثُوْا فِيْ
كَهْفِهِمْ ثَلٰثَ مِائَةٍ سِنِيْنَ وَازْدَادُوْا تِسْعًا ۝٢٥ قُلِ
اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوْا ۚ لَهٗ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ
اَبْصِرْ بِهٖ وَاَسْمِعْ ۭ مَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ ۡ وَّلَا يُشْرِكُ
فِيْ حُكْمِهٖٓ اَحَدًا ۝٢٦ وَاتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ۚ
لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ۝٢٧ وَاصْبِرْ
نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ
وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِيْدُ زِيْنَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ
وَلَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ وَكَانَ
اَمْرُهٗ فُرُطًا ۝٢٨ وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۣ فَمَنْ شَاۗءَ فَلْيُؤْمِنْ وَّ
مَنْ شَاۗءَ فَلْيَكْفُرْ ۙ اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ نَارًا ۙ اَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ۭ
وَاِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا بِمَاۗءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوْهَ ۭ بِئْسَ
الشَّرَابُ ۭ وَسَاۗءَتْ مُرْتَفَقًا ۝٢٩ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ مَنْ اَحْسَنَ عَمَلًا ۝٣٠ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ

جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا
مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّيَلْبَسُوْنَ ثِيَابًا خُضْرًا مِّنْ
سُنْدُسٍ وَّاِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَي الْاَرَاۗىِٕكِ ۭ نِعْمَ الثَّوَابُ ۭ
وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ۝٣١ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا
لِاَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ اَعْنَابٍ وَّحَفَفْنٰهُمَا بِنَخْلٍ وَّجَعَلْنَا
بَيْنَهُمَا زَرْعًا ۝٣٢ كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ اٰتَتْ اُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ شَيْـًٔا ۙ
وَّفَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا نَهَرًا ۝٣٣ وَّكَانَ لَهٗ ثَمَرٌ ۚ فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ وَهُوَ
يُحَاوِرُهٗٓ اَنَا اَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّاَعَزُّ نَفَرًا ۝٣٤ وَدَخَلَ جَنَّتَهٗ وَهُوَ ظَالِمٌ
لِّنَفْسِهٖ ۚ قَالَ مَآ اَظُنُّ اَنْ تَبِيْدَ هٰذِهٖٓ اَبَدًا ۝٣٥ وَّمَآ اَظُنُّ السَّاعَةَ
قَاۗىِٕمَةً ۙ وَّلَىِٕنْ رُّدِدْتُّ اِلٰى رَبِّيْ لَاَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ۝٣٦ قَالَ
لَهٗ صَاحِبُهٗ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗٓ اَكَفَرْتَ بِالَّذِيْ خَلَقَكَ مِنْ
تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوّٰىكَ رَجُلًا ۝٣٧ لٰكِنَّا۟ هُوَ اللّٰهُ رَبِّيْ
وَلَآ اُشْرِكُ بِرَبِّيْٓ اَحَدًا ۝٣٨ وَلَوْلَآ اِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَاۗءَ
اللّٰهُ ۙ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ۚ اِنْ تَرَنِ اَنَا اَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَّوَلَدًا ۝٣٩
فَعَسٰى رَبِّيْٓ اَنْ يُّؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا

مِّنَ السَّمَآءِ فَتُصْبِحَ صَعِيْدًا زَلَقًا ﴿٤٠﴾ اَوْ يُصْبِحَ مَآؤُهَا غَوْرًا فَلَنْ
تَسْتَطِيْعَ لَهٗ طَلَبًا ﴿٤١﴾ وَاُحِيْطَ بِثَمَرِهٖ فَاَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلٰى مَآ
اَنْفَقَ فِيْهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ
اُشْرِكْ بِرَبِّيْٓ اَحَدًا ﴿٤٢﴾ وَلَمْ تَكُنْ لَّهٗ فِئَةٌ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ﴿٤٣﴾ هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلّٰهِ الْحَقِّ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا
وَّخَيْرٌ عُقْبًا ﴿٤٤﴾ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ
مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ
الرِّيٰحُ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ﴿٤٥﴾ اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ
زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّ
خَيْرٌ اَمَلًا ﴿٤٦﴾ وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْاَرْضَ بَارِزَةً ۙ وَّحَشَرْنٰهُمْ
فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ اَحَدًا ﴿٤٧﴾ وَعُرِضُوْا عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا
كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَّنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا ﴿٤٨﴾
وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا فِيْهِ وَيَقُوْلُوْنَ
يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّآ
اَحْصٰىهَا ۚ وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا ۭ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا ﴿٤٩﴾ وَاِذْ

قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۭ كَانَ مِنَ الْجِنِّ
فَفَسَقَ عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ ۭ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗٓ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ
لَكُمْ عَدُوٌّ ۭ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ﴿٥٠﴾ مَآ اَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۠ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ الْمُضِلِّيْنَ
عَضُدًا ﴿٥١﴾ وَيَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ
فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَّوْبِقًا ﴿٥٢﴾ وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ النَّارَ
فَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا وَلَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا ﴿٥٣﴾ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا
فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۭ وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ
شَيْءٍ جَدَلًا ﴿٥٤﴾ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰى وَ
يَسْتَغْفِرُوْا رَبَّهُمْ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ
قُبُلًا ﴿٥٥﴾ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ
وَيُجَادِلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ
وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَمَآ اُنْذِرُوْا هُزُوًا ﴿٥٦﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ
رَبِّهٖ فَاَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ ۭ اِنَّا جَعَلْنَا عَلٰي
قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۭ وَاِنْ

تَدْعُهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ فَلَنْ يَهْتَدُوا إِذًا أَبَدًا ﴿٥٧﴾ وَرَبُّكَ
الْغَفُورُ ذُو الرَّحْمَةِ ۖ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا كَسَبُوا لَعَجَّلَ لَهُمُ
الْعَذَابَ ۚ بَلْ لَهُمْ مَوْعِدٌ لَنْ يَجِدُوا مِنْ دُونِهِ مَوْئِلًا ﴿٥٨﴾ وَ
تِلْكَ الْقُرَىٰ أَهْلَكْنَاهُمْ لَمَّا ظَلَمُوا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ مَوْعِدًا ﴿٥٩﴾
وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِفَتَاهُ لَا أَبْرَحُ حَتَّىٰ أَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ
أَوْ أَمْضِيَ حُقُبًا ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا نَسِيَا حُوتَهُمَا فَاتَّخَذَ
سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ﴿٦١﴾ فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتَاهُ آتِنَا غَدَاءَنَا
لَقَدْ لَقِينَا مِنْ سَفَرِنَا هَٰذَا نَصَبًا ﴿٦٢﴾ قَالَ أَرَأَيْتَ إِذْ أَوَيْنَا إِلَى
الصَّخْرَةِ فَإِنِّي نَسِيتُ الْحُوتَ وَمَا أَنْسَانِيهُ إِلَّا الشَّيْطَانُ أَنْ
أَذْكُرَهُ ۚ وَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ عَجَبًا ﴿٦٣﴾ قَالَ ذَٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ ۚ
فَارْتَدَّا عَلَىٰ آثَارِهِمَا قَصَصًا ﴿٦٤﴾ فَوَجَدَا عَبْدًا مِنْ عِبَادِنَا آتَيْنَاهُ
رَحْمَةً مِنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنَاهُ مِنْ لَدُنَّا عِلْمًا ﴿٦٥﴾ قَالَ لَهُ مُوسَىٰ هَلْ
أَتَّبِعُكَ عَلَىٰ أَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ﴿٦٦﴾ قَالَ إِنَّكَ لَنْ
تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٦٧﴾ وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلَىٰ مَا لَمْ تُحِطْ بِهِ خُبْرًا ﴿٦٨﴾
قَالَ سَتَجِدُنِي إِنْ شَاءَ اللَّهُ صَابِرًا وَلَا أَعْصِي لَكَ أَمْرًا ﴿٦٩﴾

قَالَ فَإِنِ اتَّبَعْتَنِي فَلَا تَسْأَلْنِي عَنْ شَيْءٍ حَتَّىٰ أُحْدِثَ لَكَ
مِنْهُ ذِكْرًا ﴿٧٠﴾ فَانْطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا رَكِبَا فِي السَّفِينَةِ خَرَقَهَا ۖ قَالَ
أَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ أَهْلَهَا لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا إِمْرًا ﴿٧١﴾ قَالَ أَلَمْ
أَقُلْ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٧٢﴾ قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِي بِمَا
نَسِيتُ وَلَا تُرْهِقْنِي مِنْ أَمْرِي عُسْرًا ﴿٧٣﴾ فَانْطَلَقَا ۖ حَتَّىٰ إِذَا
لَقِيَا غُلَامًا فَقَتَلَهُ قَالَ أَقَتَلْتَ نَفْسًا زَكِيَّةً بِغَيْرِ نَفْسٍ لَقَدْ
جِئْتَ شَيْئًا نُكْرًا ﴿٧٤﴾ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ
مَعِيَ صَبْرًا ﴿٧٥﴾ قَالَ إِنْ سَأَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍ بَعْدَهَا فَلَا
تُصَاحِبْنِي ۖ قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَدُنِّي عُذْرًا ﴿٧٦﴾ فَانْطَلَقَا حَتَّىٰ
إِذَا أَتَيَا أَهْلَ قَرْيَةٍ اسْتَطْعَمَا أَهْلَهَا فَأَبَوْا أَنْ
يُضَيِّفُوهُمَا فَوَجَدَا فِيهَا جِدَارًا يُرِيدُ أَنْ يَنْقَضَّ فَأَقَامَهُ ۖ
قَالَ لَوْ شِئْتَ لَاتَّخَذْتَ عَلَيْهِ أَجْرًا ﴿٧٧﴾ قَالَ هَٰذَا فِرَاقُ
بَيْنِي وَبَيْنِكَ ۚ سَأُنَبِّئُكَ بِتَأْوِيلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَلَيْهِ
صَبْرًا ﴿٧٨﴾ أَمَّا السَّفِينَةُ فَكَانَتْ لِمَسَاكِينَ يَعْمَلُونَ فِي
الْبَحْرِ فَأَرَدْتُ أَنْ أَعِيبَهَا وَكَانَ وَرَاءَهُمْ مَلِكٌ يَأْخُذُ كُلَّ

سَفِينَةٍ غَصْبًا ۝ وَأَمَّا الْغُلٰمُ فَكَانَ أَبَوٰهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِينَا
أَنْ يُّرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۝ فَأَرَدْنَا أَنْ يُّبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا
خَيْرًا مِّنْهُ زَكٰوةً وَّأَقْرَبَ رُحْمًا ۝ وَأَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ
لِغُلٰمَيْنِ يَتِيمَيْنِ فِي الْمَدِينَةِ وَكَانَ تَحْتَهُ كَنْزٌ لَّهُمَا وَ
كَانَ أَبُوهُمَا صَالِحًا ۚ فَأَرَادَ رَبُّكَ أَنْ يَّبْلُغَا أَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا
كَنْزَهُمَا ۖ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۚ وَمَا فَعَلْتُهُ عَنْ أَمْرِي ۚ ذٰلِكَ
تَأْوِيلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ۝ وَيَسْـَٔلُونَكَ عَنْ ذِي
الْقَرْنَيْنِ ۖ قُلْ سَأَتْلُوا عَلَيْكُمْ مِّنْهُ ذِكْرًا ۝ إِنَّا مَكَّنَّا لَهُ فِي
الْأَرْضِ وَآتَيْنٰهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ۝ فَأَتْبَعَ سَبَبًا ۝ حَتّٰى
إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِي عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَّ
وَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ۗ قُلْنَا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ إِمَّا أَنْ تُعَذِّبَ وَ
إِمَّا أَنْ تَتَّخِذَ فِيهِمْ حُسْنًا ۝ قَالَ أَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهُ
ثُمَّ يُرَدُّ إِلٰى رَبِّهِ فَيُعَذِّبُهُ عَذَابًا نُّكْرًا ۝ وَأَمَّا مَنْ آمَنَ وَعَمِلَ
صَالِحًا فَلَهُ جَزَاءً الْحُسْنٰى ۚ وَسَنَقُولُ لَهُ مِنْ أَمْرِنَا يُسْرًا ۝ ثُمَّ
أَتْبَعَ سَبَبًا ۝ حَتّٰى إِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ

عَلٰى قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَلْ لَّهُمْ مِّنْ دُونِهَا سِتْرًا ۝ كَذٰلِكَ ۖ وَقَدْ أَحَطْنَا
بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ۝ ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ۝ حَتّٰى إِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ
وَجَدَ مِنْ دُونِهِمَا قَوْمًا ۙ لَّا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ قَوْلًا ۝
قَالُوا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ إِنَّ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ مُفْسِدُونَ فِي
الْأَرْضِ فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلٰى أَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَ
بَيْنَهُمْ سَدًّا ۝ قَالَ مَا مَكَّنِّي فِيهِ رَبِّي خَيْرٌ فَأَعِينُونِي بِقُوَّةٍ
أَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ۝ آتُونِي زُبَرَ الْحَدِيدِ ۖ حَتّٰى إِذَا
سَاوٰى بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوا ۖ حَتّٰى إِذَا جَعَلَهُ نَارًا ۙ
قَالَ آتُونِي أُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ۝ فَمَا اسْطَاعُوا أَنْ يَّظْهَرُوهُ
وَمَا اسْتَطَاعُوا لَهُ نَقْبًا ۝ قَالَ هٰذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّي ۚ فَإِذَا جَاءَ
وَعْدُ رَبِّي جَعَلَهُ دَكَّاءَ ۚ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّي حَقًّا ۝ وَتَرَكْنَا
بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَّمُوجُ فِي بَعْضٍ وَّنُفِخَ فِي الصُّورِ فَجَمَعْنٰهُمْ
جَمْعًا ۝ وَّعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكٰفِرِينَ عَرْضًا ۝ الَّذِينَ
كَانَتْ أَعْيُنُهُمْ فِي غِطَاءٍ عَنْ ذِكْرِي وَكَانُوا لَا يَسْتَطِيعُونَ
سَمْعًا ۝ أَفَحَسِبَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ يَّتَّخِذُوا عِبَادِي مِنْ

دُوْنِيْٓ اَوْلِيَآءَ ۭ اِنَّآ اَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ نُزُلًا ﴿۱۰۲﴾ قُلْ
هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْاَخْسَرِيْنَ اَعْمَالًا ﴿۱۰۳﴾ اَلَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ﴿۱۰۴﴾
اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَلِقَاۗىِٕهٖ فَحَبِطَتْ
اَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيْمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا ﴿۱۰۵﴾ ذٰلِكَ جَزَاۗؤُهُمْ
جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوْا وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَرُسُلِيْ هُزُوًا ﴿۱۰۶﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿۱۰۷﴾
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا ﴿۱۰۸﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا
لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّيْ وَلَوْ
جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ﴿۱۰۹﴾ قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ
اَنَّمَآ اِلٰـهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَاۗءَ رَبِّهٖ
فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ﴿۱۱۰﴾

سُوْرَةُ مَرْيَمَ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ثَمَانٍ وَّتِسْعُوْنَ اٰيَةً وَّسِتُّ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

كٓهٰيٰعٓصٓ ﴿۱﴾ ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ﴿۲﴾ اِذْ نَادٰى
رَبَّهٗ نِدَاۗءً خَفِيًّا ﴿۳﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّيْ وَاشْتَعَلَ
الرَّاْسُ شَيْبًا وَّلَمْ اَكُنْۢ بِدُعَاۗىِٕكَ رَبِّ شَقِيًّا ﴿۴﴾ وَاِنِّيْ خِفْتُ
الْمَوَالِيَ مِنْ وَّرَاۗءِيْ وَكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا فَهَبْ لِيْ مِنْ
لَّدُنْكَ وَلِيًّا ﴿۵﴾ يَّرِثُنِيْ وَيَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ ڰ وَاجْعَلْهُ رَبِّ
رَضِيًّا ﴿۶﴾ يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ ۨ اسْمُهٗ يَحْيٰى ۙ لَمْ نَجْعَلْ
لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ﴿۷﴾ قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّ
كَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ﴿۸﴾
قَالَ كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ
قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْـــًٔا ﴿۹﴾ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ۭ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا
تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ﴿۱۰﴾ فَخَرَجَ عَلٰي قَوْمِهٖ مِنَ
الْمِحْرَابِ فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ﴿۱۱﴾ يٰيَحْيٰى

خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ۭ وَاٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ﴿١٢﴾ وَّحَنَانًا مِّنْ
لَّدُنَّا وَزَكٰوةً ۭ وَكَانَ تَقِيًّا ﴿١٣﴾ وَّبَرًّۢا بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ جَبَّارًا
عَصِيًّا ﴿١٤﴾ وَسَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوْتُ وَيَوْمَ يُبْعَثُ
حَيًّا ﴿١٥﴾ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ اِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ اَهْلِهَا
مَكَانًا شَرْقِيًّا ﴿١٦﴾ فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُوْنِهِمْ حِجَابًا ۣ فَاَرْسَلْنَآ اِلَيْهَا
رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ﴿١٧﴾ قَالَتْ اِنِّيْٓ اَعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ
مِنْكَ اِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ﴿١٨﴾ قَالَ اِنَّمَآ اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ ۤ لِاَهَبَ
لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا ﴿١٩﴾ قَالَتْ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ
بَشَرٌ وَّلَمْ اَكُ بَغِيًّا ﴿٢٠﴾ قَالَ كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ ۚ
وَلِنَجْعَلَهٗٓ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ اَمْرًا مَّقْضِيًّا ﴿٢١﴾
فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهٖ مَكَانًا قَصِيًّا ﴿٢٢﴾ فَاَجَآءَهَا الْمَخَاضُ
اِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ ۚ قَالَتْ يٰلَيْتَنِيْ مِتُّ قَبْلَ هٰذَا وَكُنْتُ
نَسْيًا مَّنْسِيًّا ﴿٢٣﴾ فَنَادٰىهَا مِنْ تَحْتِهَآ اَلَّا تَحْزَنِيْ قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ
تَحْتَكِ سَرِيًّا ﴿٢٤﴾ وَهُزِّيْٓ اِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ عَلَيْكِ
رُطَبًا جَنِيًّا ﴿٢٥﴾ فَكُلِيْ وَاشْرَبِيْ وَقَرِّيْ عَيْنًا ۚ فَاِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ

الْبَشَرِ اَحَدًا ۙ فَقُوْلِيْٓ اِنِّيْ نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا فَلَنْ اُكَلِّمَ
الْيَوْمَ اِنْسِيًّا ﴿٢٦﴾ فَاَتَتْ بِهٖ قَوْمَهَا تَحْمِلُهٗ ۭ قَالُوْا يٰمَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ
شَيْـًٔا فَرِيًّا ﴿٢٧﴾ يٰٓاُخْتَ هٰرُوْنَ مَا كَانَ اَبُوْكِ امْرَاَ سَوْءٍ وَّمَا كَانَتْ
اُمُّكِ بَغِيًّا ﴿٢٨﴾ فَاَشَارَتْ اِلَيْهِ ۭ قَالُوْا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي
الْمَهْدِ صَبِيًّا ﴿٢٩﴾ قَالَ اِنِّيْ عَبْدُ اللّٰهِ ۣ اٰتٰىنِيَ الْكِتٰبَ وَ
جَعَلَنِيْ نَبِيًّا ﴿٣٠﴾ وَّجَعَلَنِيْ مُبٰرَكًا اَيْنَ مَا كُنْتُ ۠ وَاَوْصٰنِيْ
بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ مَا دُمْتُ حَيًّا ﴿٣١﴾ وَّبَرًّۢا بِوَالِدَتِيْ ۡ وَلَمْ يَجْعَلْنِيْ
جَبَّارًا شَقِيًّا ﴿٣٢﴾ وَالسَّلٰمُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُّ وَيَوْمَ اَمُوْتُ وَ
يَوْمَ اُبْعَثُ حَيًّا ﴿٣٣﴾ ذٰلِكَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قَوْلَ الْحَقِّ
الَّذِيْ فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ﴿٣٤﴾ مَا كَانَ لِلّٰهِ اَنْ يَّتَّخِذَ مِنْ وَّلَدٍ ۙ
سُبْحٰنَهٗ ۭ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٣٥﴾ وَ
اِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۭ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٣٦﴾ فَاخْتَلَفَ
الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ مَّشْهَدِ يَوْمٍ
عَظِيْمٍ ﴿٣٧﴾ اَسْمِعْ بِهِمْ وَاَبْصِرْ ۙ يَوْمَ يَاْتُوْنَنَا لٰكِنِ الظّٰلِمُوْنَ الْيَوْمَ
فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٨﴾ وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ اِذْ قُضِيَ الْاَمْرُ ۘ وَ

هُمْ فِيْ غَفْلَةٍ وَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٩﴾ اِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْاَرْضَ وَمَنْ
عَلَيْهَا وَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ﴿٤٠﴾ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِبْرٰهِيْمَ ۬ اِنَّهٗ كَانَ
صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ﴿٤١﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ يٰۤاَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا
يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِيْ عَنْكَ شَيْـًٔا ﴿٤٢﴾ يٰۤاَبَتِ اِنِّيْ قَدْ جَآءَنِيْ مِنَ
الْعِلْمِ مَا لَمْ يَاْتِكَ فَاتَّبِعْنِيْۤ اَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ﴿٤٣﴾ يٰۤاَبَتِ لَا
تَعْبُدِ الشَّيْطٰنَ ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ عَصِيًّا ﴿٤٤﴾ يٰۤاَبَتِ اِنِّيْۤ
اَخَافُ اَنْ يَّمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ فَتَكُوْنَ لِلشَّيْطٰنِ وَلِيًّا ﴿٤٥﴾
قَالَ اَرَاغِبٌ اَنْتَ عَنْ اٰلِهَتِيْ يٰۤاِبْرٰهِيْمُ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ لَاَرْجُمَنَّكَ
وَاهْجُرْنِيْ مَلِيًّا ﴿٤٦﴾ قَالَ سَلٰمٌ عَلَيْكَ ۚ سَاَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ
بِيْ حَفِيًّا ﴿٤٧﴾ وَاَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَاَدْعُوْا
رَبِّيْ ۖ٘ عَسٰۤى اَلَّاۤ اَكُوْنَ بِدُعَآءِ رَبِّيْ شَقِيًّا ﴿٤٨﴾ فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ
وَمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۙ وَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ؕ
وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ﴿٤٩﴾ وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِّنْ رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ
لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا ﴿٥٠﴾ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مُوْسٰۤى ۬ اِنَّهٗ
كَانَ مُخْلَصًا وَّكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿٥١﴾ وَنَادَيْنٰهُ مِنْ جَانِبِ

الطُّوْرِ الْاَيْمَنِ وَقَرَّبْنٰهُ نَجِيًّا ﴿٥٢﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗ مِنْ رَّحْمَتِنَاۤ اَخَاهُ
هٰرُوْنَ نَبِيًّا ﴿٥٣﴾ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِسْمٰعِيْلَ ۬ اِنَّهٗ كَانَ
صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿٥٤﴾ۚ وَكَانَ يَاْمُرُ اَهْلَهٗ
بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ ۪ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ مَرْضِيًّا ﴿٥٥﴾ وَاذْكُرْ فِي
الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ ۬ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ﴿٥٦﴾ۙ وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا
عَلِيًّا ﴿٥٧﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ
مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ ۗ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ۫ وَّمِنْ ذُرِّيَّةِ
اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْرَآءِيْلَ ۫ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا ؕ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ
اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّبُكِيًّا ﴿٥٨﴾ فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ
اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ﴿٥٩﴾
اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ
الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ﴿٦٠﴾ جَنّٰتِ عَدْنِ ِۣالَّتِيْ وَعَدَ
الرَّحْمٰنُ عِبَادَهٗ بِالْغَيْبِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ وَعْدُهٗ مَاْتِيًّا ﴿٦١﴾ لَا
يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا اِلَّا سَلٰمًا ؕ وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيْهَا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ﴿٦٢﴾
تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْ نُوْرِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ﴿٦٣﴾ وَمَا

نَتَنَزَّلُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ ۚ لَهُ مَا بَيْنَ أَيْدِينَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ
ذٰلِكَ ۚ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ﴿٦٤﴾ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا
بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهِ ۚ هَلْ تَعْلَمُ لَهُ سَمِيًّا ﴿٦٥﴾ وَ
يَقُولُ الْإِنْسَانُ أَإِذَا مَا مِتُّ لَسَوْفَ أُخْرَجُ حَيًّا ﴿٦٦﴾ أَوَلَا يَذْكُرُ
الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْئًا ﴿٦٧﴾ فَوَرَبِّكَ
لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيٰطِينَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ﴿٦٨﴾
ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيعَةٍ أَيُّهُمْ أَشَدُّ عَلَى الرَّحْمٰنِ عِتِيًّا ﴿٦٩﴾
ثُمَّ لَنَحْنُ أَعْلَمُ بِالَّذِينَ هُمْ أَوْلٰى بِهَا صِلِيًّا ﴿٧٠﴾ وَإِنْ مِنْكُمْ إِلَّا
وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَقْضِيًّا ﴿٧١﴾ ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِينَ اتَّقَوْا
وَنَذَرُ الظّٰلِمِينَ فِيهَا جِثِيًّا ﴿٧٢﴾ وَإِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ آيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ
قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا ۙ أَيُّ الْفَرِيقَيْنِ خَيْرٌ
مَقَامًا وَأَحْسَنُ نَدِيًّا ﴿٧٣﴾ وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنٍ هُمْ
أَحْسَنُ أَثَاثًا وَرِئْيًا ﴿٧٤﴾ قُلْ مَنْ كَانَ فِي الضَّلٰلَةِ فَلْيَمْدُدْ
لَهُ الرَّحْمٰنُ مَدًّا ۚ حَتّٰى إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ إِمَّا الْعَذَابَ وَ
إِمَّا السَّاعَةَ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ شَرٌّ مَكَانًا وَأَضْعَفُ جُنْدًا ﴿٧٥﴾

وَيَزِيدُ اللّٰهُ الَّذِينَ اهْتَدَوْا هُدًى ۗ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ
خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ مَرَدًّا ﴿٧٦﴾ أَفَرَأَيْتَ الَّذِي كَفَرَ
بِآيٰتِنَا وَقَالَ لَأُوتَيَنَّ مَالًا وَوَلَدًا ﴿٧٧﴾ أَطَّلَعَ الْغَيْبَ أَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ
الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿٧٨﴾ كَلَّا ۚ سَنَكْتُبُ مَا يَقُولُ وَنَمُدُّ لَهُ مِنَ
الْعَذَابِ مَدًّا ﴿٧٩﴾ وَنَرِثُهُ مَا يَقُولُ وَيَأْتِينَا فَرْدًا ﴿٨٠﴾ وَاتَّخَذُوا مِنْ
دُونِ اللّٰهِ آلِهَةً لِيَكُونُوا لَهُمْ عِزًّا ﴿٨١﴾ كَلَّا ۚ سَيَكْفُرُونَ بِعِبَادَتِهِمْ
وَيَكُونُونَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ﴿٨٢﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّا أَرْسَلْنَا الشَّيٰطِينَ عَلَى
الْكٰفِرِينَ تَؤُزُّهُمْ أَزًّا ﴿٨٣﴾ فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ ۖ إِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ﴿٨٤﴾
يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِينَ إِلَى الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ﴿٨٥﴾ وَنَسُوقُ الْمُجْرِمِينَ
إِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ﴿٨٦﴾ لَا يَمْلِكُونَ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ
الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿٨٧﴾ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا ﴿٨٨﴾ لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا
إِدًّا ﴿٨٩﴾ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْأَرْضُ وَتَخِرُّ
الْجِبَالُ هَدًّا ﴿٩٠﴾ أَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا ﴿٩١﴾ وَمَا يَنْبَغِي لِلرَّحْمٰنِ
أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا ﴿٩٢﴾ إِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ إِلَّا آتِي الرَّحْمٰنِ
عَبْدًا ﴿٩٣﴾ لَقَدْ أَحْصٰهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ﴿٩٤﴾ وَكُلُّهُمْ آتِيهِ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ فَرْدًا ﴿٩٥﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ
الرَّحْمٰنُ وُدًّا ﴿٩٦﴾ فَإِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِينَ وَ

تُنْذِرَ بِهٖ قَوْمًا لُّدًّا ﴿٩٧﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ ۭ هَلْ تُحِسُّ
مِنْهُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ﴿٩٨﴾
ع

سُوْرَةُ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ثَلٰثُوْنَ اٰيَةً وَّثَلٰثُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢﴾
اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ
اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿٣﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ
خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ
اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۭ مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا شَفِيْعٍ ۭ
اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤﴾ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مِنَ السَّمَاۗءِ اِلَى الْاَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ
اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗٓ اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ﴿٥﴾ ذٰلِكَ
عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٦﴾ الَّذِيْٓ اَحْسَنَ
كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ وَبَدَاَ خَلْقَ الْاِنْسَانِ مِنْ طِيْنٍ ﴿٧﴾ ثُمَّ
جَعَلَ نَسْلَهٗ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّاۗءٍ مَّهِيْنٍ ﴿٨﴾ ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِيْهِ

مِنْ رُّوْحِهٖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۭ قَلِيْلًا مَّا
تَشْكُرُوْنَ ﴿٩﴾ وَقَالُوْٓا ءَاِذَا ضَلَلْنَا فِي الْاَرْضِ ءَاِنَّا لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۭ۬
بَلْ هُمْ بِلِقَاۗئِ رَبِّهِمْ كٰفِرُوْنَ ﴿١٠﴾ قُلْ يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ
الَّذِيْ وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ﴿١١﴾ وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ ع
نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۭ رَبَّنَآ اَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ
صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ ﴿١٢﴾ وَلَوْ شِئْنَا لَاٰتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدٰىهَا وَ
لٰكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّيْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ
اَجْمَعِيْنَ ﴿١٣﴾ فَذُوْقُوْا بِمَا نَسِيْتُمْ لِقَاۗءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۚ اِنَّا نَسِيْنٰكُمْ
وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤﴾ اِنَّمَا يُؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا
الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِهَا خَرُّوْا سُجَّدًا وَّسَبَّحُوْا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ
لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿١٥﴾ تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُوْنَ السجدة
رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا ۡ وَّمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿١٦﴾ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ
مَّآ اُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ ۚ جَزَاۗءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٧﴾
اَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ فَاسِقًا ڼ لَا يَسْتَوٗنَ ﴿١٨﴾ اَمَّا الَّذِيْنَ نصف القرآن
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ جَنّٰتُ الْمَاْوٰى ۡ نُزُلًۢا بِمَا كَانُوْا

يَعْمَلُوْنَ ۝ وَ اَمَّا الَّذِيْنَ فَسَقُوْا فَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ كُلَّمَاۤ اَرَادُوْۤا اَنْ
يَّخْرُجُوْا مِنْهَاۤ اُعِيْدُوْا فِيْهَا وَ قِيْلَ لَهُمْ ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّذِيْ
كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ۝ وَ لَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنَ الْعَذَابِ الْاَدْنٰى دُوْنَ
الْعَذَابِ الْاَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝ وَ مَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ
بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ثُمَّ اَعْرَضَ عَنْهَا ؕ اِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِيْنَ مُنْتَقِمُوْنَ ۝
وَ لَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَلَا تَكُنْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآئِهٖ وَ
جَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ۝ وَ جَعَلْنَا مِنْهُمْ اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ
بِاَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوْا ؕ۟ وَ كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يُوْقِنُوْنَ ۝ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ
يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝ اَوَ لَمْ
يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ؕ
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ ؕ اَفَلَا يَسْمَعُوْنَ ۝ اَوَ لَمْ يَرَوْا اَنَّا نَسُوْقُ الْمَآءَ
اِلَى الْاَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا تَاْكُلُ مِنْهُ اَنْعَامُهُمْ وَ اَنْفُسُهُمْ ؕ
اَفَلَا يُبْصِرُوْنَ ۝ وَ يَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْفَتْحُ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ۝ قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِيْمَانُهُمْ
وَ لَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ۝ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَ انْتَظِرْ اِنَّهُمْ مُّنْتَظِرُوْنَ ۝

سُوْرَةُ يٰسٓ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ثَلٰثٌ وَّثَمَانُوْنَ اٰيَةً وَّخَمْسُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰسٓ ۝ وَ الْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ۝ اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ عَلٰى
صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ؕ تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ۝ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّاۤ اُنْذِرَ
اٰبَآؤُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُوْنَ ۝ لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلٰۤى اَكْثَرِهِمْ
فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ اِنَّا جَعَلْنَا فِيْۤ اَعْنَاقِهِمْ اَغْلٰلًا فَهِيَ اِلَى
الْاَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُوْنَ ۝ وَ جَعَلْنَا مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ
سَدًّا وَّ مِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَاَغْشَيْنٰهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ۝
وَ سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝
اِنَّمَا تُنْذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَ خَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ ۚ
فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَّ اَجْرٍ كَرِيْمٍ ۝ اِنَّا نَحْنُ نُحْيِ الْمَوْتٰى
وَ نَكْتُبُ مَا قَدَّمُوْا وَ اٰثَارَهُمْ ؕۛ وَ كُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ فِيْۤ
اِمَامٍ مُّبِيْنٍ ۝ وَ اضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا اَصْحٰبَ الْقَرْيَةِ ۘ اِذْ
جَآءَهَا الْمُرْسَلُوْنَ ۝ اِذْ اَرْسَلْنَاۤ اِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوْهُمَا
فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوْۤا اِنَّاۤ اِلَيْكُمْ مُّرْسَلُوْنَ ۝ قَالُوْا مَاۤ

اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۙ وَمَآ اَنْزَلَ الرَّحْمٰنُ مِنْ شَیْءٍ ۙ
اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَكْذِبُوْنَ ﴿١٥﴾ قَالُوْا رَبُّنَا يَعْلَمُ اِنَّآ اِلَيْكُمْ
لَمُرْسَلُوْنَ ﴿١٦﴾ وَمَا عَلَيْنَآ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿١٧﴾ قَالُوْٓا اِنَّا
تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهُوْا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَلَيَمَسَّنَّكُمْ مِّنَّا
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٨﴾ قَالُوْا طَآئِرُكُمْ مَّعَكُمْ ۭ اَئِنْ ذُكِّرْتُمْ ۭ
بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ﴿١٩﴾ وَجَآءَ مِنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ
رَجُلٌ يَّسْعٰى قَالَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٢٠﴾ اتَّبِعُوْا
مَنْ لَّا يَسْـَٔلُكُمْ اَجْرًا وَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٢١﴾
وَمَا لِیَ لَآ اَعْبُدُ الَّذِیْ فَطَرَنِیْ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢٢﴾ ءَاَتَّخِذُ
مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً اِنْ يُّرِدْنِ الرَّحْمٰنُ بِضُرٍّ لَّا تُغْنِ عَنِّیْ
شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يُنْقِذُوْنِ ﴿٢٣﴾ اِنِّیْٓ اِذًا لَّفِیْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٤﴾
اِنِّیْٓ اٰمَنْتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُوْنِ ﴿٢٥﴾ قِيْلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ ۭ قَالَ
يٰلَيْتَ قَوْمِیْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٦﴾ بِمَا غَفَرَ لِیْ رَبِّیْ وَجَعَلَنِیْ مِنَ
الْمُكْرَمِيْنَ ﴿٢٧﴾ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰی قَوْمِهٖ مِنْ بَعْدِهٖ مِنْ جُنْدٍ
مِّنَ السَّمَآءِ وَمَا كُنَّا مُنْزِلِيْنَ ﴿٢٨﴾ اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً

وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ خٰمِدُوْنَ ﴿٢٩﴾ يٰحَسْرَةً عَلَی الْعِبَادِ ۚ مَا
يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٣٠﴾ اَلَمْ يَرَوْا كَمْ
اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ اَنَّهُمْ اِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٣١﴾
وَاِنْ كُلٌّ لَّمَّا جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ﴿٣٢﴾ وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الْاَرْضُ
الْمَيْتَةُ ۚ اَحْيَيْنٰهَا وَاَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَاْكُلُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَجَعَلْنَا
فِيْهَا جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ وَّفَجَّرْنَا فِيْهَا مِنَ الْعُيُوْنِ ﴿٣٤﴾
لِيَاْكُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖ ۙ وَمَا عَمِلَتْهُ اَيْدِيْهِمْ ۭ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٣٥﴾ سُبْحٰنَ
الَّذِیْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ وَمِنْ
اَنْفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الَّيْلُ ښ نَسْلَخُ مِنْهُ
النَّهَارَ فَاِذَا هُمْ مُّظْلِمُوْنَ ﴿٣٧﴾ وَالشَّمْسُ تَجْرِیْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ۭ ذٰلِكَ
تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٣٨﴾ وَالْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰی عَادَ
كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِيْمِ ﴿٣٩﴾ لَا الشَّمْسُ يَنْۢبَغِیْ لَهَآ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ
وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ۭ وَكُلٌّ فِیْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ﴿٤٠﴾ وَاٰيَةٌ لَّهُمْ
اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِی الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿٤١﴾ وَخَلَقْنَا لَهُمْ
مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا يَرْكَبُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَاِنْ نَّشَاْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيْخَ لَهُمْ

وَلَا هُمْ يُنْقَذُوْنَ ﴿٤٣﴾ اِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ﴿٤٤﴾ وَ
اِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّقُوْا مَا بَيْنَ اَيْدِيْكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ
تُرْحَمُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا
عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ﴿٤٦﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ قَالَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اَنُطْعِمُ مَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ اَطْعَمَهٗۤ اِنْ
اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٤٧﴾ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ﴿٤٨﴾ مَا يَنْظُرُوْنَ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً تَاْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُوْنَ ﴿٤٩﴾
فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ تَوْصِيَةً وَّلَآ اِلٰۤى اَهْلِهِمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٥٠﴾ وَنُفِخَ
فِي الصُّوْرِ فَاِذَا هُمْ مِّنَ الْاَجْدَاثِ اِلٰى رَبِّهِمْ يَنْسِلُوْنَ ﴿٥١﴾ قَالُوْا
يٰوَيْلَنَا مَنْۢ بَعَثَنَا مِنْ مَّرْقَدِنَا ؔ هٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَ
صَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٥٢﴾ اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ
جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ﴿٥٣﴾ فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا وَّلَا
تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٥٤﴾ اِنَّ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِيْ
شُغُلٍ فٰكِهُوْنَ ﴿٥٥﴾ هُمْ وَاَزْوَاجُهُمْ فِيْ ظِلٰلٍ عَلَى الْاَرَآئِكِ مُتَّكِـُٔوْنَ ﴿٥٦﴾
لَهُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّلَهُمْ مَّا يَدَّعُوْنَ ﴿٥٧﴾ سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ
رَّحِيْمٍ ﴿٥٨﴾ وَامْتَازُوا الْيَوْمَ اَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٥٩﴾ اَلَمْ اَعْهَدْ اِلَيْكُمْ يٰبَنِيْۤ
اٰدَمَ اَنْ لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطٰنَ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٦٠﴾ وَّاَنِ

اعْبُدُوْنِيْ ؔ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٦١﴾ وَلَقَدْ اَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا
كَثِيْرًا ؕ اَفَلَمْ تَكُوْنُوْا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٢﴾ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿٦٣﴾
اِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٦٤﴾ اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰۤى اَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَاۤ
اَيْدِيْهِمْ وَتَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٦٥﴾ وَلَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا
عَلٰۤى اَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَاَنّٰى يُبْصِرُوْنَ ﴿٦٦﴾ وَلَوْ نَشَآءُ
لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوْا مُضِيًّا وَّلَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَ
مَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِي الْخَلْقِ ؕ اَفَلَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٦٨﴾ وَمَا عَلَّمْنٰهُ
الشِّعْرَ وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهٗ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ وَّقُرْاٰنٌ مُّبِيْنٌ ﴿٦٩﴾ لِّيُنْذِرَ
مَنْ كَانَ حَيًّا وَّيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٠﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا
خَلَقْنَا لَهُمْ مِّمَّا عَمِلَتْ اَيْدِيْنَاۤ اَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مٰلِكُوْنَ ﴿٧١﴾ وَ
ذَلَّلْنٰهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوْبُهُمْ وَمِنْهَا يَاْكُلُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَلَهُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ
وَمَشَارِبُ ؕ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٧٣﴾ وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً
لَّعَلَّهُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٧٤﴾ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَهُمْ وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ
مُّحْضَرُوْنَ ﴿٧٥﴾ فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا
يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٦﴾ اَوَلَمْ يَرَ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ
خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٧﴾ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَّنَسِيَ خَلْقَهٗ ؕ قَالَ مَنْ
يُّحْيِ الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيْمٌ ﴿٧٨﴾ قُلْ يُحْيِيْهَا الَّذِيْٓ اَنْشَاَهَاۤ

اَوَّلَ مَرَّةٍ ۭ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيْمُ ۙ﴿٧٩﴾ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمْ مِّنَ
الشَّجَرِ الْاَخْضَرِ نَارًا فَاِذَآ اَنْتُمْ مِّنْهُ تُوْقِدُوْنَ ﴿٨٠﴾ اَوَلَيْسَ
الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓي اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ ۭ
بَلٰى ۤ وَهُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿٨١﴾ اِنَّمَآ اَمْرُهٗٓ اِذَآ اَرَادَ شَيْـًٔا اَنْ يَّقُوْلَ
لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٨٢﴾ فَسُبْحٰنَ الَّذِيْ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ
كُلِّ شَيْءٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٣﴾

سُوْرَةُ الدُّخَانِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ تِسْعٌ وَخَمْسُوْنَ اٰيَةً وَثَلٰثُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمٓ ﴿١﴾ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿٢﴾ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا
مُنْذِرِيْنَ ﴿٣﴾ فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ ﴿٤﴾ اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ۭ اِنَّا
كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ﴿٥﴾ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦﴾ رَبِّ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۘ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ﴿٧﴾ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ
يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۭ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَاۗىِٕكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٨﴾ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ
يَّلْعَبُوْنَ ﴿٩﴾ فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَاْتِي السَّمَاۗءُ بِدُخَانٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٠﴾ يَّغْشَى
النَّاسَ ۭ هٰذَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١١﴾ رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ اِنَّا

مُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢﴾ اَنّٰى لَهُمُ الذِّكْرٰى وَقَدْ جَاۗءَهُمْ رَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٣﴾
ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوْا مُعَلَّمٌ مَّجْنُوْنٌ ﴿١٤﴾ اِنَّا كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيْلًا
اِنَّكُمْ عَاۗىِٕدُوْنَ ﴿١٥﴾ يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرٰى ۚ اِنَّا مُنْتَقِمُوْنَ ﴿١٦﴾ وَلَقَدْ
فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَاۗءَهُمْ رَسُوْلٌ كَرِيْمٌ ﴿١٧﴾ اَنْ اَدُّوْٓا
اِلَيَّ عِبَادَ اللّٰهِ ۭ اِنِّىْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٨﴾ وَّاَنْ لَّا تَعْلُوْا عَلَي اللّٰهِ ۚ
اِنِّىْٓ اٰتِيْكُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٩﴾ وَاِنِّىْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ اَنْ
تَرْجُمُوْنِ ﴿٢٠﴾ وَاِنْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا لِيْ فَاعْتَزِلُوْنِ ﴿٢١﴾ فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنَّ هٰٓؤُلَاۗءِ
قَوْمٌ مُّجْرِمُوْنَ ﴿٢٢﴾ فَاَسْرِ بِعِبَادِيْ لَيْلًا اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ﴿٢٣﴾
وَاتْرُكِ الْبَحْرَ رَهْوًا ۭ اِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُوْنَ ﴿٢٤﴾ كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ
وَّعُيُوْنٍ ﴿٢٥﴾ وَّزُرُوْعٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ﴿٢٦﴾ وَّنَعْمَةٍ كَانُوْا فِيْهَا فٰكِهِيْنَ ﴿٢٧﴾
كَذٰلِكَ ۣ وَاَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ﴿٢٨﴾ فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاۗءُ وَ
الْاَرْضُ وَمَا كَانُوْا مُنْظَرِيْنَ ﴿٢٩﴾ وَلَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ مِنَ
الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ﴿٣٠﴾ مِنْ فِرْعَوْنَ ۭ اِنَّهٗ كَانَ عَالِيًا مِّنَ
الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣١﴾ وَلَقَدِ اخْتَرْنٰهُمْ عَلٰي عِلْمٍ عَلَي الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٢﴾ وَاٰتَيْنٰهُمْ
مِّنَ الْاٰيٰتِ مَا فِيْهِ بَلٰۗـؤٌا مُّبِيْنٌ ﴿٣٣﴾ اِنَّ هٰٓؤُلَاۗءِ لَيَقُوْلُوْنَ ﴿٣٤﴾ اِنْ

هِيَ إِلَّا مَوْتَتُنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُنشَرِينَ ﴿٣٥﴾ فَأْتُوا بِآبَائِنَا إِن
كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣٦﴾ أَهُمْ خَيْرٌ أَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ
أَهْلَكْنَاهُمْ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿٣٧﴾ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ
وَمَا بَيْنَهُمَا لَاعِبِينَ ﴿٣٨﴾ مَا خَلَقْنَاهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا
يَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾ إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيقَاتُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٠﴾ يَوْمَ لَا
يُغْنِي مَوْلًى عَن مَّوْلًى شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٤١﴾ إِلَّا مَن رَّحِمَ
اللَّهُ ۚ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٤٢﴾ إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّومِ ﴿٤٣﴾ طَعَامُ الْأَثِيمِ ﴿٤٤﴾
كَالْمُهْلِ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ ﴿٤٥﴾ كَغَلْيِ الْحَمِيمِ ﴿٤٦﴾ خُذُوهُ فَاعْتِلُوهُ
إِلَىٰ سَوَاءِ الْجَحِيمِ ﴿٤٧﴾ ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ﴿٤٨﴾
ذُقْ إِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ﴿٤٩﴾ إِنَّ هَٰذَا مَا كُنتُم بِهِ تَمْتَرُونَ ﴿٥٠﴾
إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ ﴿٥١﴾ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٥٢﴾
يَلْبَسُونَ مِن سُندُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُّتَقَابِلِينَ ﴿٥٣﴾ كَذَٰلِكَ
وَزَوَّجْنَاهُم بِحُورٍ عِينٍ ﴿٥٤﴾ يَدْعُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ ﴿٥٥﴾ لَا
يَذُوقُونَ فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُولَىٰ ۖ وَوَقَاهُمْ عَذَابَ
الْجَحِيمِ ﴿٥٦﴾ فَضْلًا مِّن رَّبِّكَ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٥٧﴾ فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ
بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٨﴾ فَارْتَقِبْ إِنَّهُم مُّرْتَقِبُونَ ﴿٥٩﴾

سُورَةُ مُحَمَّدٍ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانٍ وَثَلٰثُونَ اٰيَةً وَّ اَرْبَعُ رُكُوعَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ أَضَلَّ أَعْمَالَهُمْ ﴿١﴾
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَآمَنُوا بِمَا نُزِّلَ عَلَىٰ مُحَمَّدٍ
وَهُوَ الْحَقُّ مِن رَّبِّهِمْ ۙ كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَأَصْلَحَ بَالَهُمْ ﴿٢﴾
ذَٰلِكَ بِأَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ وَأَنَّ الَّذِينَ آمَنُوا
اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِن رَّبِّهِمْ ۚ كَذَٰلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ لِلنَّاسِ
أَمْثَالَهُمْ ﴿٣﴾ فَإِذَا لَقِيتُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا فَضَرْبَ الرِّقَابِ
حَتَّىٰ إِذَا أَثْخَنتُمُوهُمْ فَشُدُّوا الْوَثَاقَ فَإِمَّا مَنًّا بَعْدُ وَ
إِمَّا فِدَاءً حَتَّىٰ تَضَعَ الْحَرْبُ أَوْزَارَهَا ۚ ذَٰلِكَ ۖ وَلَوْ يَشَاءُ اللَّهُ
لَانتَصَرَ مِنْهُمْ وَلَٰكِن لِّيَبْلُوَ بَعْضَكُم بِبَعْضٍ ۗ وَالَّذِينَ قُتِلُوا
فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَلَن يُضِلَّ أَعْمَالَهُمْ ﴿٤﴾ سَيَهْدِيهِمْ وَ
يُصْلِحُ بَالَهُمْ ﴿٥﴾ وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ﴿٦﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا إِن تَنصُرُوا اللَّهَ يَنصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ أَقْدَامَكُمْ ﴿٧﴾
وَالَّذِينَ كَفَرُوا فَتَعْسًا لَّهُمْ وَأَضَلَّ أَعْمَالَهُمْ ﴿٨﴾ ذَٰلِكَ

بِأَنَّهُمْ كَرِهُوا مَا أَنزَلَ اللَّهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ۝ أَفَلَمْ
يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ
مِن قَبْلِهِمْ ۚ دَمَّرَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ۖ وَلِلْكَافِرِينَ أَمْثَالُهَا ۝
ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ مَوْلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَأَنَّ الْكَافِرِينَ
لَا مَوْلَىٰ لَهُمْ ۝ إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا
يَتَمَتَّعُونَ وَيَأْكُلُونَ كَمَا تَأْكُلُ الْأَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۝
وَكَأَيِّن مِّن قَرْيَةٍ هِيَ أَشَدُّ قُوَّةً مِّن قَرْيَتِكَ الَّتِي
أَخْرَجَتْكَ أَهْلَكْنَاهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ۝ أَفَمَن كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ
مِّن رَّبِّهِ كَمَن زُيِّنَ لَهُ سُوءُ عَمَلِهِ وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُم ۝ مَّثَلُ
الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ۖ فِيهَا أَنْهَارٌ مِّن مَّاءٍ غَيْرِ آسِنٍ وَ
أَنْهَارٌ مِّن لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ وَأَنْهَارٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ
لِّلشَّارِبِينَ وَأَنْهَارٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ۖ وَلَهُمْ فِيهَا مِن
كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّن رَّبِّهِمْ ۖ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي
النَّارِ وَسُقُوا مَاءً حَمِيمًا فَقَطَّعَ أَمْعَاءَهُمْ ۝ وَمِنْهُم مَّن يَسْتَمِعُ

إِلَيْكَ حَتَّىٰ إِذَا خَرَجُوا مِنْ عِندِكَ قَالُوا لِلَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ
مَاذَا قَالَ آنِفًا ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَ
اتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ ۝ وَالَّذِينَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَآتَاهُمْ
تَقْوَاهُمْ ۝ فَهَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَن تَأْتِيَهُم بَغْتَةً ۖ
فَقَدْ جَاءَ أَشْرَاطُهَا ۚ فَأَنَّىٰ لَهُمْ إِذَا جَاءَتْهُمْ ذِكْرَاهُمْ ۝ فَاعْلَمْ أَنَّهُ
لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۗ وَاللَّهُ
يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوَاكُمْ ۝ وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا لَوْلَا نُزِّلَتْ سُورَةٌ ۖ
فَإِذَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ مُّحْكَمَةٌ وَذُكِرَ فِيهَا الْقِتَالُ ۙ رَأَيْتَ الَّذِينَ
فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ يَنظُرُونَ إِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ
الْمَوْتِ ۖ فَأَوْلَىٰ لَهُمْ ۝ طَاعَةٌ وَقَوْلٌ مَّعْرُوفٌ ۚ فَإِذَا عَزَمَ الْأَمْرُ فَلَوْ
صَدَقُوا اللَّهَ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۝ فَهَلْ عَسَيْتُمْ إِن تَوَلَّيْتُمْ أَن
تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَتُقَطِّعُوا أَرْحَامَكُمْ ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ
لَعَنَهُمُ اللَّهُ فَأَصَمَّهُمْ وَأَعْمَىٰ أَبْصَارَهُمْ ۝ أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ
الْقُرْآنَ أَمْ عَلَىٰ قُلُوبٍ أَقْفَالُهَا ۝ إِنَّ الَّذِينَ ارْتَدُّوا عَلَىٰ أَدْبَارِهِم
مِّن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى ۙ الشَّيْطَانُ سَوَّلَ لَهُمْ وَأَمْلَىٰ لَهُمْ ۝

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ كَرِهُوْا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ سَنُطِيْعُكُمْ فِيْ
بَعْضِ الْاَمْرِ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِسْرَارَهُمْ ۝٢٦ فَكَيْفَ اِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ
وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ ۝٢٧ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اتَّبَعُوْا مَآ اَسْخَطَ اللّٰهَ وَكَرِهُوْا رِضْوَانَهٗ
فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ۝٢٨ اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ اَنْ لَّنْ
يُّخْرِجَ اللّٰهُ اَضْغَانَهُمْ ۝٢٩ وَلَوْ نَشَآءُ لَاَرَيْنٰكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ۚ وَ
لَتَعْرِفَنَّهُمْ فِيْ لَحْنِ الْقَوْلِ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اَعْمَالَكُمْ ۝٣٠ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى
نَعْلَمَ الْمُجٰهِدِيْنَ مِنْكُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ ۙ وَنَبْلُوَا اَخْبَارَكُمْ ۝٣١ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَشَآقُّوا الرَّسُوْلَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ
لَهُمُ الْهُدٰى ۙ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ۚ وَسَيُحْبِطُ اَعْمَالَهُمْ ۝٣٢ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَلَا تُبْطِلُوْٓا اَعْمَالَكُمْ ۝٣٣
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ مَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ
يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ۝٣٤ فَلَا تَهِنُوْا وَتَدْعُوْٓا اِلَى السَّلْمِ ۖۗ وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ ۖۗ وَاللّٰهُ
مَعَكُمْ وَلَنْ يَّتِرَكُمْ اَعْمَالَكُمْ ۝٣٥ اِنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ۚ وَ
اِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا يُؤْتِكُمْ اُجُوْرَكُمْ وَلَا يَسْـَٔلْكُمْ اَمْوَالَكُمْ ۝٣٦ اِنْ
يَّسْـَٔلْكُمُوْهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوْا وَيُخْرِجْ اَضْغَانَكُمْ ۝٣٧ هٰٓاَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ
تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ فَمِنْكُمْ مَّنْ يَّبْخَلُ ۚ وَمَنْ يَّبْخَلْ
فَاِنَّمَا يَبْخَلُ عَنْ نَّفْسِهٖ ۚ وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ وَاَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا

يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۙ ثُمَّ لَا يَكُوْنُوْٓا اَمْثَالَكُمْ ۝٣٨

سُوْرَةُ الْفَتْحِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ تِسْعٌ وَّعِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّاَرْبَعُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا ۝١ لِّيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْۢبِكَ
وَمَا تَاَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ۝٢ وَّيَنْصُرَكَ
اللّٰهُ نَصْرًا عَزِيْزًا ۝٣ هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ فِيْ قُلُوْبِ الْمُؤْمِنِيْنَ
لِيَزْدَادُوْٓا اِيْمَانًا مَّعَ اِيْمَانِهِمْ ۗ وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ
وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝٤ لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَيُكَفِّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ ۗ وَ
كَانَ ذٰلِكَ عِنْدَ اللّٰهِ فَوْزًا عَظِيْمًا ۝٥ وَّيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَ
الْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ الظَّآنِّيْنَ بِاللّٰهِ ظَنَّ السَّوْءِ ۗ
عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ۚ وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ۚ
وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ۝٦ وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا
حَكِيْمًا ۝٧ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۝٨ لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ
وَرَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ ۚ وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۝٩ اِنَّ
الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ اللّٰهَ ۚ يَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَيْدِيْهِمْ ۚ
فَمَنْ نَّكَثَ فَاِنَّمَا يَنْكُثُ عَلٰى نَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَوْفٰى بِمَا عٰهَدَ

عَلَيْهُ اللّٰهَ فَسَيُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۱۰﴾ سَيَقُوْلُ لَكَ الْمُخَلَّفُوْنَ
مِنَ الْاَعْرَابِ شَغَلَتْنَاۤ اَمْوَالُنَا وَاَهْلُوْنَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ يَقُوْلُوْنَ
بِاَلْسِنَتِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ
شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ؕ بَلْ كَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
خَبِيْرًا ﴿۱۱﴾ بَلْ ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّنْقَلِبَ الرَّسُوْلُ وَالْمُؤْمِنُوْنَ اِلٰۤى
اَهْلِيْهِمْ اَبَدًا وَّزُيِّنَ ذٰلِكَ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَظَنَنْتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ ۖۚ وَ
كُنْتُمْ قَوْمًاۢ بُوْرًا ﴿۱۲﴾ وَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ فَاِنَّاۤ اَعْتَدْنَا
لِلْكٰفِرِيْنَ سَعِيْرًا ﴿۱۳﴾ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يَغْفِرُ لِمَنْ
يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۴﴾ سَيَقُوْلُ
الْمُخَلَّفُوْنَ اِذَا انْطَلَقْتُمْ اِلٰى مَغَانِمَ لِتَاْخُذُوْهَا ذَرُوْنَا نَتَّبِعْكُمْ ۚ
يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّبَدِّلُوْا كَلٰمَ اللّٰهِ ؕ قُلْ لَّنْ تَتَّبِعُوْنَا كَذٰلِكُمْ قَالَ
اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ بَلْ تَحْسُدُوْنَنَا ؕ بَلْ كَانُوْا لَا
يَفْقَهُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۱۵﴾ قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ
اِلٰى قَوْمٍ اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ يُسْلِمُوْنَ ۚ فَاِنْ
تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ اَجْرًا حَسَنًا ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ
قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۶﴾ لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى
الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ ؕ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ

جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا
اَلِيْمًا ﴿۱۷﴾ لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ
فَعَلِمَ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا
قَرِيْبًا ﴿۱۸﴾ وَّمَغَانِمَ كَثِيْرَةً يَّاْخُذُوْنَهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿۱۹﴾
وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً تَاْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ وَكَفَّ
اَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُوْنَ اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا
مُّسْتَقِيْمًا ﴿۲۰﴾ وَّاُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا ؕ وَ
كَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ﴿۲۱﴾ وَلَوْ قٰتَلَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوَلَّوُا
الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿۲۲﴾ سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ
مِنْ قَبْلُ ۖۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ﴿۲۳﴾ وَهُوَ الَّذِيْ كَفَّ اَيْدِيَهُمْ
عَنْكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ اَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ؕ
وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ﴿۲۴﴾ هُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْكُمْ عَنِ
الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيَ مَعْكُوْفًا اَنْ يَّبْلُغَ مَحِلَّهٗ ؕ وَلَوْلَا رِجَالٌ
مُّؤْمِنُوْنَ وَنِسَآءٌ مُّؤْمِنٰتٌ لَّمْ تَعْلَمُوْهُمْ اَنْ تَطَئُوْهُمْ فَتُصِيْبَكُمْ
مِّنْهُمْ مَّعَرَّةٌ ۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ لِيُدْخِلَ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۚ لَوْ
تَزَيَّلُوْا لَعَذَّبْنَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۲۵﴾ اِذْ جَعَلَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ

سَكِينَتَهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوَىٰ وَ
كَانُوا أَحَقَّ بِهَا وَأَهْلَهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝ لَقَدْ
صَدَقَ اللَّهُ رَسُولَهُ الرُّؤْيَا بِالْحَقِّ ۖ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ
إِنْ شَاءَ اللَّهُ آمِنِينَ مُحَلِّقِينَ رُءُوسَكُمْ وَمُقَصِّرِينَ لَا
تَخَافُونَ ۖ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوا فَجَعَلَ مِنْ دُونِ ذَٰلِكَ فَتْحًا
قَرِيبًا ۝ هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ
لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ۝ مُحَمَّدٌ
رَسُولُ اللَّهِ ۚ وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ
بَيْنَهُمْ ۖ تَرَاهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِنَ اللَّهِ وَ
رِضْوَانًا ۖ سِيمَاهُمْ فِي وُجُوهِهِمْ مِنْ أَثَرِ السُّجُودِ ۚ ذَٰلِكَ
مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرَاةِ ۚ وَمَثَلُهُمْ فِي الْإِنْجِيلِ كَزَرْعٍ أَخْرَجَ
شَطْأَهُ فَآزَرَهُ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوَىٰ عَلَىٰ سُوقِهِ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ
لِيَغِيظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ۗ وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
مِنْهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا ۝

سُورَةُ قٓ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ خَمْسٌ وَّاَرْبَعُوْنَ اٰيَةً وَّثَلٰثُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

قٓ ۚ وَالْقُرْآنِ الْمَجِيدِ ۝ بَلْ عَجِبُوا أَنْ جَاءَهُمْ مُنْذِرٌ مِنْهُمْ
فَقَالَ الْكَافِرُونَ هَٰذَا شَيْءٌ عَجِيبٌ ۝ أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۖ ذَٰلِكَ
رَجْعٌ بَعِيدٌ ۝ قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْأَرْضُ مِنْهُمْ ۖ وَعِنْدَنَا كِتَابٌ
حَفِيظٌ ۝ بَلْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ فَهُمْ فِي أَمْرٍ مَرِيجٍ ۝
أَفَلَمْ يَنْظُرُوا إِلَى السَّمَاءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنَاهَا وَزَيَّنَّاهَا وَ
مَا لَهَا مِنْ فُرُوجٍ ۝ وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ
وَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ بَهِيجٍ ۝ تَبْصِرَةً وَذِكْرَىٰ لِكُلِّ عَبْدٍ
مُنِيبٍ ۝ وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً مُبَارَكًا فَأَنْبَتْنَا بِهِ جَنَّاتٍ وَحَبَّ
الْحَصِيدِ ۝ وَالنَّخْلَ بَاسِقَاتٍ لَهَا طَلْعٌ نَضِيدٌ ۝ رِزْقًا لِلْعِبَادِ ۖ
وَأَحْيَيْنَا بِهِ بَلْدَةً مَيْتًا ۚ كَذَٰلِكَ الْخُرُوجُ ۝ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ
نُوحٍ وَأَصْحَابُ الرَّسِّ وَثَمُودُ ۝ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ وَإِخْوَانُ لُوطٍ ۝
وَأَصْحَابُ الْأَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ۚ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيدِ ۝
أَفَعَيِينَا بِالْخَلْقِ الْأَوَّلِ ۚ بَلْ هُمْ فِي لَبْسٍ مِنْ خَلْقٍ جَدِيدٍ ۝

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهِ نَفْسُهُ ۖ وَنَحْنُ
أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ ﴿١٦﴾ إِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيَانِ عَنِ
الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيدٌ ﴿١٧﴾ مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ
رَقِيبٌ عَتِيدٌ ﴿١٨﴾ وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ۖ ذَٰلِكَ مَا كُنْتَ
مِنْهُ تَحِيدُ ﴿١٩﴾ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ ۚ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيدِ ﴿٢٠﴾ وَجَاءَتْ
كُلُّ نَفْسٍ مَعَهَا سَائِقٌ وَشَهِيدٌ ﴿٢١﴾ لَقَدْ كُنْتَ فِي غَفْلَةٍ مِنْ
هَٰذَا فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَاءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيدٌ ﴿٢٢﴾ وَقَالَ
قَرِينُهُ هَٰذَا مَا لَدَيَّ عَتِيدٌ ﴿٢٣﴾ أَلْقِيَا فِي جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيدٍ ﴿٢٤﴾
مَنَّاعٍ لِلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُرِيبٍ ﴿٢٥﴾ الَّذِي جَعَلَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ
فَأَلْقِيَاهُ فِي الْعَذَابِ الشَّدِيدِ ﴿٢٦﴾ قَالَ قَرِينُهُ رَبَّنَا مَا أَطْغَيْتُهُ
وَلَٰكِنْ كَانَ فِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ﴿٢٧﴾ قَالَ لَا تَخْتَصِمُوا لَدَيَّ وَقَدْ
قَدَّمْتُ إِلَيْكُمْ بِالْوَعِيدِ ﴿٢٨﴾ مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ وَمَا أَنَا بِظَلَّامٍ
لِلْعَبِيدِ ﴿٢٩﴾ يَوْمَ نَقُولُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأْتِ وَتَقُولُ هَلْ مِنْ
مَزِيدٍ ﴿٣٠﴾ وَأُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ غَيْرَ بَعِيدٍ ﴿٣١﴾ هَٰذَا مَا
تُوعَدُونَ لِكُلِّ أَوَّابٍ حَفِيظٍ ﴿٣٢﴾ مَنْ خَشِيَ الرَّحْمَٰنَ

بِالْغَيْبِ وَجَاءَ بِقَلْبٍ مُنِيبٍ ﴿٣٣﴾ ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ ۖ ذَٰلِكَ يَوْمُ
الْخُلُودِ ﴿٣٤﴾ لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ فِيهَا وَلَدَيْنَا مَزِيدٌ ﴿٣٥﴾ وَكَمْ أَهْلَكْنَا
قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنٍ هُمْ أَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوا فِي الْبِلَادِ
هَلْ مِنْ مَحِيصٍ ﴿٣٦﴾ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ لِمَنْ كَانَ لَهُ قَلْبٌ
أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيدٌ ﴿٣٧﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ
وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَمَا مَسَّنَا مِنْ لُغُوبٍ ﴿٣٨﴾ فَاصْبِرْ عَلَىٰ
مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَ
قَبْلَ الْغُرُوبِ ﴿٣٩﴾ وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَأَدْبَارَ السُّجُودِ ﴿٤٠﴾
وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَكَانٍ قَرِيبٍ ﴿٤١﴾ يَوْمَ
يَسْمَعُونَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ۚ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوجِ ﴿٤٢﴾ إِنَّا نَحْنُ
نُحْيِي وَنُمِيتُ وَإِلَيْنَا الْمَصِيرُ ﴿٤٣﴾ يَوْمَ تَشَقَّقُ الْأَرْضُ
عَنْهُمْ سِرَاعًا ۚ ذَٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيرٌ ﴿٤٤﴾ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا
يَقُولُونَ ۖ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ ۖ فَذَكِّرْ بِالْقُرْآنِ مَنْ
يَخَافُ وَعِيدِ ﴿٤٥﴾

سُوْرَةُ الرَّحْمٰنِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ ثَمَانٌ وَّسَبْعُوْنَ اٰيَةً وَّثَلٰثُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلرَّحْمٰنُ ۙ﴿۱﴾ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ؕ﴿۲﴾ خَلَقَ الْاِنْسَانَ ۙ﴿۳﴾ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ﴿۴﴾
اَلشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ۪﴿۵﴾ وَّالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدٰنِ ﴿۶﴾ وَالسَّمَآءَ
رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيْزَانَ ۙ﴿۷﴾ اَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيْزَانِ ﴿۸﴾ وَاَقِيْمُوا
الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيْزَانَ ﴿۹﴾ وَالْاَرْضَ وَضَعَهَا
لِلْاَنَامِ ۙ﴿۱۰﴾ فِيْهَا فَاكِهَةٌ ۙ وَّالنَّخْلُ ذَاتُ الْاَكْمَامِ ۖ﴿۱۱﴾ وَالْحَبُّ ذُو
الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ۚ﴿۱۲﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۱۳﴾ خَلَقَ الْاِنْسَانَ
مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ۙ﴿۱۴﴾ وَخَلَقَ الْجَآنَّ مِنْ مَّارِجٍ مِّنْ نَّارٍ ۚ﴿۱۵﴾
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۱۶﴾ رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ۚ﴿۱۷﴾
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۱۸﴾ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيٰنِ ﴿۱۹﴾ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا
يَبْغِيٰنِ ۚ﴿۲۰﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۲۱﴾ يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ۚ﴿۲۲﴾
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۲۳﴾ وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَئٰتُ فِي الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ۚ﴿۲۴﴾
ع فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۲۵﴾ كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ۚ﴿۲۶﴾ وَّيَبْقٰى وَجْهُ
رَبِّكَ ذُو الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ۚ﴿۲۷﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۲۸﴾ يَسْئَلُهُ

مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِيْ شَاْنٍ ۚ﴿۲۹﴾ فَبِاَيِّ
اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۳۰﴾ سَنَفْرُغُ لَكُمْ اَيُّهَ الثَّقَلٰنِ ۚ﴿۳۱﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ﴿۳۲﴾ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا
مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ فَانْفُذُوْا ؕ لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ۚ﴿۳۳﴾
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۳۴﴾ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ ۙ وَّ
نُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ۚ﴿۳۵﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۳۶﴾ فَاِذَا انْشَقَّتِ
السَّمَآءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ۚ﴿۳۷﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۳۸﴾
فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُسْئَلُ عَنْ ذَنْۢبِهٖٓ اِنْسٌ وَّلَا جَآنٌّ ۚ﴿۳۹﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ﴿۴۰﴾ يُعْرَفُ الْمُجْرِمُوْنَ بِسِيْمٰهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِيْ
وَالْاَقْدَامِ ۚ﴿۴۱﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۴۲﴾ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ
يُكَذِّبُ بِهَا الْمُجْرِمُوْنَ ۘ﴿۴۳﴾ يَطُوْفُوْنَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيْمٍ اٰنٍ ۚ﴿۴۴﴾
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۴۵﴾ وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ۚ﴿۴۶﴾ ع
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۙ﴿۴۷﴾ ذَوَاتَآ اَفْنَانٍ ۚ﴿۴۸﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ﴿۴۹﴾ فِيْهِمَا عَيْنٰنِ تَجْرِيٰنِ ۚ﴿۵۰﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۵۱﴾ فِيْهِمَا
مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِ ۚ﴿۵۲﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۵۳﴾ مُتَّكِئِيْنَ

عَلَىٰ فُرُشٍ بَطَائِنُهَا مِنْ إِسْتَبْرَقٍ ۚ وَجَنَى الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ﴿٥٤﴾
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٥٥﴾ فِيهِنَّ قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ
إِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ ﴿٥٦﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٥٧﴾ كَأَنَّهُنَّ
الْيَاقُوتُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٥٨﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٥٩﴾ هَلْ جَزَاءُ
الْإِحْسَانِ إِلَّا الْإِحْسَانُ ﴿٦٠﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٦١﴾ وَمِنْ
دُونِهِمَا جَنَّتَانِ ﴿٦٢﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٦٣﴾ مُدْهَامَّتَانِ ﴿٦٤﴾
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٦٥﴾ فِيهِمَا عَيْنَانِ نَضَّاخَتَانِ ﴿٦٦﴾ فَبِأَيِّ
آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٦٧﴾ فِيهِمَا فَاكِهَةٌ وَنَخْلٌ وَرُمَّانٌ ﴿٦٨﴾ فَبِأَيِّ
آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٦٩﴾ فِيهِنَّ خَيْرَاتٌ حِسَانٌ ﴿٧٠﴾ فَبِأَيِّ
آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٧١﴾ حُورٌ مَقْصُورَاتٌ فِي الْخِيَامِ ﴿٧٢﴾
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٧٣﴾ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ إِنْسٌ قَبْلَهُمْ
وَلَا جَانٌّ ﴿٧٤﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٧٥﴾ مُتَّكِئِينَ عَلَىٰ
رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ﴿٧٦﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٧٧﴾ تَبَارَكَ
اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ﴿٧٨﴾

سُورَةُ الْوَاقِعَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ سِتٌّ وَتِسْعُونَ آيَةً وَثَلٰثُ رُكُوعَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١﴾ لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ﴿٢﴾ خَافِضَةٌ
رَافِعَةٌ ﴿٣﴾ إِذَا رُجَّتِ الْأَرْضُ رَجًّا ﴿٤﴾ وَبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ﴿٥﴾
فَكَانَتْ هَبَاءً مُنْبَثًّا ﴿٦﴾ وَكُنْتُمْ أَزْوَاجًا ثَلَاثَةً ﴿٧﴾ فَأَصْحَابُ
الْمَيْمَنَةِ مَا أَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ ﴿٨﴾ وَأَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ مَا أَصْحَابُ
الْمَشْأَمَةِ ﴿٩﴾ وَالسَّابِقُونَ السَّابِقُونَ ﴿١٠﴾ أُولَٰئِكَ الْمُقَرَّبُونَ ﴿١١﴾ فِي جَنَّاتِ
النَّعِيمِ ﴿١٢﴾ ثُلَّةٌ مِنَ الْأَوَّلِينَ ﴿١٣﴾ وَقَلِيلٌ مِنَ الْآخِرِينَ ﴿١٤﴾ عَلَىٰ سُرُرٍ
مَوْضُونَةٍ ﴿١٥﴾ مُتَّكِئِينَ عَلَيْهَا مُتَقَابِلِينَ ﴿١٦﴾ يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ
مُخَلَّدُونَ ﴿١٧﴾ بِأَكْوَابٍ وَأَبَارِيقَ وَكَأْسٍ مِنْ مَعِينٍ ﴿١٨﴾ لَا
يُصَدَّعُونَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُونَ ﴿١٩﴾ وَفَاكِهَةٍ مِمَّا يَتَخَيَّرُونَ ﴿٢٠﴾
وَلَحْمِ طَيْرٍ مِمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٢١﴾ وَحُورٌ عِينٌ ﴿٢٢﴾ كَأَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُونِ ﴿٢٣﴾
جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٤﴾ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا تَأْثِيمًا ﴿٢٥﴾ إِلَّا
قِيلًا سَلَامًا سَلَامًا ﴿٢٦﴾ وَأَصْحَابُ الْيَمِينِ مَا أَصْحَابُ الْيَمِينِ ﴿٢٧﴾ فِي
سِدْرٍ مَخْضُودٍ ﴿٢٨﴾ وَطَلْحٍ مَنْضُودٍ ﴿٢٩﴾ وَظِلٍّ مَمْدُودٍ ﴿٣٠﴾ وَمَاءٍ

مَّسْكُوْبٍ ﴿٣١﴾ وَّفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ ﴿٣٢﴾ لَّا مَقْطُوْعَةٍ وَّلَا مَمْنُوْعَةٍ ﴿٣٣﴾
وَّفُرُشٍ مَّرْفُوْعَةٍ ﴿٣٤﴾ إِنَّا أَنْشَأْنٰهُنَّ إِنْشَآءً ﴿٣٥﴾ فَجَعَلْنٰهُنَّ أَبْكَارًا ﴿٣٦﴾ عُرُبًا
أَتْرَابًا ﴿٣٧﴾ لِّأَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٣٨﴾ ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِيْنَ ﴿٣٩﴾ وَثُلَّةٌ مِّنَ
الْاٰخِرِيْنَ ﴿٤٠﴾ وَأَصْحٰبُ الشِّمَالِ مَآ أَصْحٰبُ الشِّمَالِ ﴿٤١﴾ فِيْ سَمُوْمٍ
وَّحَمِيْمٍ ﴿٤٢﴾ وَّظِلٍّ مِّنْ يَّحْمُوْمٍ ﴿٤٣﴾ لَّا بَارِدٍ وَّلَا كَرِيْمٍ ﴿٤٤﴾ إِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ
ذٰلِكَ مُتْرَفِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَكَانُوْا يُصِرُّوْنَ عَلَى الْحِنْثِ الْعَظِيْمِ ﴿٤٦﴾ وَكَانُوْا
يَقُوْلُوْنَ أَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا أَإِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿٤٧﴾
أَوَاٰبَآؤُنَا الْأَوَّلُوْنَ ﴿٤٨﴾ قُلْ إِنَّ الْأَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ ﴿٤٩﴾ لَمَجْمُوْعُوْنَ إِلٰى
مِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٥٠﴾ ثُمَّ إِنَّكُمْ أَيُّهَا الضَّآلُّوْنَ الْمُكَذِّبُوْنَ ﴿٥١﴾
لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ ﴿٥٢﴾ فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ﴿٥٣﴾
فَشٰرِبُوْنَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيْمِ ﴿٥٤﴾ فَشٰرِبُوْنَ شُرْبَ الْهِيْمِ ﴿٥٥﴾ هٰذَا
نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿٥٦﴾ نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُوْنَ ﴿٥٧﴾ أَفَرَءَيْتُمْ
مَّا تُمْنُوْنَ ﴿٥٨﴾ ءَأَنْتُمْ تَخْلُقُوْنَهٗٓ أَمْ نَحْنُ الْخٰلِقُوْنَ ﴿٥٩﴾ نَحْنُ
قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ﴿٦٠﴾ عَلٰٓى أَنْ نُّبَدِّلَ
أَمْثَالَكُمْ وَنُنْشِئَكُمْ فِيْ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦١﴾ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ

النَّشْأَةَ الْأُوْلٰى فَلَوْلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٦٢﴾ أَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَحْرُثُوْنَ ﴿٦٣﴾
ءَأَنْتُمْ تَزْرَعُوْنَهٗٓ أَمْ نَحْنُ الزّٰرِعُوْنَ ﴿٦٤﴾ لَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنٰهُ
حُطٰمًا فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُوْنَ ﴿٦٥﴾ إِنَّا لَمُغْرَمُوْنَ ﴿٦٦﴾ بَلْ نَحْنُ
مَحْرُوْمُوْنَ ﴿٦٧﴾ أَفَرَءَيْتُمُ الْمَآءَ الَّذِيْ تَشْرَبُوْنَ ﴿٦٨﴾ ءَأَنْتُمْ
أَنْزَلْتُمُوْهُ مِنَ الْمُزْنِ أَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُوْنَ ﴿٦٩﴾ لَوْ نَشَآءُ جَعَلْنٰهُ
أُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٠﴾ أَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِيْ تُوْرُوْنَ ﴿٧١﴾ ءَأَنْتُمْ
أَنْشَأْتُمْ شَجَرَتَهَآ أَمْ نَحْنُ الْمُنْشِـُٔوْنَ ﴿٧٢﴾ نَحْنُ جَعَلْنٰهَا
تَذْكِرَةً وَّمَتَاعًا لِّلْمُقْوِيْنَ ﴿٧٣﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٧٤﴾
فَلَآ أُقْسِمُ بِمَوٰقِعِ النُّجُوْمِ ﴿٧٥﴾ وَإِنَّهٗ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُوْنَ عَظِيْمٌ ﴿٧٦﴾
إِنَّهٗ لَقُرْاٰنٌ كَرِيْمٌ ﴿٧٧﴾ فِيْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ ﴿٧٨﴾ لَّا يَمَسُّهٗٓ إِلَّا
الْمُطَهَّرُوْنَ ﴿٧٩﴾ تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٠﴾ أَفَبِهٰذَا
الْحَدِيْثِ أَنْتُمْ مُّدْهِنُوْنَ ﴿٨١﴾ وَتَجْعَلُوْنَ رِزْقَكُمْ أَنَّكُمْ
تُكَذِّبُوْنَ ﴿٨٢﴾ فَلَوْلَآ إِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُوْمَ ﴿٨٣﴾ وَأَنْتُمْ حِيْنَئِذٍ
تَنْظُرُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُبْصِرُوْنَ ﴿٨٥﴾ فَلَوْلَآ
إِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِيْنِيْنَ ﴿٨٦﴾ تَرْجِعُوْنَهَآ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٨٧﴾

فَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ۝٨٨ فَرَوْحٌ وَّرَيْحَانٌ ۙ وَّجَنَّتُ نَعِيْمٍ ۝٨٩
وَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ۝٩٠ فَسَلٰمٌ لَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ
الْيَمِيْنِ ۝٩١ وَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِيْنَ الضَّآلِّيْنَ ۝٩٢ فَنُزُلٌ
مِّنْ حَمِيْمٍ ۝٩٣ وَّتَصْلِيَةُ جَحِيْمٍ ۝٩٤ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِيْنِ ۝٩٥
فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ۝٩٦

سُوْرَةُ الْحَشْرِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ اَرْبَعٌ وَّعِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّثَلٰثُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ
الْحَكِيْمُ ۝١ هُوَ الَّذِيْٓ اَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ
مِنْ دِيَارِهِمْ لِاَوَّلِ الْحَشْرِ ؕ مَا ظَنَنْتُمْ اَنْ يَّخْرُجُوْا وَظَنُّوْٓا
اَنَّهُمْ مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَاَتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ
حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا ۗ وَقَذَفَ فِىْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ يُخْرِبُوْنَ
بُيُوْتَهُمْ بِاَيْدِيْهِمْ وَاَيْدِى الْمُؤْمِنِيْنَ ۗ فَاعْتَبِرُوْا يٰٓاُولِى
الْاَبْصَارِ ۝٢ وَلَوْلَآ اَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَآءَ لَعَذَّبَهُمْ فِى

الدُّنْيَا ؕ وَلَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ۝٣ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ
شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَآقِّ اللّٰهَ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ
الْعِقَابِ ۝٤ مَا قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّيْنَةٍ اَوْ تَرَكْتُمُوْهَا قَآئِمَةً عَلٰٓى
اُصُوْلِهَا فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيُخْزِىَ الْفٰسِقِيْنَ ۝٥ وَمَآ اَفَآءَ اللّٰهُ
عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْهُمْ فَمَآ اَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَّلَا رِكَابٍ
وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ
قَدِيْرٌ ۝٦ مَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ اَهْلِ الْقُرٰى فَلِلّٰهِ وَ
لِلرَّسُوْلِ وَلِذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَ ابْنِ
السَّبِيْلِ كَىْ لَا يَكُوْنَ دُوْلَةًۢ بَيْنَ الْاَغْنِيَآءِ مِنْكُمْ ؕ وَمَآ
اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۚ وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ وَ اتَّقُوا
اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝٧ لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ
اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ
وَرِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ۝٨
وَالَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ
هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِىْ صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا

وَيُؤْثِرُونَ عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۚ وَمَن
يُوقَ شُحَّ نَفْسِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٩﴾ وَالَّذِينَ
جَاءُوا مِن بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا
الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًّا
لِّلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿١٠﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى ع
الَّذِينَ نَافَقُوا يَقُولُونَ لِإِخْوَانِهِمُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ
الْكِتَابِ لَئِنْ أُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيعُ فِيكُمْ
أَحَدًا أَبَدًا وَإِن قُوتِلْتُمْ لَنَنصُرَنَّكُمْ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ
لَكَاذِبُونَ ﴿١١﴾ لَئِنْ أُخْرِجُوا لَا يَخْرُجُونَ مَعَهُمْ وَلَئِن قُوتِلُوا
لَا يَنصُرُونَهُمْ وَلَئِن نَّصَرُوهُمْ لَيُوَلُّنَّ الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا
يُنصَرُونَ ﴿١٢﴾ لَأَنتُمْ أَشَدُّ رَهْبَةً فِي صُدُورِهِم مِّنَ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ
بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُونَ ﴿١٣﴾ لَا يُقَاتِلُونَكُمْ جَمِيعًا إِلَّا فِي قُرًى
مُّحَصَّنَةٍ أَوْ مِن وَرَاءِ جُدُرٍ ۚ بَأْسُهُم بَيْنَهُمْ شَدِيدٌ ۚ
تَحْسَبُهُمْ جَمِيعًا وَقُلُوبُهُمْ شَتَّىٰ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا
يَعْقِلُونَ ﴿١٤﴾ كَمَثَلِ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ قَرِيبًا ۖ ذَاقُوا وَبَالَ

أَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٥﴾ كَمَثَلِ الشَّيْطَانِ إِذْ قَالَ
لِلْإِنسَانِ اكْفُرْ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ إِنِّي بَرِيءٌ مِّنكَ إِنِّي أَخَافُ
اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦﴾ فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَا أَنَّهُمَا فِي النَّارِ خَالِدَيْنِ
ع فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ جَزَاءُ الظَّالِمِينَ ﴿١٧﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا
اللَّهَ وَلْتَنظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ
بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٨﴾ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا اللَّهَ فَأَنسَاهُمْ أَنفُسَهُمْ ۚ
أُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿١٩﴾ لَا يَسْتَوِي أَصْحَابُ النَّارِ وَأَصْحَابُ
الْجَنَّةِ ۚ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿٢٠﴾ لَوْ أَنزَلْنَا هَٰذَا الْقُرْآنَ
عَلَىٰ جَبَلٍ لَّرَأَيْتَهُ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللَّهِ ۚ وَ
تِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٢١﴾ هُوَ
اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۖ هُوَ
الرَّحْمَٰنُ الرَّحِيمُ ﴿٢٢﴾ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْمَلِكُ
الْقُدُّوسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ۚ
سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٢٣﴾ هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ
الْمُصَوِّرُ ۖ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ ۚ يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ
ع وَالْأَرْضِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٤﴾

سُوْرَةُ الْجُمُعَةِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ اِحْدٰى عَشَرَةَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ
الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿١﴾ هُوَ الَّذِيْ بَعَثَ فِي الْاُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ
يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۗ
وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢﴾ وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ
لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٣﴾ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ
يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٤﴾ مَثَلُ الَّذِيْنَ
حُمِّلُوا التَّوْرٰىةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوْهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ
اَسْفَارًا ۭ بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥﴾ قُلْ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ هَادُوْٓا اِنْ
زَعَمْتُمْ اَنَّكُمْ اَوْلِيَاۗءُ لِلّٰهِ مِنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ
اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٦﴾ وَلَا يَتَمَنَّوْنَهٗٓ اَبَدًۢا بِمَا قَدَّمَتْ
اَيْدِيْهِمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٧﴾ قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِيْ
تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَاِنَّهٗ مُلٰقِيْكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ

وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٨﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ ع
اٰمَنُوْٓا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى
ذِكْرِ اللّٰهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُوْنَ ﴿٩﴾ فَاِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي الْاَرْضِ
وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ
تُفْلِحُوْنَ ﴿١٠﴾ وَاِذَا رَاَوْا تِجَارَةً اَوْ لَهْوَۨا انْفَضُّوْٓا اِلَيْهَا وَتَرَكُوْكَ
قَاۗىِٕمًا ۭ قُلْ مَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ ۭ ع ١١
وَاللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿١١﴾

سُوْرَةُ التَّغَابُنِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ ثَمَانِ عَشَرَةَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ
الْحَمْدُ ۡ وَهُوَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١﴾ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ
فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢﴾
خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ

صُوَرَكُمْ وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ ۝٣ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ
وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ۚ وَاللّٰهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ
الصُّدُورِ ۝٤ أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَبْلُ فَذَاقُوا
وَبَالَ أَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝٥ ذٰلِكَ بِأَنَّهُ كَانَتْ
تَأْتِيهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالُوا أَبَشَرٌ يَهْدُونَنَا فَكَفَرُوا
وَتَوَلَّوْا وَّاسْتَغْنَى اللّٰهُ ۚ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيدٌ ۝٦ زَعَمَ الَّذِينَ
كَفَرُوا أَنْ لَنْ يُبْعَثُوا ۚ قُلْ بَلٰى وَرَبِّي لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ
لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ۚ وَذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيرٌ ۝٧ فَآمِنُوا بِاللّٰهِ
وَرَسُولِهِ وَالنُّورِ الَّذِي أَنْزَلْنَا ۚ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝٨
يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ۗ وَمَنْ
يُؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُدْخِلْهُ
جَنّٰتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ ذٰلِكَ
الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝٩ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيٰتِنَا أُولٰئِكَ
أَصْحٰبُ النَّارِ خٰلِدِينَ فِيهَا ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝١٠ مَا أَصَابَ
مِنْ مُصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللّٰهِ ۗ وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللّٰهِ يَهْدِ

قَلْبَهُ ۚ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝١١ وَأَطِيعُوا اللّٰهَ وَأَطِيعُوا
الرَّسُولَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَإِنَّمَا عَلٰى رَسُولِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِينُ ۝١٢
اللّٰهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝١٣
يٰأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ مِنْ أَزْوٰجِكُمْ وَأَوْلٰدِكُمْ عَدُوًّا
لَكُمْ فَاحْذَرُوهُمْ ۚ وَإِنْ تَعْفُوا وَتَصْفَحُوا وَتَغْفِرُوا فَإِنَّ
اللّٰهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝١٤ إِنَّمَا أَمْوٰلُكُمْ وَأَوْلٰدُكُمْ فِتْنَةٌ ۚ وَاللّٰهُ
عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ۝١٥ فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوا وَ
أَطِيعُوا وَأَنْفِقُوا خَيْرًا لِأَنْفُسِكُمْ ۗ وَمَنْ يُوقَ شُحَّ نَفْسِهِ
فَأُولٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝١٦ إِنْ تُقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا
يُضٰعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۚ وَاللّٰهُ شَكُورٌ حَلِيمٌ ۝١٧
عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهٰدَةِ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝١٨



سُوْرَةُ الْمُلْكِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ثَلٰثُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

تَبٰرَكَ الَّذِيْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرُۨ ۝
الَّذِيْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ
وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ ۝ الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ؕ مَا تَرٰى
فِيْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوُتٍ ؕ فَارْجِعِ الْبَصَرَ ۙ هَلْ تَرٰى مِنْ
فُطُوْرٍ ۝ ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ اِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا
وَّهُوَ حَسِيْرٌ ۝ وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ وَجَعَلْنٰهَا
رُجُوْمًا لِّلشَّيٰطِيْنِ وَاَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيْرِ ۝ وَلِلَّذِيْنَ
كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝ اِذَآ اُلْقُوْا فِيْهَا
سَمِعُوْا لَهَا شَهِيْقًا وَّهِيَ تَفُوْرُ ۝ تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ؕ كُلَّمَآ
اُلْقِيَ فِيْهَا فَوْجٌ سَاَلَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَذِيْرٌ ۝ قَالُوْا
بَلٰى قَدْ جَآءَنَا نَذِيْرٌ ۙ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ مِنْ
شَيْءٍ ۖۚ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ كَبِيْرٍ ۝ وَقَالُوْا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ اَوْ
نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِيْۤ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ۝ فَاعْتَرَفُوْا بِذَنْۢبِهِمْ ۚ فَسُحْقًا

6

لِّاَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ
مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝ وَاَسِرُّوْا قَوْلَكُمْ اَوِ اجْهَرُوْا بِهٖ ؕ اِنَّهٗ
عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝ اَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ؕ وَهُوَ اللَّطِيْفُ
الْخَبِيْرُ ۝ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ ذَلُوْلًا فَامْشُوْا فِيْ ع
مَنَاكِبِهَا وَكُلُوْا مِنْ رِّزْقِهٖ ؕ وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ ۝ ءَاَمِنْتُمْ مَّنْ
فِي السَّمَآءِ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمُ الْاَرْضَ فَاِذَا هِيَ تَمُوْرُ ۝ اَمْ
اَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَآءِ اَنْ يُّرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ؕ فَسَتَعْلَمُوْنَ
كَيْفَ نَذِيْرِ ۝ وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ
نَكِيْرِ ۝ اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صٰٓفّٰتٍ وَّيَقْبِضْنَ ؔۘ مَا يُمْسِكُهُنَّ
اِلَّا الرَّحْمٰنُ ؕ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍۢ بَصِيْرٌ ۝ اَمَّنْ هٰذَا الَّذِيْ هُوَ
جُنْدٌ لَّكُمْ يَنْصُرُكُمْ مِّنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ ؕ اِنِ الْكٰفِرُوْنَ اِلَّا فِيْ
غُرُوْرٍ ۝ اَمَّنْ هٰذَا الَّذِيْ يَرْزُقُكُمْ اِنْ اَمْسَكَ رِزْقَهٗ ۚ بَلْ
لَّجُّوْا فِيْ عُتُوٍّ وَّنُفُوْرٍ ۝ اَفَمَنْ يَّمْشِيْ مُكِبًّا عَلٰى وَجْهِهٖۤ اَهْدٰۤى
اَمَّنْ يَّمْشِيْ سَوِيًّا عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ قُلْ هُوَ الَّذِيْۤ
اَنْشَاَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْئِدَةَ ؕ قَلِيْلًا مَّا

تَشْكُرُوْنَ ﴿٢٣﴾ قُلْ هُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِي الْاَرْضِ وَ اِلَيْهِ
تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٥﴾
قُلْ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ وَاِنَّمَا اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢٦﴾ فَلَمَّا رَاَوْهُ
زُلْفَةً سِيْٓـَٔتْ وُجُوْهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَقِيْلَ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ
تَدَّعُوْنَ ﴿٢٧﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَهْلَكَنِيَ اللّٰهُ وَمَنْ مَّعِيَ اَوْ رَحِمَنَا
فَمَنْ يُّجِيْرُ الْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٨﴾ قُلْ هُوَ الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا
بِهٖ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٩﴾
قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَصْبَحَ مَآؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَّاْتِيْكُمْ بِمَآءٍ مَّعِيْنٍ ﴿٣٠﴾

سُوْرَةُ الْمُزَّمِّلِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ عِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰٓاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ﴿١﴾ قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٢﴾ نِّصْفَهٗٓ اَوِ انْقُصْ
مِنْهُ قَلِيْلًا ﴿٣﴾ اَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا ﴿٤﴾ اِنَّا
سَنُلْقِيْ عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيْلًا ﴿٥﴾ اِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ هِيَ اَشَدُّ وَطْاً وَّ
اَقْوَمُ قِيْلًا ﴿٦﴾ اِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيْلًا ﴿٧﴾ وَاذْكُرِ اسْمَ
رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ اِلَيْهِ تَبْتِيْلًا ﴿٨﴾ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَآ اِلٰهَ

اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا ﴿٩﴾ وَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاهْجُرْهُمْ
هَجْرًا جَمِيْلًا ﴿١٠﴾ وَذَرْنِيْ وَالْمُكَذِّبِيْنَ اُولِي النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ
قَلِيْلًا ﴿١١﴾ اِنَّ لَدَيْنَآ اَنْكَالًا وَّجَحِيْمًا ﴿١٢﴾ وَّطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَّ
عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٣﴾ يَوْمَ تَرْجُفُ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ
كَثِيْبًا مَّهِيْلًا ﴿١٤﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنَآ اِلَيْكُمْ رَسُوْلًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ
كَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ رَسُوْلًا ﴿١٥﴾ فَعَصٰى فِرْعَوْنُ
الرَّسُوْلَ فَاَخَذْنٰهُ اَخْذًا وَّبِيْلًا ﴿١٦﴾ فَكَيْفَ تَتَّقُوْنَ اِنْ
كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيْبَا ﴿١٧﴾ السَّمَآءُ مُنْفَطِرٌ
بِهٖ كَانَ وَعْدُهٗ مَفْعُوْلًا ﴿١٨﴾ اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ
اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿١٩﴾ اِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ اَنَّكَ تَقُوْمُ اَدْنٰى مِنْ ثُلُثَيِ
الَّيْلِ وَنِصْفَهٗ وَثُلُثَهٗ وَطَآئِفَةٌ مِّنَ الَّذِيْنَ مَعَكَ
وَاللّٰهُ يُقَدِّرُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ عَلِمَ اَنْ لَّنْ تُحْصُوْهُ فَتَابَ
عَلَيْكُمْ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْاٰنِ عَلِمَ اَنْ سَيَكُوْنُ
مِنْكُمْ مَّرْضٰى وَاٰخَرُوْنَ يَضْرِبُوْنَ فِي الْاَرْضِ يَبْتَغُوْنَ
مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاٰخَرُوْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۙ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَقْرِضُوا
اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا ؕ وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ
اللّٰهِ هُوَ خَيْرًا وَّاَعْظَمَ اَجْرًا ؕ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٠﴾

سُوْرَةُ الْمُدَّثِّرِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ سِتٌّ وَّخَمْسُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰۤاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ﴿١﴾ قُمْ فَاَنْذِرْ ﴿٢﴾ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ﴿٣﴾ وَثِيَابَكَ
فَطَهِّرْ ﴿٤﴾ وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ﴿٥﴾ وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ ﴿٦﴾ وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ﴿٧﴾
فَاِذَا نُقِرَ فِي النَّاقُوْرِ ﴿٨﴾ فَذٰلِكَ يَوْمَئِذٍ يَّوْمٌ عَسِيْرٌ ﴿٩﴾ عَلَى
الْكٰفِرِيْنَ غَيْرُ يَسِيْرٍ ﴿١٠﴾ ذَرْنِيْ وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيْدًا ﴿١١﴾ وَّجَعَلْتُ
لَهٗ مَالًا مَّمْدُوْدًا ﴿١٢﴾ وَّبَنِيْنَ شُهُوْدًا ﴿١٣﴾ وَّمَهَّدْتُّ لَهٗ تَمْهِيْدًا ﴿١٤﴾
ثُمَّ يَطْمَعُ اَنْ اَزِيْدَ ﴿١٥﴾ كَلَّا ؕ اِنَّهٗ كَانَ لِاٰيٰتِنَا عَنِيْدًا ﴿١٦﴾
سَاُرْهِقُهٗ صَعُوْدًا ﴿١٧﴾ اِنَّهٗ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ﴿١٨﴾ فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ﴿١٩﴾
ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ﴿٢٠﴾ ثُمَّ نَظَرَ ﴿٢١﴾ ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ﴿٢٢﴾ ثُمَّ
اَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ﴿٢٣﴾ فَقَالَ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا سِحْرٌ يُّؤْثَرُ ﴿٢٤﴾ اِنْ هٰذَاۤ

اِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ﴿٢٥﴾ سَاُصْلِيْهِ سَقَرَ ﴿٢٦﴾ وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا سَقَرُ ﴿٢٧﴾
لَا تُبْقِيْ وَلَا تَذَرُ ﴿٢٨﴾ لَوَّاحَةٌ لِّلْبَشَرِ ﴿٢٩﴾ عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ﴿٣٠﴾ وَمَا
جَعَلْنَاۤ اَصْحٰبَ النَّارِ اِلَّا مَلٰٓئِكَةً ۪ وَّمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ اِلَّا
فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۙ لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَ
يَزْدَادَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِيْمَانًا وَّلَا يَرْتَابَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ
وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۙ وَلِيَقُوْلَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّ
الْكٰفِرُوْنَ مَاذَاۤ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ؕ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ
مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَا يَعْلَمُ جُنُوْدَ رَبِّكَ
اِلَّا هُوَ ؕ وَمَا هِيَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْبَشَرِ ﴿٣١﴾ كَلَّا وَالْقَمَرِ ﴿٣٢﴾ وَالَّيْلِ
اِذْ اَدْبَرَ ﴿٣٣﴾ وَالصُّبْحِ اِذَاۤ اَسْفَرَ ﴿٣٤﴾ اِنَّهَا لَاِحْدَى الْكُبَرِ ﴿٣٥﴾
نَذِيْرًا لِّلْبَشَرِ ﴿٣٦﴾ لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّتَقَدَّمَ اَوْ يَتَاَخَّرَ ﴿٣٧﴾
كُلُّ نَفْسٍۢ بِمَا كَسَبَتْ رَهِيْنَةٌ ﴿٣٨﴾ اِلَّاۤ اَصْحٰبَ الْيَمِيْنِ ﴿٣٩﴾
فِيْ جَنّٰتٍ ۛ يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿٤٠﴾ عَنِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٤١﴾ مَا سَلَكَكُمْ فِيْ سَقَرَ ﴿٤٢﴾
قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ ﴿٤٣﴾ وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِيْنَ ﴿٤٤﴾
وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآئِضِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ﴿٤٦﴾

حَتّٰۤى اَتٰىنَا الْيَقِيْنُ ٤٧ فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشّٰفِعِيْنَ ٤٨ فَمَا لَهُمْ
عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ ٤٩ كَاَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ٥٠
فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ٥١ بَلْ يُرِيْدُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّؤْتٰى
صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ٥٢ كَلَّا بَلْ لَّا يَخَافُوْنَ الْاٰخِرَةَ ٥٣ كَلَّاۤ اِنَّهٗ
تَذْكِرَةٌ ٥٤ فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ٥٥ وَمَا يَذْكُرُوْنَ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَآءَ
اللّٰهُ هُوَ اَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ٥٦

سُوْرَةُ النَّبَاِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ اَرْبَعُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ ١ عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيْمِ ٢ الَّذِيْ هُمْ فِيْهِ
مُخْتَلِفُوْنَ ٣ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ٤ ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ٥ اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ
مِهٰدًا ٦ وَّالْجِبَالَ اَوْتَادًا ٧ وَّخَلَقْنٰكُمْ اَزْوَاجًا ٨ وَّجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ
سُبَاتًا ٩ وَّجَعَلْنَا الَّيْلَ لِبَاسًا ١٠ وَّجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ١١ وَّبَنَيْنَا
فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ١٢ وَّجَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا ١٣ وَّاَنْزَلْنَا مِنَ
الْمُعْصِرٰتِ مَآءً ثَجَّاجًا ١٤ لِّنُخْرِجَ بِهٖ حَبًّا وَّنَبَاتًا ١٥ وَّجَنّٰتٍ
اَلْفَافًا ١٦ اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيْقَاتًا ١٧ يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ

فَتَاْتُوْنَ اَفْوَاجًا ١٨ وَّفُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ اَبْوَابًا ١٩ وَّسُيِّرَتِ
الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ٢٠ اِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ٢١
لِّلطّٰغِيْنَ مَاٰبًا ٢٢ لّٰبِثِيْنَ فِيْهَاۤ اَحْقَابًا ٢٣ لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا بَرْدًا
وَّلَا شَرَابًا ٢٤ اِلَّا حَمِيْمًا وَّغَسَّاقًا ٢٥ جَزَآءً وِّفَاقًا ٢٦ اِنَّهُمْ كَانُوْا
لَا يَرْجُوْنَ حِسَابًا ٢٧ وَّكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كِذَّابًا ٢٨ وَكُلَّ شَيْءٍ
اَحْصَيْنٰهُ كِتٰبًا ٢٩ فَذُوْقُوْا فَلَنْ نَّزِيْدَكُمْ اِلَّا عَذَابًا ٣٠ اِنَّ
لِلْمُتَّقِيْنَ مَفَازًا ٣١ حَدَآئِقَ وَاَعْنَابًا ٣٢ وَّكَوَاعِبَ اَتْرَابًا ٣٣ وَّكَاْسًا
دِهَاقًا ٣٤ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا كِذّٰبًا ٣٥ جَزَآءً مِّنْ رَّبِّكَ
عَطَآءً حِسَابًا ٣٦ رَّبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمٰنِ
لَا يَمْلِكُوْنَ مِنْهُ خِطَابًا ٣٧ يَوْمَ يَقُوْمُ الرُّوْحُ وَالْمَلٰٓئِكَةُ صَفًّا لَّا
يَتَكَلَّمُوْنَ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ٣٨ ذٰلِكَ
الْيَوْمُ الْحَقُّ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ مَاٰبًا ٣٩ اِنَّاۤ
اَنْذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيْبًا يَّوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ
وَيَقُوْلُ الْكٰفِرُ يٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ تُرٰبًا ٤٠

سُورَةُ الْفَجْرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَلٰثُونَ اٰيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالْفَجْرِ ﴿١﴾ وَلَيَالٍ عَشْرٍ ﴿٢﴾ وَّالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ﴿٣﴾ وَالَّيْلِ اِذَا يَسْرِ ﴿٤﴾
هَلْ فِيْ ذٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِيْ حِجْرٍ ﴿٥﴾ اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ
بِعَادٍ ﴿٦﴾ اِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ﴿٧﴾ الَّتِيْ لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ﴿٨﴾
وَثَمُوْدَ الَّذِيْنَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ﴿٩﴾ وَفِرْعَوْنَ ذِي الْاَوْتَادِ ﴿١٠﴾
الَّذِيْنَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ﴿١١﴾ فَاَكْثَرُوْا فِيْهَا الْفَسَادَ ﴿١٢﴾ فَصَبَّ عَلَيْهِمْ
رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ ﴿١٣﴾ اِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ﴿١٤﴾ فَاَمَّا الْاِنْسَانُ
اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ رَبُّهٗ فَاَكْرَمَهٗ وَنَعَّمَهٗ ۙ فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ اَكْرَمَنِ ﴿١٥﴾
وَاَمَّآ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهٗ ۙ فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ اَهَانَنِ ﴿١٦﴾
كَلَّا بَلْ لَّا تُكْرِمُوْنَ الْيَتِيْمَ ﴿١٧﴾ وَلَا تَحٰٓضُّوْنَ عَلٰى طَعَامِ
الْمِسْكِيْنِ ﴿١٨﴾ وَتَاْكُلُوْنَ التُّرَاثَ اَكْلًا لَّمًّا ﴿١٩﴾ وَّتُحِبُّوْنَ الْمَالَ حُبًّا
جَمًّا ﴿٢٠﴾ كَلَّآ اِذَا دُكَّتِ الْاَرْضُ دَكًّا دَكًّا ﴿٢١﴾ وَّجَآءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ
صَفًّا صَفًّا ﴿٢٢﴾ وَجِايْٓءَ يَوْمَئِذٍۢ بِجَهَنَّمَ ۙ يَوْمَئِذٍ يَّتَذَكَّرُ
الْاِنْسَانُ وَاَنّٰى لَهُ الذِّكْرٰى ﴿٢٣﴾ يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ قَدَّمْتُ

لِحَيَاتِيْ ﴿٢٤﴾ فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُعَذِّبُ عَذَابَهٗٓ اَحَدٌ ﴿٢٥﴾ وَّلَا يُوْثِقُ وَثَاقَهٗٓ
اَحَدٌ ﴿٢٦﴾ يٰٓاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ﴿٢٧﴾ ارْجِعِيْٓ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً
مَّرْضِيَّةً ﴿٢٨﴾ فَادْخُلِيْ فِيْ عِبٰدِيْ ﴿٢٩﴾ وَادْخُلِيْ جَنَّتِيْ ﴿٣٠﴾ ع

سُورَةُ الشَّمْسِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ خَمْسَ عَشْرَةَ اٰيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالشَّمْسِ وَضُحٰىهَا ﴿١﴾ وَالْقَمَرِ اِذَا تَلٰىهَا ﴿٢﴾ وَالنَّهَارِ اِذَا جَلّٰىهَا ﴿٣﴾
وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰىهَا ﴿٤﴾ وَالسَّمَآءِ وَمَا بَنٰىهَا ﴿٥﴾ وَالْاَرْضِ وَمَا طَحٰىهَا ﴿٦﴾
وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰىهَا ﴿٧﴾ فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا وَتَقْوٰىهَا ﴿٨﴾ قَدْ اَفْلَحَ
مَنْ زَكّٰىهَا ﴿٩﴾ وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰىهَا ﴿١٠﴾ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ
بِطَغْوٰىهَآ ﴿١١﴾ اِذِ انْۢبَعَثَ اَشْقٰىهَا ﴿١٢﴾ فَقَالَ لَهُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ
نَاقَةَ اللّٰهِ وَسُقْيٰهَا ﴿١٣﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَعَقَرُوْهَا ۙ فَدَمْدَمَ
عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذَنْۢبِهِمْ فَسَوّٰىهَا ﴿١٤﴾ وَلَا يَخَافُ عُقْبٰهَا ﴿١٥﴾ ع

سُوْرَةُ اللَّيْلِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ إِحْدٰى وَعِشْرُوْنَ اٰيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالَّيْلِ إِذَا يَغْشٰى ۝١ وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلّٰى ۝٢ وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ
وَالْأُنْثٰىٓ ۝٣ إِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى ۝٤ فَأَمَّا مَنْ أَعْطٰى وَاتَّقٰى ۝٥ وَ
صَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ۝٦ فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْيُسْرٰى ۝٧ وَأَمَّا مَنْ بَخِلَ
وَاسْتَغْنٰى ۝٨ وَكَذَّبَ بِالْحُسْنٰى ۝٩ فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْعُسْرٰى ۝١٠ وَمَا
يُغْنِيْ عَنْهُ مَالُهٗٓ إِذَا تَرَدّٰى ۝١١ إِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدٰى ۝١٢ وَإِنَّ لَنَا
لَلْاٰخِرَةَ وَالْأُوْلٰى ۝١٣ فَأَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظّٰى ۝١٤ لَا يَصْلٰىهَآ إِلَّا
الْأَشْقَى ۝١٥ الَّذِيْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۝١٦ وَسَيُجَنَّبُهَا الْأَتْقَى ۝١٧ الَّذِيْ
يُؤْتِيْ مَالَهٗ يَتَزَكّٰى ۝١٨ وَمَا لِأَحَدٍ عِنْدَهٗ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰٓى ۝١٩
إِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْأَعْلٰى ۝٢٠ وَلَسَوْفَ يَرْضٰى ۝٢١

سُوْرَةُ الضُّحٰى مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ إِحْدٰى عَشْرَةَ اٰيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالضُّحٰى ۝١ وَالَّيْلِ إِذَا سَجٰى ۝٢ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ۝٣ وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ
لَّكَ مِنَ الْأُوْلٰى ۝٤ وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى ۝٥ أَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا

فَاٰوٰى ۝٦ وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى ۝٧ وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَأَغْنٰى ۝٨ فَأَمَّا
الْيَتِيْمَ فَلَا تَقْهَرْ ۝٩ وَأَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ ۝١٠ وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ
فَحَدِّثْ ۝١١

سُوْرَةُ الْإِنْشِرَاحِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ثَمَانِ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

أَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۝١ وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ۝٢ الَّذِيْٓ
أَنْقَضَ ظَهْرَكَ ۝٣ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ۝٤ فَإِنَّ مَعَ
الْعُسْرِ يُسْرًا ۝٥ إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝٦ فَإِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ۝٧
وَإِلٰى رَبِّكَ فَارْغَبْ ۝٨

سُوْرَةُ التِّيْنِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ثَمَانِ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ ۝١ وَطُوْرِ سِيْنِيْنَ ۝٢ وَهٰذَا الْبَلَدِ
الْأَمِيْنِ ۝٣ لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِيْٓ أَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ ۝٤

ثُمَّ رَدَدْنٰهُ اَسْفَلَ سٰفِلِيْنَ ۙ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
فَلَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ؕ فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّيْنِ ؕ
اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَحْكَمِ الْحٰكِمِيْنَ ۚ

سُوْرَةُ الْعَلَقِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ تِسْعَ عَشْرَةَ اٰيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِيْ خَلَقَ ۚ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۚ
اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ ۙ الَّذِيْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۙ عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ
يَعْلَمْ ؕ كَلَّاۤ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَيَطْغٰۤى ۙ اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى ؕ اِنَّ
اِلٰى رَبِّكَ الرُّجْعٰى ؕ اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يَنْهٰى ۙ عَبْدًا اِذَا صَلّٰى ؕ
اَرَءَيْتَ اِنْ كَانَ عَلَى الْهُدٰۤى ۙ اَوْ اَمَرَ بِالتَّقْوٰى ؕ اَرَءَيْتَ
اِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ؕ اَلَمْ يَعْلَمْ بِاَنَّ اللّٰهَ يَرٰى ؕ كَلَّا لَئِنْ لَّمْ
يَنْتَهِ ۙ۬ لَنَسْفَعًۢا بِالنَّاصِيَةِ ۙ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ۚ
فَلْيَدْعُ نَادِيَهٗ ۙ سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ۙ كَلَّا ؕ لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ
وَاقْتَرِبْ ۩

سُوْرَةُ الْقَدْرِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسُ اٰيٰتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ ۚ وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ؕ لَيْلَةُ
الْقَدْرِ ۙ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ ؕ تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ فِيْهَا
بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ۚ مِنْ كُلِّ اَمْرٍ ۛ ۙ سَلٰمٌ ۛ هِيَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ۧ

سُوْرَةُ الْبَيِّنَةِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ ثَمَانِيْ اٰيٰتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ
مُنْفَكِّيْنَ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ۙ رَسُوْلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتْلُوْا
صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ۙ فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ؕ وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا
الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ؕ وَمَاۤ اُمِرُوْۤا اِلَّا
لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۙ۬ حُنَفَآءَ وَيُقِيْمُوا
الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوا الزَّكٰوةَ وَذٰلِكَ دِيْنُ الْقَيِّمَةِ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ اُولٰۗىِٕكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ۝۶ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ اُولٰۗىِٕكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ۝۷ جَزَاۗؤُهُمْ
عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ۭ ذٰلِكَ
لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهٗ ۝۸

سُوْرَةُ الزِّلْزَالِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ ثَمَانِيْ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زِلْزَالَهَا ۝۱ وَاَخْرَجَتِ الْاَرْضُ اَثْقَالَهَا ۝۲ وَ
قَالَ الْاِنْسَانُ مَا لَهَا ۝۳ يَوْمَىِٕذٍ تُحَدِّثُ اَخْبَارَهَا ۝۴
بِاَنَّ رَبَّكَ اَوْحٰى لَهَا ۝۵ يَوْمَىِٕذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ اَشْتَاتًا ڏ
لِّيُرَوْا اَعْمَالَهُمْ ۝۶ فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ۝۷
وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ۝۸

سُوْرَةُ الْعٰدِيٰتِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ اِحْدٰى عَشْرَةَ اٰيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ۝۱ فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ۝۲ فَالْمُغِيْرٰتِ صُبْحًا ۝۳
فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ۝۴ فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ۝۵ اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ
لَكَنُوْدٌ ۝۶ وَاِنَّهٗ عَلٰي ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ۝۷ وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ
لَشَدِيْدٌ ۝۸ اَفَلَا يَعْلَمُ اِذَا بُعْثِرَ مَا فِي الْقُبُوْرِ ۝۹ وَحُصِّلَ
مَا فِي الصُّدُوْرِ ۝۱۰ اِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَىِٕذٍ لَّخَبِيْرٌ ۝۱۱

سُوْرَةُ الْقَارِعَةِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ اِحْدٰى عَشْرَةَ اٰيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْقَارِعَةُ ۝۱ مَا الْقَارِعَةُ ۝۲ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْقَارِعَةُ ۝۳ يَوْمَ
يَكُوْنُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوْثِ ۝۴ وَتَكُوْنُ
الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ ۝۵ فَاَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ ۝۶
فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۝۷ وَاَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ ۝۸
فَاُمُّهٗ هَاوِيَةٌ ۝۹ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا هِيَهْ ۝۱۰ نَارٌ حَامِيَةٌ ۝۱۱

سُوْرَةُ التَّكَاثُرِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ثَمَانُ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ ۝١ حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ۝٢ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝٣
ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝٤ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ عِلْمَ
الْيَقِيْنِ ۝٥ لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ۝٦ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ ۝٧
ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ۝٨ ع ١/٢٧

سُوْرَةُ الْعَصْرِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ثَلٰثُ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالْعَصْرِ ۝١ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ۝٢ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا
بِالصَّبْرِ ۝٣ ع ١/٢٨

7

سُوْرَةُ الْهُمَزَةِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ تِسْعُ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ۝١ الَّذِيْ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ ۝٢
يَحْسَبُ اَنَّ مَالَهٗ اَخْلَدَهٗ ۝٣ كَلَّا لَيُنْۢبَذَنَّ فِي الْحُطَمَةِ ۝٤
وَمَا اَدْرٰىكَ مَا الْحُطَمَةُ ۝٥ نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ۝٦ الَّتِيْ تَطَّلِعُ
عَلَى الْاَفْـِٕدَةِ ۝٧ اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ۝٨ فِيْ عَمَدٍ
مُّمَدَّدَةٍ ۝٩ ع ١/٢٩

سُوْرَةُ الْفِيْلِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسُ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ۝١ اَلَمْ
يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِيْ تَضْلِيْلٍ ۝٢ وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا
اَبَابِيْلَ ۝٣ تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ۝٤ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ
مَّاْكُوْلٍ ۝٥ ع ١/٣٠

سُوْرَةُ قُرَيْشٍ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ اَرْبَعُ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ۝ اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ۝ فَلْيَعْبُدُوْا
رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ۝ الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ ۙ وَّاٰمَنَهُمْ
مِّنْ خَوْفٍ ۝

سُوْرَةُ الْمَاعُوْنِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ سَبْعُ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ۝ فَذٰلِكَ الَّذِيْ
يَدُعُّ الْيَتِيْمَ ۝ وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۝ فَوَيْلٌ
لِّلْمُصَلِّيْنَ ۝ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ
هُمْ يُرَآءُوْنَ ۝ وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ۝

سُوْرَةُ الْكَوْثَرِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ثَلٰثُ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِنَّآ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ۝ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ۝
اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ ۝

سُوْرَةُ الْكٰفِرُوْنَ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ سِتُّ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۝ لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۝ وَلَآ اَنْتُمْ
عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۝ وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۝ وَلَآ اَنْتُمْ
عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۝ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ۝

سُوْرَةُ النَّصْرِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ ثَلٰثُ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ۝ وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ
دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ۝ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ۚ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ۝

سُوْرَةُ اللَّهَبِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسُ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

تَبَّتْ يَدَآ اَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ۝ مَآ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ ۝
سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۝ وَّامْرَاَتُهٗ ۚ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۝
فِيْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ۝

سُوْرَةُ الْاِخْلَاصِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ اَرْبَعُ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۝

وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝

سُوْرَةُ الْفَلَقِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسُ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝ وَمِنْ شَرِّ
غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۝ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِي الْعُقَدِ ۝ وَمِنْ
شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۝

سُوْرَةُ النَّاسِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ سِتُّ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝ مَلِكِ النَّاسِ ۝ اِلٰهِ النَّاسِ ۝ مِنْ
شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۝ الْخَنَّاسِ ۝ الَّذِيْ يُوَسْوِسُ فِيْ صُدُوْرِ
النَّاسِ ۝ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝

سُوْرَةُ الْفَاتِحَةِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ سَبْعُ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ مٰلِكِ يَوْمِ
الدِّيْنِ ۝ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ
الْمُسْتَقِيْمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۝ غَيْرِ
الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अस्नाद अस्माए हुस्ना

बारी तआ़ला अज़्ज़ इस्मुहू

क़ुरआन मजीद में है: بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا

(अल्-अअ़राफ़-180)

तर्जमा: यानी वासते अल्लाह के हैं सब ख़ास्से (अच्छे) नाम, तो पुकारो तुम अपने परवरदिगार को इन्हीं नामों से।

हदीस शरीफ़ में आया है :

عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ اَنَّهٗ قَالَ قَالَ
رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ لِلّٰهِ تِسْعَةً وَّ
تِسْعِيْنَ اِسْمًا مَّنْ اَحْصٰهَا دَخَلَ الْجَنَّةَ ط

रिवायत है हज़रत अबू-हुरैरा (रज़ि०) से कि कहा उन्हों ने कि फ़रमाया रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कि बेशक अल्लाह तआ़ला के 99 नाम हैं, जो कोई इनको याद करे और पढे और उसपर अमल करे जन्नत में दाख़िल होगा। रिवायत किया इस हदीस को इमाम बुख़ारी और इमाम मुस्लिम वग़ैरा ने। और इन अस्माए मुबारक के बरकात बहुत हैं।

अस्माउल् हुस्ना

बारी तआ़ला अ़ज़्ज़ इस्मुहू

बारी तआ़ला अ़ज़्ज़ इस्मुहू के पाक नाम

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान निहायत रहम वाले हैं

هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ جَلَّ جَلَالُهٗ

वह (ज़ाते पाक) अल्लाह है नहीं कोई माबूद मगर वह, बहुत रहम करनेवाला, बड़ा है मर्तबा उसका

اَلرَّحِيْمُ اَلْمَلِكُ اَلْقُدُّوْسُ اَلسَّلَامُ اَلْمُؤْمِنُ

अमन देने वाला, सलामत रखने वाला, पाक, बादशाह, मेहरबान,

اَلْمُهَيْمِنُ اَلْعَزِيْزُ اَلْجَبَّارُ اَلْمُتَكَبِّرُ اَلْخَالِقُ

पैदा करने वाला, बड़ाई वाला, नुक़सान को पूरा करने वाला, ग़ालिब निगहबान,

اَلْبَارِئُ اَلْمُصَوِّرُ اَلْغَفَّارُ اَلْقَهَّارُ اَلْوَهَّابُ

बख्शने वाला, ज़बरदस्त, बख्शने वाला सूरत बनाने वाला, आ़लम का बनाने वाला,

اَلرَّزَّاقُ اَلْفَتَّاحُ اَلْعَلِيْمُ اَلْقَابِضُ اَلْبَاسِطُ

खोलने वाला, बन्द करने वाला, ,जानने वाला, खोलने वाला, रोज़ी देने वाला,

اَلْخَافِضُ الرَّافِعُ اَلْمُعِزُّ اَلْمُذِلُّ اَلسَّمِيْعُ

सुनने वाला, ख़्वार करने वाला, इज़्ज़त देने वाला, उठाने वाला, गिराने वाला,

اَلْبَصِيْرُ اَلْحَكَمُ اَلْعَدْلُ اَللَّطِيْفُ اَلْخَبِيْرُ

ख़बर रखने वाला, बारीक बीं, इन्साफ़ करने वाला, हाकिम, देखने वाला,

नोट तमाम नामों के साथ जल्ल जलालुहू का पढ़ना बेहतर है न पढ़े तो कोई हरज नहीं।

اَلْحَلِيْمُ اَلْعَظِيْمُ اَلْغَفُوْرُ اَلشَّكُوْرُ اَلْعَلِىُّ

बुलन्द, शुक्र को पसंद करने वाला, बख्शने वाला, बुज़ुर्ग, बुर्दबार,

اَلْكَبِيْرُ اَلْحَفِيْظُ اَلْمُقِيْتُ اَلْحَسِيْبُ اَلْجَلِيْلُ

बुज़ुर्ग, काफ़ी, कुव्वत देने वाला, निगहबान बड़ा,

اَلْكَرِيْمُ الرَّقِيْبُ اَلْمُجِيْبُ اَلْوَاسِعُ اَلْحَكِيْمُ

हिकमत वाला, फराख़ी देने वाला, कबूल करने वाला, निगरां, सख़ी,

اَلْوَدُوْدُ اَلْمَجِيْدُ اَلْبَاعِثُ اَلشَّهِيْدُ اَلْحَقُّ

सच्चा, गवाह, उठाने वाला, बुज़ुर्ग, दोस्त,

اَلْوَكِيْلُ اَلْقَوِىُّ اَلْمَتِيْنُ اَلْوَلِىُّ اَلْحَمِيْدُ

क़ाबिले तारीफ़, दोस्त, मज़बूत ताक़त वाला, कार-साज़,

اَلْمُحْصِى اَلْمُبْدِئُ اَلْمُعِيْدُ اَلْمُحْيِى اَلْمُمِيْتُ

मारने वाला, ज़िन्दा करनेवाला दोबारा पैदा करनेवाला पहले पैदा करने वाला, घेरनेवाला,

اَلْحَىُّ اَلْقَيُّوْمُ اَلْوَاجِدُ اَلْمَاجِدُ اَلْوَاحِدُ

एक, बड़ी शान वाला, पाने वाला, हमेशा रहने वाला, ज़िन्दा,

اَلْاَحَدُ اَلصَّمَدُ اَلْقَادِرُ اَلْمُقْتَدِرُ اَلْمُقَدِّمُ

पहला, साहिब कुदरत का, कुदरत वाला, बे नियाज़, अकेला,

اَلْمُؤَخِّرُ اَلْاَوَّلُ اَلْاٰخِرُ اَلظَّاهِرُ اَلْبَاطِنُ

पोशीदा, ज़ाहिर, आख़िर, अव्वल, पिछला,

اَلْوَالِى اَلْمُتَعَالِ اَلْبَرُّ اَلتَّوَّابُ اَلْمُنْعِمُ

इनाम देने वाला, तौबा कबूल करने वाला, एहसान करने वाला, ऊँचा, कार-साज़,

اَلْمُنْتَقِمُ اَلْعَفُوُّ اَلرَّءُوْفُ مَالِكُ الْمُلْكِ

मालिक मुल्क का, बहुत मेहरबान, माफ करने वाला, बदला लेने वाला,

ذُو الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ اَلرَّبُّ اَلْمُقْسِطُ

इंसाफ करने वाला, पालने वाला, बुज़ुर्गी और बख़्शिश का मालिक,

اَلْجَامِعُ اَلْغَنِيُّ اَلْمُغْنِيْ اَلْمُعْطِيْ

देने वाला, दौलतमंद करने वाला, बे परवाह, जमा करने वाला,

اَلْمَانِعُ اَلضَّآرُّ اَلنَّافِعُ اَلنُّوْرُ

रोशनी वाला, नफ़अ पहुँचाने वाला, नुक़सान पहुँचाने वाला, रोकने वाला,

اَلْهَادِیْ اَلْبَدِیْعُ اَلْبَاقِیْ اَلْوَارِثُ

मालिक, हमेशा रहने वाला, नया पैदा करने वाला, राह दिखाने वाला,

اَلرَّشِیْدُ اَلصَّبُوْرُ اَلَّذِیْ لَیْسَ کَمِثْلِهٖ

वह ज़ात कि नहीं उसके, बड़ा तहम्मुल वाला, रास्ता बताने वाला,

شَیْءٌ وَّهُوَ السَّمِیْعُ اَلْبَصِیْرُ

देखने वाला, और वह है सुनने वाला, जैसा कोई

غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَیْكَ الْمَصِیْرُ

और तेरी तरफ पलटना है। तेरी बख़्शिश चाहिए ऐ रब हमारे।

نِعْمَ الْمَوْلٰی وَنِعْمَ النَّصِیْرُ سَمِیْعٌ بَصِیْرٌ

[illegible] वाला सुनने वाला, और [illegible] मददगार। क्या [illegible]

عَلِیْمٌ قَدِیْرٌ مُرِیْدٌ مُتَکَلِّمٌ

कलाम करने वाला, इरादे वाला, कुदरत वाला, जानने वाला,



नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के मुक़द्दस नाम

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

जो शख़्स इन मुक़द्दस नामों को हर रात सोने से पहले वुज़ू करके, एहतिराम, शौक़ व मुहब्बत से सरवरे दोआ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के मौजूद होने का ध्यान करके पढ़ा करे और हर मुक़द्दस नाम से पहले "सय्यिदुना" और हर मुक़द्दस नाम के बाद "सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम" भी ज़रूर कह लिया करे, हक़ तआ़ला शानुहू से उम्मीद है कि अपने महबूबे यकता और हबीबे बेमिसाल के जमाले जहाँ-आरा से मुशर्रफ़ फ़रमा देगा।

❋

अस्माए मुक़द्दसा

हज़रत नबी-ए-करीम सल्ल०

हज़रत नबी-ए-करीम सल्ल० के मुक़द्दस नाम

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

مُحَمَّدٌ اَحْمَدُ حَامِدٌ مَحْمُوْدٌ قَاسِمٌ

बांटने वाला, सराहा गया, सराहने वाला, सबसे ज्यादा हम्द करने वाला, [illegible] वाला

عَاقِبٌ فَاتِحٌ خَاتِمٌ حَاشِرٌ مَاحٍ

मिटाने वाला, उठाने वाला, ख़त्म करने वाला, खोलने वाला, पीछे आने वाला,

دَاعٍ سِرَاجٌ رَشِيْدٌ مُنِيْرٌ بَشِيْرٌ

खुशख़बरी देने वाला, नूर वाला, नेक, चिराग़, बुलाने वाला,

نَذِيْرٌ هَادٍ مُهْدٍ رَسُوْلٌ نَبِيٌّ

नबी, रसूल, हिदायत वाला, हादी, डराने वाला

طٰهٰ يٰسٓ مُزَّمِّلٌ مُدَّثِّرٌ شَفِيْعٌ

शिफ़ाअत वाला, चादर ओढ़ने वाले, कम्ली वाले, यासीन, ताहा,

خَلِيْلٌ كَلِيْمٌ حَبِيْبٌ مُصْطَفٰى مُرْتَضٰى

[illegible] हुआ, चुना हुआ, दोस्त, कलाम करने वाला, दोस्त जानी,

مُجْتَبٰى مُخْتَارٌ نَاصِرٌ مَنْصُوْرٌ قَائِمٌ

क़ायम, मदद दिया गया, मदद देने वाला, पसन्दीदा, चुना हुआ,

नोट — हर एक नाम के बाद दुरूद शरीफ़ पढ़ना ज़रूरी है।

حَافِظٌ شَهِيْدٌ عَادِلٌ حَكِيْمٌ نُوْرٌ

नूर, हिकमत वाला, इन्साफ़ वाला, गवाह, निगहबान

حُجَّةٌ بُرْهَانٌ اَبْطَحِيٌّ مُؤْمِنٌ مُطِيْعٌ

ताबेदार, ईमान वाला, अब्तह वाला, बुरहान, दलील

مُذَكِّرٌ وَاعِظٌ اَمِيْنٌ مَدَنِيٌّ عَرَبِيٌّ

अरब वाला, मदीने वाला, अमानत दार, वाइज़, नसीहत करने वाला

هَاشِمِيٌّ تِهَامِيٌّ حِجَازِيٌّ نِزَارِيٌّ قُرَشِيٌّ

क़ुरैशी, मुज़र बिन निज़ार की औलाद से, हिजाज़ वाला, तिहामी, हाशमी

مُضَرِيٌّ اُمِّيٌّ عَزِيْزٌ حَرِيْصٌ رَءُوْفٌ

नर्म दिल, हिर्स करनेवाला (लोगों के ईमान के लिए) ग़ालिब, अन पढ़, [illegible] वाला

رَحِيْمٌ يَتِيْمٌ غَنِيٌّ جَوَّادٌ فَتَّاحٌ

फ़तह करने वाला, सख़ी, बे परवाह, यतीम, रहम वाला

عَالِمٌ طَيِّبٌ طَاهِرٌ مُطَهِّرٌ خَطِيْبٌ

वाइज़, पाकीज़ा, पाक करने वाला, पाक, जानने वाला

فَصِيْحٌ سَيِّدٌ مُنْتَقًى اِمَامٌ بَآرٌّ

नेक, पेशवा, पाक करने वाला, सरदार, अच्छे बयान वाला,

شَافٍ مُتَوَسِّطٌ سَابِقٌ مُقْتَصِدٌ مَهْدِيٌّ

हिदायत वाला, बीच की चाल चलने वाला, आगे जाने वाला, बीच का, शिफ़ा देनेवाला

حَقٌّ مُبِيْنٌ اَوَّلٌ اٰخِرٌ ظَاهِرٌ

खुला, पिछला, अव्वल, ज़ाहिर, सच्चा

بَاطِنٌ	رَحْمَةٌ	مُحَلِّلٌ	مُحَرِّمٌ
छुपा हुआ,	रहमत,	हलाल करने वाला,	हराम करने वाला,
اٰمِرٌ	صَادِقٌ	مُصَدِّقٌ	نَاطِقٌ
हुक्म देने वाला,	सच्चा,	सच बोलने वाला,	बोलने वाला,
صَاحِبٌ	مَكِّيٌّ	نَاهٍ	شَكُوْرٌ
साहिब,	मक्के वाला,	रोकने वाला,	शुक्र गुज़ार,
قَرِيْبٌ	مُنِيْبٌ	مُبَلِّغٌ	طٰسٓ
करीब,	रुजू करने वाला,	पहुँचाने वाला,	ता० सीन,

حٰمٓ	حَبِيْبٌ	اَوْلٰى
हा० मीम,	महबूब,	बेहतर,

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ

यानी उनपर अल्लाह की रहमत हो जो सबसे अच्छे हैं और मख्लूक में

سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ

हमारे सरदार मुहम्मद (सल्ल०) पर और उनकी औलाद पर

اَجْمَعِيْنَ

और उनके तमाम साथियों पर

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अस्माए याज़्दा (ग्यारह नाम)

ग़ौसे अअ्ज़म दस्तगीर रह०

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
بِجَمَالِكَ وَجَمَالِ حَبِيْبِكَ وَنَبِيِّكَ
وَشَفِيْعِكَ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِهٖ
وَاَصْحَابِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ

(1) اِلٰهِيْ بِعِزَّةِ وَحُرْمَةِ قُطْبِ الْاَقْطَابِ غَوْثِ الثَّقَلَيْنِ الْغَوْثِ الْاَعْظَمِ حَضْرَتِ الْحَسَنِيِّ وَالْحُسَيْنِيِّ قُطْبِ رَبَّانِي الْغَوْثِ الصَّمَدَانِيِّ مَحْبُوْبِ حَقَّانِيِّ سَرْچَشْمَهٔ سُلْطَانِيِّ سُلْطَانِ سَيِّدِ مُحْيِ الدِّيْنِ عَبْدِ الْقَادِرِ جِيْلَانِيِّ قُطْبِ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ قَدَّسَ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ

(2) اِلٰهِیْ بِعِزَّةِ وَحُرْمَةِ قُطْبِ الْاَقْطَابِ غَوْثِ الثَّقَلَیْنِ
الْغَوْثِ الْاَعْظَمِ حَضْرَتْ شَاہْ مُحِیِّ الدِّیْنِ عَبْدِ الْقَادِرِ جِیْلَانِیْ
شَیْخِ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ وَالْمَلٰٓئِکَةِ قَدَّسَ اللّٰهُ الْعَزِیْزُہٗ

(3) اِلٰهِیْ بِعِزَّةِ وَحُرْمَةِ قُطْبِ الْاَقْطَابِ غَوْثِ الثَّقَلَیْنِ
الْغَوْثِ الْاَعْظَمِ حَضْرَتْ شَاہْ مُحِیِّ الدِّیْنِ عَبْدِ الْقَادِرِ جِیْلَانِیْ
قُطْبِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ قَدَّسَ اللّٰهُ الْعَزِیْزُہٗ

(4) اِلٰهِیْ بِعِزَّةِ وَحُرْمَةِ قُطْبِ الْاَقْطَابِ غَوْثِ الثَّقَلَیْنِ
الْغَوْثِ الْاَعْظَمِ حَضْرَتْ شَاہْ مُحِیِّ الدِّیْنِ عَبْدِ الْقَادِرِ جِیْلَانِیْ
قُطْبِ الْمَشْرِقَیْنِ وَالْمَغْرِبَیْنِ قَدَّسَ اللّٰهُ الْعَزِیْزُہٗ

(5) اِلٰهِیْ بِعِزَّةِ وَحُرْمَةِ قُطْبِ الْاَقْطَابِ غَوْثِ الثَّقَلَیْنِ
الْغَوْثِ الْاَعْظَمِ حَضْرَتْ شَاہْ مُحِیِّ الدِّیْنِ عَبْدِ الْقَادِرِ جِیْلَانِیْ
قُطْبِ النُّجُوْمِ وَالشِّهَابِ قَدَّسَ اللّٰهُ الْعَزِیْزُہٗ

(6) اِلٰهِیْ بِعِزَّةِ وَحُرْمَةِ قُطْبِ الْاَقْطَابِ غَوْثِ الثَّقَلَیْنِ
الْغَوْثِ الْاَعْظَمِ حَضْرَتْ اَوْلِیَآءِ مُحِیِّ الدِّیْنِ عَبْدِ الْقَادِرِ جِیْلَانِیْ
قُطْبِ الْاَرْضِ وَالسَّمٰوٰتِ قَدَّسَ اللّٰهُ الْعَزِیْزُہٗ

(7) اِلٰهِیْ بِعِزَّةِ وَحُرْمَةِ قُطْبِ الْاَقْطَابِ غَوْثِ الثَّقَلَیْنِ
الْغَوْثِ الْاَعْظَمِ حَضْرَتْ خَوَاجَہْ مُحِیِّ الدِّیْنِ عَبْدِ الْقَادِرِ
جِیْلَانِیْ قُطْبِ الْعَرْشِ وَالْکُرْسِیِّ قَدَّسَ اللّٰهُ الْعَزِیْزُہٗ

(8) اِلٰهِیْ بِعِزَّةِ وَحُرْمَةِ قُطْبِ الْاَقْطَابِ غَوْثِ الثَّقَلَیْنِ
الْغَوْثِ الْاَعْظَمِ حَضْرَتْ دَرْوِیْشِ مُحِیِّ الدِّیْنِ عَبْدِ الْقَادِرِ جِیْلَانِیْ
قُطْبِ اللَّوْحِ وَالْقَلَمِ قَدَّسَ اللّٰهُ الْعَزِیْزُہٗ

(9) اِلٰهِیْ بِعِزَّةِ وَحُرْمَةِ قُطْبِ الْاَقْطَابِ غَوْثِ الثَّقَلَیْنِ
الْغَوْثِ الْاَعْظَمِ حَضْرَتْ فَقِیْرِ وَلِیْ مُحِیِّ الدِّیْنِ عَبْدِ الْقَادِرِ
جِیْلَانِیْ قُطْبِ الْفَوْقِ وَالْاَرْضِ وَتَحْتَ الثَّرٰی قَدَّسَ اللّٰهُ الْعَزِیْزُہٗ

(10) اِلٰهِیْ بِعِزَّةِ وَحُرْمَةِ قُطْبِ الْاَقْطَابِ غَوْثِ الثَّقَلَیْنِ
الْغَوْثِ الْاَعْظَمِ حَضْرَتْ غَرِیْبِ مِّسْکِیْنِ مُحِیِّ الدِّیْنِ
عَبْدِ الْقَادِرِ جِیْلَانِیْ رَاکِبِ الْمَلٰٓئِکَةِ صَاحِبِ الْمِعْرَاجِ تَابِعِ
النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَعَلٰٓی اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلَّمَ ہٗ

(11) یَاهَمْرَآئِیْلُ یَا لُوْمَآئِیْلُ یَا طَنَآئِیْلُ بِحَقِّ یَاشَیْخُ عَبْدُ الْقَادِرِ

جِیْلَانِیْ شَیْئًا لِلّٰہِ یَا مُحَمَّدُ اَفْتَحِ الْاَبْوَابَ اَخْبِرْنِیْ بِحَقِّ یَا بُدُّوْحُ
یَا بُدُّوْحُ اَلَآ اِنَّ اَوْلِیَآءَ اللّٰہِ لَا خَوْفٌ عَلَیْھِمْ وَلَا ھُمْ
یَحْزَنُوْنَ ۃ بِرَحْمَتِكَ یَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِیْنَ ۃ

अस्माए गरामी
हज़रत ग़ौसुल् अअ़ज़म रह०

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

ھُوَ قُطْبُ الَّذِیْ لَا قُطْبَ اِلَّا ھُوَ عَبْدُ الْقَادِرِ جِیْلَانِیْ ھُوَ الْغَوْثُ
الَّذِیْ لَا غَوْثَ اِلَّا ھُوَ سَیِّدٌ مُّؤَیِّدٌ کَرِیْمٌ عَظِیْمٌ شَرِیْفٌ ظَرِیْفٌ
اِمَامٌ مُّؤْمِنٌ مُّھَیْمِنٌ سَالِكٌ صَالِحٌ مُّنْعِمٌ مُّکَرَّمٌ طَیِّبٌ مُّطَیِّبٌ

جَوَّادٌ مُّرْفَادٌ صَآئِمٌ قَآئِمٌ عَابِدٌ زَاھِدٌ سَاجِدٌ وَّاجِدٌ مَّاجِدٌ جَلِیٌّ
حَفِیٌّ نَقِیٌّ تَقِیٌّ کَامِلٌ بَارٌّ صَفِیٌّ زَکِیٌّ حَمِیْدٌ نَّاصِرٌ مَّنَاصِرٌ سَعِیْدٌ
رَشِیْدٌ مُّنْجٍ غَوْثٌ قُطْبٌ نَّقِیْبٌ نَّجِیْبٌ خَاشِعٌ خَاضِعٌ بُرْھَانٌ
صَاحِبٌ ثَاقِبٌ وَّارِثٌ وَّارِعٌ بَارِعٌ فَآئِقٌ لَآئِقٌ رَاسِخٌ شَامِخٌ وَّلِیٌّ
خَفِیٌّ ظَاھِرٌ بَاطِنٌ طَاھِرٌ مُّطَھَّرٌ مُّطِیْعٌ مُّجِیْبٌ اَجِیْبٌ شَاھِدٌ
رَاشِدٌ زَآئِدٌ قَآئِمٌ بَصِیْرٌ مُّنِیْرٌ سِرَاجٌ تَاجٌ مُّقَرَّبٌ مُحَدِّثٌ خَلِیْلٌ
دَلِیْلٌ صَادِقٌ عَادِلٌ سُلْطٰنٌ حَسَنِیٌّ حُسَیْنِیٌّ حَنْبَلِیٌّ شَافِعِیٌّ
عَالِمٌ حَاکِمٌ عَادِلٌ مُّعِیْنٌ مُّبِیْنٌ مِّصْبَاحٌ مِّفْتَاحٌ شَاکِرٌ ذَاکِرٌ
مُلَاذٌ مُّعَاذٌ رَافِعٌ نَّاصِحٌ وَّاصِحٌ وَّاضِحٌ حَافِظٌ وَّلَدُ رَسُوْلِ اللّٰہِ
صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ تَسْلِیْمًا کَثِیْرًا کَثِیْرًا ط
بِرَحْمَتِكَ یَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِیْنَ ۃ

यह क़सीद-ए-ग़ौसिया शुरू हुआ

بسم الله الرحمن الرحيم

कहूँ मौला को अव्वल हम्द वेहद
दोयम भेजूँ दुरूदाँ वर मुहम्मद
सोयम वर आले उ-असहावे ऊपर
चहारुम गौसे कुल अर्कानावे ऊपर
सुनाऊँ वा-शरह तुम्को क़सीदा
मुरीदाँ सुनके होवें आब-दीदा
कलामे ग़ौसे समदानी यही है
वजोंके इश्क़ यह वत्याँ सही है
बयाँ यह जो पढ़े वा शौक़-व-लज़्ज़त
तलाइक़ में वह पावे इज़्ज़त रफ़अत
ग्यारह वार की रक्खे जो गतिब
उसे हासिल होवें आला मरातिब
वह देखे पीर की दर-ख़ुवाब सूरत
उसी के दिल से उड़ जाए कदूरत
वस्ल का शर्बते शीरीं पिया जब
यह गिर्ये वातिनी ज़ाहिर किया तब

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سَقَانِی الْحُبُّ كَاسَاتِ الْوِصَالِ	فَقُلْتُ لِخَمْرَتِیْ نَحْوِیْ تَعَالِ
क़दह मुझ वस्ल का हक़ ने पिलाया	मैं तब शौके इलाही को बुलाया
سَعَتْ وَمَشَتْ لِنَحْوِیْ فِیْ كُؤُوْسٍ	فَهِمْتُ بِسَكْرَتِیْ بَيْنَ الْمَوَالِ
उसी मस्ती में मुझ में आन बैठा	तभी यारानें बे-बाज़ी को लेता

فَقُلْتُ لِسَائِرِ الْاَقْطَابِ لُمُّوْا	بِحَالِیْ وَادْخُلُوْا اَنْتُمْ رِجَالِ
कहा तब मैंने गौस व क़ुतुब आओ	तुम्हीं मुझ वक़्त की लज़्ज़त को पाओ
وَهُمُّوْا وَاشْرَبُوْا اَنْتُمْ جُنُوْدِیْ	فَسَاقِی الْقَوْمِ بِالْوَافِیْ مَلَالِ
रखो तुम हिम्मत आली ऐ मर्दां	गगावे शौक़ की उबली है होज़ाँ
شَرِبْتُمْ فَضْلَتِیْ مِنْ بَعْدِ سُكْرِیْ	وَلَا نِلْتُمْ عُلُوِّیْ وَاتِّصَالِ
हुज़ूरी में मुझे हक़ ने रखा है	फ़ना फ़िल्लाह का मैंने शर्बत चखा है
مَقَامُكُمُ الْعُلٰى جَمْعًا وَّلٰكِنْ	مَقَامِیْ فَوْقَكُمْ مَا زَالَ عَالِ
बड़ा रुत्बा है तुम सबका व लेकिन	बड़ा रुत्बा मेरा तुम सबसे आला
اَنَا الْبَازِیْ اَشْهَبُ كُلِّ شَيْخٍ	وَمَنْ ذَا فِی الرِّجَالِ اُعْطِیْ مِثَالِ
दिया हक़ ने मुझे है बाज़ का ओर	नहीं हर दूं में मुझसा है कोई और
كَسَانِیْ خِلْعَةً بِطِرَازِ عَزْمٍ	وَتَوَّجَنِیْ بِتِيْجَانِ الْكَمَالِ
लिबासे ख़ुश मेरे कारण बनाया	शर्फ़ का ताज मुझ सर में पहनाया
وَاَطْلَعَنِیْ عَلٰى سِرٍّ قَدِيْمٍ	وَقَلَّدَنِیْ وَاَعْطَانِیْ سُؤَالِ
छुपा था भेद सो मुझको बतलाया	फ़ज़्ल से हक़ ने मुझ बख़्शी अनाया
وَوَلَّانِیْ عَلَى الْاَقْطَابِ جَمْعًا	فَحُكْمِیْ نَافِذٌ فِیْ كُلِّ حَالِ
हुक्म गौस व क़ुतुब अब्दाल ऊपर	मेरा जारी है हर एक हाल ऊपर
وَلَوْ اَلْقَيْتُ سِرِّیْ فِیْ بِحَارٍ	لَصَارَ الْكُلُّ غَوْرًا فِی الزَّوَالِ
मेरे असरार को दर्द जो पावे	तो पानी दर-ज़मीं उसका समावे
وَلَوْ اَلْقَيْتُ سِرِّیْ فَوْقَ مَيِّتٍ	لَقَامَ بِقُدْرَةِ الْمَوْلٰى تَعَالٰى
मेरा असरार मय्यित पर जो आवे	तो हुक्म हक़ से वह ज़िन्दा दिखावे
وَلَوْ اَلْقَيْتُ سِرِّیْ فَوْقَ نَارٍ	لَخَمَدَتْ وَنَفَضَتْ مِنْ سِرِّ حَالِیْ
मेरा असरार गर पड़े आग पुज	तो ठंडी होके मुझ हालत से बुझे

وَلَوْ اَلْقَيْتُ سِرِّىْ فِىْ جِبَالٍ	لَدُكَّتْ وَاخْتَفَتْ بَيْنَ الْجِبَالِ
मेरा असरार गर पाये पहाड़	तो जर्रा हो के उड़ जायें हजारों
وَمَا مِنْهَا شُهُوْرٌ اَوْ دُهُوْرٌ	تَمُرُّ وَتَنْقَضِىْ اِلَّا اَتَالِ
महीना या जमाना जबकि आये	मुझे अहवाल सब अपना सुनाये
وَتُخْبِرُنِىْ بِمَا يَاْتِىْ وَيَجْرِىْ	وَتُعْلِمُنِىْ فَاَقْصِرْ عَنْ جِدَالِ
कहे वह नेक व बद उसपर जो गुज़रे	कि यारों ना करो मुझ साथ झगड़े
مُرِيْدِىْ هِمْ وَطِبْ وَاشْطَحْ وَغَنِّ	وَافْعَلْ مَا تَشَاءُ فَالْاِسْمُ عَالِ
मुरीदां शौक़ से तुम राग लाओ	मेरे इस दौर मे कर लो जो चाहो
مُرِيْدِىْ هِمْ لَا تَخَفْ اَللّٰهُ رَبِّىْ	عَطَانِىْ رِفْعَةً نِلْتُ الْمُعَالِ
मुरीदां ना डरो अल्लाह रब है	करम उसका मेरे हर रोज़ शब है
طُبُوْلِىْ فِى السَّمَاءِ وَالْاَرْضِ دُقَّتْ	وَشَاؤُشُ السَّعَادَةِ قَدْ بَدَالِىْ
मेरी नौबत दो जग में बाजती है	यही शादी मुझे सब साजती है
بِلَادُ اللّٰهِ مُلْكِىْ تَحْتَ حُكْمِىْ	وَوَقْتِىْ قَبْلَ قَلْبِىْ قَدْ صَفَالِىْ
सभी मुल्कों में है फरमान मेरा	सफा हक ने किया दिल जान मेरा
نَظَرْتُ اِلٰى بِلَادِ اللّٰهِ جَمْعًا	كَخَرْدَلَةٍ عَلٰى حُكْمِ اتِّصَالِ
दो आलम मुझ नज़र ऐसा दिखाना	जैसा चुगल में एक राई का दाना
وَكُلُّ وَلِىٍّ عَلٰى قَدَمِىْ وَاِنِّىْ	عَلٰى قَدَمِ النَّبِىِّ بَدْرِ الْكَمَالِ
नबियों के क़दम पर औलिया है	क़दम मुझ पास रसूल-अम्बिया है
مُرِيْدِىْ لَا تَخَفْ وَاشٍ فَاِنِّىْ	عَزُوْمٌ قَاتِلٌ عِنْدَ الْقِتَالِ
मुरीदां ना डरो बद [illegible] सेती	नहीं [illegible] का डर [illegible] मती
اَنَا الْجِيْلِىْ مُحْىُ الدِّيْنِ اِسْمِىْ	وَاَعْلَامِىْ عَلٰى رَاْسِ الْجِبَالِ
लक़ब मेरा मुहीउद्दीन जीला रह०	ये सारे है [illegible] पहेला

اَنَا الْحَسَنِىُّ وَالْمَجْدُ مَقَامِىْ	وَاَعْلَامِىْ عَلٰى رَاْسِ الرِّجَالِ
मै हसनी हूँ बड़ा दर्जा है मेरा	हुक्म सब मर्दों के ऊपर है मेरा
وَعَبْدُ الْقَادِرِ الْمَشْهُوْرُ اِسْمِىْ	وَجَدِّىْ سَيِّدِىْ بَدْرُ الْكَمَالِ
मेरा सय्यिद है जद्दे जूं माह पुर-नूर मुरीदां तुम करो इनकी गुलामी करो तुम सामिओं की अब रिआयत खुदा दीदार अपना उसको देगा	इस्म है अब्दे क़ादिर मेरा मशहूर क़सीदा ग़ौसिया पहुँचा तमामी बयान है रहमतुल्लाह बेनिहायत मुरीदां से जो कोई इसको पढेगा

शैख़ अब्दुल् क़ादिर जीलानी रह० के अवराद

رَبِّ اِنِّىْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ وَاجْبُرْ قَلْبِىَ الْمُنْكَسِرَ وَاجْمَعْ شَمْلِىَ
الْمُنْدَثِرَ اِنَّكَ اَنْتَ الرَّحْمٰنُ الْمُقْتَدِرُ اِكْفِنِىْ يَا كَافِىْ هُوَ الْعَبْدُ
الْمُفْتَقِرُ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَلِيًّا وَّكَفٰى بِاللّٰهِ نَصِيْرًا اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ
عَظِيْمٌ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ
ظَلَمُوْا وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

ख़त्म शरीफ़
के फ़वाइद

इस ख़त्म शरीफ़ के यूँ तो बहुत फ़ायदे हैं, मगर यहाँ पर कुछ लिखे जाते हैं।

1- जो शख़्स इस ख़त्म शरीफ़ का हमेशा विर्द रखे, उसके दिल के तमाम मक़सद पूरे होंगे।

2- जो नमाज़ के बाद पढ़ेगा, उसका पूरा दिन सुख-चैन और हंसी ख़ुशी गुजरेगा।

3- अल्लाह तआला उस आदमी की रोजी फ़राख़ करेगा।

4- जो शख़्स इस ख़त्मे मुबारक को पढ़े, वह शख़्स किसी का मोहताज नहीं होगा।

5- इसका अमल करने वाले के दुश्मन ज़लील और ख़्वार होंगे।

6- कैसी ही मुश्किल का सामना हो, या किसी मामले में फंस गया हो, या क़र्ज़दार हो गया हो, या बीमार हो, या किसी वजह से लाचार हो गया हो, इन तमाम बातों के लिए यह ख़त्म शरीफ़ बहुत मुफ़ीद है।

7- ज़ियारत का ख़्वाहिशमंद तहज्जुद की नमाज़ के बाद बग़दाद शरीफ़ की तरफ़ रुख़ करके पढ़े।

नोट: जिस वक़्त ख़त्म पढ़ना शुरू करें, पहले ग्यारह-ग्यारह बार दुरूद शरीफ पढ़ लिया करे और ख़ुद पाक व साफ होकर, कपड़े और जिस जगह अमल करे वह भी पाक हो और ख़ुशबू-इतर वग़ैरा लगाएँ और शैख़ का ध्यान दिल में जमा ले और शैख़ की तरफ़ से इजाज़त हो तो सोने पर सुहागा है।

ख़त्म शरीफ़
कबीर ग़ौसिया आ़लिया व क़ादिरिया

ख़त्म शुरू करते वक़्त दुरूद शरीफ़ 125 बार - 1

2- اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ اُنْظُرْ حَالَنَا
اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ اِسْمَعْ قَالَنَا

एक सौ ग्यारह बार

3- سُبْحَانَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَلَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ
وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْمِ

एक सौ ग्यारह बार

4- خُذْ بِیَدِیْ شَیْئًا لِلّٰہِ یَاحَضْرَتْ سُلْطَان شَیْخ
سَیِّد عَبْدُ الْقَادِرِ جِیْلَانِیْ اَلْمَدَدْ

एक सौ ग्यारह बार

5- सूरए यासीन बिस्मिल्लाह शरीफ़ के साथ एक बार

सूरए अलम नश्रह बिस्मिल्लाह शरीफ़ के साथ 41 बार

6- یَابَاقِیْ اَنْتَ الْبَاقِیْ — एक सौ ग्यारह बार

7- یَاحَضْرَتْ شَاہ مُحْیِ الدِّیْنِ مُشْکِلْ کُشَا بِالْخَیْرِ

एक सौ ग्यारह बार

8- يَاغَوْثُ اَغِثْنَا بِاِذْنِ اللهِ — एक सौ ग्यारह बार

9- سَهِّلْ فَسَهِّلْ يَآ اِلٰهِیْ كُلَّ صَعْبٍ بِحُرْمَةِ سَيِّدِ الْاَبْرَارِ ط

एक सौ ग्यारह बार

10- इम्दाद कुन इम्दाद कुन अज़ बन्दे ग़म आज़ाद कुन
दर दीन व दुनिया शाद कुन या शैख़ अब्दुल क़ादिर (रह०)

एक सौ ग्यारह बार

11- मुश्किलात बेअ़दद दारेम मा
शैअन लिल्लाहि या गौसे आज़म पीरे मा

एक सौ ग्यारह बार

12- صَلَّى اللهُ عَلَيْكَ يَا مُحَمَّدُ ط — एक सौ ग्यारह बार

13- لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللهِ ط — एक सौ ग्यारह बार

14- صَلَّى اللهُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ وَسَلَّمَ عَلَيْكَ
يَا حَبِيْبَ اللهِ ط

एक बार

15- ख़त्म में दुरूद शरीफ़
125 बार

अस्माए गरामी

हज़रत ग़ौसुल अअ़ज़म (रह०)

يَا سَيِّدُ مُحِىُّ الدِّيْنِ اَمِيْرُ اللهِ ط
يَا شَيْخُ مُحِىُّ الدِّيْنِ فَضْلُ اللهِ ط
يَا اَوْلِيَآءُ مُحِىُّ الدِّيْنِ اَمَانُ اللهِ ط
يَا مَوْلٰنَا مُحِىُّ الدِّيْنِ نُوْرُ اللهِ ط
يَا غَوْثُ مُحِىُّ الدِّيْنِ قُطْبُ اللهِ ط
يَا سُلْطَانُ مُحِىُّ الدِّيْنِ سَيْفُ اللهِ ط
يَا خَوَاجَهْ مُحِىُّ الدِّيْنِ فَرْمَانُ اللهِ ط
يَا مَخْدُوْمُ مُحِىُّ الدِّيْنِ بُرْهَانُ اللهِ ط
يَا دَرْوِيْشُ مُحِىُّ الدِّيْنِ اَمَانُ اللهِ ط
يَا مِسْكِيْنُ مُحِىُّ الدِّيْنِ قُدُسُ اللهِ ط
يَا فَقِيْرُ مُحِىُّ الدِّيْنِ شَاهِدُ اللهِ ط

قَدَّسَ اللهُ سِرَّهُ الْعَزِيْز

अस्माए गरामी पढ़ने से पहले ग्यारह बार दुरूद शरीफ़ और पढ़ने के बाद ग्यारह बार दुरूद शरीफ़ पढ़ें।

इन्शाअल्लाह तआला हर एक मुश्किल आसान होगी।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ख़त्मे गौसिया

यह ख़त्म शरीफ़ हज़रत गौसे पाक पीराने पीर दस्तगीर शैख अब्दुल कादिर जीलानी रहमतुल्लाहि अलैहि का तोहफ़ा है। अपनी जाइज़ मुराद और मुश्किल व परेशानियों में इस ख़त्म शरीफ़ के पढ़ने से इन्शाअल्लाह तआला ज़रूर कामियाबी मिलेगी।

''ख़त्मे गौसिया'' के पढ़ने का तरीक़ा यह है :

कि 11 लोग एक साथ बैठ कर पढ़ना शुरू करें और नीचे लिखी हुई तफ़सील के मुताबिक हर शख़्स ग्यारह-ग्यारह बार हर चीज़ पढ़े। यह ख़त्म शरीफ़ हर महीने चाँद की 10 तारीख़ को शाम पाँच बजे के बाद से पढ़ा जासकता है। अगर 10 तारीख़ को न पढ़ सकें तो 11 तारीख़ को शाम 5 बजे से पहले ख़त्म कर लेना ज़रूरी है। पढ़ने वालों में जिसकी कोई मुराद या मक़सद हो तो ख़त्म करने के बाद दुआ माँगते वक़्त यह कह दे कि मेरी मुराद पूरी हो जाए, यह ख़त्म कराऊँगा और मुराद पूरी होने पर इसी तरतीब से यह ख़त्म शरीफ़ कराना चाहिए।

(1) दुरूद शरीफ़ 11 बार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا
صَلَّيْتَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ اِبْرٰهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ
مَّجِيْدٌ ○

(2) सूरए तकासुर 11 बार

اَلْهٰىكُمُ التَّكَاثُرُ ۙ حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ؕ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ
ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ؕ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ عِلْمَ
الْيَقِيْنِ ؕ لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ۙ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ ۙ
ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ○

(3) सूरए काफ़िरून 11 बार

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ○ لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ○ وَلَآ اَنْتُمْ
عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ○ وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ○
وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ○ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ○

(4) सूरए इख़्लास 11 बार

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ○ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ○ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ○
وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ○

(5) सूरए फ़लक़ 11 बार

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ○ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ○ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ
اِذَا وَقَبَ ○ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِي الْعُقَدِ ○ وَمِنْ شَرِّ
حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ○

(6) सूरए नास 11 बार

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝ مَلِكِ النَّاسِ ۝ اِلٰهِ النَّاسِ ۝
مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ۝ الَّذِىْ يُوَسْوِسُ فِىْ صُدُوْرِ
النَّاسِ ۝ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝

(7) सूरए फ़ातिहा 11 बार

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ مٰلِكِ يَوْمِ
الدِّيْنِ ۝ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝ اِهْدِنَا
الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۝
غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۝

(8) आयतल् कुरसी 11 बार

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَىُّ الْقَيُّوْمُ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا
نَوْمٌ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِىْ
يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا
خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَىْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَآءَ
وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَا يَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا
وَهُوَ الْعَلِىُّ الْعَظِيْمُ ۝

(9) अलिफ़ लाम मीम से मुफ़्लिहून तक 11 बार

الٓمّٓ ۝ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ فِيْهِ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝
الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا

رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ
اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ عَلٰى
هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝

(10) - - - 11 बार

सय्यिद व सुल्ताने फ़क़्र व ख़्वाजा मख़्दूमल् गरीब
पादशाह व शैख़ व दुरवेश व वली मोलानाए
मीर सालेह फ़ातिमा सानी असामी वालिदैन
बू-सईदे पीरे ईशाने मर्दे हक़ मर्दानए
ज़ैनब व बीबी नसीबा ख़्वाहराने हज़रत अंद
ई असामी पाक-रा बायद कि हर फ़र्ज़ानए

(11) يَا شَيْخ عَبْدُ الْقَادِرِ جِيْلَانِى شَيْئًا لِلّٰهِ 11 बार

(12) दुरूद शरीफ़ 11 बार

जब भी किसी परेशानी, मुसीबत या ख़ौफ़नाक मामले का सामना हो या कोई बहुत बड़ी परेशानी में फंस जाए तो इसका ज़्यादा से ज़्यादा विर्द करे।

حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا

तर्जुमा : काफ़ी है हमारे लिए अल्लाह, और वह बहुत ही अच्छा कार-साज़ है, अल्लाह ही पर हमने भरोसा किया है।

अहद नामा

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ
اَنْتَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعْهَدُ اِلَيْكَ فِيْ هٰذِهِ
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ وَحْدَكَ
لَا شَرِيْكَ لَكَ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ
فَلَا تَكِلْنِيْ اِلٰى نَفْسِيْ فَاِنَّكَ اِنْ تَكِلْنِيْ اِلٰى نَفْسِيْ
تُقَرِّبْنِيْ اِلَى الشَّرِّ وَتُبَاعِدْنِيْ مِنَ الْخَيْرِ وَاِنِّيْ
لَآ اَتَّكِلُ اِلَّا بِرَحْمَتِكَ فَاجْعَلْ لِّيْ عِنْدَكَ عَهْدًا
تُوَفِّيْهِ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ۝
وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ
وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ ۝ بِرَحْمَتِكَ
يَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ ۝

अस्नाद

दुआए गंजुल्-अर्श

रिवायत है कि एक दिन हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सहबिही व सल्लम मस्जिद में तशरीफ़ रखते थे कि अचानक हज़रते जिबरील (अलैहि०) आए और यह दुआ हज़रत ख़त्मी मआब सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम को सिखाई और इसके बहुत फ़ज़ाइल व बरकात बयान किए। पढ़ने वालों को लम्बी-चौड़ी अस्नाद के मुताले से बहुत तक्लीफ़ होती है और क़ीमती वक़्त भी बरबाद होता है, इसलिए उस लम्बे और तवील अस्नाद को न लिख कर, पढ़ने वालों की हुस्ने अक़ीदत व रसूख़ व मुहब्बते इलाही पर छोड़ दिया जाता है और बरकत के तौर पर उसका निचोड़ लिखा जाता है कि हज़रते जिबरील (अलैहि०) ने दूसरे फ़ज़ाइल के साथ यह भी फ़रमाया कि इस दुआए मुबारका के पढ़ने वाले को हक़ तआला तीन चीज़ें अता करेगा:- पहली उसकी रोज़ी में बरकत देगा, दूसरी उसको ग़ैब से रोज़ी अता करेगा, तीसरी उसके दुश्मन ज़लील व ख़्वार रहेंगे और जो कोई इस दुआ को पढ़ा करेगा या अपने पास रखेगा तो अल्लाह जल्ल शानुहू की उसपर हर वक़्त रहमत उतरेगी और मैदाने जंग (जिहाद) में काफ़िरों के मुक़ाबले में ग़ल्बा और कामयाबी मिलेगी और सफ़र से सेहत और आफ़ियत और माले ग़नीमत के साथ घर लौटेगा और इस दुआ की बरकत से जादू

और शैतानों के असर और तमाम ज़मीनी व आसमानी मुसीबतों से महफ़ूज़ रहेगा। अगर इसको पहली बारिश के पानी से धो कर जादू किये शख़्स को पिलाया जाए तो शिफ़ा होगी और अगर इसका तावीज़ धो कर ऐसे शख़्स को हर दिन पिलाया जाए जिसकी बीमारी ने हकीमो और वैदों को हैरान व परेशान कर रखा हो तो ख़ुदा के फ़ज़्ल से कुछ ही वक़्त में शिफ़ा होगी और अगर बेऔलाद वाले को इसका तावीज़ मुश्क व ज़ाफ़रान से लिख कर 21 दिन तक बराबर पिलाया जाए तो खुदा के फ़ज़्ल से साहिबे औलाद होगा और इसकी बरकत से उम्मीद है कि क़ियामत के दिन ऐसा ऊँचा दर्जा पाए कि और लोग भी उस दर्जे के पाने की इच्छा करें और इसका पढ़ने वाला कभी रास्ता न भूले। कहा जाता है कि एक दिन एक मुजरिम जिसका जुर्म गर्दन मारे जाने के क़ाबिल था, मदीना मुनव्वरा के हाकिम के पास बन्दी बनाकर लाया गया, हाकिम ने क़त्ल करने का हुक्म दे दिया, जल्लाद ने तीन बार तलवार मारी, लेकिन तलवार की मार का उसपर कुछ भी असर न हुआ, पानी में डुबोया गया तब भी न डूबा, अलग-अलग तरीक़े से उसे मारने की तदबीरें की गईं, मगर किसी भी तदबीर में कामयाबी न मिली, लाचार होकर हाकिम ने इसका सबब मालूम किया, मुज़रिम ने कहा कि मेरे पास तावीज गंजुल-अर्श है उसी की बरकत से मुझको कोई तकलीफ़ नहीं पहुँचती, हाकिम ने उसे छोड़ दिया और क़ीमती जोड़े से उसे नवाज़ा और उस से यह तावीज ले लिया और बराबर पढ़ता रहा। बात यह है कि इस बुज़ुर्गवार दुआ की ख़ूबी कोई क्या बयान कर सकता है, अगर सातों आसमान और सातों ज़मीनों के काग़ज़ बनाए जाएँ और ज़मीन के तमाम पेड़ क़लम हों और

ज़मीनी व आसमानी तमाम मख़्लूक़ अज़ल से अबद तक इसकी ख़ूबियाँ लिखते रहें, पूरी दुआए बुज़ुर्गवार की ख़ूबी बयान करना तो बहुत दूर की बात है एक हरफ़ की भी ख़ूबी बयान न हो सके। इस में कोई शक नहीं है, बल्कि ऐसी बातों में शक करना बहुत बड़ी बदनसीबी व महरूमी है।

दुआए गंजुल्-अर्श

का बराबर विर्द रखने से ज़रूरतें पूरी होंगी

और रोज़ी में फ़राख़ी होगी, दुश्मनों से निजात, बीमारी से शिफ़ायाबी और बरकात व फ़ज़ाइल के हुसूल के लिए इस मुतबर्रक दुआ का पढ़ना अक्सीर व मुजर्रब बताया गया है, शर्त यह है कि सच्चे दिल से और ख़ुलूस के साथ पढ़े।

दुआए गंजुल-अर्श

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْعَزِيْزِ الْجَبَّارِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الرَّءُوْفِ الرَّحِيْمِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْغَفُوْرِ الرَّحِيْمِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْكَرِيْمِ الْحَكِيْمِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْقَوِيِّ الْوَفِيِّ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ اللَّطِيْفِ الْخَبِيْرِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الصَّمَدِ الْمَعْبُوْدِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْغَفُوْرِ الْوَدُوْدِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْوَكِيْلِ الْكَفِيْلِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الرَّقِيْبِ الْحَفِيْظِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الدَّآئِمِ الْقَآئِمِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْمُحْيِ الْمُمِيْتِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْحَيِّ الْقَيُّوْمِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْخَالِقِ الْبَارِئِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْوَاحِدِ الْاَحَدِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْمُؤْمِنِ الْمُهَيْمِنِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْحَسِيْبِ الشَّهِيْدِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْحَلِيْمِ الْكَرِيْمِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْاَوَّلِ الْقَدِيْمِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْاَوَّلِ الْاٰخِرِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الظَّاهِرِ الْبَاطِنِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْكَبِيْرِ الْمُتَعَالِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ قَاضِی الْحَاجَاتِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْبُرْهَانِ السُّلْطَانِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ السَّمِيْعِ الْبَصِيْرِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْعَلِيْمِ الْحَكِيْمِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ السَّتَّارِ الْغَفَّارِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الرَّحْمٰنِ الدَّيَّانِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْكَبِيْرِ الْاَكْبَرِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْغَفُوْرِ الشَّكُوْرِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْعَظِيْمِ الْعَلِيْمِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ ذِی الْمُلْكِ وَالْمَلَكُوْتِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ ذِی الْعِزَّةِ وَالْعَظَمَةِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْعَلِيْمِ الْعَلَّامِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الشَّافِی الْكَافِی

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْعَظِيْمِ الْبَاقِی
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الصَّمَدِ الْاَحَدِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ رَبِّ الْاَرْضِ وَالسَّمٰوٰتِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ خَالِقِ الْمَخْلُوْقَاتِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ مَنْ خَلَقَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْخَالِقِ الرَّزَّاقِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْفَتَّاحِ الْعَلِيْمِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْعَزِيْزِ الْغَنِیِّ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ ذِی الْهَيْبَةِ وَالْقُدْرَةِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ ذِی الْكِبْرِيَاءِ وَالْجَبَرُوْتِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ السَّتَّارِ الْعَظِيْمِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ عَالِمِ الْغَيْبِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْحَمِيْدِ الْمَجِيْدِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْحَكِيْمِ الْقَدِيْمِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْقَادِرِ السَّتَّارِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْغَنِيِّ الْعَظِيْمِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْعَلَّامِ السَّلَامِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْمَلِكِ النَّصِيْرِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْغَنِيِّ الرَّحْمٰنِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ قَرِيْبِ الْحَسَنٰتِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ وَلِيِّ الْحَسَنٰتِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الصَّبُوْرِ السَّتَّارِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ خَالِقِ النُّوْرِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْغَنِيِّ الْمُعْجِزِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْفَاضِلِ الشَّكُوْرِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْغَنِيِّ الْقَدِيْمِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ ذِی الْجَلَالِ الْمُبِيْنِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْخَالِصِ الْمُخْلِصِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ صَادِقِ الْوَعْدِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْحَقِّ الْمُبِيْنِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ ذِی الْقُوَّةِ الْمَتِيْنِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْقَوِيِّ الْعَزِيْزِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ عَلَّامِ الْغُيُوْبِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْحَیِّ الَّذِیْ لَا يَمُوْتُ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ سَتَّارِ الْعُيُوْبِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْغُفْرَانِ الْمُسْتَعَانِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الرَّحْمٰنِ السَّتَّارِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الرَّحِيْمِ الْغَفَّارِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْعَزِيْزِ الْوَهَّابِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْقَادِرِ الْمُقْتَدِرِ

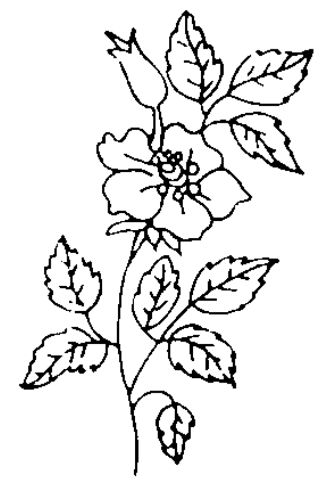
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ ذِی الْغُفْرَانِ الْحَلِيْمِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ مَالِكِ الْمُلْكِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْبَارِئِ الْمُصَوِّرِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْعَزِيْزِ الْجَبَّارِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْجَبَّارِ الْمُتَكَبِّرِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْقُدُّوْسِ السُّبُّوْحِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ رَبِّ الْمَلٰٓئِكَةِ وَالرُّوْحِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ ذِی الْاٰلَآءِ وَالنَّعْمَآءِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْمَقْصُوْدِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ سُبْحَانَ الْحَنَّانِ الْمَنَّانِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اٰدَمُ صَفِیُّ اللّٰهِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ نُوْحٌ نَجِیُّ اللّٰهِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اِبْرٰهِيْمُ خَلِيْلُ اللّٰهِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اِسْمٰعِيْلُ ذَبِيْحُ اللّٰهِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُوْسٰی كَلِيْمُ اللّٰهِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ دَاوٗدُ خَلِيْفَةُ اللّٰهِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ عِيْسٰی رُوْحُ اللّٰهِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ
صَلَّی اللّٰهُ عَلٰی خَيْرِ خَلْقِهٖ وَنُوْرِ عَرْشِهٖ
اَفْضَلِ الْاَنْبِيَآءِ وَالْمُرْسَلِيْنَ حَبِيْبِنَا وَ
سَيِّدِنَا وَسَنَدِنَا وَشَفِيْعِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ
وَّاٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ بِرَحْمَتِكَ
يَآ اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ ○



अस्नाद
दुआए क़दह मुअ़ज़्ज़म व मुकर्रम

हज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि यह दुआ हज़रते जिब्रील अलैहिस्सलाम हज़रत पैग़म्बरे ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए मेराज की रात तोहफ़ा लाए, और कहा कि यह दुआ ख़ुदाए तआ़ला ने तुमको इनायत की है, यह दुआ मुअ़ल्लक़ आसमान में हरी रोशनाई से लिखी हुई है और इसके फ़ायदे बहुत हैं। ख़ुदाए तआ़ला ने जब ज़मीन व आसमान को पैदा नहीं किया था तब पाँच सौ साल पहले इस दुआ को नूर के वरक़ों पर लिख कर परदे में रखा था, अब हुक्म हुआ है कि आप (सल्ल०) और आपकी उम्मत इस दुआ को पढ़ा करे और आपकी उम्मत में से जो कोई यह दुआ पढ़ेगा उसे बेहिसाब सवाब मिलेगा और वह शख़्स वली होगा, अगर तमाम आदमी और तमाम परियाँ और चरिन्द व परिन्द सब मिलकर इस दुआ की फ़ज़ीलत बयान करें तो ज़रासी भी इसकी फ़ज़ीलत बयान न हो सकेगी, जो कोई इस दुआ को दरिया के सफ़र में पढ़े, लहरों और तूफ़ान से सलामत रहे और अमन व अमान के साथ घर वापस लौटे और जो कोई सच्ची नीयत से लोहे पर पढ़े तो तअ़ज्जुब नहीं कि लोहा भी पानी हो जाए और आग पर पढ़े तो आग ठंडी होजाए और काग़ज़ पर या कपड़े पर लिख कर मुर्दे के कफ़न में रखे तो ख़ुदाए तआ़ला उस बन्दे को क़ियामत तक अज़ाब न करेगा और क़ब्र उसकी कुशादा कर दी जाएगी और नूर से रौशन होगी और जन्नत की

खिड़की उस बन्दे के लिए खोल दी जाएगी और जो कोई इस दुआ को क़ब्रिस्तान में पढ़ेगा तो ख़ुदाए तआ़ला 12 हजार फ़रिश्तों को नूर का तबक़ देकर उन मुर्दों के पास भेजेगा और क़ब्र के अज़ाब से दूर करेगा और क़ियामत के दिन उस शख़्स को हश्र के मैदान में सवारी मिलेगी और पीने के लिए शराबे तहूर मिलेगी और उस शख़्स को देखकर मैदान वाले कहेंगे या इलाही! यह बन्दा कोई पैग़म्बर है या वली! फ़रिश्ते जवाब देंगे कि यह बन्दा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत में से है और इसकी इतनी इज़्ज़त इस वजह से है कि यह बन्दा दुनिया में "दुआए क़दह" पढ़ता था और जो कोई इस दुआ को मुश्क और ज़ाफ़रान से तबक़ में लिख कर गुलाब से धोए और पानी को शीशे में हिफ़ाज़त से रखे तो वह पानी हर-एक बीमारी के लिए काम आए, हालांकि तमाम हकीम उस बीमारी के इलाज से थक चुके हों, ख़ुदाए तआ़ला उसको शिफ़ा देगा। और जिसकी औलाद न होती हो तो सच्चे दिल से इस दुआ को ग्यारह बार पढ़े तो ख़ुदाए तआ़ला उसे औलाद अता करेगा। अगर किसी शहर या घर या किसी ज़मीन पर कोई आफ़त व मुसीबत आ जाए तो इस दुआ को पाक मिट्टी पर पढ़ कर उस शहर या घर या ज़मीन के चारों कोनों में डाल दे, तो ख़ुदाए तआ़ला इस दुआ की बरकत से तमाम मुसीबतें व बलाएँ दूर कर दे और जो बन्दए मोमिन इस दुआ को सच्चे दिल से एक वक़्त पढ़े तो बिना हिसाब-किताब के जन्नत में जाए और इस दुआ के पढ़ने वाले को ख़ुदाए तआ़ला दोस्त रखता है और उस पर हमेशा रहमत की नज़र करता है, यक़ीन रखो।

पाँचों नमाज़ों के बाद पढ़ने की तस्बीहात

هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ

फ़जर की नमाज़ के बाद सौ बार पढ़े

هُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ

ज़ुहर की नमाज़ के बाद सौ बार पढ़े

هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ

अ़सर की नमाज़ के बाद सौ बार पढ़े

هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ

मग़रिब की नमाज़ के बाद सौ बार पढ़े

هُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ

इशा की नमाज़ के बाद सौ बार पढ़े

दुआए क़दहे मुअ़ज़्ज़म व मुकर्रम

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

शुरू साथ नाम अल्लाह के जो बख़्शिश करने वाला मेहरबान है

بِسْمِ اللّٰهِ بِاسْمِهِ الْمُبْتَدِئِ رَبِّ الْاٰخِرَةِ وَالْاُوْلٰى الَّذِىْ

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो हर चीज़ से पहले है दुनिया व आख़िरत का मालिक है

لَاغَايَةَ لَهٗ وَلَا مُنْتَهٰى لَهٗ فِى السَّمٰوٰتِ الْعُلٰى ○

जिसकी न गायत है और न इंतिहा, ऊँचे आसमानो मे जो कुछ है सब उसी का है

اَلرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى ○ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ

वह बड़ा रहम करने वाला है अर्श पर उसने क़रार पकड़ा है और जो कुछ आसमानों मे

وَمَا فِى الْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرٰى ○

और ज़मीन, और इन दोनों के बीच है और ज़मीन के नीचे है सो सब उसी का है

وَاِنْ تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ فَاِنَّهٗ يَعْلَمُ السِّرَّ وَاَخْفٰى ○

और अगर दुआ वग़ैरा तुम पुकार के पढ़ो (पुकारने की ज़रूरत नहीं है) पस वह छुपी हुई

اَللهُ لَآاِلٰهَ اِلَّا هُوَ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ○

बातों को और दिन के भेदों को जानता है वह अल्लाह ऐसा है कि उसके सिवा दूसरा

اَللهُ الْعَظِيْمُ عَظِيْمُ الْعُظَمَآءِ دَآئِمُ النَّعْمَآءِ

कोई माबूद नहीं, उसके सब नाम अच्छे हैं वह बड़ा माबूद है सब बड़ों से बड़ा है

قَاهِرُ الْاَعْدَآءِ اَلرَّحْمٰنُ الْعَاطِفُ

हमेशा अपनी नेमतें देने वाला है दुश्मनों पर क़हर करने वाला है वह बड़ा रहमवाला है

عَلٰى خَلْقِهٖ بِرِزْقِهٖ اَلْمَعْرُوْفُ بِلُطْفِهٖ

अपनी मख़्लूक़ को मेहरबानी से रोज़ी देता है वह अपनी मेहरबानी में मशहूर है अपने

اَلْعَادِلُ فِىْ حُكْمِهٖ اَلْعَالِمُ فِىْ مُلْكِهٖ رَحِيْمًا بِخَلْقِهٖ

हुक्म करने मे आदिल है अपने पूरे मुल्क को जानता है अपनी तमाम मख़्लूक़ पर रहम करता

رَحِيْمُ الرُّحَمَآءِ عَلِيْمُ الْعُلَمَآءِ

है सब रहम करने वालो से ज़्यादा रहम करने वाला है सब जानने वालों से ज़्यादा जानने

بَصِيْرُ الْبُصَرَآءِ غَفُوْرُ الْغُفَرَآءِ

वाला है सब देखने वालों से ज़्यादा देखने वाला है सब माफ़ करने वालो से ज़्यादा माफ़

بَاعِثُ الْاَنْبِيَآءِ صَاحِبُ الْاَوْلِيَآءِ سُبْحَانَهٗ

करनेवाला है नबियों को पैगम्बरी अता करनेवाला वलियों को दोस्त रखने वाला वह पाक है

قَادِرٌ عَلٰى مَا يَشَآءُ قَدِيْرٌ سُبْحَانَ الْمَلِكُ الْحَمِيْدِ ذِى

ताक़त वाला है हर चीज़ पर क़ादिर है, पाक है, बादशाह है, तारीफ वाला बड़े अर्श का

मालिक है, जो चाहता है सो करता है सब पालने वालो का पालने वाला है,

الْعَرْشِ الْمَجِيْدِ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ○ رَبُّ الْاَرْبَابِ

और हर चीज़ का सबब मुहय्या करनेवाला है और सब पहली चीज़ों से वह पहले है और

وَمُسَبِّبُ الْاَسْبَابِ وَسَابِقُ الْاَسْبَاقِ وَرَازِقُ الْاَرْزَاقِ

सबको वही रोज़ी देता है और सबका पैदा करने वाला वही है और हर चीज पर वह क़ादिर

وَخَالِقُ الْخَلَآئِقِ وَقَادِرُ الْمَقْدُوْرِ وَقَاهِرُ الْمَقْهُوْرِ

है और हर चीज़ पर वह ग़ालिब है और क़ियामत के दिन इन्साफ़ करने वाला वही है

وَعَادِلٌ فِىْ يَوْمِ الْحَشْرِ وَالنُّشُوْرِ اِلٰهُ الْاٰلِهَةِ جَامِعُ

सब माबूदो मे सच्चा माबूद वही है हश्र (क़ियामत) के दिन सब लोगों को इकट्ठा करनेवाला

النَّاسِ يَوْمَ الْوَاقِعَةِ رَبُّنَا غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ حَلِيْمٌ شَكُوْرٌ

हमारा परवरदिगार मग़फ़िरत करने वाला रहम करने वाला हिलम वाला शुक्र करने वालों

اَلْاَوَّلُ الْقَدِيْمُ خَالِقُ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ وَالسَّمٰوٰتِ

को बदला देने वाला सब चीज़ों से पहले है क़दीम है अर्शे अज़ीम का और आसमानों का

وَالْاَرَضِيْنَ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ قَابِلُ التَّوْبَةِ شَكُوْرٌ

और ज़मीनों का पैदा करने वाला वही है और वही सुनने वाला और जानने वाला तौबा

حَلِيْمٌ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ○

कबूल करने वाला शुक्र का बदला देने वाला गुनाहों को माफ़ करने वाला रहम वाला है

هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ وَالدَّآئِمُ

और सब ख़ूबियाँ अल्लाह ही के लिए सज़ावार है जो अर्शे अज़ीम का मालिक है वही

सबसे अव्वल है और आख़िर है और छुपा है और खुला है और हमेशा से है सब

اَلرَّازِقُ لِلْخَلَائِقِ وَالْبَهَائِمِ صَاحِبُ الْعَطَايَا

मख़्लूक़ और जानवरों का रोज़ी देनेवाला है और जिसको जो कुछ मिलता है सो उसीका

وَ دَافِعُ الْبَلَايَا يَا مَنْ يَّشْفِى السَّقِيْمَ

अता किया हुआ है और मुसीबतों को दूर करनेवाला वही है ऐ बीमारों को शिफ़ा देने वाले

وَ يَغْفِرُ الْخَاطِئِيْنَ وَ يُؤْوِى النَّادِمِيْنَ

और ख़ताकारों को माफ़ करने वाले और गुनाहों से पशेमान होने वालों को पनाह देने वाले

وَ يَعْفُوا الظّٰلِمِيْنَ وَ يُحِبُّ الصَّالِحِيْنَ

और ज़ालिमों को माफ़ करने वाले और नेक बन्दों को दोस्त रखने वाले और दुखियारों को

وَ يُنْجِى الْمَغْمُوْمِيْنَ وَ يُنْذِرُ الْمُنْذِرِيْنَ

दुखों से निजात देने वाले और बदकारों को अज़ाब से डराने वाले और गुनाहगारों की

وَيَسْتُرُ الْمُذْنِبِيْنَ وَيُؤْمِنُ الْخَائِفِيْنَ سُبْحَانَكَ

पर्दापोशी करने वाले और अज़ाब से डरने वालों को अमन देने वाले, तू पाक है तू पाक है

سُبْحَانَكَ سُبْحَانَكَ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ الْكَرِيْمُ الْمَعْبُوْدُ كَثِيْرُ

तू पाक है, कोई भी इबादत के लायक़ नहीं है मगर तू ही, जो करीम है सब का माबूद

الْعَطَايَا وَغَافِرُ الْخَطَايَا سَاتِرُ الْعُيُوْبِ شَكُوْرٌ رَّحِيْمٌ عَالِمُ

है बहुत अता करने वाला और ख़ताएँ माफ़ करने वाला बन्दों के ऐब छुपाने वाला शुक्र का

مَا فِى الصُّدُوْرِ مُنْبِتُ الزُّرُوْعِ وَالْاَشْجَارِ وَمُدَبِّرُ الَّيْلِ

बदला देने वाला रहम वाला सीनों के भेद जानने वाला खेतियों और दरख़्त उगाने वाला

और रात और दिन को ढंग से चलाने वाला दानों को फाड़ कर उनमें से

وَ النَّهَارِ فَالِقُ الْحُبُوْبِ خَالِقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ غَنِىٌّ

नबातात उगाने वाला आसमान और ज़मीन का पैदा करने वाला सब मख़्लूक़ से बेनियाज़

عَنِ الْخَلَائِقِ قَاسِمُ الْاَرْزَاقِ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ

सब को रोज़ियाँ बाँट देने वाला ग़ैब की बातें जानने वाला ग़म दूर करने वाला तुझी को

مُذْهِبُ الْهُمُوْمِ اَنْتَ الَّذِىْ سَجَدَ لَكَ سَوَادُ الَّيْلِ

सजदा करता है रात का अंधेरा और दिन का उजाला और चाँद की चाँदनी

وَنُوْرُ النَّهَارِ وَضَوْءُ الْقَمَرِ وَشُعَاعُ الشَّمْسِ وَدَوِىُّ الْمَاءِ

और सूरज की धूप और पानी की खिलखिलाहट और पेड़ों की खरखराहट। ऐ मेरे माबूद

وَخَفِيْقُ الشَّجَرِ ۝ اِلٰهِىْ اَنْتَ الَّذِىْ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَىْءٌ

तू वह है कि जिसके जैसी कोई चीज़ नहीं है और जो हर चीज़ पर क़ादिर है और तू ही

وَّهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ وَّاَنْتَ الَّذِىْ تَعْلَمُ السِّرَّ

छुपी और खुली बातों को और दिलों के भेदों को जानता है। ऐ मेरे महबूब जब

وَالْاِعْلَانَ وَمَا فِى الْقُلُوْبِ ۝ اِلٰهِىْ اَنْتَ الَّذِىْ تَعْفُوْ عَنِ

बन्दा गुनाहों में डूब जाता है तब उसके गुनाह तू ही माफ़ करदेता है ऐ मेरे माबूद

الْمَعَاصِىْ بَعْدَ اَنْ يَّغْرَقَ فِى الذُّنُوْبِ ۝ اِلٰهِىْ اَنْتَ

तेरा ही यह कहा हुआ है कि (ऐ मेरे बन्दो) तुम अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद

الَّذِىْ قُلْتَ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ

न हो बेशक अल्लाह तआला सब गुनाह माफ़ करदेता है

الذُّنُوبَ جَمِيعًا إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ وَأَنْتَ بِقَوْلِكَ

बेशक वही माफ़ करने वाला, रहम करने वाला है और तेरा कहा हुआ

صَادِقٌ لَسْتَ بِمَكْذُوبٍ نَجِّنِي يَا اللهُ مِنَ الْكَرْبِ

सच्चा है, झूठ का बुह्तान तुझ पर नहीं आसकता ऐ अल्लाह सख़्त बेचैनी

الْعَظِيمِ وَالْغَمِّ وَأَنْتَ غِيَاثُ كُلِّ مَكْرُوبٍ وَّمَصْرُوفٍ

और गम से मुझे निजात दे क्योंकि हर ग़मगीन का और

مَّظْلُومٍ وَّأَنْتَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ○

परेशानहाल मज़लूम की फरयाद सुनने वाला तू ही है और हर चीज़ पर तू ही क़ादिर है

وَاحْفَظْنِي مَوْلَايَ مِنْ آفَاتِ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ

और ऐ मेरे मौला दुनिया व आख़िरत की आफतों से मुझे महफ़ूज रख और

وَلَا تَفْضَحْنِي يَا سَيِّدِي عَلَى رُءُوسِ الْخَلَائِقِ خَاصَّةً

ऐ मेरे आक़ा मख़्लूक के सामने मुझे रुसवा न कर ख़ास तौर पर क़ियामत के

فِي الْيَوْمِ الْمَوْعُودِ اللهُ أَكْبَرُ اللهُ أَكْبَرُ اللهُ أَكْبَرُ

दिन, अल्लाह हर चीज़ से बड़ा है, सब मख़्लूक से तमाम आलम से

كَبِيرًا لَا ضِدَّ لَهُ وَلَا نِدَّ لَهُ وَلَا جَوْرَ لَهُ وَلَا شِبْهَ لَهُ

बड़ा है बेशक बड़ा है कोई उसका मुख़ालिफ़ नहीं और न कोई उसका हमसर है

وَلَا حَدَّ لَهُ وَلَا عَدَّ لَهُ وَلَا مِثْلَ لَهُ وَلَا كُفْوَ لَهُ وَلَا نَظِيرَ

और न कोई उसके लिए हद है और न गिनती है और न कोई उस जैसा है और न कोई

उसके बराबर और न कोई उसका

لَهُ وَلَا وَزِيرَ لَهُ وَلَا شَرِيكَ لَهُ فِي الْمُلْكِ أَسْأَلُكَ

दूसरा है और न वज़ीर है और न उसके मुल्क में कोई साझी है ऐ तमाम मख़्लूक

يَا عَزِيزُ يَا عَزِيزُ يَا عَزِيزُ أَنْ تُعِزَّنِي بِالْعِزَّةِ وَ

पर ग़लबा रखने वाले ऐ क़ुदरत रखने वाले ऐ इज़्ज़त वाले! अपनी इज़्ज़त

الْعَظَمَةِ وَالْكِبْرِيَاءِ وَالْهَيْبَةِ وَالْقُدْرَةِ وَالْجَبَرُوتِ

और बुज़ुर्गी और बड़ाई और डर और क़ुदरत और किब्रियाई के तुफ़ैल से

يَا اللهُ يَا اللهُ يَا اللهُ يَا رَحْمٰنُ يَا رَحْمٰنُ

मुझे इज़्ज़त अता कर या अल्लाह! या अल्लाह! या अल्लाह! या रहमान! या रहमान!

يَا رَحْمٰنُ يَا رَحِيمُ يَا رَحِيمُ يَا رَحِيمُ أَنْ تُرِيَنِي فِي

या रहमान! या रहीम! या रहीम! या रहीम! तू अपने पैग़म्बर (सल्ल०) का दीदारे

مَنَامِي لِقَاءَ نَبِيِّكَ وَمَا رَجَوْتُ مِنْكَ

शरीफ़ मुझे ख़्वाब में दिखला और मैं जो उम्मीदें तुझसे रखता हूँ सो पूरा करदे और मेरे

وَأَكْرِمْنِي بِمَغْفِرَتِكَ خَطِيئَتِي إِنَّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ

गुनाह माफ़ करके मुझ पर अपनी नवाजिश कर, तू हर चीज़ पर क़ादिर है और अल्लाह

قَدِيرٌ ○ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ ○

बुलन्द और बुज़ुर्ग की मदद के सिवा हमको किसी काम की ताक़त और क़ुव्वत नहीं है।

اَللّٰهُمَّ يَا حَنَّانُ يَا مَنَّانُ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ أَشْهَدُ

ऐ बड़े इनाम वाले! ऐ बुज़ुर्गी वाले! और नवाज़िश करने वाले! मैं गवाही देता हूँ

أَنَّ كُلَّ مَعْبُوْدٍ مِّنْ دُوْنِ عَرْشِكَ إِلٰى مُنْتَهٰى قَرَارِ

(यानी यकीन के साथ मनता हूं) तेरे अर्श के नीचे से लेकर ज़मीनों की तहतक तक

الْأَرَضِيْنَ بَاطِلٌ مَّا خَلَا وَجْهَكَ الْكَرِيْمِ اٰمَنْتُ

तेरी ज़ाते पाक के सिवा जिस चीज़ की बन्दगी की जाती हो वह सब बातिल है, मैं

بِأَنَّكَ لَآ إِلٰهَ إِلَّآ أَنْتَ رَضِيْتُ رَبَّنَا

यकीन करके मान लिया कि तेरे सिवा कोई माबूद नहीं मैं तुझ से राज़ी हूं ऐ मेरे

يَا غِيَاثَ الْمُسْتَغِيْثِيْنَ أَغِثْنِيْ مِنَ النَّارِ

परवरदिगार! ऐ फरयादियों की फरयाद सुनने वाले! तू मुझे दोज़ख से बचा और अपने

وَنَجِّنِيْ مِنْ سَخَطِكَ وَأَجِرْنِيْ مِنْ عَذَابِكَ

गुस्से और नाराज़गी से निजात दे और अपने अज़ाब से मुझे पनाह दे और अपनी तमाम

وَفَرِّجْ عَنِّيْ شَرَّ كُلِّ خَلْقِكَ وَارْزُقْنِيْ رِزْقًا وَّاسِعًا

मख़्लूक़ के शर से मुझे बचाए रख और कुशादा और बरकत वाली हलाल और पाक रोज़ी

مُبَارَكًا حَلَالًا طَيِّبًا لَآ إِلٰهَ إِلَّآ أَنْتَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ○

मुझे इनायत कर ऐ बुज़ुर्ग और बुज़ुर्गी देने वाले तेरे सिवा कोई बन्दगी के लायक नहीं

اَللّٰهُمَّ أَغْنِنِيْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَ

या अल्लाह! तू अपनी हलाल रोज़ी के साथ अपने हराम से मुझे बेपरवाह कर और अपनी

بِطَاعَتِكَ عَنْ مَّعْصِيَتِكَ وَبِفَضْلِكَ

बन्दगी में मुझे लगाए रख तेरी नाफरमानी से मुझे रोके रख और अपनी इनायत से रख

عَمَّنْ سِوَاكَ إِلٰهِيْ خَلَقْتَنِيْ وَلَمْ

कर अपने सिवा किसी दूसरे का मुहताज न कर ऐ मेरे माबूद! मैं कुछ भी न था

أَكُ شَيْئًا ○ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ وَارْتَكَبْتُ

तू ने मुझे पैदा किया मैंने अपनी जान पर (तेरी नाफरमानी से) ज़ुल्म किया और गुनाह

الْمَعَاصِيَ وَأَنَا مُقِرٌّ بِذُنُوْبِيْ يَا رَبِّ اغْفِرْ

किए और अब मैं अपने गुनाहों का इकरार करता हूं ऐ मेरे अल्लाह! मेरे गुनाह माफ

لِيْ إِنْ غَفَرْتَنِيْ يَا رَبِّ فَلَا يَنْقُصُ مِنْ

करदे या रब अगर तू मेरी बख़्शिश फरमाए तो तेरी बादशाही में से कुछ भी कम न

مُلْكِكَ شَيْءٌ وَّإِنْ عَذَّبْتَنِيْ يَا رَبِّ فَلَا يَزِيْدُ فِيْ

होगा और अगर तू मुझे अज़ाब करे तो तेरी शान व शौकत में कुछ भी ज्यादा न होगा

سُلْطَانِكَ شَيْءٌ يَا رَبِّ تَجِدُ مَنْ تُعَذِّبُهٗ غَيْرِيْ

ऐ मेरे परवरदिगार! अज़ाब करने के लिए मेरे सिवा कोई दूसरा तुझे मिल जाएगा मगर

وَأَنَا لَآ أَجِدُ مَنْ يَّغْفِرُ لِيْ ذُنُوْبِيْ غَيْرَكَ يَا غَفُوْرُ

मेरे गुनाह माफ करने के लिए तेरे सिवा कौन है? या ग़फूर! या

يَا رَحِيْمُ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ وَيَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

रहीम! या ज़ल्जलालि वल्इकराम! या अरहमर्राहिमीन!

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَأَصْحَابِهٖ

व सल्लल्लाहु अला ख़ैरि ख़ल्किही सय्यिदिना मुहम्मदिंव आलिही व असहाबिही

أَجْمَعِيْنَ ○ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا ط بِرَحْمَتِكَ

अजमईन वसल्लम तस्लीमन कसीरन कसीरा बिरहमतिक

يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ ○

या अरहमर्राहिमीन व लहम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन।

दुआए हबीब

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُمْ قُمْ يَا حَبِيْبِي كَمْ تَنَامُ

عَجَبًا لِلْمُحِبِّ كَيْفَ يَنَامُ	قُمْ قُمْ يَا حَبِيْبِي كَمْ تَنَامُ
طَالِبُ الْجَنَّةِ لَا يَنَامُ	قُمْ قُمْ يَا حَبِيْبِي كَمْ تَنَامُ
خَالِقُ اللَّيْلِ لَا يَنَامُ	قُمْ قُمْ يَا حَبِيْبِي كَمْ تَنَامُ
خَالِقُ الْخَلْقِ لَا يَنَامُ	قُمْ قُمْ يَا حَبِيْبِي كَمْ تَنَامُ
اَلْعَرْشُ وَالْكُرْسِيُّ لَا يَنَامُ	قُمْ قُمْ يَا حَبِيْبِي كَمْ تَنَامُ
اَللَّوْحُ وَالْقَلَمُ لَا يَنَامُ	قُمْ قُمْ يَا حَبِيْبِي كَمْ تَنَامُ
كُلُّ الْمَلَكُوْتِ لَا يَنَامُ	قُمْ قُمْ يَا حَبِيْبِي كَمْ تَنَامُ
اَلشَّمْسُ وَالْقَمَرُ لَا يَنَامُ	قُمْ قُمْ يَا حَبِيْبِي كَمْ تَنَامُ
اَلْاَرْضُ وَالسَّمَآءُ لَا يَنَامُ	قُمْ قُمْ يَا حَبِيْبِي كَمْ تَنَامُ
اَلنَّجْمُ وَالشَّجَرُ لَا يَنَامُ	قُمْ قُمْ يَا حَبِيْبِي كَمْ تَنَامُ
اَلْبَرُّ وَالْبَحْرُ لَا يَنَامُ	قُمْ قُمْ يَا حَبِيْبِي كَمْ تَنَامُ
اَلْجَنَّةُ وَالنَّارُ لَا يَنَامُ	قُمْ قُمْ يَا حَبِيْبِي كَمْ تَنَامُ

اَلْحُوْرُ وَالْقُصُوْرُ لَا يَنَامُ	قُمْ قُمْ يَا حَبِيْبِي كَمْ تَنَامُ
اَلطَّيْرُ وَالْوَحْشُ لَا يَنَامُ	قُمْ قُمْ يَا حَبِيْبِي كَمْ تَنَامُ
اَلنَّوْمُ عَلَى الْمُحِبِّ حَرَامٌ	قُمْ قُمْ يَا حَبِيْبِي كَمْ تَنَامُ
طَالِبُ الْمَوْلٰى لَا يَنَامُ	قُمْ قُمْ يَا حَبِيْبِي كَمْ تَنَامُ
اَلْعَاشِقُ وَالْمَعْشُوْقُ لَا يَنَامُ	قُمْ قُمْ يَا حَبِيْبِي كَمْ تَنَامُ
اَلْعِشْقُ وَالْمَحَبَّةُ لَا يَنَامُ	قُمْ قُمْ يَا حَبِيْبِي كَمْ تَنَامُ
اَللَّيْلُ وَالنَّهَارُ لَا يَنَامُ	قُمْ قُمْ يَا حَبِيْبِي كَمْ تَنَامُ
نِعْمَ الْمَوْلٰى ذُوالْاِكْرَامِ رَبُّنَا	قُمْ قُمْ يَا حَبِيْبِي كَمْ تَنَامُ
اٰدَمُ صَفِيُّ اللهِ لَا يَنَامُ	قُمْ قُمْ يَا حَبِيْبِي كَمْ تَنَامُ
اِبْرَاهِيْمُ خَلِيْلُ اللهِ لَا يَنَامُ	قُمْ قُمْ يَا حَبِيْبِي كَمْ تَنَامُ
مُوْسٰى كَلِيْمُ اللهِ لَا يَنَامُ	قُمْ قُمْ يَا حَبِيْبِي كَمْ تَنَامُ
عِيْسٰى رُوْحُ اللهِ لَا يَنَامُ	قُمْ قُمْ يَا حَبِيْبِي كَمْ تَنَامُ

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللهِ لَا يَنَامُ

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

आयातुल् ख़ौफ़ और आयातुल् हरस

क़ुरआन मजीद की सच्चाई पर ईमान रखने वाले मुसलमान कालामे पाक को शिफ़ा और बेशुमार रूहानी व माद्दी बरकतों का यक़ीन रखते हैं इसलिए 33 आयाते हिर्ज़ को यकजा करके पेश करने की इज़्ज़त हासिल की जाती है कि लोग आसानी से कुछ वक़्त ख़र्च करके हर दिन इसका विर्द कर लिया करें ताकि इन आयतों की बरकात से बहुत सी बीमारियों और दुखों से निजात रहे। इन आयाते हिर्ज़ की बरकतों के बारे में कुछ क़ीमती गवाहियाँ आगे आरही हैं :-

(1) हज़रत अ़ल्लामा अबू मुहम्मद अ़ब्दुल्लाह यमनी अल-मारूफ़ ब-इमाम याफ़ई ने अपनी बेनज़ीर किताब ''अद-दुर्रुन्नज़ीम फ़ी ख़्वास्सिल क़ुरआनिल अ़ज़ीम'' में लिखा है कि फ़रमाया सरवरे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कि जो शख़्स दिन-रात में एक बार ये 33 आयतें पढ़ लिया करे वह हर एक मुसीबत व आफ़त से महफ़ूज़ रहेगा। न उसे कोई दरिन्दा दुख देगा और न कोई चोर उसे नुक़्सान पहुँचाएगा। इन आयात का नाम आयातुल ख़ौफ़ और आयातुल हरस[1] है, और ये आयतें हिसन[2] हैं और इनमें हर एक बीमारी के लिए शिफ़ा है जिनमें से एक कोढ़ और बरस भी है ।

(2) इब्ने सीरीन रहमतुल्लाहि अ़लैहि से मनक़ूल है कि हम किसी सफ़र में थे एक नेहर पर पड़ाव हुआ, लोगों ने डराया कि यहाँ लुट जाते हैं, मेरे सब साथी वहाँ से चल दिए मगर मैं चूँकि आयाते हिर्ज़ पढ़ा करता था इसलिए वहाँ ठहरा रहा, जब रात

1- हरस के मअ्ना निगहबान 2- हिसन के मअ्ना किला

हुई, अभी सोने न पाया था कि कुछ आदमी तलवार हाँथ में लिए हुए आए मगर मुझ तक न पहुँच सके, जब सुबह को वहाँ से चला तो एक शख़्स घोड़े पर सवार मिला और मुझ से कहा कि हम लोग रात में 100 बार से ज़्यादा तेरे पास गए मगर बीच में एक लोहे की मज़बूत दीवार आड़े आ जाती थी, मैंने कहा यह इन आयात की बरकत है। उस शख़्स ने अ़हद किया कि अब यह काम न करूँगा।

ये 33 आयतें हैं। इनके पढ़ने मे भूत, आसेब, दरिन्दा और चोर और हर तरह की बला व मुसीबत दूर होती है। कहा गया है कि इनमें सौ बीमारियों से शिफ़ा है। मुहम्मद इब्ने अली रहि० फ़रमाते हैं कि हमारे एक बूढ़े को फ़ालिज हो गया था उसपर यह आयतें पढ़ीं तो उसको शिफ़ा हो गई।

ये 33 आयतें दरिन्दों से हिफ़ाज़त और चोर और आसेब के दूर करने और जान व माल की आफ़ियत के लिए और कोढ़ से शिफ़ा के लिए और तमाम बीमारियों के लिए अक्सीरे आज़म हैं। आयातुल हरस इनका लक़ब है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है

الٓمّٓ ۝١ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛ فِيْهِ ۛ هُدًى

अलिफ़ लाम मीम यह वह किताब है जिस में कुछ शक नहीं, रास्ता दिखाने

لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝٢ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَ يُقِيْمُوْنَ

वाली है डर रखने वालों के लिए। जो ईमान लाते हैं गैब पर, और नमाज़ कायम करते

الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝٣ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ

हैं और उसमें से जो हमने उन्हें दिया है ख़र्च करते हैं, और जो ईमान लाते हैं

بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ

उस किताब पर जो (ऐ मुहम्मद सल्ल०) नाज़िल की गई तुम्हारी तरफ़ और जो नाज़िल

وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۝٤ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى

की गई तुमसे पहले, और वे आख़िरत पर भी यक़ीन रखते हैं, यही लोग सीधे रास्ते

مِّنْ رَّبِّهِمْ ۙ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝٥ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ

पर हैं अपने रब की तरफ़ से, और यही मुराद पाने वाले हैं। अल्लाह वह है कि जिसके

اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ

सिवा कोई माबूद नहीं, वह हमेशा ज़िन्दा और सब का थामने वाला है उसको नहीं

وَّلَا نَوْمٌ ۭ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۭ

आती ऊँघ और न नीन्द। उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है

مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۭ يَعْلَمُ

ऐसा कौन है जो उसके यहाँ उसकी इजाज़त के बिना सिफारिश कर सके? वह जानता है

مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيْطُوْنَ

जो कुछ उनके आगे है और जो उनके पीछे है, वे घेर नहीं कर सकते

بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَاۗءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ

उस की मालूमात में से किसी चीज़ को, मगर जितना वह चाहे, घेरे हुए है उसकी कुर्सी

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَـــُٔـوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ

तमाम आसमानों और ज़मीन को और नहीं भारी होती उसको उनकी हिफाज़त, और वह

الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ۝٦ لَآ اِكْرَاهَ فِى الدِّيْنِ ڐ قَدْ تَّبَيَّنَ

आलीशान, अज़मत वाला है। कुछ ज़बरदस्ती नहीं दीन के बारे में, बेशक ज़ाहिर हो चुकी

الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بِالطَّاغُوْتِ وَ يُؤْمِنْۢ

हिदायत गुमराही से, तो जो कोई सरकशों (बुतों) का इन्कार करे और अल्लाह पर ईमान

بِاللّٰهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ۤ لَا انْفِصَامَ لَهَا ۭ

लाए, उसने पकड़ ली (ऐसी) मज़बूत रस्सी जो कभी टूटने वाली नहीं

وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝٧ اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

और अल्लाह सुनता, जानता है, अल्लाह उनका हामी है जो ईमान लाए,

يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ڛ وَالَّذِيْنَ

उन्हें निकालता है अंधेरों से उजालों की तरफ़, और जो लोग

كَفَرُوْٓا اَوْلِيٰۗـــــُٔــهُمُ الطَّاغُوْتُ ۙ يُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ

काफ़िर हैं तो उनके साथी (सरकश) शैतान हैं जो उन्हें उजालों से निकालकर

اِلَى الظُّلُمٰتِ ۭ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا

अंधेरों की तरफ़ ले जाते हैं यही लोग जहन्नमी हैं वे उसमें

خٰلِدُوْنَ ۝٨ لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ؕ

हमेशा रहेंगे। अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों और जो कुछ ज़मीन में है और

وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِیْۤ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ یُحَاسِبْكُمْ

अगर तुम जाहिर करो जो कुछ तुम्हारे दिलों में है, या उसको छुपाओ, उसका तुमसे

بِهِ اللّٰهُ ؕ فَیَغْفِرُ لِمَنْ یَّشَآءُ وَیُعَذِّبُ مَنْ یَّشَآءُ ؕ

हिसाब लेगा अल्लाह, फिर बख़्शेगा जिसे चाहेगा और अज़ाब देगा जिसे चाहेगा और

وَاللّٰهُ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۝٩ اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَاۤ اُنْزِلَ

अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है, मान लिया रसूल ने जो कुछ उस पर उतरा, उसके

اِلَیْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ

परवरदिगार की तरफ़ से, और मुसलमानों ने भी सबके सब ईमान ले आए अल्लाह, और

وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۟ لَا نُفَرِّقُ بَیْنَ

उसके फरिश्तो, और उसकी किताबों और उसके रसूलों पर, कि हम अलग नहीं समझते

اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۟ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۟

किसी को उसके रसूलों में और उनका कहना है कि हमने सुना और मान लिया, तेरी

غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَیْكَ الْمَصِیْرُ ۝١٠ لَا یُكَلِّفُ اللّٰهُ

बख़्शिश (चाहते हैं) ऐ परवरदिगार ! और तेरी ही तरफ़ लौटना है अल्लाह तक्लीफ़ नहीं

نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا كَسَبَتْ

देता किसी को मगर उसकी ताक़त के मुवाफ़िक़ उसी को मिलता है जो उसने कमाया और

وَعَلَیْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ؕ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَاۤ اِنْ نَّسِیْنَاۤ

उसीपर पड़ता है जो उसने किया, ऐ हमारे परवरदिगार! न पकड़ हमको अगर हम भूल जाएँ

اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَیْنَاۤ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ

या चूक जाएँ, ऐ हमारे परवरदिगार! न रख हम पर भारी बोझ जैसा कि तू ने रखा था

عَلَی الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا

उनपर जो हमसे पहले थे और ऐ हमारे परवरदिगार! हमसे न उठवा इतना बोझ, जिसकी

لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۟ وَاغْفِرْ لَنَا ۟ وَارْحَمْنَا ۟

हम में ताकत नहीं और माफ कर हमको, और बख्श दे हम को, और रहम फरमा हम पर

اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَی الْقَوْمِ الْكٰفِرِیْنَ ۝١١

तू ही हमारा मददगार है, तू हमारी मदद कर उन लोगों के मुकाबले में जो काफिर हैं।

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِیْ سِتَّةِ

बेशक तुम्हारा परवरदिगार अल्लाह है जिसने पैदा किए आसमान और जमीन छे दिन में

اَیَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰی عَلَی الْعَرْشِ ۟ یُغْشِی الَّیْلَ

फिर कायम हुआ तख्त पर, उढ़ा देता है रात को

النَّهَارَ یَطْلُبُهٗ حَثِیْثًا ۙ وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ

दिन से कि रात के दिन पीछे लगा आता है दौड़ता हुआ और उसीने पैदा किए सूरज और

وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍۭ بِاَمْرِهٖ ؕ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ

चांद और तारे ताबेदार अपने हुक्म के, सुन लो उसी ने पैदा किया और (उसीका) हुक्म

تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِیْنَ ۝ اُدْعُوْا رَبَّكُمْ

बड़ा बरकत वाला है अल्लाह जो पालने वाला है सारे संसार का, पुकारो अपने रब को

تَضَرُّعًا وَّخُفْیَةً ؕ اِنَّهٗ لَا یُحِبُّ الْمُعْتَدِیْنَ ۝

गिड़-गिड़ा कर और चुपके-चुपके वह नहीं दोस्त रखता हद से बढ़नेवालों को

وَلَا تُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ

और न बिगाड़ करो जमीन में उसकी इस्लाह के बाद, और उसको पुकारते रहो

خَوْفًا وَّطَمَعًا ۭ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ

डर और उम्मीद से, बेशक अल्लाह की रहमत करीब है अच्छे

الْمُحْسِنِيْنَ ۝ قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ۭ

लोगों से। कह दो कि तुम अल्लाह को पुकारो या पुकारो रहमान को

اَيًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَاۗءُ الْحُسْنٰى ۚ وَلَا

जिस नाम से भी पुकारोगे वह उसी के अच्छे-अच्छे नाम हैं और (ऐ मुहम्मद सल्ल०) न

تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ

अपनी नमाज़ बहुत ऊँची आवाज से पढ़ो और न उस को बहुत चुपके से पढ़ो, बल्कि इन

بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ۝ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ

दोनों के बीच का रास्ता अपनाओ और कहो कि हर तरह की तारीफ अल्लाह ही के लिए

لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ

है, जो न औलाद रखता है और न कोई उसका साझी है बादशाही में, और न कोई उस

وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ۝ وَالصّٰۗفّٰتِ

का मददगार है कमजोरी के सबब, और उसकी बड़ाई करो बड़ा जान कर। कसम है सफ

صَفًّا ۝ فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ۝ فَالتّٰلِيٰتِ

बांधने वालों की कतार बांधकर फिर डांटने वालों की डांट कर, फिर जिक्र की तिलावत

ذِكْرًا ۝ اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ۝ رَبُّ السَّمٰوٰتِ

करने वालों की, कि बेशक तुम्हारा माबूद यकीनन एक है, परवरदिगार है आसमानों

وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ۝ اِنَّا

और जमीन का और जो कुछ उनके बीच है सबका, और परवरदिगार मशरिकों का। हमने

زَيَّنَّا السَّمَاۗءَ الدُّنْيَا بِزِيْنَةِۨ الْكَوَاكِبِ ۝ وَحِفْظًا مِّنْ

दुनिया के आसमान को सजाया एक जीनत से यानी तारों से और महफूज़ किया

كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ۝ لَا يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى

हर सरकश शैतान से। वे कान भी नहीं लगा सकते मलए आला की तरफ,

وَيُقْذَفُوْنَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ۝ دُحُوْرًا

और फेंके जाते हैं (उनकी तरफ शिहाब) हर तरफ से, भगाने के लिए। और

وَّلَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌ ۝ اِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ

उनके लिए हमेशा का अजाब है। मगर जो कोई उचक ले गया झपट कर, फिर उसके

شِهَابٌ ثَاقِبٌ ۝ فَاسْتَفْتِهِمْ اَهُمْ اَشَدُّ خَلْقًا

पीछे लगा चमकता हुआ अंगारा। अब उनसे पूछो कि उनका पैदा करना ज्यादा

اَمْ مَّنْ خَلَقْنَا ۭ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِيْنٍ لَّازِبٍ ۝

मुश्किल है या वह जो हमने पैदा किए, हम ही ने उनको पैदा किया चिपकती मिट्टी

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا

से। ऐ जिन्नों और इनसानों के गिरोह! अगर तुमसे हो सके

مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ فَانْفُذُوْا

तो निकल भागो आसमान और जमीन की हदों से, फिर निकलो तुम

لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَاۗءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝

नहीं निकल सकते बिना एक ताकत के तुम क्या-क्या नेमतें अपने रब की झुठलाओगे?

يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ ۙ وَّنُحَاسٌ

छोड़ा जाएगा तुम पर आग का शोला और धुआं फिर तुम

فَلَا تَنْتَصِرَانِ ﴿٣٥﴾ لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ

मुक़ाबला न कर सकोगे। अगर हम उतारते इस क़ुरआन को किसी पहाड़ पर

لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ۚ

तो ज़रूर देखता तू उसको कि दब जाता और फट जाता अल्लाह के ख़ौफ़ से, और

وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾

ये मिसालें हैं जिनको हम बयान करते हैं लोगों के लिए ताकि वे सोच-विचार करें

هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ

वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, जानने वाला है छुपे और खुले का

هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ○ هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ

वह निहायत मेहरबान है बड़ा रहम वाला। वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद

اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ

नहीं बादशाह है पाक ज़ात (ऐब से) सालिम, अमन देने वाला, निगहबान है

الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ۗ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٢٣﴾

ज़बरदस्त, ख़ुद मुख़्तार (और) बड़ाई वाला है, अल्लाह पाक है उनके साझी ठहराने से।

هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ

वह अल्लाह है पैदा करने वाला, मूजिद, सूरत बनाने वाला, उसके अच्छे-अच्छे नाम हैं

الْحُسْنٰى ۗ يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ

तस्बीह करता है उसकी जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, और वही है ज़बरदस्त

الْحَكِيْمُ ○ قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ

हिकमत वाला (ऐ मुहम्मद सल्ल०) कह दो कि मेरी तरफ़ वही की गई है कि क़ुरआन

مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْٓا اِنَّا سَمِعْنَا

सुना एक गिरोह ने, जिन्नातों में से फिर (अपने लोगों में जाकर) कहा कि हमने सुना है

قُرْاٰنًا عَجَبًا ○ يَّهْدِيْٓ اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ۖ

एक अजीब क़ुरआन जो राह दिखाता है नेकी की, सो हम ईमान ले आए उस पर और

وَلَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ اَحَدًا ﴿٢﴾ وَّاَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ

हरगिज़ न साझी बनाएंगे अपने रब का किसी को और यह (कहा) कि बड़ी शान है हमारे

رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ○ وَّاَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ

रब की न उसने बीवी बनाई और न बेटा और यह कि हम में

سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ﴿٤﴾

बेवक़ूफ़ लोग कहते थे अल्लाह पर झूट।

चेहल काफ़ (चालीस काफ़)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

كَفَاكَ رَبُّكَ كَمْ يَكْفِيْكَ وَاكِفَةً كِفْكَافُهَا كَكَمِيْنٍ كَانَ مِنْ كَلَكٍ

تَكِرُّ كَرًّا كَكَرِّ الْكَرِّ فِيْ كَبَدٍ تَحْكِيْ مُشَكْشَكَةً كَلُكْلُكٍ لَكَكٍ

كَفَا مَا بِيْ كَفَاكَ الْكَافُ كُرْبَتَهٗ يَا كَوْكَبًا كَانَ مَنْ يَّحْكِيْ كَوْكَبَ الْفَلَكِ

दुआए जमीला

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है

يَاجَمِيْلُ يَا اَللّٰهُ يَا قَرِيْبُ يَا اَللّٰهُ يَا عَجِيْبُ يَا اَللّٰهُ

ऐ अजीब ऐ अल्लाह! ऐ नज़दीक ऐ अल्लाह! ऐ खूबी वाले ऐ अल्लाह!

يَا مُجِيْبُ يَا اَللّٰهُ يَا رَءُوْفُ يَا اَللّٰهُ يَا مَعْرُوْفُ يَا اَللّٰهُ

ऐ अच्छाई वाले ऐ अल्लाह! ऐ मेहरबानी करने वाले ऐ अल्लाह! ऐ क़बूल करने वाले ऐ अल्लाह!

يَا مَنَّانُ يَا اَللّٰهُ يَا دَيَّانُ يَا اَللّٰهُ يَا بُرْهَانُ يَا اَللّٰهُ

ऐ मज़बूत दलील ऐ अल्लाह! ऐ दय्यान ऐ अल्लाह! ऐ एहसान वाले ऐ अल्लाह!

يَا سُلْطَانُ يَا اَللّٰهُ يَا مُسْتَعَانُ يَا اَللّٰهُ يَا مُحْسِنُ يَا اَللّٰهُ

ऐ एहसान करने वाले ऐ अल्लाह! ऐ मदद चाहे गए ऐ अल्लाह! ऐ ग़ालिब ऐ अल्लाह!

يَا مُتَعَالُ يَا اَللّٰهُ يَا رَحْمٰنُ يَا اَللّٰهُ يَا رَحِيْمُ يَا اَللّٰهُ

ऐ निहायत रहम वाले ऐ अल्लाह! ऐ मेहरबान ऐ अल्लाह! ऐ सबसे बरतर ऐ अल्लाह!

يَا حَلِيْمُ يَا اَللّٰهُ يَا عَلِيْمُ يَا اَللّٰهُ يَا كَرِيْمُ يَا اَللّٰهُ

ऐ निहायत करम करने वाले ऐ अल्लाह! ऐ ख़बर रखने वाले ऐ अल्लाह! ऐ हिल्म वाले ऐ अल्लाह!

يَا جَلِيْلُ يَا اَللّٰهُ يَا مَجِيْدُ يَا اَللّٰهُ يَا حَكِيْمُ يَا اَللّٰهُ

ऐ हिकमत वाले ऐ अल्लाह! ऐ बुज़ुर्गी वाले ऐ अल्लाह! ऐ बुज़ुर्ग ऐ अल्लाह!

يَا مُقْتَدِرُ يَا اَللّٰهُ يَا غَفُوْرُ يَا اَللّٰهُ يَا غَفَّارُ يَا اَللّٰهُ

ऐ गुनाह बख़्शने वाले ऐ अल्लाह! ऐ बख़्शने वाले ऐ अल्लाह! ऐ पूरी ताक़त वाले ऐ अल्लाह!

يَا مُبْدِئُ يَا اَللّٰهُ يَا رَافِعُ يَا اَللّٰهُ يَا شَكُوْرُ يَا اَللّٰهُ

ऐ शुक्र करनेवालों की क़द्र करनेवाले ऐ अल्लाह! ऐ ऊँचा करनेवाले ऐ अल्लाह! ऐ पैदा करनेवाले ऐ अल्लाह

يَا خَبِيْرُ يَا اَللّٰهُ يَا بَصِيْرُ يَا اَللّٰهُ يَا سَمِيْعُ يَا اَللّٰهُ

ऐ सुनने वाले ऐ अल्लाह! ऐ देखने वाले ऐ अल्लाह! ऐ ख़बर रखने वाले ऐ अल्लाह!

يَا اَوَّلُ يَا اَللّٰهُ يَا اٰخِرُ يَا اَللّٰهُ يَا ظَاهِرُ يَا اَللّٰهُ

ऐ ज़ाहिर ऐ अल्लाह! ऐ आख़िर ऐ अल्लाह! ऐ अव्वल ऐ अल्लाह!

يَا بَاطِنُ يَا اَللّٰهُ يَا قُدُّوْسُ يَا اَللّٰهُ يَا سَلَامُ يَا اَللّٰهُ

ऐ सलामत वाले ऐ अल्लाह! ऐ पाकीज़ा बुरी सिफ़ात से ऐ अल्लाह! ऐ बातिन ऐ अल्लाह!

يَا مُهَيْمِنُ يَا اَللّٰهُ يَا عَزِيْزُ يَا اَللّٰهُ يَا مُتَكَبِّرُ يَا اَللّٰهُ

ऐ बड़ाई वाले ऐ अल्लाह! ऐ ज़बरदस्त ऐ अल्लाह! ऐ निगहबान ऐ अल्लाह!

يَا خَالِقُ يَا اَللّٰهُ يَا وَلِيُّ يَا اَللّٰهُ يَا مُصَوِّرُ يَا اَللّٰهُ

ऐ रूप देने वाले ऐ अल्लाह! ऐ सबके पैदा करने वाले ऐ अल्लाह! ऐ पैदा करने वाले ऐ अल्लाह!

يَا جَبَّارُ يَا اَللّٰهُ يَا حَيُّ يَا اَللّٰهُ يَا قَيُّوْمُ يَا اَللّٰهُ

ऐ हमेशा क़ायम रहनेवाले ऐ अल्लाह ऐ हमेशा ज़िन्दा [illegible] ऐ अल्लाह ऐ [illegible] ऐ अल्लाह!

يَا قَابِضُ يَا اَللّٰهُ يَا بَاسِطُ يَا اَللّٰهُ يَا مُذِلُّ يَا اَللّٰهُ

ऐ रुस्वाई देनेवाले ऐ अल्लाह! ऐ ज़्यादा करनेवाले रोज़ी के ऐ अल्लाह! ऐ कम [illegible] ऐ अल्लाह!

يَا قَوِيُّ يَا اَللّٰهُ يَا شَهِيْدُ يَا اَللّٰهُ يَا مُعْطِيْ يَا اَللّٰهُ

ऐ अता करने वाले ऐ अल्लाह! ऐ मौजूद ऐ अल्लाह! ऐ [illegible] ऐ अल्लाह!

يَامَانِعُ يَااَللّٰهُ يَاخَافِضُ يَااَللّٰهُ يَارَافِعُ يَااَللّٰهُ

ऐ ऊँचा करने वाले ऐ अल्लाह! ऐ गिराने वाले ऐ अल्लाह! ऐ हटाने वाले ऐ अल्लाह

يَاوَكِيْلُ يَااَللّٰهُ يَا كَفِيْلُ يَااَللّٰهُ يَاذَاالْجَلَالِ

ऐ बुज़ुर्गी और ऐ किफ़ायत करनेवाले ऐ अल्लाह! ऐ कार-साज़ ऐ अल्लाह!

وَالْاِكْرَامِ يَااَللّٰهُ يَارَشِيْدُ يَااَللّٰهُ يَاصَبُوْرُ يَااَللّٰهُ

ऐ बुर्दबार ऐ अल्लाह! ऐ रास्ता दिखाने वाले ऐ अल्लाह! बख़्शिशवाले ऐ अल्लाह

يَا فَتَّاحُ يَااَللّٰهُ لَآاِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ

नहीं कोई माबूद मगर तू ऐ खोलने वाले ऐ अल्लाह!

سُبْحٰنَكَ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى

पाकी है तुझको, यक़ीनन था मैं ज़ालिमों में से और रहमत अल्लाह तआला की हो ऊपर जो

عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ

मख़्लूक़ में सबसे अच्छे हैं जिनका नाम मुहम्मद (सल्ल०) है और उनकी आल-औलाद पर और

اَجْمَعِيْنَ بِرَحْمَتِكَ يَااَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ ۝

उनके सब साथियों पर तेरी रहमत, ऐ सबसे ज़्यादा रहम करने वाले।

दुआए सुर्यानी

इस मुतबर्रक दुआ को हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास (रज़ि०) ने अरबी ज़बान में नज़्म फ़रमाया है असल में यह दुआ सुर्यानी ज़बान में थी इसलिए इसको दुआए सुर्यानी के नाम से ही जाना जाता है। बुज़ुर्गों ने कहा है कि पिछले ज़माने की किताबों में इस दुआ का वही दर्जा था जो आज क़ुरआन मजीद में सूरए रहमान का है। हज़रत दाऊद (अलैहि०) को जब कोई मुश्किल पेश आती थी तो सजदे में होकर दुआए सुर्यानी पढ़ते थे और अल्लाह तआला इसकी बरकत से मुश्किल आसान करता था। मुसलमानों के जलीलुल- क़दर बुज़ुर्गों ने इस मुतबर्रक दुआ को बराबर पढ़ा है, ख़ास कर सिल्सिलए आलिया सुहरवर्दिया में इसका विर्द ज़्यादा रहा है और हज़रत ख़्वाजा ज़ियाउद्दीन बख़्शी क़ुद्दिस सिर्रहुल अज़ीज़ ने इसकी शरह आठवीं सदी हिजरी के शुरू में लिखी थी।

दुआए सुर्यानी हर जायज़ मक़सद के लिए आज़माई हुई है। हर दिन तीन बार या सात बार मक़सद पूरा होने तक पढ़ता रहे और सजदे में होकर दुआ करे।

दुआए सुर्यानी तर्जुमे के साथ

بسم الله الرحمن الرحيم

انا الموجود فاطلبني تجدني	فان تطلب سوائي لم تجدني
मै हूं मौजूद सब मुझ पास आओ जो मेरे गैर की रखो तलब तुम	मुझे शहे रग सीते नज़दीक पाओ न पाओ मुझे जिस जा कह जाओ
انا المقصود لا تقصد سوائي	كثير الخلق فاطلبني تجدني
तुम्हारा या इबादी मै हूं मकसूद मैं सर्जनहार हूं यह सब खल्क का	न पूजो मुझ बिना कोई और माबूद जिसे चाहूँ करूं इक पल मे नाबूद
انا الرب الذي يخشى عذابي	جميع الخلق فاطلبني تجدني
मैं ऐ बन्दे इस्म रखता हूं कह्हार चलो दिन रात मुझ शाहके हुक्म पर	डरे मेरे गज़ब से कुल यह ससार जो चाहते हो खलासी मेरे दरबार
انا الملك المهيمن جل قدري	عظيم الملك فاطلبني تجدني
तुम्हारा मैं हमेशा हूं कद्र दां बड़ी है बहुत मेरी बादशाही	अगर बस्ती मे हो या दर बयाबां पकड़ खींचूं मै शाहो के गिरेबां
انا المعبود لا تعبد سوائي	انا الجبار فاطلبني تجدني
सच्चा माबूद मुझ पूजो ऐ इबाद मैं गालिब हूं मेरा सब पर हुक्म है	न हरगिज गैर मेरे की करो याद रखूं गमगीन के रखो की शाद
انا للعبد ارحم من اخيه	ومن ابويه فاطلبني تجدني
करूं अपना रहम मै तुम ऊपर अब खबर लूं रिज्क की अगर [illegible]	न ऐसा कर सके भाई व माँ-बाप करूं बीमार पुर्सी जब चढ़े ताप

تجدني واحدا صمدا عظيما	كثير البر فاطلبني تجدني
मै जातो जात हूं आप ही अकेला करूं एहसान मै हर-हर फर्द पर	न रखता हूं कोई खादिम न चेला न देखूं कौन पहला कौन पिछला
تجدني مستغاثا لي مغيثا	انا القهار فاطلبني تجدني
ऐ बन्दे आओ सब मुझ पास फरयाद करूं मज़लूम की मै दस्तगीरी	अगर तुम पर करे कोई जुल्म बेदाद उड़ा दूं दौलते जालिम को बर्बाद
وارحم من عبادي من عصاني	بجهل منه فاطلبني تجدني
करूं आसी ऊपर मैं रहम फिलहाल मेरी रहमत के है मामूर दरिया	न दूं धोका उसे प्रसो दिया काल कहूं न उम्मीद न होवे ये [illegible]
تجدني في سواد الليل عبدي	قريبا منك فاطلبني تجدني
ऐ बन्दे तुम उठो पिछली पहर रात वहीं पाओगे मुझ को बहुत नजदीक	करो उस वक्त मे मुझ से मुनाजात सुनूं गा मै तुम्हारी प्यार से बात
تجدني راحما برا رءوفا	بكل الخلق فاطلبني تجدني
ऐ बन्दे नाम मेरा है सो रहमान बनी आदम परिन्दे जानवर को	सुबह और शाम सब मेरे हैं मेहमान मुवाफिक हाल के पहुँचाऊँ सामान
تجدني واسعا بالخلق عبدي	انا المذكور فاطلبني تجدني
करम मेरा खलाइक पर है बिस्यार करो मेरा जिक्र हर दम हमेशा	गरीबो आजिज़ो का मैं सच्चा यार जो सोते हो जो बैठे हो जो हुश्यार
تجدني في سجودك حين تدعو	وحين تقوم فاطلبني تجدني
तुम्ही सजदे मने जाता पछाड़ो दुआ उस वक्त मे होवेगी मकबूल	खड़े होकर हजारो आह मारो तुम अपने काम दो जग मे सवारो
اذا القهار ناداني كظيما	اقل لبيك فاطلبني تجدني

अगर ग़मग़ीन पुकारे मुझसे अदाह कहूँ लब्बैक हाँ हाज़िर खड़ा हूँ	कि ऐ मौला किया है ग़म ने अवोह उठा दूँ दर्द व ग़म के ये बड़े कोह
إِذَا الْمُضْطَرُّ قَالَ لَا تَرَانِيْ	نَظَرْتُ إِلَيْهِ فَاطْلُبْنِيْ تَجِدْنِيْ
जो आये ग़मज़दा मुझ पास नागाह करूँ उस पर निगाह लुत्फ़ो करम की	कि मारे बेकरारी से वह एक आह छुड़ाऊँ दर्द व ग़म से खोल दूँ राह
اَتَعْرِفُ مَنْ يُّغِيْثُ الْخَلْقَ غَيْرِيْ	سَرِيْعُ الْاَخْذِ فَاطْلُبْنِيْ تَجِدْنِيْ
ख़ल्क़ की कौन पूरे मुझ बिना आस जहन्नम आग से देवे ख़लासी	रहे दिन रात यूँ मौजूद तुझ पास सुंघावे बहिश्त के फूलों खुशबाश
اَتَعْرِفُ مُنْقِذًا غَيْرِيْ سَرِيْعًا	مِنَ الْهَلَكَاتِ فَاطْلُبْنِيْ تَجِدْنِيْ
ऐ बन्दे कौन है तुम को ना चाहवे न पाओ ग़ैर मेरे कौन दो जहाँ में	सिवा मेरे हलाकी से छुड़ावे कि मुश्किल वक़्त अन्दर काम आवे
اَتَعْرِفُ مَنْ يَّقُلْ لِلشَّيْءِ غَيْرِيْ	يَكُنْ فَيَكُوْنُ فَاطْلُبْنِيْ تَجِدْنِيْ
है ऐसा कौन ख़िल्क़त में करन्हार मैं क़ादिर हूँ बड़ी क़ुदरत है मेरी	करे यक हर्फ़ से आलम को इज़्हार नहीं मेरी मिसल जिन्हार-जिन्हार
اَتَعْرِفُ سَاتِرًا لِلْغَيْبِ غَيْرِيْ	اَنَا السَّتَّارُ فَاطْلُبْنِيْ تَجِدْنِيْ
बड़ा सत्तार हूँ मैं आलिमुलग़ैब अगर चाहते हो ख़ूबी या इबादी	छुपाता हूँ ज़नो-मरदो के कुल ऐब तो किसी के ऐब न खोलो बिलारैब
فَاِنْ تَابَ اَتُوْبُ عَلَيْهِ عَبْدِيْ	اَنَا التَّوَّابُ فَاطْلُبْنِيْ تَجِدْنِيْ
करो तुम याद हर दम रोज़े मीसाक़ मेरी रहमत जो है साबिक़ ग़ज़ब पर	रहो इस अहद पर तुम क़ौमे उश्शाक़ करो इस तौर तुम तहसीने अख़्लाक़
وَمَنْ مِّثْلِيْ وَاَيْنَ يَكُوْنُ مِثْلِيْ	وَلَيْسَ يَكُوْنُ فَاطْلُبْنِيْ تَجِدْنِيْ
कहो है कौन जग में मुझ जैसा शाह हुआ न मुझ मिसल कोई न होगा	किसने देखी है ऐसी आली दर्गाह है लाखों नाम मेरे हूँ यक अल्लाह

هَلُمَّ اِلَيَّ لَا تَقْصُدْ سِوَائِيْ	اَنَا الْمَقْصُوْدُ فَاطْلُبْنِيْ تَجِدْنِيْ
अगर चाहते हो ऐ बन्दे ग़र्ज़ तुम करो शुक्राना निअमत दिलों में	तो चल आओ शताबी मुझ तरफ़ तुम न बोलो ग़ैर सीती यक हर्फ़ तुम
اَتَذْكُرُ لَيْلَةً نَادَيْتَ سِرًّا	اَلَمْ اَسْمَعْكَ فَاطْلُبْنِيْ تَجِدْنِيْ
दुआ माँगो ऐ बन्दे तुम सुबहो शाम ख़ज़ाने हैं मेरे मामूर भरपूर	छुपे ज़ाहिर मुझे फ़रमाओ सब काम सभी मतलब को पहुँचाऊँ सर अंजाम
فَلَا يُنْجِيْكَ يَا عَبْدِيْ سِوَائِيْ	مِنَ النِّيْرَانِ فَاطْلُبْنِيْ تَجِدْنِيْ
ऐ बन्दे सो रहे हो क्यों उठो जाग जिसे चाहूँ उसे बख़्शूँ ख़लासी	है आगे दोज़ख़ों की सख़्त तर आग न मेरे ग़ैर की लागे वहाँ लाग
وَلَيْسَ يَمْلِكُ الْفِرْدَوْسَ غَيْرِيْ	اَنَا الرَّزَّاقُ فَاطْلُبْنِيْ تَجِدْنِيْ
नहीं कोई ग़नी कोई क़लन्दर मैं हूँ रज़्ज़ाके मुत्लक़ या इबादी	जो तुम को महल देवे बहिश्त अन्दर फ़ज़्ल से दूँ क़ुसूरो हूरो कौसर
اَهَلْ فِي الْخَلْقِ مَنْ يُّعْطِيْ جَزِيْلًا	سِوَائِيْ لَيْسَ فَاطْلُبْنِيْ تَجِدْنِيْ
ख़ल्क़ में कौन ऐसा है कि बेरंज ये मेरे जूदो बख़्शिश की सिफ़त है	ग़रीबों पर लुटा दे ये ज़रो गंज लुटाने में करूँ ना सात ना पंज
اَتَعْرِفُ غَافِرًا لِلذَّنْبِ غَيْرِيْ	اَنَا الْغَفَّارُ فَاطْلُبْنِيْ تَجِدْنِيْ
आया है जग में मुझ सा कोई सत्तार मैं बख़्तहार हूँ जिन्नों बशर का	ग़ुलामों के गुनह बख़्शे जो लख बार बले मुश्रिक न बख़्शूँगा मैं ज़िन्हार
سَاَغْفِرُ لِلْعِبَادِ وَلَا اُبَالِيْ	غَدَاةَ الْحَشْرِ فَاطْلُبْنِيْ تَجِدْنِيْ
बख़्श डालूँ करोड़ों में गुनाहों न कोई भर सके उस जाए पर दम	हश्र के दिन सभों को दूँ पनाहों न कोई वहाँ करसके उस वक़्त ना हों
وَاُكْرِمُ مَنْ اُرِيْدُ بِلَا حِسَابٍ	اَنَا الْوَهَّابُ فَاطْلُبْنِيْ تَجِدْنِيْ

ख़ज़ाने बेअदद बख़्शूं ज़रो-सीम ये कहता हूँ हर्फ़ अज़ राहे तफ़्हीम	जिसे चाहूँ उसे दूँ बहुत ताज़ीम मै हूँ वहहाब मेरा लुत्फ़ है आम
وَلَسْتَ تَرَاهُ فَاطْلُبْنِىْ تَجِدْنِىْ	فَعِزَّنِىْ وَلَمْ تَرَقَطْ مِثْلِىْ
उसी से पाएगा इज्ज़त बड़ाई क़बीला में मुझे ना बाप न माई	ऐ बन्दे कर तू मुझ से आशनाई नही मिरी मिस्ल दोनों जहां मे
لِىَ الْاِكْرَامُ فَاطْلُبْنِىْ تَجِدْنِىْ	وَاَكْرِمُ مَنْ يَتُوْبُ اِلَىَّ خَوْفًا
करूँ सब मुश्किलें तेरी मैं आसां अबस रखता है क्यों ख़ातिर परेशां	ऐ बन्दे ख़ौफ़ मेरा रख तू दिलमां करम मेरा है सारी ख़ल्क़ पर आम
لِىَ الْخَيْرَاتُ فَاطْلُبْنِىْ تَجِدْنِىْ	لِىَ الْاٰلَآءُ وَالنَّعْمَآءُ عَبْدِىْ
मैं सारी ख़ल्क़ को देता हूँ इनाम मेरे मोहताज हैं सब ख़ास और आम	बख़्शाना निमतो का है मेरा काम मेरी ख़ैरात है जारी हमेशा
لِىَ الْمَلَكُوْتُ فَاطْلُبْنِىْ تَجِدْنِىْ	لِىَ الدُّنْيَا وَمَا فِيْهَا جَمِيْعًا
गड़े मुझ शाह के हर मुल्क झन्डे न हो तुम चार आँखों साथ अँधे	मैं हूँ अल्लाह सब मेरे है बन्दे मेरे दर्बार बिन तुम कहीं न जाओ
اَنَا الرَّحْمٰنُ فَاطْلُبْنِىْ تَجِدْنِىْ	اَتَعْرِفُ مَنْ لَهٗ اِسْمٌ كَاسْمِىْ
मुझे लाइक़ है सब औसाफ़ बेहतर गदा कोनों और शाहों को अपसर	मेरा है नाम सब नामों मे बर्तर मै हूँ रहमां सब को बख़्शता हूं
اَنَا الدَّيَّانُ فَاطْلُبْنِىْ تَجِدْنِىْ	اَنَا اللّٰهُ الَّذِىْ لَا شَىْءَ مِثْلِىْ
मिला दूं मुद्दई को ख़ाक दर ख़ाक मेरे महकूम हैं ये अर्ज़ो-अफ़्लाक	मैं अल्लाह बेमिस्ल हूँ मिस्ल से पाक मैं हूँ हाकिम चलाऊँ हुक्म सब पर
لِىَ الْمِيْرَاثُ فَاطْلُبْنِىْ تَجِدْنِىْ	اَنَا مَلِكُ الْمُلُوْكِ وَكُلُّ مُلْكٍ
अगर हैं हाज़िरां या ग़ाइबां है अगर्चे अपने घर के साहिबां है	ये सब सुल्तान मेरे नाइबां है मेरी दर्गाह मे जारुब कश है
وَبَعْدَ الْبَعْدِ فَاطْلُبْنِىْ تَجِدْنِىْ	اَنَا اَفْنِى الدُّهُوْرَ وَقَبْلَ قَبْلٍ

तभी उड़ जाऐं सब जंगल नदी नाओ अरे इन ग़ाफ़िलों को कोई समझाओ	फ़ना की जब ख़ल्क़ ऊपर चले जाओ रहे बाक़ी हमारी बादशाही
وَلِىَ الْعَهْدِ فَاطْلُبْنِىْ تَجِدْنِىْ	اَنَا الْوَهَّابُ يَا عَبْدِىْ سَرِيْعًا
वफ़ाए अहद मेरा फेल है ख़ूब यही लोहो क़लम मे सब है मकतूब	शताबी तालिबो को दूं मैं मत्लूब मेरे औसाफ़ जो तुमको सुनादे
بِلَا التَّكْيِيْفِ فَاطْلُبْنِىْ تَجِدْنِىْ	اَنَا الْفَرْدُ الْمُدَبِّرُ فَوْقَ عَرْشِىْ
है मेरे हुक्म से तक़दीमो ताख़ीर करूँ यक आन में ईजादो तग्यीर	किया हूँ ख़ल्क़ की मैं आप तक़दीर अर्श से फ़र्श तक मेरा हुक्म है
وَلَسْتُ اَجُوْرُ فَاطْلُبْنِىْ تَجِدْنِىْ	اَنَا الرَّبُّ الَّذِىْ لَا ظُلْمَ عِنْدِىْ
करों मैं ज़ालिमों को ख़्वारो रंजूर ग़रीबी आजिज़ी है मुझको मन्ज़ूर	मै रब्बुल आलमीं हूँ ज़ुल्म मे दूर सदा मज़लूम की सुनता हूँ फ़रयाद
لَهُ الْبُشْرٰى فَاطْلُبْنِىْ تَجِدْنِىْ	خَلَقْتُ مُحَمَّدًا نُوْرًا قَدِيْمًا
नहीं यक आन वे मुझ क़रीब से दूर मैं नाज़िर हूँ वही मेरे है मन्ज़ूर	मुहम्मद मुस्तफ़ा है ज़ात के नूर किया उनके सबब ये सब नूर
اُشَفِّعُ فِيْهِ فَاطْلُبْنِىْ تَجِدْنِىْ	وَيَشْفَعُ فِى الْخَلَائِقِ يَوْمَ حَشْرٍ
करेगे जुम्ला आलम की शिफ़ाअत करूँगा उसको राजी वे निहायत	मुहम्मद मुस्तफ़ा रोजे क़ियामत वही महबूब मेरे वे शुबह व शक

अस्नाद दुआ सुर्यानी

हमेशा जो कोई इसको पढ़ेगा	अमन में वह सदा हक़ की रहेगा
विर्द कोई चहल दिन इसको करेगा	नसीबा बख़्त व दौलत पर रहेगा
हमेशा मुक़्बिले मक़्बूल होवे	बला से छूट कर वह पाक होवे
दुआ उसकी कभी रद भी न जावे	न किसी का वह कभी मोहताज होवे

फ़ातिहा का तरीक़ा

हर वह चीज़ जो हलाल माल से हो, फ़ल, मिठाई और खाने पर फ़ातिहा दी जाती है और क़ब्रिस्तान या किसी मज़ार पर क़ब्र वाले के सामने इस तरह खड़े होकर फ़ातिहा पढ़ें कि आपकी पीठ क़िब्ला की तरफ़ हो ।

एक बार

سُوْرَةُ الْكٰفِرُوْنَ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ سِتُّ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۝١ لَاۤ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۝٢
وَلَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ۝٣ وَلَاۤ اَنَا عَابِدٌ مَّا
عَبَدْتُّمْ ۝٤ وَلَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ۝٥ لَكُمْ
دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ۝٦

तीन बार

سُوْرَةُ الْاِخْلَاصِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ اَرْبَعُ اٰيٰتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ ۝
وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝

एक बार

سُوْرَةُ الْفَلَقِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسُ اٰيٰتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ
اِذَا وَقَبَ ۝ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِي الْعُقَدِ ۝ وَمِنْ شَرِّ
حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۝

एक बार

سُوْرَةُ النَّاسِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ سِتُّ اٰيٰتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝ مَلِكِ النَّاسِ ۝ اِلٰهِ النَّاسِ ۝
مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ۝ الَّذِيْ يُوَسْوِسُ فِيْ صُدُوْرِ
النَّاسِ ۝ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝

एक बार

سُوْرَةُ الْفَاتِحَةِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ سَبْعُ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ الرَّحْمٰنِ
الرَّحِيْمِ ۝ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝ اِيَّاكَ
نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ
الْمُسْتَقِيْمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ
غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۝

एक बार

٢ سُوْرَةُ الْبَقَرَةِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓ ۝ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ فِيْهِ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝

الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا
رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ
اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ عَلٰى
هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝
وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ۝
اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝
وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝
مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَ
خَاتَمَ النَّبِيّٖنَ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ۝
اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ۝

इसके बाद दुरूदे ताज या दुरूद शरीफ पढ़ें।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَاٰلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلٰوةً وَّسَلَامًا عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ۝ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

इसके बाद रब्बुल इज़्ज़त की बारगाह में दुआ करे और दोनों हाथ आसमान की तरफ़ इतने ऊँचे हों कि कांधों से ऊपर न होने पाएँ और ख़ुदा वन्दे क़ुद्दूस की बारगाह में अर्ज करे,

कि यह जो कुछ मैंने तिलावत की और यह जो कुछ शीरीनी वग़ैरा है यह सब तेरे ही लिए है इसको क़बूल फ़रमा और इसका सवाब हुज़ूर मुहम्मद रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम की बारगाह में पहुँचा और आप के वसीलए जलीला से इसका सवाब तमाम नबियों, रसूलों, असहाबे किराम, अहलेबैत, तमाम औलिया-ए-उम्मत रिज़वानुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम अजमईन और ख़ास कर इसका सवाब फ़लाँ शख़्स को (उनका नाम ले) और तमाम मोमिन मर्द और औरतों को पहुँचे। फ़ातिहा के बाद दोनों हाथों को अपने मुँह पर फेर लेना चाहिए।

अक़ीक़ा

हदीस :- हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया लड़के की तरफ़ से दो बकरियाँ और लड़की की तरफ़ से एक। यह कोई ज़रूरी नहीं कि किसी एक की तरफ़ से नर हो या मादा।

(अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, नसाई)

हदीस :- रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत इमामे हसन रज़ि० की तरफ़ से अक़ीक़े में एक बकरी ज़िबह की और फ़रमाया कि ऐ फ़ातिमा! इसका सर मुँडा दो और बालों के वज़न के बराबर चाँदी सद्क़ा कर दो। (तिर्मिज़ी)

हदीस:- हज़रत इमाम हसन (रज़ि०) पैदा हुए तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनके कान में वही अज़ान दी जो नमाज़ के लिए कही जाती है। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

मसाइले फ़िक़्हिय्या

बच्चे की पैदाइश के सातवें दिन अक़ीक़ा किया जाए। सर मुँडवाया जाए और बालों के वज़न के बराबर सोना या चाँदी सद्क़ा कर दी जाए। उसी दिन बच्चे का अच्छा सा नाम रखा जाए। फ़ौरी तौर पर मुहम्मद नाम रखना अफ़ज़ल है। अक़ीक़े में कोई शरीअ़त के ख़िलाफ़ बेहूदा रस्म न की जाए। अक़ीक़े के जानवर में क़ुर्बानी के जानवर की शराइत का होना ज़रूरी है। एक गाय में सात अक़ीक़े हो सकते हैं। क़ुर्बानी की गाय में अक़ीक़े का हिस्सा हो सकता है। अक़ीक़ा का गोश्त फ़क़ीरों और

मुह्ताजों में भी बाँटना चाहिए। लोगों में यह बहुत मशहूर है कि अक़ीक़े का गोशत बच्चे के माँ-बाप, दादा-दादी, नाना-नानी न खाएँ, यह बिल्कुल ग़लत है। शरीअ़त में इस का कोई सबूत नहीं है। (बहारे शरीअ़त)

दुआए अक़ीक़ा

"बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर" कह कर ज़िबह करें उसके बाद यह दुआ पढ़ए :-

लड़के के लिए दुआ

اَللّٰهُمَّ هٰذِهٖ عَقِيْقَةُ [1] دَمُهَا بِدَمِهٖ وَلَحْمُهَا بِلَحْمِهٖ وَ

عَظْمُهَا بِعَظْمِهٖ وَجِلْدُهَا بِجِلْدِهٖ وَشَعْرُهَا بِشَعْرِهٖ

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا فِدَاءً لَّهٗ مِنَ النَّارِ ط

लड़की के लिए दुआ

اَللّٰهُمَّ هٰذِهٖ عَقِيْقَةُ [2] دَمُهَا بِدَمِهَا وَلَحْمُهَا بِلَحْمِهَا

وَعَظْمُهَا بِعَظْمِهَا وَجِلْدُهَا بِجِلْدِهَا وَشَعْرُهَا

بِشَعْرِهَا اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا فِدَاءً لَّهَا مِنَ النَّارِ

1 [illegible] 2 यहाँ लड़की का नाम लिया जाए।

फ़ज़ाइल व ख़्वास

दुरूदे ताज

ख़्वास इस दुरूद शरीफ़ के बहुत ज़्यादा हैं यहाँ उन सबको बयान करना बहुत मुश्किल है। مَالَا يُدْرَكُ كُلُّهٗ لَا يُتْرَكُ كُلُّهٗ ط यहाँ थोड़ा सा बयान होता है। उन ख़्वास में से अच्छी बात यह है कि अगर कोई शख़्स दिल व जान से आँहजरत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़ियारत की ख़्वाहिश रखता हो तो महीने की 13, 14 और 15 तारीख़ में जुमा की रात को इशा की नमाज़ पढ़ कर, साफ़ व पाक कपड़े पहन कर, बावुज़ू होकर क़िब्ले की तरफ़ मुँह करके 170 बार इस दुरूद शरीफ़ व मुकर्रम को पढ़ कर सो रहे। ग्यारह रातें इसी तरह पढ़े, इन्शाअल्लाह तआ़ला शर्फ़े ज़ियारत बाबरकत सरवरे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से मुशर्रफ़ होगा और दिल की सफ़ाई के लिए हर दिन सुबह की नमाज़ के बाद सात बार और अ़सर की नमाज़ के बाद तीन बार और इशा की नमाज़ के बाद तीन बार विर्द रखे, और जिन, भूत, आसेब, जादू, चेचक और जो भी बीमारी इसके अलावा हों, ग्यारह बार पढ़ कर फूँक लें, और रोज़ी की तंगी दूर करने के लिए सात बार सुबह की नमाज़ के बाद हमेशा वज़ीफ़ा रखे और बाँझ औरत के लिए 21 खजूरों पर सात-सात बार फूँके और हर दिन एक खजूर उसको खिलाएँ फिर माहवारी से पाक होने और ग़ुसल के बाद उससे हमबिस्तरी करे,

ख़ुदा के फ़ज़्ल से नेक औलाद पैदा होगी और अगर हामिला को कुछ तक्लीफ़ हो तो सात दिन तक सात बार बराबर पानी पर दम करके पिलावे।

दुरूदे ताज

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ صَاحِبِ التَّاجِ
وَالْمِعْرَاجِ وَالْبُرَاقِ وَالْعَلَمِ ○ دَافِعِ الْبَلَآءِ وَالْوَبَآءِ وَالْقَحْطِ
وَالْمَرَضِ وَالْاَلَمِ ○ اِسْمُهٗ مَكْتُوْبٌ مَّرْفُوْعٌ مَّشْفُوْعٌ
مَّنْقُوْشٌ فِی اللَّوْحِ وَالْقَلَمِ ○ سَيِّدِ الْعَرَبِ وَالْعَجَمِ ○
جِسْمُهٗ مُقَدَّسٌ مُّعَطَّرٌ مُّطَهَّرٌ مُّنَوَّرٌ فِی الْبَيْتِ وَالْحَرَمِ ○
شَمْسِ الضُّحٰى بَدْرِ الدُّجٰى صَدْرِ الْعُلٰى نُوْرِ الْهُدٰى
كَهْفِ الْوَرٰى مِصْبَاحِ الظُّلَمِ ○ جَمِيْلِ الشِّيَمِ ○ شَفِيْعِ الْاُمَمِ ○
صَاحِبِ الْجُوْدِ وَالْكَرَمِ ○ وَاللّٰهُ عَاصِمُهٗ ○ وَجِبْرِيْلُ خَادِمُهٗ
وَالْبُرَاقُ مَرْكَبُهٗ ○ وَالْمِعْرَاجُ سَفَرُهٗ وَسِدْرَةُ الْمُنْتَهٰى مَقَامُهٗ ○

وَقَابَ قَوْسَيْنِ مَطْلُوْبُهٗ ○ وَالْمَطْلُوْبُ مَقْصُوْدُهٗ
وَالْمَقْصُوْدُ مَوْجُوْدُهٗ ○ سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ○ خَاتَمِ
النَّبِيّٖنَ شَفِيْعِ الْمُذْنِبِيْنَ ○ اَنِيْسِ الْغَرِيْبِيْنَ رَحْمَةٍ
لِّلْعٰلَمِيْنَ ○ رَاحَةِ الْعَاشِقِيْنَ ○ مُرَادِ الْمُشْتَاقِيْنَ ○
شَمْسِ الْعَارِفِيْنَ ○ سِرَاجِ السّٰلِكِيْنَ ○ مِصْبَاحِ
الْمُقَرَّبِيْنَ ○ مُحِبِّ الْفُقَرَآءِ وَالْمَسٰكِيْنِ ○ سَيِّدِ الثَّقَلَيْنِ ○
نَبِيِّ الْحَرَمَيْنِ ○ اِمَامِ الْقِبْلَتَيْنِ ○ وَسِيْلَتِنَا فِی الدَّارَيْنِ ○
صَاحِبِ قَابَ قَوْسَيْنِ مَحْبُوْبِ رَبِّ الْمَشْرِقَيْنِ وَ
رَبِّ الْمَغْرِبَيْنِ جَدِّ الْحَسَنِ وَالْحُسَيْنِ مَوْلٰنَا
وَمَوْلَى الثَّقَلَيْنِ اَبِی الْقَاسِمِ مُحَمَّدِ ابْنِ عَبْدِ اللّٰهِ نُوْرٍ
مِّنْ نُّوْرِ اللّٰهِ يٰۤاَيُّهَا الْمُشْتَاقُوْنَ بِنُوْرِ جَمَالِهٖ صَلُّوْا
عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ○

अस्नाद दुरूदे तुनज्जीना

"मनाहिजुल मुहसनात शरह दलाइलुल ख़ैरात" नामी किताब में लिखा है कि इब्ने फ़ाकिहानी ने अपनी किताब "फ़ज्रे मुनीर" में तहरीर किया है कि एक बुज़ुर्ग शैख़ सालेह मूसा नाबीना थे उन्हों ने अपना क़िस्सा मुझसे बयान किया कि एक जहाज़ डूबने लगा, मैं उसमें था, उस वक़्त मुझको ऊँघ सी मालूम हुई उसी हालत में जनाब फ़ख़्रे मौजूदात हज़रत रिसालत मआब सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुझको यह दुरूद सिखाया कि हज़ार बार इस को जहाज़ वाले पढ़ें, अभी 300 सौ पर भी नहीं पहुँचे थे कि जहाज़ डूबने से बच गया और किनारे पर पहुँच गया, वह दुरूदे निजात यह है :-

दुरूदे तुनज्जीना

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُنَجِّيْنَا بِهَا مِنْ جَمِيْعِ الْاَهْوَالِ وَ الْاٰفَاتِ وَتَقْضِىْ لَنَا بِهَا جَمِيْعَ الْحَاجَاتِ وَتُطَهِّرُنَا بِهَا مِنْ جَمِيْعِ السَّيِّـٰاٰتِ وَتَرْفَعُنَا بِهَا عِنْدَكَ اَعْلَى الدَّرَجَاتِ وَتُبَلِّغُنَا بِهَآ اَقْصَى الْغَايَاتِ مِنْ جَمِيْعِ الْخَيْرَاتِ فِى الْحَيٰوةِ وَبَعْدَ الْمَمَاتِ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ○

दुरूदे माही

एक दिन नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम मदीना मुनव्वरा की मस्जिद में बैठे हुए थे कि एक देहाती आया और एक ढका हुआ तबाक़ नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सामने रख दिया, हुज़ूर नबी-ए-करीम (सल्ल०) ने पूछा कि इसमें क्या है? देहाती ने जवाब दिया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तीन दिन से मैं इस मछली को पका रहा हूँ लेकिन यह पकती नहीं, इसको आग का असर नहीं होता, अब मैं इसको आप के पास लाया हूँ, आप (सल्ल०) इसको अच्छी तरह जान सकते हैं।

हज़रत (सल्ल०) ने उस मछली से पूछा, वह ख़ुदा के हुक्म से बोलने लगी, मछली ने कहा कि या रसूलल्लाह (सल्ल०) एक दिन मैं पानी में खड़ी थी, एक शख़्स इस दुरूद शरीफ़ को पढ़ रहा था कि उसकी आवाज़ मेरे कानों में पहुँची और मैंने कुछ नहीं किया, आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम ने मछली को हुक्म दिया कि सुना, मछली ने दुरूद शरीफ़ सुना दिया, हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम ने फ़रमाया ऐ अली! इस दुरूद शरीफ़ को लिख लो और लोगों को सिखा दो इन्शाअल्लाह दोज़ख़ की आग उसपर हराम हो जाएगी, दुरूद शरीफ़ मुबारक यह है :-

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ خَيْرِ
الْخَلَآئِقِ وَاَفْضَلِ الْبَشَرِ وَشَفِيْعِ الْاُمَمِ يَوْمَ
الْحَشْرِ وَالنَّشْرِ وَصَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ كُلِّ مَعْلُوْمٍ لَّكَ
وَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَصَلِّ عَلٰى
جَمِيْعِ الْاَنْبِيَآءِ وَالْمُرْسَلِيْنَ وَصَلِّ عَلٰى كُلِّ الْمَلٰٓئِكَةِ
الْمُقَرَّبِيْنَ وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ وَسَلِّمْ
تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا ط بِرَحْمَتِكَ وَبِفَضْلِكَ وَ
بِكَرَمِكَ يَآ اَكْرَمَ الْاَكْرَمِيْنَ بِرَحْمَتِكَ يَآ اَرْحَمَ
الرّٰحِمِيْنَ ○ يَا قَدِيْمُ يَا دَآئِمُ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ يَا وِتْرُ
يَآ اَحَدُ يَا صَمَدُ يَا مَنْ لَّمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ ○ وَ
لَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ○ بِرَحْمَتِكَ يَآ اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ ○

*

फ़ज़ाइल व अस्नाद दुरूदे मुक़द्दस

दुरूद शरीफ़ पढ़ने के बेशुमार फ़ज़ाइल कुरआने करीम और नबी-ए- करीम (सल्ल०) की हदीसों से साबित हैं। कुरआने करीम की नीचे लिखी आयते करीमा से दुरूद शरीफ पढ़ने की ताकीद मालूम होगी :-

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِىِّ ۚ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ۝ (अल् अहज़ाब, 56)

तर्जुमा:- बेशक अल्लाह और उस के फ़रिशते हज़रत नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर सलात भेजते हैं, ऐ मुसलमानों ! तुम भी उन पर दुरूद और सलाम भेजो।

मतलब यह है कि पहले तो अल्लाह तआला ने अपनी सलात से आप (सल्ल०) की फ़ज़ीलत बयान की फिर फ़रिश्तों की सलात से मुसलमानों को दुरूद और सलाम के पढ़ने का हुक्म दिया। अल्लाह तआला की सलात का मतलब है दुआ, और मुसलमानों पर इस हुक्म से हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद भेजना फ़र्ज़ किया। जहाँ कहीं भी हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुबारक और पाक नाम का ज़िक्र किया जाए तो मुसलमानों पर दुरूद शरीफ पढ़ना ज़रूरी हो जाता है, अक्सर आलिमों का यही कहना है कि जो मुसलमान चाहे मर्द हो या औरत इस पाक दुरूद को ताज़ीम और एहतिराम और सच्चे यक़ीन के साथ पढ़ेगा, अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व करम से उसकी तमाम दीनी, उख़रवी और दुनियावी ज़रूरतें और मतलब पूरे होंगे।

इस दुरूदे मुक़द्दस के पढ़ने का तरीक़ा यह है कि ख़ूब दिल लगा कर अल्लाह तआला के लिए वुज़ू करे, पाक और साफ़ कपड़े ख़ुशबू लगा कर पहने उसके बाद मस्जिद या किसी दूसरी पाक और साफ़ जगह में ग्यारह बार दुरूदे मुक़द्दस क़िब्ला की तरफ़ मुँह करके बैठे और दिल के लगाव के साथ पढ़े और इसका सवाब सरवरे काइनात फ़ख़्रे मौजूदात सरवरे आलाम सय्यिदुल अंबिया रसूले ख़ुदा हज़रत अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रूहे अक़्दस को बख़्शे, उसके बाद जो नेक दुआ हो अल्लाह तबारक व तआला से मांगे, अल्लाह के फ़ज़्ल से उसकी दुआ अल्लाह तआला की बारगाह में मक़बूल होगी।

(दुरूदे मुक़द्दस पढ़ने से पहले तीन बार बिस्मिल्लाह के साथ इसे पढ़ें उसके बाद दुरूदे मुक़द्दस पढ़ें)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ۖ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ۝

(तौबह, 128 - 129)

दुरूदे मुक़द्दस

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يَا اِلٰهِيْ بِحُرْمَةِ اَقْوَالِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاَفْعَالِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاَحْوَالِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاَصْحَابِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَآ اِلٰهِيْ بِحُرْمَةِ بَدَنِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَطْنِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَرَكَتِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَيْعَةِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَرَآءِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَآ اِلٰهِيْ بِحُرْمَةِ تَوَلُّدِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّتَعَبُّدِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّتَهَجُّدِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَآ اِلٰهِيْ بِحُرْمَةِ ثَنَآءِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّثَوَابِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّثِمَالِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَآ اِلٰهِيْ بِحُرْمَةِ جَلَالِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّجَمَالِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّجَلِّ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّجِهَةِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّجَعْدِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَآ اِلٰهِيْ بِحُرْمَةِ

سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّحُسْنِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّحَسَنَاتِ سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ وَّحُرْمَةِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّحَالِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
وَّحُلْيَةِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَآ اِلٰهِيْ
بِحُرْمَةِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّخُلُقِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّخَلْقِ
سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّخُطْبَةِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّخَيْرَاتِ سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَآ اِلٰهِيْ بِحُرْمَةِ دِيْنِ سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ وَّدِيَانَةِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّدَوْلَةِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
وَّدَرَجَاتِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّدُعَآءِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ
عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَآ اِلٰهِيْ بِحُرْمَةِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّذِكْرِ سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ وَّذَوْقِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
يَآ اِلٰهِيْ بِحُرْمَةِ رُوْحِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّرَأْسِ سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ وَّرِزْقِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّرَفِيْقِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
وَّرِضَآءِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَآ اِلٰهِيْ بِحُرْمَةِ
زُهْدِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّزَهَادَةِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّزَهْرَةِ
سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّزِيْنَةِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
يَآ اِلٰهِيْ بِحُرْمَةِ سِيَادَةِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّسَعَادَةِ سَيِّدِنَا

مُحَمَّدٍ وَّسُنَّةِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّسِرِّ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
وَّسَلَامِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَآ اِلٰهِيْ بِحُرْمَةِ
شَرْعِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّشَرَفِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّشَوْقِ
سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّشَادِيِّ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
يَآ اِلٰهِيْ بِحُرْمَةِ صِدْقِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّصَوْمِ سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ وَّصَلَوَاتِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّصَفَآءِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَآ اِلٰهِيْ بِحُرْمَةِ ضِيَآءِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
وَّضَمِيْرِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّضُحَآءِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّضِيَافِ
سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَآ اِلٰهِيْ بِحُرْمَةِ
طَلْعَةِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّطَهَارَةِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّطُهْرِ
سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّطَرِيْقِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّطَوَافِ سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَآ اِلٰهِيْ بِحُرْمَةِ ظَاهِرِ سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ وَّظُهْرِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّظِلِّ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
وَّظُهُوْرِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّظَفَرِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ
عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَآ اِلٰهِيْ بِحُرْمَةِ عِشْقِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
وَّعِرْفَانِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعِلْمِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعُلُوِّ

سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَوْنِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
يَآ اِلٰهِيْ بِحُرْمَةِ غُرْبَةِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّغَارِ سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ وَّغَزِيْرِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّغَيْرَةِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
وَّغَنِيْمَةِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَآ اِلٰهِيْ بِحُرْمَةِ
قُرْبِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّقَدْرِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّقَنَاعَةِ وَقُوَّةِ
سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَآ اِلٰهِيْ بِحُرْمَةِ
سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّفَقْرِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّفِرَاقِ سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ وَّفَضْلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّفَضِيْلَةِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَآ اِلٰهِيْ بِحُرْمَةِ كَلَامِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
وَّكَشْفِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّكِيَاسَةِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّكِتَابَةِ
سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّكُنْيَةِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
يَآ اِلٰهِيْ بِحُرْمَةِ لَيْلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّلِقَآءِ سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ وَّلِيَاقَةِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
يَآ اِلٰهِيْ بِحُرْمَةِ مِعْرَاجِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّمُجَاهَدَاتِ
سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّمُشَاهَدَاتِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّمُلَاحَظَ

سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّمَسَاحَةِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
يَآ اِلٰهِيْ بِحُرْمَةِ نُوْرِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّنَوَالِ سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ وَّنَصِيْرِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّنَفِيْرِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَآ اِلٰهِيْ بِحُرْمَةِ وَدُوْدِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
وَّوَفَآءِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّوُجُوْدِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّوَدِيْعَةِ
سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَآ اِلٰهِيْ بِحُرْمَةِ هِمَّةِ
سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّهِدَايَةِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّهَدِيَّةِ
سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَآ اِلٰهِيْ بِحُرْمَةِ
يُتْمِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّيُسْرِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ
وَصَحْبِهٖ وَسَلَّمَ بِعَدَدِ مَا هُوَ الْمَكْتُوْبُ فِى اللَّوْحِ وَالْقَلَمِ فِىْ
كُلِّ يَوْمٍ وَّلَيْلَةٍ وَّسَاعَةٍ وَّنَفَسٍ وَّمَحْيَا اَلْفَ اَلْفِ مِائَةَ
اَلْفَ مَرَّةٍ اِلٰى يَوْمِ الْعِلْمِ اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَاخَوْفٌ عَلَيْهِمْ
وَلَاهُمْ يَحْزَنُوْنَ ○ بِرَحْمَتِكَ يَآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ ○

दुरूदे लकरवी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوْلَانَا
مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ
رَحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰی سَیِّدِنَا
وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ
بِعَدَدِ فَضْلِ اللّٰهِ ؕ اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ
عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ
سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ خَلْقِ اللّٰهِ ؕ اَللّٰھُمَّ
صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ
وَّعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ عِلْمِ اللّٰهِ ؕ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوْلٰنَا
مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ
بِعَدَدِ كَلِمٰتِ اللّٰهِ ؕ اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰی
سَیِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا
مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ كَرَمِ اللّٰهِ ؕ اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ
عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ
سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ حُرُوْفِ كَلَامِ اللّٰهِ ؕ
اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوْلٰنَا
مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ
قَطَرَاتِ الْاَمْطَارِ ؕ اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰی
سَیِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا
مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ اَوْرَاقِ الْاَشْجَارِ ؕ اَللّٰھُمَّ

صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ
وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ رَمْلِ الْقِفَارِ ط
اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا
مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ مَا
خُلِقَ فِى الْبِحَارِ ط اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى
سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ الْحُبُوْبِ وَالثِّمَارِ ط اَللّٰهُمَّ
صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ
وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ط
اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا
مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ مَآ
اَظْلَمَ عَلَيْهِ الَّيْلُ وَاَشْرَقَ عَلَيْهِ النَّهَارُ ط

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا
مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ
مَنْ صَلّٰى عَلَيْهِ ط اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى
سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ مَنْ لَّمْ يُصَلِّ عَلَيْهِ ط اَللّٰهُمَّ
صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ وَّ
عَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ اَنْفَاسِ الْخَلَآئِقِ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ
وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ نُجُوْمِ السَّمٰوٰتِ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ
وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ كُلِّ شَىْءٍ
فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۝ صَلَوٰتُ اللّٰهِ تَعَالٰى وَ

صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ
وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ رَمْلِ الْقِفَارِ ط
اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا وَ مَوْلٰنَا
مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ مَا
خُلِقَ فِى الْبِحَارِ ط اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى
سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ الْحُبُوْبِ وَالثِّمَارِ ط اَللّٰهُمَّ
صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ
وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ط
اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا
مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ مَآ
اَظْلَمَ عَلَيْهِ الَّيْلُ وَاَشْرَقَ عَلَيْهِ النَّهَارُ ط

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا وَ مَوْلٰنَا
مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ
مَنْ صَلّٰى عَلَيْهِ ط اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى
سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ مَنْ لَّمْ يُصَلِّ عَلَيْهِ ط اَللّٰهُمَّ
صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ وَّ
عَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ اَنْفَاسِ الْخَلَآئِقِ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ
وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ نُجُوْمِ السَّمٰوٰتِ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ
وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ كُلِّ شَىْءٍ
فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ه صَلَوٰتُ اللّٰهِ تَعَالٰى وَ

مَلٰئِكَتِهٖ وَاَنْبِيَآئِهٖ وَرُسُلِهٖ وَجَمِيْعِ الْخَلَآئِقِ
عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ وَاِمَامِ الْمُتَّقِيْنَ وَقَآئِدِ
الْغُرِّ الْمُحَجَّلِيْنَ وَشَفِيْعِ الْمُذْنِبِيْنَ سَيِّدِنَا وَ
مَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحٰبِهٖ وَاَزْوَاجِهٖ
وَذُرِّيّٰتِهٖ وَاَهْلِ بَيْتِهٖ وَاَهْلِ طَاعَتِكَ اَجْمَعِيْنَ
مِنْ اَهْلِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِيْنَ بِرَحْمَتِكَ يَآ اَرْحَمَ
الرّٰحِمِيْنَ وَيَآ اَكْرَمَ الْاَكْرَمِيْنَ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَاَصْحٰبِهٖ اَجْمَعِيْنَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا دَآئِمًا اَبَدًا
كَثِيْرًا وَّالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

कोई काम दुशवार हो जाए (या किसी परेशानी का सामना हो) तो यह दुआ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ لَا سَهْلَ اِلَّا مَا جَعَلْتَهٗ سَهْلًا . وَاَنْتَ تَجْعَلُ
الْحَزْنَ سَهْلًا اِذَا شِئْتَ .

ऐ अल्लाह! कोई काम भी आसान नहीं सिवा इसके जिस को तू आसान करदे और तू तो जब चाहे पथरीली (जमीनों) को भी नर्म व बराबर कर सकता है।

अस्नाद दुरूदे अकबर

वज़ाहतः- अगर मदीना मुनव्वरा की ज़ियारत नसीब हो तो दुरूदे अकबर को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रौज़ए अतहर के सामने जरूर पढ़ए। दुरूदे अकबर में जितने अलक़ाब व आदाब और तफ़सील से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बारगाह में सलात व सलाम का नज़राना पेश किया गया है उसका सही लुत्फ़ रौज़ए अतहर की जालियों के सामने पढ़ने से होगा और सलात व सलाम पेश करने वाले का मुनासिब वक़्त बारगाहे रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में लगेगा, ख़ास बात यह है कि मदीना मुनव्वरा में एक नेकी का सवाब पचास हज़ार नेकियों के बराबर मिलता है तो वहां इस दुरूदे अकबर का पढ़ना कितने ज़्यादा सवाब का बाइस होगा।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बाद हम्दे ख़ालिके अर्ज़ो समां	व ज़ पसे नअ़ते रसूले मुस्तफ़ा
ये अस्नादे दुरूदे अकबर सुनो	सिद्क़ दिल से अपने अपने मोमिनों
सिद्क़ से अपने अगर कोई पढे	रहमते यज़्दां का वह मौरिद बने
यानी रहमत से हरएक दिन किर्दिगार	देखे उस को तीन सौ और साठ बार
और जन्नत में भी उस के वासते	दानए याकूत से कौशक बने
ख़्वाब में जब तक न देखे वह मक़ाम	इस जहाँ में ही रहे उस का मक़ाम
है रिवायत इस तरह ऐ नेक ख़ू	ये दुआ दिल से पढ़ेगा अपने जो
तब तो हुक्मे हक़ से जितने हैं मुलक	बर ज़मीनो कोहो सहरा व फ़लक
तुर्बते अहमद पे जा जा कर तमाम	मुज़्दा इस का जल्द देंगे ला कलाम

यानी उम्मत से फुलाँ इब्ने फुलाँ
तुम पे भेजा ये दुरूदे बे कराँ

शाद हो बोलेंगे तब आली[1] वक़ार
है बिला शुबह मेरा वह दोस्त दार

और सुनिये मोमिनाने ख़ुश सियर
इस दुआ का है ये अजूबा असर

गर किसी मोमिन को हो ये आर्ज़ू
मुस्तफ़ा का ख़्वाब में दीदार हो

जुमा या शंबे को वह बादे इशा
पढ़के दो रक्अत पढ़े फिर यह दुआ

इसकी बरकत से ज़रूरी ऐ हबीब
ख़्वाब में दीदारे हज़रत हो नसीब

और बशारत उनसे यह उसको मिले
ख़ुल्द में नअ्माए हक़ जो जो मिले

इस बशारत से दिल उसका शाद हो
दामे फ़िक्रो ग़म से बस आज़ाद हो

और जब रिह्लत करे वह नेक नाम
रहमते हक़ के फ़रिश्ते ला कलाम

उस जनाज़े के वह हों आकर शरीक
अज़ रज़ाए किर्दगारे ला शरीक

फिर पहनावें उसको ज़ेवर ख़ुल्द के
और रहें ता दफ़न वालें पर खड़े

बाद अज़ाँ ता हश्र उसकी गोर पर
हो मुजाविर एक फ़रिश्ता ख़ुशसियर

और हक़ के लुत्फ़ से ऐ नेक नाम
नूर बरसे क़ब्र पर उस की मदाम

है लिखा गर मर्ज़ होवे ने भला
इसके पढ़ने से शिफ़ा बख़्शे ख़ुदा

सिद्क़ से इसको पढ़ेगा जो मदाम
फ़ज़्ले हक़ से उसपे दोज़ख़ हो हराम

ख़ासियत जितनी है इस में ऐ मियाँ
होवे ज़ाहिर से बहसन क्यों कर बयाँ

अल्ग़र्ज़ जिस बात का चाहो कुशूद
सिद्क़ दिल से तब पढ़ो तुम ये दुरूद

जिस क़दर पुख़्ता अक़ीदा होवेगा
फ़ायदा भी उतना हासिल होवेगा

है अक़ीदे पर बिना आमाल की
है कसौटी जाँच और पड़ताल की

1- यानी हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

दुरूदे अक्बर

पहला हिस्सा

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اِنَّ اللّٰہَ وَمَلٰٓئِکَتَہٗ یُصَلُّوۡنَ عَلَی النَّبِیِّ ؕ یٰۤاَیُّھَا الَّذِیۡنَ
اٰمَنُوۡا صَلُّوۡا عَلَیۡہِ وَسَلِّمُوۡا تَسۡلِیۡمًا ﴿۵۶﴾ ــــ (الاحزاب)

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡكَ یَا رَسُوۡلَ اللّٰہِ
اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡكَ یَا نَبِیَّ اللّٰہِ
اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡكَ یَا صَفِیَّ اللّٰہِ
اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡكَ یَا حَبِیۡبَ اللّٰہِ
اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡكَ یَا نَجِیَّ اللّٰہِ
اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡكَ یَا خَلِیۡلَ اللّٰہِ
اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡكَ یَا خَیۡرَ خَلۡقِ اللّٰہِ
اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡكَ یَا نُوۡرَ عَرۡشِ اللّٰہِ
اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡكَ یَا مَنِ اخۡتَارَہُ اللّٰہُ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَوَّلَ خَلْقِ اللّٰهِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَحْسَنَ خَلْقِ اللّٰهِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ بِهٖ هَدَانَا اللّٰهُ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَحْمَةً مِّنَ اللّٰهِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا شَفِيْعَ عِنْدَ اللّٰهِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَاتَمَ رُسُلِ اللّٰهِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَيْرَ خَلْقِ اللّٰهِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ اللّٰهِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَفْوَةَ اللّٰهِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حُجَّةَ اللّٰهِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نُوْرَ اللّٰهِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ اَرْسَلَهُ اللّٰهُ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ شَرَّفَهُ اللّٰهُ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ كَرَّمَهُ اللّٰهُ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ عَظَّمَهُ اللّٰهُ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ عَصَمَهُ اللّٰهُ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ وَّقَاهُ اللّٰهُ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ حَمَاهُ اللّٰهُ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ كَفَاهُ اللّٰهُ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ زَيَّنَهُ اللّٰهُ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ اَدَّبَهُ اللّٰهُ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ عَرَّجَهُ اللّٰهُ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ كَلَّمَهُ اللّٰهُ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ قَرَّبَهُ اللّٰهُ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ اَعْلَاهُ اللّٰهُ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ اَدْنَاهُ اللّٰهُ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ وَّقَّرَهُ اللّٰهُ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَهْبِطَ وَحْيِ اللّٰهِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا كَلِيْمَ اللّٰهِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ عَبْدِ اللّٰهِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ اَبْلَغَ رِسَالَةَ اللهِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَطْلَعَ اَنْوَارِ اللهِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَخْزَنَ اَسْرَارِ اللهِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَاتَمَ الْاَنْبِيَاءِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خِيَارَ الْاَصْفِيَاءِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا شَفِيْعَ الْاُمَّةِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا كَاشِفَ الْغُمَّةِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَشْهَدَ كَمَالِ اللهِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مِرْاٰةَ جَمَالِ اللهِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ اَرَاهُ اللهُ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ اَغْنَاهُ اللهُ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ شَرَحَ اللهُ صَدْرَهٗ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ رَفَعَ اللهُ ذِكْرَهٗ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ كَلَّمَهٗ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مُحَمَّدُ رَسُوْلَ اللهِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا زَكِيُّ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَبْطَحِيُّ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مُحَمَّدُ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَحْمَدُ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حَامِدُ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَحْمُوْدُ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مُصْطَفٰى

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مُجْتَبٰى

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مُرْتَضٰى

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا طٰهٰ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا يٰسٓ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ الرَّحْمَةِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ الدَّعْوَةِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ الْعَرَبِيِّ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ الْمَدَنِيِّ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ الْمَكِّيِّ
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ الْحَرَمِيِّ
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ الْحِجَازِيِّ
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ الْاُمِّيِّ
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ الْحَنَفِيِّ
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ الرَّأْفِيِّ
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ الْهَاشِمِيِّ
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ الْقُرَشِيِّ
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ التَّقِيِّ
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ النَّقِيِّ
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَاحِبَ النَّاقَةِ
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَاحِبَ الْقَنَاعَةِ
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَاحِبَ الشَّفَاعَةِ
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَاحِبَ الْكَوْثَرِ
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَاحِبَ الْمِنْبَرِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَاحِبَ التَّاجِ وَاللِّوَاءِ
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَاحِبَ الْخُلُقِ وَالْحَيَاءِ
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَاحِبَ الصِّدْقِ وَالصَّفَاءِ
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَاحِبَ الْمِعْرَاجِ وَالْقُرْبَةِ
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَاحِبَ الْمِحْرَابِ وَالْعِزَّةِ
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَاحِبَ النُّبُوَّةِ
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَاحِبَ الشَّرِيْعَةِ
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَاحِبَ الْحَوْضِ الْمَوْرُوْدِ
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَاحِبَ اللِّوَاءِ الْمَعْقُوْدِ
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نُوْرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مُرَوِّجَ السُّنَنِ وَالْفَرَائِضِ
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَاتَمَ الرِّسَالَةِ وَالنُّبُوَّةِ
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مُظْهِرَ الشَّرِيْعَةِ وَالطَّرِيْقَةِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَعْدِنَ الْحَقِيْقَةِ وَالْمَعْرِفَةِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا بَدْرَ التَّمَامِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَنْ ظَلَّلَهُ الْغَمَامُ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدَ الْاَنَامِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مِصْبَاحَ الظَّلَامِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَآ اَبَا الْاَيْتَامِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حَبِيْبَ الْفُقَرَآءِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مُعِيْنَ الضُّعَفَآءِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَآ اَنِيْسَ الْغُرَبَآءِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ الثَّقَلَيْنِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدَ الْكَوْنَيْنِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ الْحَرَمَيْنِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَآ اِمَامَ الْقِبْلَتَيْنِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا جَدَّ الْحَسَنِ وَالْحُسَيْنِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدَ الْاٰخِرِيْنَ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدَ الْمُرْسَلِيْنَ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مُحِبَّ الْمَسَاكِيْنِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا غِيَاثَ الْمِلَّةِ وَالدِّيْنِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَاتَمَ النَّبِيِّيْنَ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدَ الْمُتَّقِيْنَ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا شَفِيْعَ الْمُذْنِبِيْنَ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

दुरूदे अक्बर

दूसरा हिस्सा

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ النَّبِيِّيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُؤْمِنِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُسْلِمِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُتَّقِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُجَاهِدِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُشْفِقِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُنْذِرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُنْجِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُنْفِقِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُخْلِصِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُصْلِحِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الشَّاهِدِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ التَّائِبِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْخَائِفِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الصَّابِرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْقَائِمِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الرَّاكِعِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُنِيْبِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُرْبِحِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُجِيْبِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُنْعِمِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُبَشِّرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُقَرَّبِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمَفْرُوْحِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُحِبِّيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُلَبِّيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُلْهَمِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُحْسِنِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُبَرْهِنِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُتَعِظِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُفْلِحِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمَشْهُوْدِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُرْفِقِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُقْبِلِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْحَامِدِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الصَّامِتِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُخْبِتِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ السَّائِحِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْوَاعِظِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُظَفَّرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ السَّاجِدِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْعٰلَمِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْحَافِظِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الصَّالِحِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمَرْزُوْقِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الذَّاكِرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الطَّاهِرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُطَهَّرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُبَلِّغِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُشَفَّعِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُؤَلِّفِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُؤَدِّبِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُصَدِّقِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُوَحِّدِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُقَدَّسِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُبْتَدِئِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْفَارِحِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْفٰضِلِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ السَّالِكِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الطَّالِبِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ السَّابِقِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الصَّآئِمِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الرَّبَّانِيِّيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الطَّآئِفِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْبَاكِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْخَاشِعِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْخَاضِعِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْجَآئِعِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الشَّافِعِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الرَّاغِبِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الرَّاجِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ النَّاجِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الرَّءُوْفِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْبَآرِّيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْوَاصِلِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْوَاقِفِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْوَارِثِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الدَّاعِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْاٰمِرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ النَّاهِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْاَوَّلِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْاٰخِرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْاٰمِنِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْاُمِّيِّيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْاَصْلَحِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْاَمْلَحِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْاَعْقَلِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْاَعْدَلِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْاَفْضَلِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْاَقْرَبِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْاَفْقَهِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْاَشْجَعِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْاَطْهَرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْاَزْهَدِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْاَصْدَقِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْاَرْشَدِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْاَلْطَفِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْاَنْجَبِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْاَكْرَمِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْاَشْرَفِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْاَنْبِيَاءِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْاَصْفِيَاءِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْاَوْلِيَاءِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْعُلَمَاءِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْفُقَهَاءِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْفُصَحَاءِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْبُلَغَاءِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ النُّصَحَاءِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْخُطَبَاءِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الصُّلَحَاءِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْحُلَمَاءِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْحُكَمَاءِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْحُنَفَاءِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ السُّعَدَآءِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الشُّهَدَآءِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الشُّرَفَآءِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْكُبَرَآءِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْكُرَمَآءِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الرُّحَمَآءِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْغُرَبَآءِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الظُّرَفَآءِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ النُّقَبَآءِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ النُّجَبَآءِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْاَخِلَّآءِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْاَحِبَّآءِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُسَبِّحِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُبْتَلِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُحَقِّقِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الشَّاكِرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ التَّابِعِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْفَاضِلِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُفَضَّلِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْقَوَّامِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمَسَاكِيْنِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْقَانِتِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُخْبِرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُمَكَّنِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ السَّيَّاحِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُقْسِطِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُرِيْدِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُطِيْعِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُقِيْمِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْقَانِعِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ سَیِّدِ الْمُحَدِّثِیْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ سَیِّدِ الْمُفَسِّرِیْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ سَیِّدِ الرَّاکِعِیْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ سَیِّدِ الْاَنْوَرِیْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ سَیِّدِ الْمَحْمُوْدِیْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ سَیِّدِ الْمَخْلُوْقِیْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ اَلسَّیِّدِ الْمُصْطَفٰی

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ اَلسَّیِّدِ الْمُرْتَضٰی

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ اَلسَّیِّدِ التِّهَامِیِّ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ اَلسَّیِّدِ الْحِجَازِیِّ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ اَلسَّیِّدِ الْقُرَشِیِّ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ اَلسَّیِّدِ الْحَرَمِیِّ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ اَلسَّیِّدِ الزَّکِیِّ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ سَیِّدِ الْعَاشِقِیْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ سَیِّدِ الْمَعْشُوْقِیْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ سَیِّدِ الْفَآئِزِیْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ سَیِّدِ الْمُعَلِّمِیْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ سَیِّدِ الْمُتَعَلِّمِیْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ سَیِّدِ السَّآئِحِیْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ سَیِّدِ النَّاصِرِیْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ سَیِّدِ الشَّافِعِیْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ سَیِّدِ الصَّادِقِیْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ سَیِّدِ الْمُتَصَدِّقِیْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ سَیِّدِ التَّوَّابِیْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ سَیِّدِ النَّافِعِیْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ سَیِّدِ الْمُسْتَغِیْثِیْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ سَیِّدِ الْاَسْمَعِیْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ سَیِّدِ الْمُذَکِّرِیْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ سَیِّدِ الْمُتَّقِیْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ سَیِّدِ الرَّاشِدِیْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْاَوْرَعِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُسْتَغْفِرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُسْتَطْهِرِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ وُلْدِ اٰدَمَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ اِلْبَشِيْرِ وَالنَّذِيْرِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ اِلْمَكِّيِّ وَالْمَدَنِيِّ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ اِلنَّبِيِّ الْعَرَبِيِّ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ اِلنَّبِيِّ التَّقِيِّ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ اِلنَّبِيِّ خَاتَمِ النَّبِيِّيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ رَسُوْلِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

दुरूदे अकबर

तीसरा हिस्सा

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَعَ الشَّمْسِ اِذَا طَلَعَتْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَعَ الشَّمْسِ اِذَآ اَصْبَحَتْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَعَ الشَّمْسِ اِذَآ اَضَاءَتْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَعَ الشَّمْسِ اِذَا كُوِّرَتْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَعَ الشَّمْسِ اِذَا نُصِبَتْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَعَ الشَّمْسِ اِذَا زُلْزِلَتْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَعَ الشَّمْسِ اِذَا انْفَطَرَتْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَعَ الشَّمْسِ اِذَا فُجِّرَتْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَعَ الشَّمْسِ اِذَا انْشَقَّتْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَعَ الشَّمْسِ اِذَا فُرِجَتْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَعَ الشَّمْسِ اِذَا سُيِّرَتْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّعَ الشَّمْسِ اِذَا كُشِطَتْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّعَ الشَّمْسِ اِذَا نُصِفَتْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّعَ الشَّمْسِ اِذَا بُدِّلَتْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّعَ الشَّمْسِ اِذَا عُطِّلَتْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّعَ الشَّمْسِ اِذَا غَرَبَتْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّعَ الشَّمْسِ اِذَا حُشِرَتْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ خَيْرٍ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ الْاَسْمَآءِ الْحُسْنٰى

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ الْبِلَادِ وَ الْقُرٰى

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ الْوَرٰى وَ الثَّرٰى

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ الْحَدَآئِقِ وَ شَجَرِهَا

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ السَّفَرِ وَ مَنَازِلِهَا

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ الشَّرَافِ وَ اَشْرَافِهَا

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ السَّمٰوٰتِ وَ كَوَاكِبِهَا

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ الْاَفْلَاكِ وَ بُرُوْجِهَا

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ الْاَجْسَادِ وَ اَرْوَاحِهَا

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ الطَّبَآئِعِ وَ اَمْزَاجِهَا

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ الْاَحْيَآءِ وَ اَمْوَاتِهَا

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ مَآ اَحَاطَ بِهٖ عِلْمُكَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّعَ الْبُكُوْرِ وَ الْعَشِيِّ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ الْقَطْرِ وَ الْمَطَرِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ الشَّجَرِ وَ اَوْرَاقِهَا

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ الْاَغْصَانِ وَ اَثْمَارِهَا

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ النَّبَاتِ وَ اَصْنَافِهَا

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ الْاَيَّامِ وَ سَاعَاتِهَا

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ الْخَلْقِ وَ اَنْفَاسِهَا

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ الْمَلٰٓئِكَةِ وَ تَسَابِيْحِهَا

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ النُّجُوْمِ وَ كَوَاكِبِهَا

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ الشُّهُوْرِ وَ اَيَّامِهَا

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ الْبِحَارِ وَ اَنْهَارِهَا

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ الْكَوَاكِبِ وَ مَنَازِلِهَا

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ الطُّيُوْرِ وَ رِيْشِهَا

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ الْبَرِّ وَ الْبَحْرِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ الشَّجَرِ وَ الثَّمَرِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ الشَّوْكِ وَ الشَّجَرِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ الشَّفْعِ وَ الْوَتْرِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ كُلِّ مَنْ اٰمَنَ وَاتَّقٰى

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ مَنْ صَدَّقَ وَاهْتَدٰى

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ مَنْ سَبَّحَ وَ صَلّٰى

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ الرَّمْلِ وَ الثَّرٰى

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ مَنَازِلِ الْقَمَرِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ اَنْبِيَآءِ اللهِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ اَخْيَارِ اللهِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ اَصْفِيَآءِ اللهِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ اَوْلِيَآءِ اللهِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ اَتْقِيَآءِ اللهِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ اَسْخِيَآءِ اللهِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ شُهَدَآءِ اللهِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ فُقَرَآءِ اللهِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ الْحُبُوْبِ وَ الْاَشْجَارِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ اللَّيْلِ وَ النَّهَارِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ حَرَكَاتِ الصَّائِمِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ سَكَنَاتِ الْقَائِمِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ ذَرَّاتِ الْاَرْضِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ الْخَلَآئِقِ اَجْمَعِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ الْخَوَاطِرِ وَ الظُّنُوْنِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ مِلْحِ الْعُيُوْنِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّعَ الشَّمْسِ اِذَا بُعْثِرَتْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّعَ الشَّمْسِ اِذَا نُشِرَتْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّعَ الشَّمْسِ اِذَا دُكَّتْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّعَ الصُّدُوْرِ اِذَا حُصِّلَتْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّعَ الْكُتُبِ اِذَا قُرِأَتْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّعَ الْحَصَاةِ اِذَا رُمِيَتْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّعَ الْمِيَاهِ اِذَا بُدِّلَتْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّعَ الْحَاجَاتِ اِذَا قُضِيَتْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّعَ الدَّرَجَاتِ اِذَا رُفِعَتْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّعَ الْجَنَّةِ اِذَا اُزْلِفَتْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّعَ الْاٰخِرَةِ وَ الْاُوْلٰى

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّعَ الَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّعَ النَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ كَلِمَاتِكَ وَ اَلْفَاظِكَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ كُلِّ مَعْلُوْمٍ لَّكَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ مَنْ صَامَ شَهْرَ رَمَضَانَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ لَيْلَةِ الْبَرَاتِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ قَآئِمِيْنَ الْقَدْرَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ ذَرَّةٍ اَلْفَ اَلْفِ مَرَّةٍ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ اَنْفَاسِ الْمَخْلُوْقَاتِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ كَلِمَاتِهِ التَّآمَّاتِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ اَشْعَارِ الْمَوْجُوْدَاتِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ سَوَاكِنِ سَبْعِ الْاَرْضِ وَالسَّمٰوٰتِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ حُرُوْفِ الْاَلْوَاحِ وَالْمَصَاحِفِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ كُلِّ شَيْءٍ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ شَامِلِ الْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ كَامِلِ الْفَضْلِ وَالْاِمْتِنَانِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ وَالِی الْبِرِّ وَ الْاِحْسَانِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ عَالِی الْقَدْرِ وَ الْمَکَانِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ مِلْأَ الْمِیْزَانِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ مَا اخْتَلَفَ الْمَلَوَانِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ مَا تَعَاقَبَ الْعَصْرَانِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ مَا تَکَرَّرَ الْجَدِیْدَانِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ مَنْ مِّنَ الْیَوْمِ اِلٰی یَوْمِ یُنْفَخُ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ الْعَطِیَّاتِ وَ الْخَیْرَاتِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ الْمِعْرَاجِ وَ الْقَدْرِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ مَنْ صَلّٰی عَلَیْهِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ مَنْ لَّمْ یُصَلِّ عَلَیْهِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ کَمَا یَنْبَغِی الصَّلٰوةُ عَلَیْهِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ کَمَا اَمَرْتَنَا بِالصَّلٰوةِ عَلَیْهِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ عِنْدَ ذِکْرِهٖ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ کَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰی اَنْ یُّصَلّٰی عَلَیْهِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓی اٰلِ مُحَمَّدٍ کَمَا صَلَّیْتَ

عَلٰٓی اِبْرَاهِیْمَ وَعَلٰٓی اٰلِ اِبْرَاهِیْمَ رَبَّنَآ اِنَّكَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ فِی الْاَنْبِیَاءِ وَعَلٰی اسْمِهٖ فِی الْاَسْمَاءِ

وَعَلٰی جَسَدِهٖ فِی الْاَجْسَادِ وَ عَلٰی قَبْرِهٖ فِی الْقُبُوْرِ وَ عَلٰی

رُوْحِهٖ فِی الْاَرْوَاحِ وَ عَلٰی قَلْبِهٖ فِی الْقُلُوْبِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدِ الَّذِیْ وَضَعَ وِزْرَهٗ وَ رُفِعَ ذِکْرُهٗ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدِ الَّذِیْ عُرِضَ لَهُ السَّمٰوٰتُ وَ مَلَکُوْتُهَا

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدِ الَّذِیْ عُرِضَ لَهُ الْبِحَارُ وَعَجَائِبُهَا وَحِیْتَانُهَا

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدِ الَّذِیْ عُرِضَ لَهُ النَّارُ بِاَبْدَانِهَا وَ دَرَکَاتِهَا

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدِ الَّذِیْ صَاحِبِ الْمَوْقِفِ الْمُعَظَّمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدِ الَّذِیْ صَاحِبِ الْمَوْقِفِ الْاَعْظَمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدِ الَّذِیْ بُعِثَ فِی الظُّلَمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدِ الَّذِیْ کَشَفَ عَنْ اُمَّتِهِ النِّقَمَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدِ الَّذِیْ رَسُوْلِ الْعَرَبِ وَ الْعَجَمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدِ الْوَفِیِّ بِالْعُهُوْدِ وَ الذِّمَمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ الَّذِىْ سَبَقَتْ اُمَّتُهُ الْاُمَمَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ الَّذِىْ اُوْتِىَ جَوَامِعَ الْكَلِمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ الَّذِىْ انْتَظَمَ بِوُجُوْدِهِ الْعَالَمُ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ الَّذِىْ عَلَتْ كَلِمَتُهُ الْكَلِمَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ الَّذِىْ شَافِى السَّقَمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّنْ لَّمْ يَضِلَّ وَ مَا غَوٰى

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّنْ اَوْحٰٓى اِلَيْهِ رَبُّهٗ مَآ اَوْحٰى

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّنْ لَّمْ يَنْطِقْ عَنِ الْهَوٰى

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّنْ نَّطَقَ وَحْيًا يُّوْحٰى

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّنْ عَلَّمَهٗ شَدِيْدُ الْقُوٰى

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّنْ دَنٰى فَتَدَلّٰى

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّنْ كَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّنْ صَدَّقَ فُؤَادُهٗ مَا رَاٰى

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّنْ كَسَرَ اللَّاتَ وَ الْعُزّٰى

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّنْ لَّمْ يُؤْثِرِ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّنْ بَلَغَتْ مَنَايَهُ الْمُنٰى

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّنْ وَّعَدْتَّهٗ اَنْ يَّرْضٰى

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّنْ هَدَيْتَهٗ فَاهْتَدٰى

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّنْ جَزَيْتَهٗ بِالْحُسْنٰى

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّنْ نَّهَيْتَهٗ فَانْتَهٰى

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّنْ كَانَ فُؤَادُهٗ اَوْفٰى

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّنْ رَّبُّهٗ خَلَقَ الذَّكَرَ وَ الْاُنْثٰى

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّنْ رَّبُّهٗ رَبُّ الشِّعْرٰى

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّنْ اَبَارَ رَبُّهٗ قَوْمًا طَغٰى

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّنْ زَارَهُ الْمَلَاُ الْاَعْلٰى

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّنْ رَّبُّهٗ اَهْلَكَ عَادًا اِلْاُوْلٰى

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّنْ نَّزَلَ عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّنْ بَلَغَ عِنْدَ جَنَّةِ الْمَاْوٰى

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّنْ رَاٰى مِنْ اٰيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرٰى

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّنْ مَّا زَاغَ بَصَرُهٗ وَمَا طَغٰى

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّنْ عَلِمَ الصُّحُفَ الْاُوْلٰى
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّنْ ذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّنْ لَّهُ الْاٰخِرَةُ وَ الْاُوْلٰى
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّنْ لَّهٗ دَارٌ خَيْرٌ وَّ اَبْقٰى
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّنْ لَّهُ الدَّرَجَاتُ الْعُلٰى
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّنْ لَّهُ الرَّفِيْقُ الْاَعْلٰى
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْكَائِنَاتِ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مُّعْجِزِ الْمَوْجُوْدَاتِ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ ۨالْمَرْفُوْعِ اِلَى الْخَلَّاقِ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ ۨالْمَحْمُوْلِ عَلَى الْبُرَاقِ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ ۨالْمَبْعُوْثِ اِلٰى خَيْرِ الْاُمَمِ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ ۨالْمَبْعُوْثِ بِاَكْرَمِ الصِّفَاتِ وَ الشِّيَمِ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ ۨالشَّمْسِ الطَّالِعِ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ ۨالنَّجْمِ السَّاطِعِ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ ۨالْمُؤَيَّدِ بِالنَّصْرِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ ۨالرَّحِيْمِ عَلَى الْاُمَّةِ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ ۨالْكَاشِفِ الْغُمَّةِ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ ۨالْقَائِدِ اِلَى الْجَنَّةِ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ رَّسُوْلِ الْمَلِكِ الْمَنَّانِ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ رَّسُوْلِ الْمَلِكِ الدَّيَّانِ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ ۨالْمَحْمُوْدِ فِيْ كُلِّ مَكَانٍ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ ۨالْمَشْهُوْدِ فِي الْبُلْدَانِ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ ۨالْمَبْعُوْثِ اِلٰى كَافَّةِ الْاِنْسَانِ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ ۨالْمَصُوْنِ عَنِ الْخِذْلَانِ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ ۨالْمَعْصُوْمِ عَنِ الْكُفْرِ وَ الطُّغْيَانِ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ ۨالنَّاطِقِ بِالْقُرْاٰنِ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ ۨالْوَاعِظِ بِالْقُرْاٰنِ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ ۨالْقَارِيْ بِالْقُرْاٰنِ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ هَادِي الْاِنْسِ وَ الْجَانِّ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاهِبِ اللُّؤْلُؤِ وَ الْمَرْجَانِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ الْغَالِبِ بِالسُّلْطَانِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ الظَّاهِرِ بِالْبُرْهَانِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ الدَّافِعِ لِلْكُفْرِ وَ الطُّغْيَانِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ الْعَابِسِ عَنِ الْكِذْبِ وَالْبُهْتَانِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ الْمُنْجِيْ عَنِ النِّيْرَانِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ الْمُبَلِّغِ اِلَى الْجِنَانِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مُرْتَفِعِ الشَّانِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ النَّاشِرِ بِلَا كِتْمَانٍ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ الثَّابِتِ عَلَى التُّكْلَانِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ الدَّاعِيْ اِلَى الْاِيْمَانِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَلِيْحِ الْوَجْهِ وَ الْبَيَانِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ الصَّافِحِ عَنْ اَهْلِ الْعُدْوَانِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَاحِي الْبِدْعَةِ وَ الْعِصْيَانِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ الْهَمْتَلَانِ الْاَجْفَانِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ الْمُرَغِّبِ اِلَى الْخَيْرَاتِ الْحِسَانِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَلِيْمِ الْمَلِكِ الْمَنَّانِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ فَصِيْحِ اللِّسَانِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بَدِيْعِ الْبَيَانِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَجِيْبِ الْبَيَانِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَلِيْمِ الْجَنَانِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَدِيْمِ الْاَقْرَانِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَمِيْمِ الْاِحْسَانِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ طَوِيْلِ الْاَحْزَانِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مُعْطِي الْاَمَانِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مُؤْنِسِ الْاِنْسَانِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مُثَقِّلِ الْمِيْزَانِ

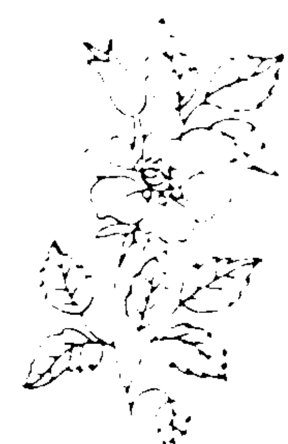
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَرْفُوْعِ الشَّأْنِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ الْمُكَرَّمِ بِالرَّوْحِ وَ الرَّيْحَانِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مُعْجِزِ الْخَلْقِ عَنِ الْقُرْاٰنِ

اللهم صل على محمد فصيح الكلام
اللهم صل على محمد الفقيه العلام
اللهم صل على محمد الشفيع لكل الانام
اللهم صل على محمد البدر التمام
اللهم صل على محمد المطهر من الآثام
اللهم صل على محمد المبشر بالمقام
اللهم صل على محمد ذي الشرع والاحكام
اللهم صل على محمد ذي الجود والاكرام
اللهم صل على محمد ذي العفو والانعام
اللهم صل على محمد افضل الكرام
اللهم صل على محمد ذي الخلق العظيم
اللهم صل على محمد ذي القلب السليم
اللهم صل على محمد ذي الورد المستقيم
اللهم صل على محمد ذي العطاء الجسيم

اللهم صل على محمد ذي الجنة النعيم
اللهم صل على محمد السيد الرؤف الرحيم
اللهم صل على محمد الرسول الملك القديم
اللهم صل على محمد ذي الكرم العميم
اللهم صل على محمد ذي العزة المقيم
اللهم صل على محمد السيد الحليم الكريم
اللهم اعطه المرام يا ذا الجلال والاكرام
يا ذا الطول والانعام



दुरूदे अकबर
चौथा हिस्सा

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰهِ

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَاتَمَ الْاَنْبِيَآءِ

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَاحِبَ اللِّوَآءِ

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حَبِيْبَ الْفُقَرَآءِ

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مُعِيْنَ الضُّعَفَآءِ

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدَ الْمُرْسَلِيْنَ

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا شَفِيْعَ الْمُذْنِبِيْنَ

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَاحِبَ الْكَوْثَرِ

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا شَفِيْعَ الْاَكْبَرِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّا يَبْقٰى مِنَ التَّحِيَّةِ شَيْءٌ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّا يَبْقٰى مِنَ الْبَرَكٰتِ شَيْءٌ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّا يَبْقٰى مِنَ الصَّلٰوةِ شَيْءٌ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّا يَبْقٰى مِنَ التَّحَنُّنِ شَيْءٌ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ اِذَا ذَكَرَهُ الْاَبْرَارُ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مَّا اخْتَلَفَ الَّيْلُ وَالنَّهَارُ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ كُلِّ شَيْءٍ

فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ صَلٰوةُ اللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَاَنْبِيَآئِهٖ وَرُسُلِهٖ

وَجَمِيْعِ خَلْقِهٖ عَلٰى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ وَاِمَامِ الْمُتَّقِيْنَ

وَخَاتَمِ النَّبِيِّيْنَ وَرَسُوْلِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ

وَاَزْوَاجِهٖ وَذُرِّيَّتِهٖ وَاَهْلِ بَيْتِهٖ وَعِتْرَتِهٖ اَجْمَعِيْنَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّجِبْرَآئِيْلَ وَمِيْكَآئِيْلَ وَاِسْرَافِيْلَ

وَعِزْرَآئِيْلَ وَمُنْكَرٍ وَّنَكِيْرٍ وَّعَلٰى حَمَلَةِ الْعَرْشِ

وَالْكِرَامِ الْكَاتِبِيْنَ وَسَلِّمْ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِىْ كُلِّ وَقْتٍ

وَّ اٰوَانٍ وَّ حَالٍ وَّ زَمَانٍ عَدَدَ مَا خَلَقْتَ وَاَضْعَافَ ذٰلِكَ

كُلِّهٖ بِاَضْعَافٍ لَا يُحْصِيْهَا غَيْرُكَ اِنَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا تُرِيْدُ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ صَلٰوةً لَا يَنْقَطِعُ مَدَدُهَا وَلَا يُحْصٰى

عَدَدُهَا صَلٰوةً تَشْحَنُ الْهَوَآءَ وَ تَمْلَاُ الْاَرْضَ وَ السَّمَآءَ

وَصَلِّ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ حَتّٰى تَرْضٰى بِرَحْمَتِكَ يَآ اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ

अस्नाद हफ़्त हैकल

हमद व सलात के बाद मालूम हो कि इस हफ़्त हैकल शरीफ़ में आयाते कलामे इलाही तआला शानुहू हैं, जिस तरह तमाम आसमानी व ज़मीनी मख़्लूक़ात हज़रते ज़ुल्जलाल की हक़ीक़त तक पहुँचने में आजिज़ और नाकाम हैं और हक़ (अल्लाह) की तारीफ़ के अदा करने से क़ासिर हैं इसी तरह उस के कलामे मुक़द्दस के कमालात बयान करने और उसकी तारीफ़ करने से हैरान كَلَامُ الْمُلُوْكِ مُلُوْكُ الْكَلَامِ "बादशाहों का कलाम तमाम बयानों का बादशाह होता है" इसलिए शहंशाहे हक़ीक़ी जल्ल जलालुहू के कलामे पाक की क्या कोई तारीफ़ कर सकता है,

ज़ इश्क़े ना तमामे मा जमाले यार मुस्तग़नीस्त
ब आबो रंगो ख़ालो ख़त चे हाजत रूऐ ज़ेबा रा

लम्बे चौड़े अस्नाद पढ़ कर किसी वज़ीफ़े का मोतक़िद होना और इसके अलावा अगर इख़्तिसार के तौर पर कुछ थोड़ा सा बयान हो तो कुछ थोड़ा बहुत भी अक़ीदतमन्द न बनना ईमान की कमज़ोरी की पहचान है। मज़बूत ईमान और अच्छी अक़ीदत तो यह है कि जहाँ कलामे हज़रते बारी सुना वहीं महबूबे अजली के जोशे मुहब्बत में अस्नाद और ग़ैरे अस्नाद से अलग हट कर सिर्फ़ माशूक़े हक़ीक़ी की ख़ुशी की चाहत में ऐसी चीज़ों का पढ़ना या पढ़ाना बहुत बड़ी कामयाबी समझे, जनाबे बारी का इरशाद है :-

وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ

अल्लाह की ख़ुशी बहिश्त की तमाम नेमतों से बढ़ी हुई और अफ़ज़ल है।

गर मुरादे रौश ख़्वाही तर्क गीर अज़ वस्ले मा
दर मुरा ख़्वाही रिहा कुन इख़्तियारे रौश रा

तअज्जुब की बात तो यह है कि ऐसे मुक़द्दस वज़ीफ़ों की तारीफ़ में झूठे अस्नाद क्यों बयान किए जाते हैं ‿

हाजते मुशातह नेस्त रूए दिले अराम रा

रास फ़ख़्रे मौजूदात, रहमते आलमियाँ महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम से झूठी रिवायतों को मंसूब करना कितनी ना इन्साफ़ी है? आम हालात में झूठ बोलने पर लानत की वईद क़ुरआन मजीद में वारिद हुई है, अल्लाह तआला का इरशाद है :- فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ يَكْتُبُونَ

الْكِتٰبَ بِأَيْدِيهِمْ ثُمَّ يَقُولُونَ هٰذَا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ

''यानी पस अफ़्सोस है उन लोगों के लिए कि जो लिखते हैं किताब अपने हाथों से फिर कहते हैं कि यह अल्लाह ने भेजा है।''

(सूरए बक़रा-79)

एक और जगह पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया :-

لَعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى الْكٰذِبِيْنَ

''अल्लाह तआला की लानत हो झूठ बोलने वालों पर।''

(सूरए आले इमरान-61)

एक और जगह पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया :-

اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ

'' बेशक जो लोग अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं, (वे) कभी अपनी मुराद को न पहुँचेंगे।'' (सूरए यूनुस-69)

'जामे सग़ीर'' में हज़रत इमाम जलालुद्दीन सुयोती (रह०) ने ये हदीसें रिवायत की हैं :-

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ حَدَّثَ عَنِّيْ بِحَدِيْثٍ يَرٰى اَنَّهٗ كَذِبٌ فَهُوَ اَحَدُ الْكٰذِبِيْنَ ۔

''फ़रमाया हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कि जिसने जान-बूझ कर झूठी बात मेरी तरफ़ मंसूब की, पस वह भी झूठों में का एक झूठा है।''

और फरमाया हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने :-

وَقَالَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ كَذَبَ عَلَيَّ مُتَعَمِّدًا فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهٗ مِنَ النَّارِ

'' कि जो जान-बूझ कर मुझपर झूठ गढ़े उसको चाहिए कि अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले ''

एक और जगह पर हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :-

وَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ كَذَبَ عَلَيَّ فَهُوَ فِي النَّارِ ۔

'' जो मुझ पर झूठ गढ़े वह दोज़ख़ी है।''

मतलब यह है कि जब ऐसी सख़्त वईद हुज़ूर अलैहिस्सलाम की तरफ़ से वारिद हों तो बहुत संभल कर क़दम रखना चाहिए, ऐसी तुकबंदियों पर भरोसा न करना चाहिए, बल्कि कामिल यक़ीन की तौफ़ीक़ मांगते रहो ‿ तौफ़ीक़ अज़ीज़ अस्त बहर कस न दहद

अगर सच्चे यक़ीन के साथ एक कलिमा भी इन कलिमाते मुबारक का पढ़ोगे तो सत्तर हज़ार और सत्तर लाख और सत्तर करोड़ वग़ैरा क्या चीज़ है बल्कि बेशुमार और अनगिनत नेकियां व बरकतें मिलेंगी, अल्लाह से मुहब्बत और इश्क़ करने वाले हर काम में उसी की ख़ुशनूदी और रज़ा के ख़्वाहां रहते हैं और कम हिम्मत, पस्त हौसले वाले अपनी कमज़ोर इबादत का सवाब यानी बदला चाहते हैं। यह मज़दूरों की आदत है। मुहब्बत तो कुछ और ही चीज़ है। दोस्तों को अपने दोस्त का ज़िक्र और हुक्म मानने में अपने दोस्त की रज़ामन्दी ही मतलूब होती है ‿

बबीं तफ़ावुत राहे अज़ कुजास्त ता बकुजा

यही वजह है कि ख़ुदा के ख़ास बन्दों की एक साँस दूसरे लोगों की हजारों साल की इबादत से बहुत ज्यादा अफ़ज़ल होती है, उनका सोना ग़ाफ़िल के तहज्जुद से बेहतर है। जब यह मालूम होगया तो अब पूरे यक़ीन के साथ इस हफ्त हैकल को हर दिन पढ़ा करो जिस मतलब और मक़सद के लिए पढ़ोगे, अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से बेडा पार होगा, जितना ही अपने दिल को अल्लाह तआला के अलावा से अलग हो कर सिर्फ़ ख़ुदा की तरफ़ मुतवज्जह रखोगे उतने ही ज्यादा फ़ायदे हासिल होते जाएँगे।

दिल आरा मीं कि दारी दिल दरो-बन्द
वगर चश्मे अज हमा आलम फरो-बन्द

ख़ुदा सब को तौफ़ीक़ अता करे। वसल्लल्लाहु तआला अला ख़ैरि ख़ल्क़िही मुहम्मदिंव आलिही व सहबिही व सल्लम।

पहला हैकल

بسم الله الرحمن الرحيم

أعيذ نفسي بالله العلي العظيم ○
الله لا إله إلا هو الحي القيوم لا تأخذه سنة ولا
نوم له ما في السموت وما في الأرض من ذا الذي
يشفع عنده إلا بإذنه يعلم ما بين أيديهم وما
خلفهم ولا يحيطون بشيء من علمه إلا بما شاء

وسع كرسيه السموت والأرض ولا يؤده حفظهما
وهو العلي العظيم ○ (बक़रह, 255)

दूसरा हैकल

بسم الله الرحمن الرحيم

أعيذ نفسي بالله العلي العظيم ○ إذ قالت
امرأت عمران رب إني نذرت لك ما في بطني محررا
فتقبل مني إنك أنت السميع العليم ○ سنة من
قد أرسلنا قبلك من رسلنا ولا تجد لسنتنا تحويلا ○
أقم الصلوة لدلوك الشمس إلى غسق اليل
وقرآن الفجر إن قرآن الفجر كان مشهودا ○ ومن
اليل فتهجد به نافلة لك عسى أن يبعثك
ربك مقاما محمودا ○ وقل رب أدخلني مدخل
صدق وأخرجني مخرج صدق واجعل لي من
لدنك سلطانا نصيرا ○ (बनी इस्राईल, 77-80)

तीसरा हैकल

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

أُعِيْذُ نَفْسِىْ بِاللّٰهِ الْعَلِىِّ الْعَظِيْمِ ○

اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَ
الْمُؤْمِنُوْنَ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ
لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَ
اَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ○ لَا يُكَلِّفُ
اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَ عَلَيْهَا مَا
اكْتَسَبَتْ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا
رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ وَاعْفُ
عَنَّا وَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا اَنْتَ مَوْلٰنَا فَانْصُرْنَا
عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ○ (2/285–286).

चौथा हैकल

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

أُعِيْذُ نَفْسِىْ بِاللّٰهِ الْعَلِىِّ الْعَظِيْمِ ○ وَ قُلْ جَآءَ
الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ○
وَ نُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّ رَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ
وَلَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا ○ وَاِذَآ اَنْعَمْنَا عَلَى
الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَـُٔوْسًا ○
قُلْ كُلٌّ يَّعْمَلُ عَلٰى شَاكِلَتِهٖ فَرَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ
اَهْدٰى سَبِيْلًا ○ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ قُلِ الرُّوْحُ مِنْ
اَمْرِ رَبِّىْ وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ اِلَّا قَلِيْلًا ○

(बनी इसराईल, 81–85)

पांचवाँ हैकल

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

أُعِيْذُ نَفْسِىْ بِاللّٰهِ الْعَلِىِّ الْعَظِيْمِ ○ قَالَ رَبِّ اِنِّىْ وَهَنَ
الْعَظْمُ مِنِّىْ وَاشْتَعَلَ الرَّاْسُ شَيْبًا وَّلَمْ اَكُنْ
بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّا ○ وَاِنِّىْ خِفْتُ الْمَوَالِىَ مِنْ وَّرَآءِىْ

وَكَانَتِ امْرَاَتِىْ عَاقِرًا فَهَبْ لِىْ مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۝
يَّرِثُنِىْ وَيَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ ۖ وَاجْعَلْهُ رَبِّ
رَضِيًّا ۝ لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ ۚ
لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ۙ
مُحَلِّقِيْنَ رُءُوْسَكُمْ وَمُقَصِّرِيْنَ ۙ لَا تَخَافُوْنَ ۗ فَعَلِمَ
مَا لَمْ تَعْلَمُوْا فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ فَتْحًا قَرِيْبًا ۝

(मरयम, 4-6, फतह, 27)

छठा हैकल

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اُعِيْذُ نَفْسِىْ بِاللّٰهِ الْعَلِىِّ الْعَظِيْمِ ۝ قُلْ اُوْحِىَ اِلَىَّ
اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْٓا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا
عَجَبًا ۝ يَّهْدِىْٓ اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ۗ وَلَنْ نُّشْرِكَ
بِرَبِّنَآ اَحَدًا ۝ وَّاَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً
وَّلَا وَلَدًا ۝ وَّاَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ
شَطَطًا ۝

(जिन्न, 1-4)

सातवाँ हैकल

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اُعِيْذُ نَفْسِىْ بِاللّٰهِ الْعَلِىِّ الْعَظِيْمِ ۝ وَاِنْ يَّكَادُ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا لَيُزْلِقُوْنَكَ بِاَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ
وَيَقُوْلُوْنَ اِنَّهٗ لَمَجْنُوْنٌ ۝ وَمَا هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝

(क़लम, 51-52)

शश् कुफ्ल

पहला क़ुफ्ल

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

بِسْمِ اللّٰهِ السَّمِيْعِ الْبَصِيْرِ ۝ الَّذِىْ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَىْءٌ
وَّهُوَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ ۝ بِرَحْمَتِكَ يَآ اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ ۝
وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖٓ اَجْمَعِيْنَ ۝

दूसरा क़ुफ़्ल

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

بِسْمِ اللهِ الْخَالِقِ الْعَلِيْمِ ۝ الَّذِىْ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَىْءٌ
وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيْمُ ۝ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ ۝

तीसरा क़ुफ़्ल

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

بِسْمِ اللهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ الَّذِىْ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَىْءٌ
وَهُوَ الْغَنِىُّ الْقَدِيْرُ ۝ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ ۝

चौथा क़ुफ़्ल

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

بِسْمِ اللهِ الْعَزِيْزِ الْكَرِيْمِ ۝ الَّذِىْ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَىْءٌ
وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْكَرِيْمُ ۝ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ ۝

पांचवाँ क़ुफ़्ल

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

بِسْمِ اللهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ الَّذِىْ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَىْءٌ
وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْخَبِيْرُ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

छठा क़ुफ़्ल

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

بِسْمِ اللهِ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ الَّذِىْ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَىْءٌ
وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ فَاللهُ خَيْرٌ حَافِظًا وَّهُوَ اَرْحَمُ
الرَّاحِمِيْنَ

अस्नाद मुसब्बआते अशर

यह वे दस चीज़ें हैं जो हज़रत ख़िज़र (अलैहि०) ने जनाब रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम से सीख कर इब्राहीम तैमी (रह०) को सिखाई और फ़रमाया कि इसकी बरकत से ख़्वाब में रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत होगी तब हज़रत से इसकी फ़ज़ीलत मालूम कर लेना, चुनाँचे उन्हें ज़ियारत नसीब हुई और बहिश्त में हज़रत ने मेवा खिलाया और इसके फ़ज़ाइल बयान फ़रमाए, जब इब्राहीम तैमी (रह०) ख़्वाब से बेदार हुए, तो उन्होंने लम्बे वक़्त तक खाना न खाया, उन्हीं से मशाइख़े इज़ाम को यह दौलत पहुँची, बुज़ुर्गाने दीन का यह विर्द है। इसके फ़ज़ाइल बहुत ज़्यादा हैं अगर कुछ देखने हों तो किताब "इह्याउल उलूम" की पहली जिल्द, दसवें बाब की पहली फ़स्ल में देखा जा सकता है, यहाँ बयान करने का मौक़ा नहीं है।

"मुसब्बआते अशर" के पढ़ने का तरीक़ा यह है कि हर दिन सुबह को सूरज निकलने और ज़मीन पर फैलने से पहले और शाम को सूरज ग़ुरूब होने से पहले वुज़ू करके "सूरए अल्हम्दु" सात बार, "क़ुल्अऊज़ु बिरब्बिन्नास" सात बार, "क़ुल्अऊज़ु बिरब्बिल् फ़लक़" सात बार, "क़ुल्हुवल्लाह" सात बार, "क़ुल्याअय्युहल् काफ़िरून" सात बार, "आयतल्कुर्सी" सात बार,

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ सात बार,

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ ِالنَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الْحَبِيْبِ الْعَالِي الْقَدْرِ الْعَظِيْمِ

الْجَاهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ

सात बार,

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِجَمِيْعِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ
وَالْمُسْلِمَاتِ الْاَحْيَاءِ مِنْهُمْ وَالْاَمْوَاتِ اِنَّكَ قَرِيْبٌ مُّجِيْبُ الدَّعَوَاتِ يَا قَاضِيَ
الْحَاجَاتِ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ सात बार,

اَللّٰهُمَّ افْعَلْ بِيْ وَبِهِمْ عَاجِلًا وَّاٰجِلًا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ مَا اَنْتَ لَهٗ اَهْلٌ وَّلَا
تَفْعَلْ بِنَا يَا مَوْلَانَا مَا نَحْنُ لَهٗ اَهْلٌ اِنَّكَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ جَوَادٌ كَرِيْمٌ
رَّءُوْفٌ رَّحِيْمٌ

और हर बार 100 बार आयतल कुर्सी को बिस्मिल्लाह के साथ पढ़े और नाग़ा न करे।



इलाजुल् आज़म

بسم الله الرحمن الرحيم

अल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन वस्सलातु वस्सलामु अ़ला रसूलिही मुहम्मदिव्वं आलिही व अस्हाबिही अजमईन।

हमद व नअ़त के बाद अहक़रुल इबाद ग़ुलाम नबी खाँ इब्ने हाजी महमूद खाँ मरहूम व मग़फ़ूर मुसलमान भाइयों की ख़िद्मत में अ़र्ज़ करता है कि एक दिन मादने शफ़्क़त व इत्तिहाद, मख़्ज़ने मवद्दत व वदादे सालिके मसलके सिद्क़ व सदाद जनाब मुनशी ख़ुदा दाद साहब ने फ़रमाया कि अस्माए हुसना बारी तआ़ला के जितने हैं उनके ख़्वास अगर आप उर्दू ज़बान में तर्जुमा कर दीजए तो मुमकिन है कि ख़ास व आ़म उसके फ़ायदों से महरूम न रहें, इसलिए इस आजिज़ ने इस रिसाले का तर्जुमा किया और इसका नाम "इलाजुल आज़म" रखा। अब इस रिसाले से फ़ायदा उठाने वालों से यह आजिज़ भी उम्मीदे क़वी रखता है कि इस कम्तरीन को अपनी नेक दुआओं में याद रखेंगे। मालूम होना चाहिए कि तमाम अस्माए हुसना की एक बड़ी ख़ासियत हदीस शरीफ के मुताबिक़ यह है कि जो शख़्स इनको पढ़ा करे वह जन्नत में दाख़िल हो।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम هُوَاللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ इस नाम को या कि इस्म (या हू) को जो कोई हर दिन हज़ार बार पढ़े वह यक़ीन वाला होवे। عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ इस नाम को जो शख़्स हर दिन 100 बार पढ़े, ग़फ़लत व फ़रामोशी

उसके दिल से जाती रहे। هُوَالرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ इस नाम को जो शख़्स हर दिन एक 100 बार पढ़े तमाम आ़लम उसपर मेहरबान होवे। اَلْمَلِكُ इस नाम को जो कोई हर दिन दोपेहर ढले 100 बार पढ़े तो भूल-चूक उसके दिल से जावे और दिल उसका पाक होवे। اَلْقُدُّوْسُ يَاسُبُّوْحُ يَاقُدُّوْسُ इस नाम को जो कोई रोटी के ऊपर लिख कर खाया करे उस शख़्स में फ़रिश्तों की सिफ़त पैदा होवे। اَلسَّلَامُ इस नाम को जो कोई बीमारी से अच्छा होने के लिए हर दिन 100 बार पढ़े अल्लाह ने चाहा तो बीमार जल्द आराम पावे। اَلْمُؤْمِنُ इस नाम को जो कोई पढ़ा करे या अपने पास रखे तो उसके घर व बाहर की दौलत अल्लाह तआ़ला की हिफ़ाज़त में रहे और उसपर कभी भी शैतान क़ाबू न पावे। اَلْمُهَيْمِنُ इस नाम को जो कोई हर दिन पढ़ा करे उसके ज़ाहिर व बातिन में नूर पैदा होवे। اَلْعَزِيْزُ इस नाम को जो कोई 40 दिन सुबह की नमाज़ के बाद 41 बार पढ़ा करे तो दुनिया व आख़िरत में किसी का मुहताज न होगा اَلْجَبَّارُ इस नाम को जो कोई "मुसब्बआ़ते अ़शर" के बाद 21 बार पढ़ा करे तो किसी ज़ालिम के पंजे में न फंसे। اَلْمُتَكَبِّرُ इस नाम को जो कोई अपनी बीवी से हमबिस्तरी करने से पहले 10 बार पढ़े और उसके बाद हमबिस्तरी करे तो हक़ तआ़ला उसे नेक औलाद अता करे। اَلْخَالِقُ इस नाम को जो कोई रात के वक़्त जब सब लोग सो जाएँ ख़ूब पढ़ा करे तो हक़ तआ़ला फ़रिश्ते को हुक्म करें कि क़ियामत तक तू इबादत किया कर ताकि उस शख़्स के नाम इस का सवाब लिखा जावे। اَلْبَارِئُ इस नाम को जो कोई हर दिन सात बार पढ़े, अल्लाह ने चाहा तो उसे क़ब्र का अ़ज़ाब न होगा बल्कि

उसकी लाश क़ब्र से फ़रिश्ते उठा ले जावें। اَلْمُصَوِّرُ इस नाम की ख़ासियत यह है कि जो औरत बांझ हो और उसको हमल न ठहरता हो तो उसे चाहिए कि वह सात दिन रोज़ा रखे और इफ़्तार के वक़्त 21 बार इस नाम को पढ़ कर पानी पर दम करे और उसी पानी से इफ़्तार करे, अल्लाह ने चाहा तो सात दिन न गुज़रने पाएँ कि उसे हमल ठहर जावे और नेक लड़का पैदा होवे। اَلْغَفَّارُ इस नाम को जो कोई जुमा की नमाज़ के बाद इन अल्फ़ाज़ के साथ 100 बार पढ़े कि يَا غَفَّارُ اغْفِرْ لِيْ ذُنُوْبِيْ वह शख़्स मग़फ़ूरों और मक़्बूलों के गिरोह में दाख़िल होवे। اَلْقَهَّارُ इस नाम को जो कोई ख़ूब पढ़ा करे, दुनिया की मुहब्बत उसके दिल से जाती रहे, दिल पाक हो। اَلْوَهَّابُ इस नाम को जो कोई नमाज़े चाश्त (जो दोपहर ढलने से पहले पढ़ी जाती है) के बाद सजदे में सात बार पढ़े तो उसे बेनवाज़ी हासिल हो और अगर किसी ज़रूरत के हुसूल के लिए पढ़ना चाहे तो आधी रात को मकान या मस्जिद के सहन में खुले सर हाथ उठा कर 100 बार पढ़े अल्लाह ने चाहा तो उसकी ज़रूरत पूरी होगी। اَلرَّزَّاقُ इस नाम को जो कोई फ़जर की नमाज से पहले सुबहे काज़िब (रात का आख़िरी हिस्सा) के वक़्त घर के चारों कोनों में 10-10 बार पढ़े अल्लाह ने चाहा तो उस मकान में ख़ैर व बरकत उतरेगी। اَلْفَتَّاحُ इस नाम को जो कोई सुबह की नमाज़ के बाद सीने पर दोनों हाथ रखकर 70 बार पढ़े तो उसके दिल से कीना-कपट दूर हो और तक़दीर का सितारा चमके और वह कभी अँधा न होवे। اَلْعَلِيْمُ इस नाम को जो कोई ख़ूब पढ़ा करे, हक़ तआला की मारिफ़त उसको नसीब हो और इल्म में कामिल हो। اَلْقَابِضُ इस नाम

को जो कोई 40 दिन तक हर दिन रोटी के 40 टुकड़ों पर लिखे और खाया करे तो भूक के अज़ाब से निजात पावे। اَلْبَاسِطُ इस नाम को जो कोई सुबह के वक़्त हाथ उठाकर दस बार पढ़े और अपना हाथ मुँह पर फेर ले तो वह कभी किसी का मोहताज न हो। اَلْخَافِضُ इस नाम को जो कोई सात हजार बार पढ़े, दुश्मनों के ख़ौफ़ से निजात पावे। اَلرَّافِعُ इस नाम को जो कोई दिन को या रात को सोते वक़्त 100 बार पढ़े, हक़ तआला उसे तमाम आफ़तों और मुसीबतों से दूर रखे और वह शख़्स लोगों में इज़्ज़त की निगाह से देखा जावे। اَلْمُعِزُّ इस नाम को जो कोई जुमा या सनीचर की रात को मग़रिब की नमाज़ के बाद 41 बार पढ़े तो लोगों में महबूब और इज़्ज़त वाला होवे। اَلْمُذِلُّ जो शख़्स किसी जाबिर और ज़ालिम से डर रखता हो तो उसे चाहिए कि 75 बार इस नाम को पढ़ कर सजदे में जावे और हक़ तआला से दुआ करे कि या अल्लाह तू फ़लाँ शख़्स के शर और उसकी बुराई से हमें महफ़ूज़ रख, तो अल्लाह ने चाहा वह ज़ालिम उसपर ग़ालिब न होवेगा और अल्लाह की पनाह में अमन व अमान के साथ रहे। اَلسَّمِيْعُ इस नाम को जो शख़्स जुमेरात को नमाज़े चाश्त के बाद 500 बार पढ़े और पढ़ते वक़्त किसी से बात न करे, तो अल्लाह तआला से जो भी दुआ मांगेगा वह क़बूल होगी। اَلْبَصِيْرُ इस नाम को जो कोई जुमा की सुन्नत और फ़र्ज़ के बीच 100 बार पढ़े वह अल्लाह तआला की नज़रों में बहुत ख़ास होवे। اَلْحَكَمُ इस नाम को अगर कोई मुश्किल काम सामने आने के वक़्त बराबर पढ़ता रहे तो अल्लाह तआला के फ़ज़्ल और रहमत से वह काम आसान होवे। اَلْعَدْلُ इस नाम को जो कोई जुमा

की रात को बीस टुकड़े रोटियों पर लिख कर खाए तो अल्लाह तआला के हुक्म से तमाम मख़्लूक़ उसकी ताबेदार हो जावे। **اللطيف** इस नाम को वुज़ू करके 100 बार पढ़ने से दिल की जो भी ख़्वाहिश हो पूरी होवे और घबराहट व होले दिल दूर होवे और भयानक बीमारी के लिए दवा है और बेनिकाही लड़की के जल्द निकाह होने के लिए बहुत अच्छा अमल है। **الخبير** जो शख़्स इस नाम को बराबर पढ़े, नफ़्स व शैतान के शर से निजात पावे। **الحليم** इस नाम को अगर पानी पर दम करे या काग़ज़ पर लिख कर धो लेवे और उस पानी को खेत में छिड़क देवे, अल्लाह ने चाहा तो खेत ख़ूब फले-फूले और आफ़तों व मुसीबतों से महफ़ूज़ रहे। **العظيم** इस नाम को जो कोई पढ़ा करे वह लोगों में महबूब होवे। **الغفور** इस नाम को अगर काग़ज़ के टुकड़ों पर लिखे और कैसे ही बीमार को तीन दिन तक खिलाए, अल्लाह ने चाहा तो शिफ़ा पाए। **الشكور** इस नाम को अगर रोज़ी की तंगी वाला हर दिन 41 बार पढ़ कर पानी पर दम करे और उस पानी को सीने और आँखों में लगाए तो रोज़ी में फ़राख़ी हासिल हो और अगर आँखों की रोशनी कम हो गई हो तो उस पानी के इस्तिमाल से बढ़ जावे। **العلي** इस नाम को जो बराबर पढ़ा करे या लिख कर अपने पास रखे उसकी इज़्ज़त और बड़ाई लोगों में बढ़े और दूसरे मतलब भी पूरे हों। **الكبير** इस नाम को जो शख़्स बराबर पढ़े उसे कोई डसने वाला जानवर डस न सके और तमाम आफ़तों से मेहफ़ूज़ रहे। **الحفيظ** इस नाम को जो शख़्स लिख कर अपने पास तावीज़ करके रखे तो वह पानी में न डूबे और आग में न जले और भूत-परेत व जिन वग़ैरा के असर से मेहफ़ूज़ रहे। **المقيت**

इस नाम को अगर सात बार पढ़े और ख़ाली कूज़े के अन्दर दम करे उसके बाद उस कूज़े में पानी भर कर रखे तो उस पानी में यह असर होगा कि उसमें थोड़ा सा उस शख़्स को जो सफ़र पर जा रहा हो या एक मकान से दूसरे मकान में रहने के लिए जा रहा हो या किसी ने उससे बुरा सुलूक किया हो या कोई लड़का बुरी आदतों में पड़ गया हो, पिलावे तो हर तरह की मुसीबतों से निजात पावे। **الحسيب** इस नाम को अगर 70 बार हर दिन पढ़ा करे तो चोरों के डर से और पड़ोसी की बुराई से और दुश्मनों की दुश्मनी से मेहफ़ूज़ रहे। **حسبي الله الحسيب** इस दुआ को जिस मतलब के लिए सात रोज़ पढ़े, अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से वह मतलब सात दिन के अन्दर पूरा हो और ज़रूरी है कि इसको जुमेरात से पढ़ना शुरू करे। **الجليل** इस नाम को जो शख़्स मुश्क व ज़ाफ़रान से लिख कर खावे तो अपनी जमाअत में क़दर और इज़्ज़त हो और उस से हर एक डर मेहसूस करे। **الكريم** इस नाम को जो सोते वक़्त पढ़ कर सो रहे तो वह शख़्स दुनिया में मुकर्रम व इज़्ज़त वाला होवे। कहते हैं कि हज़रत अली इब्ने अबी तालिब कर्रमल्लाहु वजहहू इस नाम को बराबर पढ़ा करते थे इसलिए उनके नाम के साथ कर्रमल्लाहु वज्हहू लोग कहने लगे। **الرقيب** इस नाम को अगर कोई शख़्स अपनी औलाद और धन-दौलत के आस-पास पढ़ देवे तो वे सब दुश्मनों की दुश्मनी और हर तरह के ख़तरे व नुक़सान से मेहफ़ूज़ रहेंगे। **المجيب** इस नाम को जो शख़्स पढ़ा करे या अपने पास रखे अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त में रहे। **الواسع** इस नाम को जो शख़्स ज़्यादा से ज़्यादा पढ़े, तवक्कुल और क़िनाअत हासिल हो। **الحكيم** इस नाम

को जो शख़्स आधी रात के वक़्त पढ़ा करे, अल्लाह तआला उसे भेदों का जानने वाला कर दे। اَلْوَدُوْدُ इस नाम को किसी खाने की चीज़ पर एक हज़ार और एक बार पढ़ कर उन सौतनों या उन लड़ने वालों को जो आपस में मुहब्बत न रखते हों खिला देवे तो उल्फ़त व मुहब्बत ज़्यादा हो और एक दूसरे का ताबेदार हो। اَلْمَجِيْدُ इस नाम में यह ख़ासियत है कि अगर किसी शख़्स को बर्स की बीमारी हो तो उसे चाहिए कि अय्यामे बीज़ (यानी चाँद की 13, 14 और 15 तारीख़) के रोज़े रखे और इफ़्तार करते वक़्त इस नाम को ज़्यादा से ज़्यादा पढे अल्लाह ने चाहा तो शिफ़ा मिलेगी और हर एक मतलब के लिए बहुत मुफ़ीद है। اَلْبَاعِثُ इस नाम को जो शख़्स सोते वक़्त अपना हाथ सीने पर रख कर 100 बार पढ़े तो अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से उसका दिल ज़िन्दा होवे। اَلشَّهِيْدُ इस नाम को अगर सुबह के वक़्त माथे पर हाथ रख कर 21 बार पढ़े और मुँह आसमान की तरफ़ करे तो इसकी बरकत से बेटा ताबेदार और बेटी नेक किरदार व परहेज़गार हो। اَلْحَقُّ इस नाम की यह ख़ासियत है कि अगर किसी की कोई चीज़ खो जाए तो एक काग़ज़ के चारों कोनों में इस नाम को लिखे और उस खोई हुई चीज़ का नाम भी उस काग़ज़ पर लिखे और आधी रात के वक़्त उस काग़ज़ को हाथ में लेकर आसमान की तरफ़ नज़र करे, अल्लाह ने चाहा तो सुबह होने से पहले वह चीज़ मिल जावेगी या कोई आकर उस का पता बता जाएगा। اَلْوَكِيْلُ इस नाम को जो शख़्स बराबर विर्द करेगा तो वह अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से तूफ़ान और आफ़ात वग़ैरा से मेहफ़ूज़ रहेगा। اَلْقَوِيُّ जो शख़्स दुश्मन से डर रखता हो तो एक

हज़ार और एक गोली आटे की बनावे और हर एक गोली पर एक बार इस नाम को पढ़े और उन गोलियों को चिड़यों को खिला दे और खिलाते वक़्त अपने दिल में दुश्मन की नियत करे, अल्लाह के फ़ज़्ल से दुश्मन मग़लूब होवे। اَلْمَتِيْنُ अगर लड़का दूध न पीवे या दूध पिलाने वाली का दूध कम होजावे तो इस नाम को लिखे और धो कर उसका पानी दाई को पिलावे और कुछ छाती पर लगाए तो अल्लाह ने चाहा दूध ज़्यादा हो और लड़का भी सुकून पावे। اَلْوَلِيُّ अगर औरत या लौन्डी की तबीअत बद चलनी या हरामकारी की तरफ़ माइल हो और किसी तरह उससे बाज़ न आवे तो हमबिस्तरी से पहले इस नाम को बा वुज़ू हो कर, अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ पढ़ कर उस अपनी बदचलन औरत या लौन्डी से हमबिस्तरी करे, वह नेक चलन हो जावे। اَلْحَمِيْدُ जिस शख़्स को गंदी और बुरी बातें बकने की आदत हो तो इस नाम को किसी बर्तन पर लिखे और बराबर उसी बर्तन में पानी पिया करे, अल्लाह ने चाहा तो बुरी बातें बकने की आदत उससे जाती रहेगी और बुरे कामों के पास भी न जाएगा। اَلْمُحْصِيْ जिसे इबादत करने में सुस्ती और काहिली होती हो तो उसके लिए ज़रूरी है कि रात को सोते वक़्त अपना हाथ सीने पर रख कर सात बार इस नाम को पढ़ कर सो रहे, अल्लाह के फ़ज़्ल से नफ़्स उस का क़ाबू में रहे और इबादत में शौक़ पैदा हो और अगर क़ियामत के अज़ाब का डर रखता हो तो हर जुमे की रात इस नाम को एक हज़ार बार पढ़ा करे, अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व करम से अज़ाब उसका कम हो जाएगा और हिसाब असानी के साथ लेंगे। اَلْمُبْدِئُ इस नाम को हामिला के पेट पर सुबह के वक़्त उसका शौहर 19 बार

शहादत की उंगली से लिखे तो अल्लाह के फ़ज़्ल से हमल गिरने का डर जाता रहे और जिसका हमल देर तक रहे (यानी 9 महीने से ज़्यादा हो जावें) तो उस औरत के पेट पर लिखने से जल्द ही लड़का पैदा हो। اَلْمُعِيْدُ अगर कोई शख़्स खो जाए और उसकी कोई ख़बर न मिले तो इस नाम को रात को सोते वक़्त घर के हर एक कोने में 70-70 बार पढ़े और कहे कि फ़लां जो बेटा फ़लां का है मुझ तक पहुंचा, अल्लाह ने चाहा 70 दिन में वह शख़्स ख़ुद आजावे या उस की ख़बर आजावे। اَلْمُحْيِيْ जिसे ख़ुदाए तआ़ला का ख़ौफ और उसके अज़ाब का डर हो तो चाहिए कि इस नाम को सात दिन तक अपने बदन पर फूंके, नफ़्स उसका ताबेदार हो जावे। اَلْمُمِيْتُ जिस शख़्स को आख़िरत के अज़ाब का डर हो तो चाहिए कि सात रोज़ सोते वक़्त हाथों को सीने पर रख कर इस नाम को 7 बार पढ़े, अल्लाह के फ़ज़्ल से नफ़्स उसका ताबेदार हो। اَلْحَيُّ इस नाम को जिस बीमार पर पढ़ कर दम कर दिया जाए अल्लाह के फ़ज़्ल से शिफ़ा मिले। रिवायत है कि इसी नाम की बरकत से तमाम फ़रिश्तों को सोने और खाने की ज़रूरत नहीं है। اَلْقَيُّوْمُ इस नाम को जो शख़्स सुबह के वक़्त ऊँची आवाज़ में पढ़ा करे तो इसकी बरकत से हर शख़्स के दिल को मुसख़्ख़र कर सकेगा। اَلْوَاجِدُ इस नाम को खाना खाते वक़्त अगर हर एक लुक़्मे पर पढ़ा करे तो दिल में नूर पैदा होगा इसलिए कि इस नाम की बरकत से सच्ची तड़प रखने वाले के दिल में वजद और रिक़्क़त पैदा होती है। اَلْمَاجِدُ इस नाम की हैबत से मुश्रिकीन मक़हूर होते हैं। اَلْوَاحِدُ अगर तन्हाई की हालत में किसी को डर और ख़ौफ़ लगता हो तो इस नाम को पढ़ने से उसके दिल

में क़ुव्वत और हिम्मत आएगी, डर दूर हो जाएगा और इस नाम की सिफ़त किसी मख़्लूक़ को मालूम नहीं। اَلْاَحَدُ इस नाम को हज़ार बार पढ़ने से वहशत और तन्हाई जाती रहती है अल्लाह की इनायत व रहमत मददगार होती है। اَلصَّمَدُ अगर इस नाम को आधी रात या सुबह के वक़्त 111 बार पढ़ा करे, तो सिद्दीक़ों के गिरोह में दाख़िल होवे। اَلْقَادِرُ अगर कोई शख़्स किसी दुश्मन को ग़ालिब जान कर डरता रहे और उससे बचने की कोई तदबीर उससे न होसके तो चाहिए कि वुज़ू करते वक़्त हर एक उज़्व के धोने में इस नाम को पढ़े और पानी बहावे, अल्लाह ने चाहा तो दुश्मनों पर वह ग़ालिब रहेगा। اَلْمُقْتَدِرُ जो कोई सो कर उठे और आँख खोल कर इस नाम को पढ़ा करे तो तमाम मख़्लूक़ पर क़ादिर हो। اَلْمُقَدِّمُ जो शख़्स डर और ख़ौफ़ से अपनी जगह पर न रह सके तो इस नाम को पढ़े या अपने पास रखे तो इस की बरकत से किसी तरह की उसे तक्लीफ़ न पहुंचे। اَلْمُؤَخِّرُ इस नाम को हर दिन 100 बार पढ़ा करे तो अल्लाह की याद के सिवा उसके दिल में कुछ न आवे और उसका ईमान पर ख़ातिमा होवे। اَلْاَوَّلُ जो शख़्स अपनी औरत और लड़के से अलग हो या किसी से कोई अलग होकर गुम् होगया हो तो चाहिए कि हर जुमा की रात को बराबर एक हज़ार बार इस नाम को पढ़ा करे, अल्लाह के फ़ज़्ल से सब मतलब उसके पूरे होंगे। اَلْاٰخِرُ जिस शख़्स की उम्र बहुत ज़्यादा हो चुकी हो और अच्छे काम उसने न किए हों तो उसके लिए ज़रूरी है कि इस नाम को हर दिन 100 बार पढ़ा करे और अगर पढ़ न सके तो लिख कर इसका तावीज़ अपने पास रखे अल्लाह ने चाहा तो उसका ख़ातिमा बिल्ख़ैर होगा।

الظاهر इस नाम को जो शख़्स इशराक़ की नमाज़ के बाद 500 बार पढ़ा करे, आँखें उसकी रौशन हों और ख़ुदा तआ़ला से जो मक़सद मांगे वह उसे हासिल हो। الباطن इस नाम को जो शख़्स हर दिन एक हज़ार तीस बार पढ़ा करे उस पर अल्लाह के भेद खुलें। الوالي जो शख़्स आँधी और तूफ़ान से डरता हो तो चाहिए कि इस नाम को लिख कर पानी भरे कूज़े में डाल देवे और उस पानी को घर की तमाम दीवारों, कोनों वग़ैरा पर छिड़क देवे और हर दिन इस नाम को पढ़ा करे अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल से उन आफ़ात से बे ख़ौफ़ रहे। المتعال इस नाम को जो औरत माहवारी के दिनों में विर्द करे वह कुँआरी जैसी हो जाए। البر जिसका छोटा लड़का ज़िन्दा न रहे वह इस नाम को सात बार पढ़े और सात बार उस लड़के को ख़ुदा तआ़ला की पनाह में दे तो वह लड़का सलामत रहे। التواب इस नाम को जो शख़्स नमाज़े चाश्त के बाद 360 बार पढ़े उसकी तौबा क़बूल होवे। المنعم इस नाम को जो शख़्स बराबर पढ़े मालदार होवे। المنتقم जो शख़्स दुश्मनों के ज़ुल्म को बरदाशत न कर सके तो इस नाम को तीन जुमा की रातों को बराबर पढ़ा करे अल्लाह ने चाहा तीन रात न बीतने पावें कि उस के दुश्मन उससे राज़ी हो जाएँ। العفو जिस शख़्स को बहुत गुनाहों की वजह से अल्लाह की तरफ़ से बख़्शिश से ना उम्मीदी हो तो उसे चाहिए कि वह इस नाम को ख़ूब पढ़े और विर्द करे अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से वह बख़्शा जावे और बिना हिसाब के जन्नत में दाख़िल हो। الرؤوف इस नाम को जो शख़्स 15 बार पढ़ कर किसी हाकिम ज़ालिम से जिस मज़्लूम की सिफ़ारिश करे वह ज़ालिम

रहम करके मज़्लूम को माफ़ कर देवे और ज़ुल्म से बाज़ आजावे। مالك الملك इस नाम को जो शख़्स बराबर पढ़ा करे तकब्बुर उसका जाता रहे और वह मालदार हो जाए। ذو الجلال والإكرام जिस शख़्स को कोई सख़्त परेशानी का सामना हो तो इस नाम को 700 बार पढ़े अल्लाह के फ़ज़्ल से वह परेशानी दूर हो जावे। الرب जो शख़्स अपने बाल- बच्चों को औरों के बीच रखे और उसे उनसे किसी तरह के ख़ौफ़ की उम्मीद हो तो अपने घर के चारों तरफ़ लकीर खींचे और इस नाम को पढ़े, अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से उसके बाल-बच्चे औरों की बुराई से मेहफ़ूज़ रहें। المقسط इस नाम को बराबर विर्द करने से शैतानी वस्वसे दिल से दूर हो जावें। الجامع जिस शख़्स के बाल-बच्चे बिछड़ गए हों तो इत्वार के दिन चाश्त के वक़्त ग़ुसल करे और आसमान की तरफ़ मुहँ करके एक-एक बार इस नाम को पढ़ता जावे और एक-एक उंगली अपनी बन्द करता जावे, जब दसों उंगलियाँ बन्द हो जावें तो हाथ अपने मुँह पर फेरले, अल्लाह के फ़ज़्ल से उसके बाल-बच्चे उससे आ मिलें। الغني जो शख़्स ऐसी बला में फंस जावे कि उससे बचने की उसे तरकीब भी मालूम न हो तो उसे चाहिए कि इस नाम को पढ़ कर हाथ पर दम करे और उस हाथ को पूरे बदन पर फेरे अल्लाह ने चाहा तो उसे उस बला से निजात मिले। المغني इस नाम को जो शख़्स ख़ूब पढ़ा करे वह अल्लाह के अलावा से बेनियाज़ हो जावे और कुछ लोगों ने कहा है कि हज़ार बार पढ़ा करे, और एक जुमा से दूसरे जुमा तक अगर पढ़े तो अल्लाह के आलावा से बेनियाज हो जावेगा। المعطي जो शख़्स दुआ मंगते वक़्त يا معطي السائلين ख़ूब पढ़ेगा

अल्लाह ने चाहा तो वह किसी मख़्लूक़ का मुहताज न होगा।

المانع जिस शख़्स की अपनी बीवी से अन-बन रहती हो तो सोते वक़्त इस नाम को ख़ूब दिल लगा कर पढ़े, अल्लाह ने चाहा तो दोनों की अन-बन दूर हो और औरत तावेदार हो जाएगी। الضار अगर कोई शख़्स किसी जगह पर ठहरना चाहता हो और उसके दिल में शक हो कि यहाँ ठहरना हमारे लिए अच्छा है या नहीं तो उसे चाहिए कि चाँद की 13, 14 व 15 तारीख़ के रोज़े रखे जो जुमा के दिन से शुरू हों और उसके हर दिन इस नाम को 100 बार पढ़े, तीन दिन पढ़ने के बाद पता चल जाएगा कि उस जगह पर ठहरना उसके लिए अच्छा है या बुरा। النافع जो शख़्स किश्ती या जहाज़ पर बैठ कर सफ़र में जाता हो अगर इस नाम को ख़ूब पढ़े तो अल्लाह के फ़ज़्ल से वह जहाज़ तूफ़ान और डूबने से महफ़ूज़ रहे।

النور जो शख़्स जुमा की रात को सात बार सूरए फ़ातिहा पढ़े, उसके बाद इस नाम को हज़ार बार पढ़े, अल्लाह ने चाहा तो उसके दिल पर अल्लाह के भेद खुलें और कुछ लोगों ने कहा है कि सूरए नूर को सात बार पढ़े। الهادى इस नाम को जो शख़्स ख़ूब पढ़ा करे और पढ़ते वक़्त आसमान की तरफ़ निगाह करे और हाथ उठावे फिर आँखें नीची कर लेवे, फिर हाथ उठावे और हाथों को मुँह और आँखों पर फेरे तो अल्लाह के फ़ज़्ल से वह अहले मअ़रिफ़त व साहिबे इरफ़ान हो जावे।

البديع जिस शख़्स को कोई अहम काम दरपेश हो तो उसे चाहिए कि 70 हज़ार बार يا بديع السموت والارض पढ़े, अल्लाह के फ़ज़्ल से उसका काम आसान होजावे और अगर कोई शख़्स किसी मतलब के हासिल करने में परेशान हो तो

ज़रूरी है कि बराबर रात को सोते वक़्त इस नाम को 100 बार पढ़ा करे, अल्लाह ने चाहा तो वह मतलब उसे हासिल होगा।

الوارث इस नाम को जो कोई सूरज निकलने से पहले 100 बार पढ़ा करे, अल्लाह के फ़ज़्ल से उसकी दुनियवी ज़िन्दगी में और दुनियवी ज़िन्दगी (मौत) के बाद उसको किसी तरह की तकलीफ़ न होगी। الرشيد जो शख़्स ऐसा हो कि अपने काम की तद्बीर करने में आजिज़ हो जाए और उलझाव में पड़ जाए कि इस काम में क्या किया जाए? या किसी की कोई चीज़ खो गई हो तो उसे चाहिए कि मग़रिब और इशा के बीच इस नाम को हज़ार बार पढ़ा करे, अल्लाह ने चाहा तो उसके काम की कोई तद्बीर जल्द निकल आएगी और खोई हुई चीज़ की भी ख़बर मिल जावेगी। الصبور अगर किसी को कोई दुख या तकलीफ़ हो या परेशानी में फंस जावे तो उसे चाहिए कि 30 हज़ार बार इस नाम को पढ़े, अल्लाह के फ़ज़्ल से सब दुख दूर होजावें और हर तरह से इत्मीनान व सुकून उसके दिल को हासिल होवे।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बुरी नज़र का इलाज

जानना चाहिए कि नज़र एक ज़हर है कि अल्लाह तआला ने कुछ आदमियों की आँखों में इस को रखा है जैसा कि बिच्छू के डंक और सांप की ज़बान में ज़हर रखा गया है इसी तरह आदमी की आँख में भी नज़र मुक़र्रर की गई है। और यह न समझे कि नज़र सिर्फ़ दूसरों की ही लगा करती है अपनी नहीं, बल्कि कभी-कभी अपनी भी नज़र लग जाती है। और यह भी न समझे कि सिर्फ़ आदमी ही पर नज़र लगती है दूसरी चीज़ों पर नहीं लगती है बल्कि लड़के, जानवर, खेती, बाग़, धन-दौलत और असबाब सब चीज़ों पर नज़र लगा करती है इसलिए अल्लाह तआला ने उसका इलाज अपने रसूल (सल्ल०) की ज़बान से बतला दिया कि सबको फ़ायदा पहुँचे। चुनान्चे हसन बसरी (रह०) ने कहा है कि अगर किसी शख़्स को अपने ऊपर या अपने माल पर नज़र लगने का वहम हो तो इस आयत को जो सूरए नून में है पढ़ कर तीन बार दम कर दिया करे :-

وَإِنْ يَّكَادُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَيُزْلِقُوْنَكَ بِأَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُوْلُوْنَ إِنَّهٗ لَمَجْنُوْنٌ ۝ وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝

और अगर किसी को कोई चीज़ पसंद आ जावे और वह माल हो या औलाद हो या बीवी हो या मकान हो या इसके अलावा कोई

और चीज़, जब अपनी आँखों में वह चीज़ अच्छी मालूम हो तो उस वक़्त यह कहे :- مَا شَاءَ اللّٰهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ
इसके कहने से अल्लाह तआला बुरी नज़र का असर नहीं होने देता। अगर कोई शख़्स यह समझता हो कि उसकी नज़र बड़ी सख़्त है तो उसे चाहिए कि वह किसी चीज़ को न देखा करे और किसी चीज़ पर नज़र पड़ जावे तो कहे:- اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلَيْهِ
इस कलिमा की बरकत से नज़र असर नहीं करेगी। "सिरातल मुस्तक़ीम" नामी किताब में लिखा है कि शैख़ इमाम अबू क़ासिम क़ुशैरी (रह०) ने कहा है कि एक बार लड़का बीमार हुआ, यहाँ तक कि मरने के करीब हो गया, अचानक मैं ने ख़्वाब में रसूले ख़ुदा (सल्ल०) को देखा, तो मैंने उसकी बीमारी की शिकायत की, आप (सल्ल०) ने मुझसे फरमाया कि तू आयाते शिफा से क्यों गाफ़िल हो रहा है, वे ये हैं -

पहली आयत

وَيَشْفِ صُدُوْرَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ (तौबा, 14)

दूसरी आयत

وَشِفَاءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ (यूनुस, 57)

तीसरी आयत

يَخْرُجُ مِنْ بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ أَلْوَانُهٗ فِيْهِ شِفَاءٌ لِّلنَّاسِ
(नहल, 69)

चौथी आयत

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ
(बनी इसराईल 82)

पाँचवीं आयत

وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ (शुअरा, 80)

छठी आयत

قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّشِفَاءٌ (हामीम सज्दह, 44)

पस मैंने इन आयतों को लिख कर और पानी में घोल कर उस बीमार को पिलाया, उसी वक़्त वह ऐसा अच्छा होगया, जैसे कभी उसे बीमारी हुई ही न थी। अब्दुल्लाह एक आलिम हैं, कहते हैं कि मैं सफ़र में था और मेरा ऊँट बहुत तेज़ और चालाक था, अचानक एक जगह पर जो मैं उतरा तो किसी ने मुझसे कहा कि यहाँ पर एक शख़्स नज़र लगाने में बहुत मशहूर है और तुम्हारा ऊँट बहुत अच्छा है, ऐसा न हो कि वह कहीं नज़र लगा जावे और तुम्हारा ऊँट मर जावे, मैंने कहा कि मेरे ऊँट पर उसकी नज़र नहीं लगेगी, जब यह ख़बर उस शख़्स को पहुँची तो उसी वक़्त आकर उस शख़्स ने मेरे ऊँट को निगाह भर कर देखा, उसके देखते ही ऊँट गिर पड़ा और परेशान होने लगा, लोगों ने मुझसे कहा कि फ़लाँ शख़्स तुम्हारे ऊँट को नज़र लगा गया है, मैंने उसे बुलवाकर अपने सामने बिठाया और यह मन्तर पढ़ा :-

بِسْمِ اللّٰهِ حَبْسٌ حَابِسٌ يَا شَجَرُ يَابِسٌ وَشِهَابٌ قَابِسٌ رَدَدْتُ عَيْنَ الْعَائِنِ عَلَيْهِ وَعَلٰى أَحَبِّ النَّاسِ إِلَيْهِ فَارْجِعِ الْبَصَرَ هَلْ تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ إِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِيْرٌ

पस जिस वक़्त मैंने इस मन्तर को पढ़ा, उसी वक़्त उस

शख़्स की आँख निकल पड़ी और मेरा ऊँट अच्छा हो गया। इस वाक़िआ के बयान करने का मक़सद यह है कि मन्तर भी नज़र को बहुत फ़ायदा करता है अगर्चे वह नज़र लगाने वाला सामने न होवे इसलिए कि अल्लाह तआला के नाम में बहुत बड़ी तासीर है, जब जादू दूर के रहने वाले पर असर करजावे तो ख़ुदा का नाम क्यों न असर करेगा। अल्लाह बहुत जानने वाला है।

बुरी नज़र लग जाने का इलाज

जिस किसी को नज़र लग जावे तो उसे चाहिए कि यह दुआ पढ़े:- بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ اَذْهِبْ حَرَّهَا وَبَرْدَهَا وَوَصَبَهَا

और अगर जानवरों में से किसी को नज़र लग जावे तो इस दुआ को चार चार पढ़ कर उसके दाहने नथुने में और तीन चार बाएँ नथुने में फूंक दे और उसके बाद इस दुआ को पढ़े:-

لَا بَأْسَ اَذْهِبِ الْبَأْسَ رَبَّ النَّاسِ اِشْفِ لَنَا اَنْتَ الشَّافِيْ لَا يَكْشِفُ الضُّرَّ اِلَّا اَنْتَ

आयाते शिफ़ा

''अल्हम्दु शरीफ़'' तीन बार पढ़ कर इन आयाते शरीफा को पढ़े और बीमार शख़्स पर दम करे, पानी पर दम करके पिलाना बहुत मुफ़ीद है, अल्लाह ने चाहा तो बीमार अच्छा होगा।

وَيَشْفِ صُدُوْرَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ ۙ وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوْبِهِمْ ؕ

(तौबह, 14 - 15)

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ لِّمَا فِى الصُّدُوْرِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ○

(यूनुस, 57)

يَخْرُجُ مِنْ بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِيْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ؕ

(नहल, 69)

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ وَلَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا ○

(बनी इस्राईल 82)

الَّذِىْ خَلَقَنِىْ فَهُوَ يَهْدِيْنِ ۙ○ وَالَّذِىْ هُوَ يُطْعِمُنِىْ وَيَسْقِيْنِ ۙ○ وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ○

(शुअरा, 78 - 80)

قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّشِفَآءٌ ؕ

(हामीम सज्दह, 44)

اَللّٰهُمَّ اشْفِ اَنْتَ الشَّافِىْ لَا شِفَآءَ اِلَّا شِفَآؤُكَ شِفَآءً لَّا يُغَادِرُ سَقَمًا ۔

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِى الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا ۙ وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍۭ بِاَمْرِهٖ ؕ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ ؕ تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ۝

(अअ़राफ़, 54 - 55)

यहाँ पर दुआ मांगे

وَلَا تُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا

وَطَمَعًا ۭ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ (अअ़राफ़, 56)

مُعْتَدِيْنَ के बाद कोई भी दुआ मांगे। उसके बाद पूरी आयत पढ़े।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْۤـًٔا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ اِنَّا كَذٰلِكَ
نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ۝

(मुरसलात, 43 - 44)

जिस शख़्स का हाज़मा कमज़ोर हो तो इसको पढ़ कर पेट पर हाथ फ़िराने से या खाने पर दम करके खाने से वह तक्लीफ़ दूर हो जाती है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِنَّ اللّٰهَ سَيُبْطِلُهٗ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝
وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ۝

(यूनुस, 81 - 82)

इस दुआ को तीन बार पढ़े और सूरए फ़ातिहा पढ़ कर दम करके पिलाने से जादू और जिन्न व भूत का असर दूर हो जाता है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَاَلْقِ مَا فِيْ يَمِيْنِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوْا ۭ اِنَّمَا
صَنَعُوْا كَيْدُ سٰحِرٍ ۭ وَلَا يُفْلِحُ السّٰحِرُ حَيْثُ اَتٰى ۝

(ताहा, 69)

अगर कोई ऐसा बीमार हो कि बेहोश हो जाता हो तो पानी का चुल्लू भर कर इस आयत को पढ़ कर दम करके मुँह पर मारने से अच्छा हो जाएगा और जादू और जिन्नात का असर दूर हो जाएगा।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَقُلْ رَّبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ ۝ وَاَعُوْذُ
بِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ ۝

(मुअ्मिनून, 97 - 98)

कुरआन मजीद शुरू करने से पहले अऊज़ु और बिस्मिल्लाह के बाद इस आयत को पढ़ने से हर तरह के शैतानी वस्वसे दूर हो जाते हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا

مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝

(ज़ुमर, 53)

ऊपर की आयाते इस्तिग़फ़ार पढ़ने से पहले पढ़े तो अल्लाह तआला उनकी तौबा क़बूल करता है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰىهَا ؕ اِنَّ رَبِّیْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ

(हूद, 41)

कोई भी नया काम शुरू करना हो तो इस आयत को पढ़ कर शुरू करे :-

وَقُلْ رَّبِّ اَنْزِلْنِیْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ۝

(मुअ्मिनून, 29)

कोई भी सफ़र में या सवारी पर बैठे-बैठे इस आयत को पढ़े तो निहायत अमन व अमान और हिफ़ाज़त के साथ अपने मक़ाम पर पहुंच जावे।

ज़चगी के वक़्त पढ़ने की दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ ۝ وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۝ وَاِذَا الْاَرْضُ مُدَّتْ ۝ وَاَلْقَتْ مَا فِيْهَا وَتَخَلَّتْ ۝ وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۝

(इन्शिक़ाक़, 1-5)

ज़चगी के वक़्त जब किसी औरत के बच्चा अड़ गया हो या ज़चगी में बहुत ज़्यादा तक्लीफ़ हो रही हो तो यह सूरत पढ़ने और तीन बार पानी पर दम करके पिलाने से आराम होजाता है।

अय्यामे बीज़ की दुआ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ طِبِّ الْقُلُوْبِ وَدَوَآئِهَا وَعَافِيَةِ الْاَبْدَانِ وَشِفَآئِهَا وَنُوْرِ الْاَبْصَارِ وَضِيَآئِهَا وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ ؕ

इल्म में बढ़ोतरी की दुआ

(ताहा, 114) رَبِّ زِدْنِیْ عِلْمًا ۝

इसके पढ़ने से अल्लाह तआला इल्म में इज़ाफ़ा अता करता है।

ज़बान की लुक्नत की दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

رَبِّ اشْرَحْ لِيْ صَدْرِيْ ۙ وَيَسِّرْ لِيْٓ اَمْرِيْ ۙ وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِيْ ۙ يَفْقَهُوْا قَوْلِيْ ۠

(ताहा, 25-28)

अगर ज़बान में लुक्नत हो तो इसको पढ़े। इसके पढ़ने से सीना भी कुशादा हो जाता है।

निफ़ाक़, रिया वग़ैरा से बचने की दुआ

اَللّٰهُمَّ طَهِّرْ قَلْبِيْ مِنَ النِّفَاقِ وَعَمَلِيْ مِنَ الرِّيَاءِ وَلِسَانِيْ مِنَ الْكَذِبِ وَعَيْنِيْ مِنَ الْخِيَانَةِ فَاِنَّكَ تَعْلَمُ خَآئِنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُوْرُ ○

औलाद के मांगने की दुआ

رَبِّ لَا تَذَرْنِيْ فَرْدًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ۚ

(अम्बिया, 89)

मंडी या बाज़ार में दाख़िल होने की दुआ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَ يُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ اَبَدًا اَبَدًا ۙ ذُو الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ ۙ بِيَدِهِ الْخَيْرُ ۙ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

बैतुल् ख़ला में जाते वक़्त कहे

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَآئِثِ ط

बैतुल् ख़ला से निकलते वक़्त कहे

غُفْرَانَكَ

(बक़रह, 285)

क़ौमी क़ुव्वत के लिए दुआ

رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ۝

(फ़ुरक़ान, 74)

गुनाहों की बख़्शिश और आमालनामे को भारी करने के लिए

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ ط

नफ़्स की पाकी के लिए

اَللّٰهُمَّ اٰتِ نَفْسِىْ تَقْوٰهَا وَ زَكِّهَا اَنْتَ خَيْرُ
مَنْ زَكّٰهَا وَاَنْتَ وَلِيُّهَا وَمَوْلٰهَا

घर से सफ़र के लिए निकलते वक़्त कहे

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ وَتَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ وَلَا حَوْلَ
وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ط

सवारी पर सवार होने की दुआ

चाहे कोई भी सवारी हो, सवार होते वक़्त بِسْمِ اللّٰهِ कहे।
जब पूरी तरह सवार हो कर बैठ जाए तो यह दुआ पढ़े :-

سُبْحٰنَ الَّذِىْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ وَاِنَّآ
اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ

(ज़ुख़रुफ़, 13 - 14)

क़ब्रिस्तान में दाख़िल होने की दुआ

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَآ اَهْلَ الْقُبُوْرِ يَغْفِرُ اللّٰهُ
لَنَا وَلَكُمْ اَنْتُمْ سَلَفُنَا وَنَحْنُ بِالْاَثَرِ ط

सख़्त मुसीबत से पनाह मांगने की दुआ

لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّىْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ

(अम्बिया, 87)

फ़िक्र व ग़म में हो तो यह दुआ पढ़े

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سُبْحَانَ الْاَبَدِيِّ الْاَبَدِ سُبْحَانَ الْوَاحِدِ الْاَحَدِ سُبْحَانَ الْفَرْدِ الصَّمَدِ

سُبْحَانَ رَافِعِ السَّمَآءِ بِغَيْرِ عَمَدٍ

سُبْحَانَ مَنْ بَسَطَ الْاَرْضَ عَلٰى مَآءٍ جَمَدٍ

سُبْحَانَ مَنْ خَلَقَ الْخَلْقَ فَاَحْصَاهُمْ عَدَدًا

سُبْحَانَ مَنْ قَسَمَ الرِّزْقَ وَلَمْ يَنْسَ اَحَدًا

سُبْحَانَ الَّذِىْ لَمْ يَتَّخِذْ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا

سُبْحَانَ الَّذِىْ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ

وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ

सय्यिदुल् इस्तिग़फ़ार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ

ऐ अल्लाह तू मेरा रब है तेरे सिवा कोई माबूद नहीं तू ने मुझे

خَلَقْتَنِیْ وَاَنَا عَبْدُكَ وَاَنَا عَلٰی عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ

पैदा किया और मैं तेरा बन्दा हूँ और मैं तेरे अहद और वादे पर

مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ

क़ायम हूँ, अपनी ताक़त के मुताबिक़, पनाह मांगता हूं तुझसे अपने

اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَیَّ وَاَبُوْءُ بِذَنْبِیْ

बुरे कामों से और तेरी नेमतों का इक़रार करता हूँ, अपने गुनाहों

فَاغْفِرْ لِیْ ذُنُوْبِیْ فَاِنَّهٗ لَا یَغْفِرُ

का इक़रार करता हूँ तू मुझे बख़्श दे गुनाह मेरे, क्योंकि तेरे

الذُّنُوْبَ اِلَّآ اَنْتَ ○

अलावा कोई गुनाह नहीं बख़्शता।

दुआए अमन

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू साथ नाम अल्लाह बख़्शने वाले मेहरबान के

اَللّٰهُمَّ فَرِّجْنَا بِدُخُوْلِ الْقَبْرِ

ऐ अल्लाह! हमारे क़ब्र में दाख़िल होने के वक़्त क़ब्र को कुशादा

وَاخْتِمْ لَنَا بِالْخَيْرِ وَالظَّفَرِ

कर, और हमारा ख़ातिमा भलाई और कामयाबी के साथ कर और

وَاغْفِرْ لَنَا وَلِوَالِدَيْنَا وَلِجَمِيْعِ الْمُؤْمِنِيْنَ

बख़्श दे हमको और हमारे मां-बाप को और तमाम मोमिन मर्दों

وَالْمُؤْمِنٰتِ بِرَحْمَتِكَ يَآ اَرْحَمَ

और मोमिन औरतों को अपनी रहमत से, ऐ सबसे बढ़के रहम

الرّٰحِمِيْنَ ○ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰی مُحَمَّدٍ

करने वाले, और दुरूद भेजे अल्लाह मुहम्मद (सल्ल०) पर और

وَّاٰلِهٖ اَجْمَعِيْنَ ○

उनकी पूरी आल-औलाद पर।

अ़मले मुजर्रब व अक्सीर

اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ

(नमल, 62)

तर्जुमा : भला कौन पहुँचता है बेकस की पुकार को जब उसको (अल्लाह को) पुकारता है और दूर करदेता है सख़्ती ।

हर दिन इशा की नमाज़ के बाद पाँच सौ बार पढ़ें चालीस दिन तक यही अमल करें अल्लाह ने चाहा तो हर जाइज़ मुराद पूरी होगी ।

वज़ीफ़े (अमल) के शुरू और आख़िर में ग्यारह ग्यारह बार दुरूद शरीफ़ पढ़ें ।

शश् (6) कलिमे

पहला कलिमा तय्यिब

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं,

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के रसूल हैं।

दूसरा कलिमा शहादत

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा

اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ

कोई माबूद नहीं, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, और मैं

وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ○

गवाही देता हूँ कि बेशक मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं

तीसरा कलिमा तम्जीद

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ

अल्लाह पाक है और सब तारीफ अल्लाह ही के लिए है।

وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ

और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और अल्लाह बहुत बड़ा है।

وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

गुनाहों से बचने की ताक़त और नेकी करने की तौफ़ीक़ सिर्फ़ अल्लाह की

الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ○

की तरफ़ से है जो बहुत बुलन्द और अज़मत वाला है।

चौथा कलिमा तहमीद

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं,

وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ

वह अकेला है उस का कोई साझी नहीं उसी के लिए बादशाही है और

وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ

उसीके लिए तारीफ़ है वही जिन्दा करता है और वही मारता है और वह

حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ اَبَدًا اَبَدًا ذُو الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

ज़िन्दा है, उसे कभी मौत न आएगी, बड़े जलाल और बुज़ुर्गी वाला है,

بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ○

उसके हाथ में भलाई है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।

पांचवाँ कलिमा इस्तिग़फ़ार

أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ

मैं अल्लाह से माफ़ी मांगता हूँ,

رَبِّيْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ اَذْنَبْتُهٗ عَمَدًا اَوْ خَطَاً

जो मेरा परवरदिगार है, हर एक गुनाह से जो मैंने जान बूझ कर या भूल

سِرًّا اَوْ عَلَانِيَةً وَّاَتُوْبُ اِلَيْهِ

कर या छुप कर किया या खुल कर किया और मैं उस की बारगाह में

مِنَ الذَّنْبِ الَّذِيْ اَعْلَمُ وَمِنَ الذَّنْبِ الَّذِيْ

तौबा करता हूँ उस गुनाह से जिसको मैं जनता हूँ और उस गुनाह से भी

لَا اَعْلَمُ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ

जिस को मैं नहीं जानता (ऐ अल्लाह) बेशक तू ग़ैबों का जाननेवाला और

وَسَتَّارُ الْعُيُوْبِ وَغَفَّارُ الذُّنُوْبِ وَلَا

ऐबों का छुपाने वाला और गुनाहों का बख़्शने वाला है और गुनाह से

حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

बचने की ताक़त और नेकी करने की क़ुव्वत नहीं मगर अल्लाह की

الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ○

तौफ़ीक़ से जो बहुत बुलंद और अज़मत वाला है।

छठा कलिमा रद्दे कुफ़्र

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ

ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह मांगता हूँ

مِنْ اَنْ اُشْرِكَ بِكَ شَيْئًا وَّاَنَا اَعْلَمُ بِهٖ

इस बात से कि मैं किसी को तेरा साझी बनाऊँ जान बूझ कर

وَاَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا اَعْلَمُ بِهٖ

और बख़्शिश मांगता हूँ तुझसे उस (शिर्क) की जिसको मैं नहीं जानता

تُبْتُ عَنْهُ وَتَبَرَّاْتُ مِنَ الْكُفْرِ وَالشِّرْكِ وَالْكِذْبِ

और मैंने उससे तौबा की और कुफ़्र से और शिर्क से और झूठ से

وَالْغِيْبَةِ وَالْبِدْعَةِ وَالنَّمِيْمَةِ وَالْفَوَاحِشِ

और ग़ीबत से और बिद्अत से और चुग़ली से और बे हयाइय्यों से

وَالْبُهْتَانِ وَالْمَعَاصِيْ كُلِّهَا وَاَسْلَمْتُ

और बुहतान से और तमाम गुनाहों से और मैं इसलाम लाया

وَاَقُوْلُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

और मैं कहता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के रसूल हैं।

वुज़ू का बयान

يَاأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ اِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ اِلَى الْكَعْبَيْنِ

(माइदह, 6)

तर्जुमा : ऐ ईमान वालो! जब तुम नमाज़ के लिए उठो तो अपने मुँह को धोओ और अपने हाथों को भी कुहनियों तक और अपने सरों का मसह करो और पाँव धोओ टख़्नों तक।

नोट : वुज़ू नमाज़ के लिए ज़रूरी है, बिना वुज़ू के नमाज़ नहीं होती।

वुज़ू का तरीक़ा

पहले पाकी हासिल करने और सवाब पाने की नियत करे और बिस्मिल्लाह पढ़ कर तीन बार दोनों हाथों को पहुँचों तक धोए, फिर तीन बार कुल्ली करे और मिस्वाक करे, फिर तीन बार नाक में पानी चढ़ाए और बाएं हाथ से नाक साफ़ करे, फिर तीन बार मुँह धोए कि पेशानी के बालों से लेकर ठोढ़ी के नीचे तक और दोनों कानों की लौ तक कोई जगह सूखी न रहे। अगर दाढ़ी हो तो ख़िलाल करे, फिर तीन बार दोनों हाथ कुहनियों तक, पहले दायाँ फिर बायाँ धोए, फिर नए पनी से दोनों हाथ तर करके पूरे सर का मसह करे, इस तरह कि पेशानी के बालों से दोनों हाथों की तीन उंगलियाँ फेरता हुआ गुद्दी तक ले जाए और फिर गुद्दी से हथेलियाँ फेरता हुआ वापस लाए, फिर शहादत की उंगली से कान के अन्दरूनी हिस्से और अंगूठे के पेट से कान के बाहरी हिस्से और उंगलियों की पुशत से गर्दन का मसह करे, फिर

तीन बार दोनों पावँ, पहले दायाँ फिर बायाँ, टख़्नों तक बाएँ हाथ से धोए और उंगलियों का ख़िलाल करे। यह तरीक़ा जो बयान हुआ इसमें कुछ वुज़ू के फ़राइज़, कुछ सुन्नतें और कुछ मुस्तहब्बात हैं।

अज़ान का बयान

وَاِذَا نَادَيْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ

(माइदह, 58)

तर्जुमा. और जब तुम नमाज़ के लिए अज़ान दो।

पांचों वक़्तों की नमाज़े फ़र्ज़ के लिए, जिस में जुमा भी है अज़ान सुन्नते मुअक्कदा है।

अज़ान वक़्त पर कहनी चाहिए, अगर वक़्त से पहले अज़ान कह दी तो दोबारा कही जाए। फ़र्ज़े ऐन के अलावा किसी और नमाज़ के लिए अज़ान नहीं है। औरतों को अज़ान कहना मकरूह तहरीमी है। बे वुज़ू की अज़ान हो जाएगी मगर मकरूह होगी, इस लिए बेहतर यह है कि वुज़ू करके अज़ान दी जाए, ऊंची जगह, क़िब्ला की तरफ़ खड़े होकर, कानों में उंगलियाँ डाल कर अज़ान इस तरह कहनी चाहिए :-

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ कहते वक्त दाहनी तरफ़ मुँह करना और حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ कहते वक्त बाईं तरफ़ करना चाहिए। अगर फ़जर की अज़ान हो तो حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ के बाद दो बार اَلصَّلٰوةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْمِ कहना सुन्नत है।

इक़ामत

अज़ान के बाद जमाअ़त खड़ी होने के वक़्त जो तक्बीर या इक़ामत कही जाती है, उसके अल्फ़ाज़ अज़ान जैसे ही हैं, हां कुछ बातों में फ़र्क है (1) حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ के बाद दो बार قَدْ قَامَتِ الصَّلٰوةُ कहे (2) अज़ान के मुक़ाबले में आवाज़ धीमी हो (3) इस के कलिमात जल्दी-जल्दी कहे जाएं (4) कानों में उंगलियां न डाली जाएं।

अज़ान व इक़ामत का जवाब देना

अज़ान और इक़ामत दोनों का जवाब देना मुस्तहब है। जवाब देने का मतलब यह है कि सुनने वाला भी वही कलिमात कहता जाए और اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ कहते वक्त अंगूठों को चूम कर आँखों से लगाए और पहली बार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ और दूसरी बार قُرَّةُ عَيْنِيْ بِكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ مَتِّعْنِيْ بِالسَّمْعِ وَالْبَصَرِ कहे, जो ऐसा करता रहेगा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसकी शिफ़ाअ़त फ़रमाएंगे और उसकी आँखों की रौशनी कभी न जाएगी, और حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ और حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ के जवाब में لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ कहे, और फ़जर की अज़ान में اَلصَّلٰوةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْمِ के जवाब में صَدَقْتَ وَبَرَرْتَ कहे और इक़ामत में قَدْ قَامَتِ الصَّلٰوةُ के जवाब में اَقَامَهَا اللّٰهُ وَاَدَامَهَا कहे।

अज़ान की दुआ :अज़ान के बाद अज़ान देने वाला और सुनने वाले दुरूद शरीफ़ पढ़ कर यह दुआ पढ़ें :

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلٰوةِ الْقَائِمَةِ
اٰتِ سَيِّدَنَا مُحَمَّدَ نِالْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ وَالدَّرَجَةَ
الرَّفِيْعَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَ نِالَّذِيْ وَعَدْتَّهٗ
وَارْزُقْنَا شَفَاعَتَهٗ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ؕ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ
الْمِيْعَادَ ○ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ ○

नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा

ज़रूरी है कि नमाज़ी का बदन, कपड़े और नमाज़ की जगह पाक हो और नमाज़ का वक्त हो गया हो। फिर बा वुज़ू होकर क़िब्ला की तरफ़ मुंह करके दोनों पावँ के बीच चार-पाँच उंगल की दूरी करके खड़ा हो और जो नमाज़ पढ़नी हो उसकी दिल में नियत करे और ज़बान से कहना मुस्तहब है, जैसे कि: नियत की मैंने आज की नमाज़े ज़ुहर, चार रकअ़त नमाज़ फ़र्ज़ या सुन्नत की, अल्लाह के लिए, मुंह मेरा काबा शरीफ़ की तरफ़। अगर इमाम के पीछे हो तो कहे पीछे इस इमाम के और दोनों हाथ अपने कानों तक ले जाए, इस तरह कि हथेलियां क़िब्ला की तरफ़ हों और उंगलियाँ न खुली हुई हों और न मिली हुई, बल्कि अपनी हालत पर हों। अल्लाहु अक्बर कहता हुआ हाथ नीचे लाए और नाफ़ के नीचे बांध ले, इस तरह कि दाहनी हथेली बाईं कलाई के सिरे पर हो और बीच की तीन उंगलियां बाईं कलाई के ऊपर, और अंगूठा और छुंगलियाँ कलाई के इधर उधर हो और निगाह सजदे की जगह पर रहे, और सना पढ़े।

सना

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ
وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ

तअव्वुज़

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

तस्मिया

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

सूरए फ़ातिहा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○ مٰلِكِ يَوْمِ
الدِّيْنِ ○ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ○ اِهْدِنَا
الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ○ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ
غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ○

इसके बाद इमाम व मुक़तदी चुपके से आमीन कहें।

सूरए इख़्लास:

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ○ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ○ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ ○
وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ○

फिर अल्लाहु अकबर कहते हुए रुकूअ में जाए और घुटनों को हाथ की उंगलियों से मज़बूत पकड़ ले और इतना झुके कि सर और

कमर बराबर हो जाए और कम से कम तीन बार कहे।

तस्बीहे रुकू: سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ

तस्मीअ़: سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ

क़ौमा: फिर दोनों हाथ छोड़ कर सीधा खड़ा हो जाए और मुक़तदी तहमीद कहे।

तहमीद: رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ

अकेले नमाज़ पढ़ने वाला, तस्मीअ और तहमीद दोनों कहे, फिर अल्लाहु अकबर कहता हुआ सजदे में जाए, इस तरह कि पहले घुटने फिर दोनों हाथ ज़मीन पर रखे फिर नाक और पेशानी ख़ूब जमाए और चेहरा दोनों हाथों के बीच रखे और मर्द बाज़ुओं को करवटों से और पेट को रानों से और रानों को पिंडलियों से अलग रखे और कुहनियां ज़मीन से उठी हुई हों और दोनों पावँ की उंगलियों के पेट क़िब्ला की तरफ़ ज़मीन पर जमे हुए हों और कम से कम तीन बार पढ़े।

सजदे की तस्बीह: سُبْحَانَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى

जल्सा: फिर अल्लाहु अकबर कहता हुआ सजदे से इस तरह उठे कि पहले पेशानी फिर हाथ उठें और बायां क़दम बिछा कर उस पर बैठे और दाहिना क़दम खड़ा करके रखे कि उस की उंगलियां क़िब्ला की तरफ़ हों और हाथ रानों पर घुटनों के क़रीब रखे कि उन की उंगलियां भी क़िब्ला की तरफ़ हों फिर अल्लाहु अकबर कहता हुआ दूसरा सजदा इसी तरह करे और फिर अल्लाहु अकबर कहता हुआ खड़ा हो जाए।

क़ियाम: तस्मिया, फ़ातिहा और कोई सूरत पढ़ कर उसी तरह रुकूअ़ व सुजूद करे, लेकिन इमाम के पीछे मुक़्तदी बिस्मिल्लाह, फ़ातिहा और सूरत नहीं पढ़ेगा, वह ख़ामोश खड़ा रहेगा।

क़ादा: दूसरी रकअ़त में दोनों सजदों से फ़ारिग़ होकर उसी तरह बैठ जाए, जिस तरह दो सजदों के बीच बैठा था।

तशह्हुद:

التحيات لله والصلوت والطيبت السلام عليك ايها النبي ورحمة الله وبركاته السلام علينا وعلى عباد الله الصلحين ○ اشهد ان لا اله الا الله واشهد ان محمدا عبده ورسوله

जब तशह्हुद में कलिमा "ला" पर पहुँचे तो दाहिने हाथ की बीच की उंगली और अंगूठे का हल्क़ा बनाए और छुंगलिया और उस के पास वाली को हथेली से मिला दे और लफ़्ज़ "ला" पर कलिमे की उंगली उठाए और "इल्ला" पर गिरा दे और सब उंगलियाँ फ़ौरन सीधी करदे। अगर दो रकअ़त वाली नमाज़ है तो फिर उस तशह्हुद के बाद दुरूद शरीफ़ और दुआ़ पढ़ कर सलाम फैर दे और अगर चार रकअ़त वाली नमाज़ है तो तशह्हुद के बाद अल्लाहु अक्बर कह कर खड़ा हो जाए और दोनों रकअ़तों में अगर फ़र्ज़ हों तो सिर्फ़ बिस्मिल्लाह और सूरए फ़ातिहा पढ़ कर ऊपर बताए हुए तरीक़े के मुताबिक़ रुकूअ़ व सुजूद करे और अगर सुन्नत व नफ़्ल हों तो बिस्मिल्लाह, सूरए फ़ातिहा और सूरत भी पढ़े, लेकिन अगर इमाम के पीछे है तो मुक़्तदी तस्मिया और फ़ातिहा नहीं पढ़ेगा, वह ख़ामोश खड़ा रहेगा, फिर चार रकअ़तें पूरी करके बैठ जाए और तशह्हुद, दुरूद शरीफ़ और दुआ़ पढ़े और सलाम फ़ेर दे।

दुरूद शरीफ़:

اللهم صل على محمد وعلى ال محمد كما صليت على ابرهيم وعلى ال ابرهيم انك حميد مجيد ○ اللهم بارك على محمد وعلى ال محمد كما باركت على ابراهيم وعلى ال ابرهيم انك حميد مجيد ○

दुआ़:

رب اجعلني مقيم الصلوة ومن ذريتي ربنا وتقبل دعاء ○ ربنا اغفر لي ولوالدي وللمؤمنين يوم يقوم الحساب ○

और चाहे رب اجعلني مقيم الصلوة की जगह यह दुआ़ पढ़ ले:

اللهم اني ظلمت نفسي ظلما كثيرا ولا يغفر الذنوب الا انت فاغفر لي مغفرة من عندك وارحمني انك انت الغفور الرحيم

फिर नमाज़ ख़त्म करने के लिए एक बार दाएँ फिर एक बार बाइं तरफ़ मुँह करके सलाम कहे।

सलाम: السلام عليكم ورحمة الله

दाहनी तरफ़ के सलाम में दाहिनी तरफ़ के फ़रिश्तों और नमाज़ियों की नियत करे कि मैं इनको सलाम कह रहा हूँ और बाएँ तरफ़ के सलाम में बाएँ तरफ़ के फ़रिश्तों और नमाज़ियों की नियत करे और जिस तरफ़ इमाम हो उस तरफ़ के सलाम में इमाम की नियत भी करे और इसी तरह इमाम भी, दोनों तरफ़ के सलामों में फ़रिश्तों और मुक़्तदियों की नियत करे और जब अकेले हो तो दोनों तरफ़ के फ़रिश्तों की नियत करे।

यह नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा मर्दों का है। औरतों के लिए कुछ बातों में फ़रक़ है, औरत तक्बीरे तहरीमा के वक़्त हाथ कँधों तक उठाएगी और कपड़े से बाहर न निकालेगी, क़याम में अपने हाथ सीने पर बांधेगी और हथेली पर हथेली रखेगी, रुकूअ में कम झुकेगी और घुटनों को झुकाएगी और हाथ घुटनों पर रखेगी, मगर उनको पकड़ेगी नहीं और उंगलियाँ खुली हुई न रखेगी, रुकूअ व सुजूद सिमट कर करेगी, सजदे में पेट रान से और रान पिंडली से मिलाएगी और हाथ ज़मीन पर बिछा देगी। अत्तहिय्यात में बैठते वक़्त दोनों पावँ दाहिनी तरफ़ या बाएँ तरफ़ निकाल कर सुरीन पर बैठेगी और उंगलियाँ मिला कर रखेगी, इसके अलावा सब कुछ उसी तरह करेगी।

नमाज़ के बाद की दुआएँ व अज़कार

فَاِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ

तर्जुमा : और जब तुम नमाज़ पढ़ लो तो अल्लाह का ज़िक्र करो। पहले हर नमाज़ के बाद तीन बार इस्तिग़्फ़ार करे:

इस्तिग़्फ़ार: اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّيْ مِنْ كُلِّ ذَنْۢبٍ وَّاَتُوْبُ اِلَيْهِ

इस के बाद जो दुआ चाहे पढ़े।

पहली दुआ:

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ وَاِلَيْكَ يَرْجِعُ السَّلَامُ حَيِّنَا رَبَّنَا بِالسَّلَامِ وَاَدْخِلْنَا دَارَ السَّلَامِ تَبَارَكْتَ رَبَّنَا وَتَعَالَيْتَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ ○

وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ ○ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ○

इस के पढ़ने से सब गुनाह बख़्शे जाते हैं।

दूसरा ज़िक्र:

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ○ اَللّٰهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا رَادَّ لِمَا قَضَيْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ

तीसरा ज़िक्र आयतल कुर्सी:

اَللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗ اِلَّا بِاِذْنِهٖ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖ اِلَّا بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَا يَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ○

औक़ाते मकरूहा

(1) सूरज निकलते वक़्त (2) ग़ुरूब होते वक़्त (3) इस्तिवा के वक़्त कोई नमाज़ नहीं पढ़नी चाहिए (इस्तिवा: दोपहर को जब सूरज बिल्कुल सर पर हो) (4) सुबहे सादिक़ से सूरज निकलने तक, अलावा दो सुन्नत नमाज़े फ़जर और नमाज़े असर के बाद सूरज ग़ुरूब होने तक कोई नफ़्ल नमाज़ नहीं पढ़नी चाहिए (5) इमाम के ख़ुतबए जुमा के लिए खड़े होने से लेकर फ़र्ज़े जुमा तक कोई नमाज़ नहीं पढ़नी चाहिए।

रक्अ़तों की तादाद

नमाज़ों के नाम	फ़र्ज़ से पहले की सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा	फ़र्ज़ से पहले की सुन्नते मुअक्कदा	फ़र्ज़	फ़र्ज़ के बाद की सुन्नते मुअक्कदा	नफ़ल	कुल रकअ़ते
फ़जर		2	2			4
ज़ुहर		4	4	2	2	12
अ़सर	4		4			8
मग़रिब			3	2	2	7
इशा	4		4	2 3 वित्र वाजिब	4 2 वित्रों से पहले 2 बाद	17

नमाज़े वित्र

नमाज़े वित्र वाजिब है अगर यह छूट जाए तो इस की क़ज़ा ज़रूरी है। इस का वक़्त इशा के फ़र्ज़ों के बाद से सुबहे सादिक़ तक है। बेहतर यह है कि रात के आख़िरी हिस्से में तहज्जुद के साथ पढ़ी जाए, लेकिन जिसको ख़ौफ़ हो कि उठ न सकेगा वह इशा की नमाज़ के साथ सोने से पहले पढ़ले। इसकी तीन रकअ़तें हैं, दो रकअ़त पढ़ कर क़अ़दा किया जाए और तशह्हुद पढ़ कर खड़ा हो जाए, तीसरी रकअ़त में तस्मिया, सूरए फ़ातिहा और सूरत पढ़ कर दोनों हाथ कानों तक उठाए और अल्लाहु अक्बर कहता हुआ बाँध ले और दुआ़ए क़ुनूत धीमी-धीमी आवाज़ से पढ़े कि यह वाजिब है।

दुआ़ए क़ुनूत

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ وَنَسْتَغْفِرُكَ وَ نُؤْمِنُ بِكَ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ وَنُثْنِىْ عَلَيْكَ الْخَيْرَ وَنَشْكُرُكَ وَلَا نَكْفُرُكَ وَ نَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ يَّفْجُرُكَ اَللّٰهُمَّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَلَكَ نُصَلِّىْ وَنَسْجُدُ وَاِلَيْكَ نَسْعٰى وَنَحْفِدُ وَنَرْجُوْا رَحْمَتَكَ وَنَخْشٰى عَذَابَكَ اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ ؕ

जो दुआ़ए क़ुनूत न पढ़ सके वह यह दुआ़ पढ़े :

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝

(बक़रह, 201)

अगर दुआ़ए क़ुनूत पढ़नी भूल गया और रुकूअ़ में चला गया तो वापस न लौटे बल्कि सजदा सहव करे।

जब चाँद देखे तो यह दुआ़ पढ़े

اَللّٰهُمَّ اَهِلَّهٗ عَلَيْنَا بِالْيُمْنِ وَالْاِيْمَانِ وَالسَّلَامَةِ وَالْاِسْلَامِ وَالتَّوْفِيْقِ لِمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى رَبِّىْ وَرَبُّكَ اللّٰهُ ۔

तर्जुमा ऐ अल्लाह इस चाँद को हम पर बरकत, ईमान, भलाई और सलामती वाला करदे और (हमें) तौफ़ीक़ दे उस अमल की जो तुझे पसंद हो और महबूब हो (ऐ चाँद) मेरा और तेरा रब अल्लाह है।

तरावीह की तस्बीह

سُبْحَانَ ذِی الْمُلْكِ وَالْمَلَكُوْتِ ط سُبْحَانَ ذِی
الْعِزَّةِ وَالْعَظَمَةِ وَالْهَيْبَةِ وَالْقُدْرَةِ وَالْكِبْرِيَاءِ
وَالْجَبَرُوْتِ ط سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْحَیِّ الَّذِیْ لَا يَنَامُ
وَلَا يَمُوْتُ ط سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَبُّنَا وَرَبُّ الْمَلٰٓئِكَةِ
وَالرُّوْحِ ط اَللّٰهُمَّ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ يَا مُجِيْرُ
يَا مُجِيْرُ ط

पाक है, वह ज़मीन की बादशाही और आसमानों की बादशाही वाला पाक है इज़्ज़त और बुज़ुर्गी वाला और हैबत वाला और कुदरत और बड़ाई वाला और दब्दबे वाला। पाक है बादशाहे हक़ीक़ी, जिन्दा, जो सोता नहीं और न मरेगा, बहुत ही पाक है और बहुत ही मुकद्दस हमारा परवरदिगार और फ़रिश्तों और रूह का परवरदिगार, इलाही! हमको दोज़ख़ से पनाह दे, ऐ पनाह देने वाले! ऐ पनाह देने वाले ! ऐ पनाह देने वाले !

नमाज़ क़ज़ाए हाजात

जिसको कोई हाजत और ज़रूरत पेश आए तो वह अच्छी तरह वुज़ू करे, फिर दो रकअत नमाज़ पढ़ कर अल्लाह तआला की हमद और तारीफ़ करे और नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर दुरूद भेजे, फिर यह दुआ पढ़े :

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ ط سُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ
الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ط وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ط
اَسْئَلُكَ مُوْجِبَاتِ رَحْمَتِكَ وَعَزَآئِمَ مَغْفِرَتِكَ
وَالْغَنِيْمَةَ مِنْ كُلِّ بِرٍّ وَّالسَّلَامَةَ مِنْ كُلِّ اِثْمٍ ط
لَا تَدَعْ لَنَا ذَنْبًا اِلَّا غَفَرْتَهٗ وَلَا هَمًّا اِلَّا فَرَّجْتَهٗ
وَلَا حَاجَةً هِیَ لَكَ رِضًا اِلَّا قَضَيْتَهَا يَآ اَرْحَمَ
الرّٰحِمِيْنَ ط

या यह पढ़े : اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَسْئَلُكَ وَاَتَوَجَّهُ اِلَيْكَ
بِنَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ نَّبِیِّ الرَّحْمَةِ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اِنِّیْ
قَدْ تَوَجَّهْتُ بِكَ اِلٰی رَبِّیْ فِیْ حَاجَتِیْ هٰذِهٖ
لِتُقْضٰی لِیَ اَللّٰهُمَّ فَشَفِّعْهُ فِیَّ ط

फ़ज़ाइले दुरूद शरीफ़

हज़रत अब्दुल वह्हाब शारानी (रह०) ने ''मीज़ान'' में बयान फ़रमाया है कि जो शख़्स इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ेगा, इतना सवाब पाएगा कि अगर एक हज़ार फ़रिश्ते 70 दिन तक या 70 फ़रिश्ते हज़ार दिन तक इसके सवाब को लिखें तो न लिख सकेंगे, वह यह है :

جَزَی اللّٰہُ عَنَّا سَیِّدَنَا مُحَمَّدًا صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ
وَسَلَّمَ بِمَا ھُوَ اَھْلُہٗ ط اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ
وَّعَلٰٓی اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِی الْاَوَّلِیْنَ وَالْاٰخِرِیْنَ وَفِی
الْمَلَاِ الْاَعْلٰٓی اِلٰی یَوْمِ الدِّیْنِ ط



दुआए इस्तिख़ारा

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْٓ اَسْتَخِیْرُکَ بِعِلْمِکَ وَاَسْتَقْدِرُکَ
بِقُدْرَتِکَ وَاَسْاَلُکَ مِنْ فَضْلِکَ الْعَظِیْمِ فَاِنَّکَ
تَقْدِرُ وَلَآ اَقْدِرُ وَتَعْلَمُ وَلَآ اَعْلَمُ وَاَنْتَ عَلَّامُ
الْغُیُوْبِ ط اَللّٰھُمَّ اِنْ کُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ ھٰذَا الْاَمْرَ
خَیْرٌ لِّیْ فِیْ دِیْنِیْ وَدُنْیَایَ وَعَاقِبَۃِ اَمْرِیْ فَقَدِّرْہُ
لِیْ وَیَسِّرْہُ ثُمَّ بَارِکْ لِیْ فِیْہِ وَاِنْ کُنْتَ تَعْلَمُ
اَنَّہٗ شَرٌّ فِیْ دِیْنِیْ اَوْ دُنْیَایَ اَوْ عَاقِبَۃِ اَمْرِیْ
فَاصْرِفْہُ عَنِّیْ وَصَرِّفْنِیْ عَنْہُ وَاقْدِرْ لِیَ الْخَیْرَ
حَیْثُ کَانَ ثُمَّ رَضِّنِیْ بِہٖ ط

सुबह, शाम पढ़ने की दुआ

اَعُوْذُ بِکَلِمَاتِ اللّٰہِ التَّآمَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ
رَضِیْتُ بِاللّٰہِ رَبًّا وَّبِالْاِسْلَامِ دِیْنًا وَّبِمُحَمَّدٍ نَّبِیًّا ط

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يَا اَللهُ يَا اَحَدُ يَا وَاحِدُ يَا مَوْجُوْدُ يَا جَوَّادُ يَا بَاسِطُ يَا كَرِيْمُ يَا وَهَّابُ
يَا ذَا الطَّوْلِ يَا غَنِيُّ يَا مُغْنِيُّ يَا فَتَّاحُ يَا رَزَّاقُ يَا عَلِيْمُ يَا حَكِيْمُ
يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ يَا رَحْمٰنُ يَا رَحِيْمُ يَا بَدِيْعَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ يَا حَنَّانُ يَا مَنَّانُ نَفِّحْنِيْ مِنْكَ بِنَفْحَةِ
خَيْرٍ تُغْنِيْنِيْ بِهَا عَمَّنْ سِوَاكَ اِنْ تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ جَآءَكُمُ
الْفَتْحُ اِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا نَصْرٌ مِّنَ اللهِ وَفَتْحٌ قَرِيْبٌ
اَللّٰهُمَّ يَا غَنِيُّ يَا حَمِيْدُ يَا مُبْدِئُ يَا مُعِيْدُ يَا وَدُوْدُ يَا ذَا الْعَرْشِ
الْمَجِيْدِ يَا فَعَّالًا لِّمَا يُرِيْدُ اِكْفِنِيْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِيْ
بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ وَاحْفَظْنِيْ بِمَا حَفِظْتَ بِهِ الذِّكْرَ وَانْصُرْنِيْ
بِمَا نَصَرْتَ بِهِ الرُّسُلَ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

जो शख़्स हर नमाज़ के बाद इस को बराबर पढ़े ख़ास कर जुमा की नमाज़ के बाद तो अल्लाह तआ़ला हर ख़ौफ़ की चीज़ से उसकी हिफ़ाज़त करेगा और उसके दुश्मनों पर उसकी मदद करेगा और उसको मालदार करदेगा और उसको ऐसी जगह से रोज़ी पहुँचाएगा जहाँ उसका ख़्याल भी न जाए और उसकी जिन्दगी उसपर आसान करदेगा और उसका क़र्ज़ा अदा करदेगा, अगर्चे पहाड़ के बराबर उसका क़र्ज़ा हो, अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल व करम से पूरा करेगा।

अस्नाद दुआए अय्यामे बीज़े मुकर्रम

हज़रत रसूल अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि जो शख़्स इस मुबारक दुआ़ को पढ़ेगा या अपने पास रखे, अल्लाह तआ़ला उस बन्दे को आफ़तों और बलाओं से मेहफ़ूज़ रखे, जो शख़्स इस दुआ़ को पढ़े या अपने पास रखे उसको बहुत करामतें हासिल हों।

अगर किसी की चोरी हो जाए, चार रकअ़त नमाज़ पढ़े और हर रकअ़त में अल्हमदु के बाद क़ुल्हुवल्लाह **10** बार पढ़े और जब नमाज़ से फ़ारिग़ हो, सर सजदे में रखे, अल्लाह तआ़ला खोई हुई चीज़ उसको मिला देवे, इस दुआ़ को जो पढ़े या अपने पास रखे, अगर पढ़ना न जानता हो तो सुने, दुश्मनों के शर और तमाम आफ़तों से मेहफ़ूज़ रहे और अगर कोई सच्चे यक़ीन और भरोसे के साथ पढ़ कर पहाड़ पर मारे तो अल्लाह तआ़ला के हुक्म से पहाड़ टूटे, इस लिए कि इस दुआ़ में अल्लाह तआ़ला के बुज़ुर्ग नाम हैं, अगर कोई न सिखावे, कंजूसी करे गुनहगार हो, हज़रत रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से रिवायत है कि जो शख़्स अच्छा रोज़गार चाहे तो इस दुआ़ को बराबर पढ़े, अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल से तंगी दूर होजाए और हज़रत ख़्वाजा

हसन बसरी (रह०) से रिवायत है कि जनाब रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कोई चीज़ इस दुआ़ से बेहतर नहीं, जो शख़्स सच्चे यक़ीन के साथ इस दुआ़ को पढ़े और पावँ ज़मीन पर रखे, तअ़ज्जुब नहीं कि ज़मीन उसके पावँ से हिले।

इस दुआ़ के पढ़ने वाले को कोई ग़म न हो, जो शख़्स इस दुआ़ को सुबह की नमाज़ के बाद तीन बार या एक बार पढ़े, अल्लाह तआ़ला उस बन्दे की उम्र बढ़ा दे और दुश्मनों पर फ़तह पावे, अगर कोई जेल में बन्द हो, यह दुआ़ पढ़े, अल्लाह तआ़ला उस बन्दे को जेल से छुड़ा दे।

❀

दुआए अय्यामे बीज़े मुकर्रम

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ بِاَسْمَآئِكَ الْحُسْنٰى بِحَقِّكَ يَآ اَللّٰهُ،
يَارَحْمٰنُ اَلرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى ○ يَارَحِيْمُ وَكَانَ
اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ○ يَامَالِكُ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ○ يَاقَهَّارُ
لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ○ يَاقُدُّوْسُ اَلْمَلِكُ
الْقُدُّوْسُ، يَاسَلَامُ اَلسَّلَامُ الْمُؤْمِنُ، يَامُهَيْمِنُ اَلْمُهَيْمِنُ
الْعَزِيْزُ، يَاجَبَّارُ اَلْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ، يَاعَزِيْزُ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ○
يَاخَالِقُ فَتَبَارَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخَالِقِيْنَ ○ يَابَارِئُ اَلْخَالِقُ
الْبَارِئُ، يَامُصَوِّرُ هُوَالَّذِیْ يُصَوِّرُكُمْ فِى الْاَرْحَامِ كَيْفَ يَشَآءُ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَالْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ○ يَا اَوَّلُ يَآ اٰخِرُ هُوَالْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ
يَاظَاهِرُ يَابَاطِنُ اَلظَّاهِرُ الْبَاطِنُ. يَاشَكُوْرُ اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرٌ
يَاغَفُوْرُ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ○ يَاوَدُوْدُ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الْوَدُوْدُ،

يَا قَاهِرُ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ ، يَا حَلِيْمُ وَاللّٰهُ شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ ○
يَا خَلَّاقُ هُوَ الْخَلَّاقُ الْعَلِيْمُ ○ يَا نُوْرُ اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ
يَا بَاسِطُ اِنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ ،
يَا قَآئِمُ قَآئِمًا بِالْقِسْطِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ○
يَا حَيُّ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ؕ يَا سَمِيْعُ فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ
وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ○ يَا بَصِيْرُ اِنَّ اللّٰهَ بَصِيْرٌ بِالْعِبَادِ ○ يَا عَلِيُّ
وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ○ يَا حَكِيْمُ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ○
يَا قَادِرُ قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰٓى اَنْ يَّبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا ، يَا رَحِيْمُ اِنَّ
رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ○ يَا لَطِيْفُ اِنَّ رَبِّيْ لَطِيْفٌ لِّمَا يَشَآءُ ،
يَا خَبِيْرُ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا خَبِيْرًا ○ يَا قَرِيْبُ اِنَّ رَبِّيْ قَرِيْبٌ
مُّجِيْبٌ ○ يَا بَاعِثُ اِنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ فِي الْقُبُوْرِ ○ يَا رَازِقُ
وَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ○ يَا وَارِثُ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ
يَا قَوِيُّ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ○ يَا شَهِيْدُ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
شَهِيْدٌ ○ يَا مُبْدِئُ اِنَّهٗ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيْدُ ○ يَا تَوَّابُ اِنَّ اللّٰهَ

تَوَّابٌ حَكِيْمٌ ○ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ ○ يَا وَهَّابُ اِنَّكَ اَنْتَ
الْوَهَّابُ ○ يَا جَمِيْلُ فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيْلًا ○ يَا وَكِيْلُ وَكَفٰى
بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ○ يَا كَافِيْ وَكَفَى اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ ؕ يَا وَلِيُّ
وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيْدُ ○ يَا رَبِّ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ○
يَا غَنِيُّ وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ وَاَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ ، يَا مُحْسِنُ وَاللّٰهُ يُحِبُّ
الْمُحْسِنِيْنَ ○ يَا قَدِيْرُ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ○ يَا مُفَضِّلُ
وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ○ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا
مُّسْتَقِيْمًا ؕ يَا مُعِزُّ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ ، يَا مُذِلُّ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ؕ
يَا رَفِيْعُ رَفِيْعُ الدَّرَجٰتِ ذُو الْعَرْشِ ، يَا شَفِيْعُ مَنْ ذَا الَّذِيْ
يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ يَا كَبِيْرُ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيًّا كَبِيْرًا ○
يَا حَقُّ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ؕ يَا بَرُّ اِنَّهٗ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيْمُ ○
يَا وِتْرُ وَالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ، يَا غَفَّارُ اِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا ○ يُّرْسِلِ السَّمَآءَ
يَا غَافِرُ وَاَنْتَ خَيْرُ الْغَافِرِيْنَ ○ يَا حَمِيْدُ تَنْزِيْلٌ مِّنْ حَكِيْمٍ
حَمِيْدٍ ○ يَا مَنَّانُ بَلِ اللّٰهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ اَنْ هَدٰىكُمْ لِلْاِيْمَانِ
يَا بَاقِيْ وَيَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ ○ يَا اَحَدُ قُلْ

هُوَاللّٰهُ اَحَدٌ ○ يَامَتِيْنُ اِنَّ اللّٰهَ هُوَالرَّزَّاقُ ذُوالْقُوَّةِ الْمَتِيْنُ○

يَاهَادِىْ اِنَّ اللّٰهَ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ، يَابَدِيْعَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عَالِمَ

الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ، يَافَتَّاحُ هُوَالْفَتَّاحُ الْعَلِيْمُ○ يَارَقِيْبُ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ

عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا○ يَامُحِيْطُ وَاللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ○ يَاقَاضِىْ

وَاللّٰهُ يَقْضِىْ بِالْحَقِّ. يَاصَمَدُ قُلْ هُوَاللّٰهُ اَحَدٌ○ اَللّٰهُ الصَّمَدُ○

يَاحَسِيْبُ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ حَسِيْبًا○ يَانَصِيْرُ نِعْمَ الْمَوْلٰى

وَنِعْمَ النَّصِيْرُ○ يَاوَاسِعُ وَكَانَ اللّٰهُ وَاسِعًا حَكِيْمًا○ يَامُتَعَالِ عَالِمُ

الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ○ يَامَنْ لَّمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ○ وَلَمْ

يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ○ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ

وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ ۔ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا ۔ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ

الرَّاحِمِيْنَ○ يَاوَلِىَّ الْاِسْلَامِ وَاَهْلِهٖ مَسِّكْنَا بِالْاِسْلَامِ وَثَبِّتْنَا عَلَى

الْاِيْمَانِ حَتّٰى نَلْقَاكَ بِهٖ وَاَنْتَ عَنَّا رَاضٍ غَيْرَ غَضْبَانَ يَا اَللّٰهُ يَا رَحْمٰنُ

يَارَحِيْمُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ سُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ السَّمٰوٰتِ

السَّبْعِ وَرَبِّ الْعَرْشِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ○ كَمَا هُوَ اَهْلُهٗ بَارِكْ لِىْ

فِى الْمَوْتِ وَفِيْمَا بَعْدَ الْمَوْتِ

पाँच आयाते शरीफ़ा के बयान में

कहा गया है कि इन में इस्मे-आज़म है और इन में से हर एक आयत में दस क़ाफ़ हैं और इसका एक अजीब क़िस्सा है। वह यह कि एक बादशाह का वज़ीर था, बादशाह को उससे बहुत दुश्मनी थी, यहां तक कि एक दिन बादशाह ने जल्लाद से कहा कि जिस वक़्त वज़ीर आए, मैं तुझे इशारा करूँ फ़ौरन उसकी गर्दन उड़ा देना, मगर तअज्जुब की बात है कि जिस वक़्त वज़ीर सामने आया, बादशाह की दुश्मनी मुहब्बत में बदल गई और जल्लाद को इशारा किया कि वापस चला जा, फिर कई दिन तक ऐसा ही होता रहा कि जब वज़ीर चला जाए तो बादशाह जल्लाद को क़त्ल का हुक्म दे और जब वह सामने आजाए तो बादशाह उससे मुहब्बत करे।

फिर एक दिन बादशाह कहीं जा रहा था और वज़ीर भी साथ था, बादशाह वज़ीर के क़रीब हुआ और उसके काँधे पर हाथ रख कर कहने लगा मैं तुझसे एक बात पूछता हूँ, ठीक-ठीक बताना, वज़ीर ने कहा आप फ़रमाएं मैं बिल्कुल ठीक-ठीक कहूँगा, बादशाह ने कहा कि मैं हर दिन तुझे मारने का इरादा करता हूँ, मगर जब तेरा चेहरा देखता हूँ तो सारा गुस्सा जाता रहता है बल्कि तेरी मुहब्बत मेरे दिल में आजाती है, तू बता कि इसका क्या सबब है और सच-सच कहदे क्योंकि मैं तुझे माफ़ कर चुका हूँ

वज़ीर ने कहा हुज़ूर बात यह है कि मेरे एक उस्ताद थे जिनसे मैंने क़ुरआन शरीफ़ पढ़ा था, उन्होंने मुझसे एक दिन कहा कि हम तुझे एक तोहफ़ा देते हैं इसको अच्छी तरह रखना और बराबर इसको पढ़ते रहना, हर एक दुश्मन से मेहफ़ूज़ रहेगा, और वे पाँच आयतें ये हैं, जिन में से हर एक में दस-दस क़ाफ़ है और जो शख़्स इस को सूरज निकलने और ग़ुरूब होने से पहले पढ़ता रहे, सब लोग उस पर मेहरबान रहें और बादशाह और हाकिम इस को पढ़े तो उसकी हुकूमत क़ायम रहे और रिआया और नौकरों पर दब्दबा बना रहे और कोई ज़रूरतमंद इनको पढ़े और ज़रूरत मांगे तो पूरी हो।

बादशाह ने जब वज़ीर से यह ज़िक्र सुना तो बहुत तारीफ़ की और ख़ुद भी यह आयतें सीखीं। वह पाँच आयतें यह हैं :

पहली आयत

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلَمْ تَرَ اِلَى الْمَلَاِ مِنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى ۘ اِذْ قَالُوْا لِنَبِيٍّ لَّهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ اَلَّا تُقَاتِلُوْا ؕ قَالُوْا وَمَا لَنَآ اَلَّا نُقَاتِلَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَدْ اُخْرِجْنَا مِنْ دِيَارِنَا وَاَبْنَآئِنَا ؕ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝

(बक़रह, 246)

दूसरी आयत

لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ فَقِيْرٌ وَّنَحْنُ اَغْنِيَآءُ ۘ سَنَكْتُبُ مَا قَالُوْا وَقَتْلَهُمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّنَقُوْلُ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝۱۸۱

(आले इमरान, 181)

तीसरी आयत

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ قِيْلَ لَهُمْ كُفُّوْٓا اَيْدِيَكُمْ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۚ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللّٰهِ اَوْ اَشَدَّ خَشْيَةً ۚ وَقَالُوْا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ عَلَيْنَا الْقِتَالَ ۚ لَوْلَآ اَخَّرْتَنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ؕ قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيْلٌ ۚ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقٰى ۫ وَلَا تُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ...

(अन निसा, 77)

चौथी आयत यह है

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ ابْنَيْ آدَمَ بِالْحَقِّ إِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ
مِنْ أَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْآخَرِ قَالَ لَأَقْتُلَنَّكَ
قَالَ إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللَّهُ مِنَ الْمُتَّقِينَ ۝

(अल माइदह, 27)

पांचवीं आयत यह है

قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ قُلِ اللَّهُ قُلْ أَفَاتَّخَذْتُمْ
مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ لَا يَمْلِكُونَ لِأَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَلَا ضَرًّا
قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ أَمْ هَلْ تَسْتَوِي
الظُّلُمٰتُ وَالنُّورُ أَمْ جَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ خَلَقُوا كَخَلْقِهِ فَتَشَابَهَ
الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ قُلِ اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ الْوَاحِدُ
الْقَهَّارُ ۝

(अर रअद, 16)

दुआ

यह दुआ इमाम मुहम्मद बिन इदरीस ख़्वारज़मी (रह०) की है।

इस दुआ से फ़रिश्ते कांपते हैं :

اَللّٰهُمَّ يَا وَدُودُ يَا ذَا الْعَرْشِ الْمَجِيدِ يَا مُبْدِئُ يَا مُعِيدُ
يَا فَعَّالٌ لِمَا يُرِيدُ يَا ذَا الْعِزَّةِ الَّتِي لَا تُرَامُ وَالْمُلْكِ الَّذِي
لَا يُضَامُ يَا مَنْ عَلَى نُورِهِ أَرْكَانُ عَرْشِهِ يَا مُغِيثُ أَغِثْنِي
يَا مُغِيثُ أَغِثْنِي يَا مُغِيثُ أَغِثْنِي إِنَّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

फ़रमाते हैं कि एक मज़लूम ने यह दुआ पढ़ी उसी वक़्त एक कड़क आवाज़ आसमान से आई और एक फ़रिश्ता हाथ में ब्रछा लिए हुए उतरा, उस डाकू को जो मज़्लूम को क़त्ल करना चाहता था, क़त्ल कर दिया और कहा ऐ ज़ैद जब तू ने पहली बार ख़ुदा से दुआ की तो मैं सातवें आसमान पर था, जिबरील ने आवाज़ दी कि इस मज़्लूम की मदद को कौन जाता है? मैंने कहा मैं जाता हूँ, फिर जब तू ने दुआ की तो मैं आसमाने दुनिया पर था, फिर जब तू ने तीसरी बार दुआ की तो मैं आ पहुँचा, जो इस दुआ को पढ़ेगा उसकी दुआ क़बूल होगी।

फिर जब ज़ैद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आप से वाक़िआ बयान किया तो आप ने फ़रमाया कि ख़ुदाए तआला ने तुझको अपना इस्मे-आज़म तल्क़ीन किया, जिसके साथ जो दुआ मांगी जाती है क़बूल होती है।

मस्नून दुआएँ

दुआ की क़बूलियत कब और कैसे ?

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया:- ''वह लमबे सफ़र में है, हाल-बेहाल, धूल में अटा हुआ, दोनों हाथ आसमान की तरफ़ फैला कर कहता है: ऐ रब! ऐ रब! मगर उसका खाना हराम है, उसका पीना हराम है, उसका लिबास हराम है, हराम गिज़ा से परवरिश पारहा है, भला ऐसे शख़्स की दुआ क्यों कर सुनी जाएगी।'' (मुस्लिम)

अल्लाह तआला ग़ाफ़िल और इख़्लास से ख़ाली दिल की दुआ क़बूल नहीं करता। (तिर्मिज़ी)

जो आदमी भी अल्लाह तआला से दुआ मांगता है, अल्लाह उसकी दुआ क़बूल करता है, या तो दुनिया में उसका असर ज़ाहिर कर देता है, या आखिरत के लिए उसका बदला मेह़फ़ूज़ कर देता है, या दुआ के बराबर उसके गुनाह दूर कर देता है, बशरते कि वह गुनाह की या क़ता रहमी (नातेदारी तोड़ने) की दुआ न करे या जल्दी न मचाए। (तिर्मिज़ी)

सुबह होने पर

اَللّٰهُمَّ بِكَ اَصْبَحْنَا وَبِكَ اَمْسَيْنَا وَبِكَ نَحْيَا
وَبِكَ نَمُوْتُ وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ط

शाम होने पर

اَللّٰهُمَّ بِكَ اَمْسَيْنَا وَبِكَ اَصْبَحْنَا وَبِكَ نَحْيَا
وَبِكَ نَمُوْتُ وَاِلَيْكَ النُّشُوْرُ ط

सोने के वक़्त

بِاسْمِكَ اللّٰهُمَّ اَمُوْتُ وَ اَحْيَا ط

ख़्वाब देखने पर

خَيْرًا تَلْقَاهُ وَشَرًّا تَوَقَّاهُ خَيْرًا لَّنَا وَشَرًّا عَلٰى
اَعْدَآئِنَا وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ط

सोकर उठने पर

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَحْيَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَيْهِ
النُّشُوْرُ ط

बैतुल-ख़ला में दाख़िल होते वक़्त

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْخُبُثِ
وَالْخَبَآئِثِ ط

बैतुल-ख़ला से बाहर आते वक़्त

غُفْرَانَكَ ط

वुज़ू करते वक़्त

اَتَوَضَّأُ بِسْمِ اللّٰهِ

वुज़ू करने के बाद

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ
لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ط
اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِيْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَاجْعَلْنِيْ مِنَ
الْمُتَطَهِّرِيْنَ ط

अज़ान सुनने के बाद

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّآمَّةِ وَالصَّلٰوةِ
الْقَآئِمَةِ اٰتِ سَيِّدَنَا مُحَمَّدَنِ الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ

وَالدَّرَجَةَ الرَّفِيْعَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَا
نِ الَّذِيْ وَعَدْتَّهٗ وَارْزُقْنَا شَفَاعَتَهٗ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ ط اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ط

शैतानी वस्वसों से बचने के लिए

رَبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ ۙ وَاَعُوْذُ بِكَ
رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ

(अल मुअ्मिनून, 97 - 98)

बीमार की ख़ैरियत मालूम करने पर

اَللّٰهُمَّ اَذْهِبِ الْبَاْسَ رَبَّ النَّاسِ وَاشْفِهٖ وَاَنْتَ
الشَّافِيْ لَا شِفَآءَ اِلَّا شِفَآؤُكَ شِفَآءً لَّا يُغَادِرُ سَقَمًا

बीमार की मौत पर

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَهٗ وَارْفَعْ دَرَجَتَهٗ فِى الْمَهْدِيِّيْنَ
وَاخْلُفْهُ فِىْ عَقِبِهٖ فِى الْغَابِرِيْنَ وَاغْفِرْ لَنَا وَلَهٗ
يَا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ وَافْتَحْ لَهٗ فِىْ قَبْرِهٖ وَنَوِّرْ لَهٗ فِيْهِ

नमाज़े जनाज़ा

नमाजे जनाज़ा में चार तक्बीरें اَللّٰهُ اَكْبَرُ कही जाती है,

पहली तक्बीर के बाद सना :-

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَ بِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ
اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَجَلَّ ثَنَاۤؤُكَ
وَلَاۤ اِلٰهَ غَيْرُكَ ط

दूसरी तक्बीर के बाद दुरूद:-

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰۤى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ
وَسَلَّمْتَ وَ بَارَكْتَ وَرَحِمْتَ وَ تَرَحَّمْتَ عَلٰۤى
اِبْرٰهِيْمَ وَعَلٰۤى اٰلِ اِبْرٰهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ط

तीसरी तक्बीर के बाद दुआ: अगर मय्यित बालिग़ मर्द या औरत है:-

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا
وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا وَصَغِيْرِنَا وَكَبِيْرِنَا وَذَكَرِنَا
وَاُنْثَانَا اَللّٰهُمَّ مَنْ اَحْيَيْتَهٗ مِنَّا فَاَحْيِهٖ عَلَى
الْاِسْلَامِ وَمَنْ تَوَفَّيْتَهٗ مِنَّا فَتَوَفَّهٗ عَلَى الْاِيْمَانِ ط

अगर मैयित नाबालिग़ लड़का हो तो यह दुआ पढ़े:-

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا اَجْرًا
وَّذُخْرًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا شَافِعًا وَّمُشَفَّعًا ط

अगर मय्यित नाबालिग़ लड़की हो तो اِجْعَلْهُ की जगह اِجْعَلْهَا और شَافِعًا وَّمُشَفَّعًا की जगह شَافِعَةً وَّمُشَفَّعَةً पढ़ना चाहिए और اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط कह कर सलाम फेर देना चाहिए।

मय्यित को क़ब्र में रखते वक़्त

بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ ط

क़ब्र पर मिट्टी डालते वक़्त

क़ब्र पर मिट्टी डालते वक़्त बेहतर यह है कि सिर्हाने की तरफ़ से शुरू किया जाए और हर शख़्स अपने दोनों हाथों में मिट्टी भर कर क़ब्र में डाल दे, पहली बार पढ़े مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ

(इसी ज़मीन से हम ने तुम को पैदा किया) दूसरी बार وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ (और इसी में तुमको लौटा कर लाएँगे) और तीसरी बार وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى (और इसी से क़ियामत के दिन तुमको दोबारा निकाल खड़ा करेंगे) पढ़े।

(ताहा- 55)

आम तौर पर क़ब्रिस्तान जाने पर

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الدِّيَارِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُسْلِمِيْنَ وَاِنَّا اِنْ شَآءَ اللّٰهُ بِكُمْ لَاحِقُوْنَ نَسْاَلُ اللّٰهَ لَنَا وَلَكُمُ الْعَافِيَةَ ط

मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِيْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ ط

मस्जिद से निकलते वक़्त

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ ط

घर से निकलने पर

بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ط

घर में दाख़िल होने पर

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ خَيْرَ الْمَوْلِجِ وَخَيْرَ الْمَخْرَجِ بِسْمِ اللّٰهِ وَلَجْنَا وَبِسْمِ اللّٰهِ خَرَجْنَا وَعَلَى اللّٰهِ رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا ط

सफ़र के लिए रवाना होने पर

اَسْتَوْدِعُكُمُ اللّٰهَ الَّذِيْ لَا تَضِيْعُ وَدَائِعُهٗ ط

सवारी पर सवार होने के वक़्त

سُبْحٰنَ الَّذِيْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ ۙ وَاِنَّا اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ ○

(ज़ुख़रुफ़, 13 -14)

सफ़र से वापसी पर

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ فِيْ سَفَرِنَا هٰذَا الْبِرَّ وَالتَّقْوٰى وَمِنَ الْعَمَلِ مَا تَرْضٰى اَللّٰهُمَّ هَوِّنْ عَلَيْنَا سَفَرَنَا هٰذَا وَاطْوِ عَنَّا بُعْدَهٗ اَنْتَ الصَّاحِبُ فِي السَّفَرِ وَالْخَلِيْفَةُ فِي الْاَهْلِ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ وَعْثَاءِ السَّفَرِ وَكَآبَةِ الْمُنْقَلَبِ وَسُوْءِ الْمَنْظَرِ

فِي الْمَالِ وَالْأَهْلِ آئِبُونَ تَائِبُونَ عَابِدُونَ
لِرَبِّنَا حَامِدُونَ ۝

किसी बस्ती में दाखिल होने पर

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهَا ۝ तीन बार पढ़ा जाये।

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنَا جَنَاهَا وَحَبِّبْنَا إِلَى أَهْلِهَا وَحَبِّبْ
صَالِحَ أَهْلِهَا إِلَيْنَا ۝ (तबरानी)

बादल आता देख कर

اَللّٰهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِيْهِ ۝

अगर वह बरसने लगता तो आप (सल्ल०) फरमाते:

اَللّٰهُمَّ صَيِّبًا نَّافِعًا ۝

बिजली के कड़कने पर

وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ خِيْفَتِهٖ ۝
(अर् रअ़द, 13)

आँधी के आने पर

اَللّٰهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَهَا وَخَيْرَ مَا فِيْهَا وَخَيْرَ
مَا أُرْسِلَتْ بِهٖ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا

فِيْهَا وَشَرِّ مَا أُرْسِلَتْ بِهٖ ۝ (मुस्लिम)

किसी क़ौम से ख़तरा होने पर

اَللّٰهُمَّ إِنَّا نَجْعَلُكَ فِي نُحُورِهِمْ وَنَعُوذُ بِكَ
مِنْ شُرُورِهِمْ ۝ (अबूदाऊद)

कोई मुसीबत आने पर

اَللّٰهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ عِبَادِكَ حَسْبُنَا
اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ ۝

क़र्ज़ की अदाइगी के लिए

اَللّٰهُمَّ اكْفِنِي بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَأَغْنِنِي
بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ اَللّٰهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ
الْهَمِّ وَالْحُزْنِ وَالْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَالْبُخْلِ
وَالْجُبْنِ وَضَلَعِ الدَّيْنِ وَغَلَبَةِ الرِّجَالِ

अच्छी चीज़ देखने पर

مَا شَاءَ اللّٰهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ ۝ (अल् कहफ, 39)

बुरी चीज़ देखने पर

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ حَالٍ ۝

निकाह का ख़ुत्बा

الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره و
نؤمن به ونتوكل عليه ونعوذ بالله من
شرور انفسنا ومن سيات اعمالنا من يهده
الله فلا مضل له ومن يضلله فلا هادى
له ونشهد ان لا اله الا الله وحده لا شريك
له ونشهد ان محمدا عبده ورسوله
ارسله بالحق بشيرا ونذيرا بين يدى الساعة
من يطع الله ورسوله فقد رشد ومن يعصهما
فلا يضر الا نفسه ولا يضر الله شيئا
يايها الذين امنوا اتقوا الله حق تقته ولا تموتن الا
وانتم مسلمون ﴿١٠٢﴾ يايها الناس اتقوا ربكم الذى خلقكم
من نفس واحدة وخلق منها زوجها وبث منهما رجالا
كثيرا ونساء واتقوا الله الذى تساءلون به والارحام
ان الله كان عليكم رقيبا ﴿١﴾ يايها الذين امنوا اتقوا الله

وقولوا قولا سديدا ﴿٧٠﴾ يصلح لكم اعمالكم ويغفر لكم
ذنوبكم ومن يطع الله ورسوله فقد فاز فوزا عظيما ﴿٧١﴾

शादी पर मुबारक बाद

بارك الله لكما وبارك عليكما وجمع بينكما
في خير

शादी पर शौहर की दुआ

اللهم انى اسئلك خيرها وخير ما جبلتها عليه
واعوذ بك من شرها وشر ما جبلتها عليه

ख़िल्वत पर

بسم الله اللهم جنبنا الشيطن وجنب الشيطن
ما رزقتنا

बच्चे की पैदाइश पर

आयतल्-कुर्सी और नीचे की दो आयात को पढ़ो और मुअव्वज़तैन (सूरए फ़लक़ और सूरए नास) से उनको दम करो:-

ان ربكم الله الذى خلق السموت والارض فى ستة
ايام ثم استوى على العرش يغشى اليل النهار
يطلبه حثيثا والشمس والقمر والنجوم مسخرت بامره
الا له الخلق والامر تبرك الله رب العلمين ﴿٥٤﴾ ادعوا

رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ

(अल अअ्राफ़, 54-55)

तोहफ़ा लेने और देने पर

तोहफ़ा लेने पर: بَارَكَ اللّٰهُ فِيْكُمْ तोहफ़ा देने पर: بَارَكَ اللّٰهُ فِيْهِمْ

नया कपड़ा पहनने पर

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ كَسَانِيْ هٰذَا وَرَزَقَنِيْهِ مِنْ غَيْرِ حَوْلٍ مِّنِّيْ وَلَا قُوَّةٍ ۔

परेशान हाल को देखने पर

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ عَافَانِيْ مِمَّا ابْتَلَاكَ اللّٰهُ بِهٖ وَفَضَّلَنِيْ عَلٰى كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقَ تَفْضِيْلًا ۝

बेचैनी और परेशानी होने पर

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ ۔ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝

मरने के वक़्त की दुआ

मरने के वक़्त मरने वाले का मुँह क़िब्ला की तरफ़ कर दिया जाए और वह यह दुआ मागे:-

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ وَارْحَمْنِيْ وَاَلْحِقْنِيْ بِالرَّفِيْقِ الْاَعْلٰى ۔

ऐ अल्लाह! मुझे बख़्श दे और मुझ पर रहम फ़रमा और मुझे नेक साथियों (नबियों और नेकों) के साथ मिला दे और यह कहे:-

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اِنَّ لِلْمَوْتِ سَكَرَاتٍ ۔

अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं है बेशक मौत की सख़्तियाँ (सच्ची) हैं और यह दुआ करता रहे:-

اَللّٰهُمَّ اَعِنِّيْ عَلٰى غَمَرَاتِ الْمَوْتِ وَسَكَرَاتِ الْمَوْتِ ۔

ऐ अल्लाह! तू मौत की सख़्तियों पर और जान निकलने (की तकलीफ़) पर मेरी मदद फ़रमा।

हदीस शरीफ़ में आया है कि:

अल्लाह तआला (फ़रिश्तों से) फ़रमाते हैं: मेरा मोमिन बन्दा मेरे नज़दीक हर भलाई व ख़ूबी (के ऊँचे दर्जे) का हक़दार है (इसलिए कि) मैं उसके दोनों पहलुओं के बीच से उसकी रूह क़ब्ज़ कर रहा हूँ और वह (इस जाँ-कुनी के वक़्त भी) मेरी तारीफ़ कर रहा है। (इसलिए जान निकलते वक़्त ऊपर बताई गई दुआएं पढ़ना और ख़ुदा की तारीफ़ करना बहुत बड़ी सआदत और नेकबख़्ती की बात है)

ताज़ियत करने वाले यह कहें

जब ताज़ियत के लिए जाए तो मरने वाले के घर वालों को सलाम करे और यह कहे:

اِنَّ لِلّٰهِ مَا اَخَذَ وَلِلّٰهِ مَا اَعْطٰى وَكُلٌّ عِنْدَهٗ بِاَجَلٍ مُّسَمًّى فَلْتَصْبِرْ وَلْتَحْتَسِبْ ۔

तर्जुमा: बेशक अल्लाह ही का था जो उसने ले लिया और अल्लाह ही का था जो उसने अता किया था और अल्लाह तआला के यहाँ हर एक की मौत का वक़्त मुक़र्रर है, पस तुम सब्र करो और सवाब हासिल करो ।

आँधी और तूफ़ान के वक़्त

जब आँधी आए तो उसकी तरफ़ मुँह करके दोज़ानूँ बैठ कर और घुटनों पर हाथ रख कर यह दुआ करे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ خَیْرَهَا وَخَیْرَ مَا فِیْهَا وَخَیْرَ مَا اُرْسِلَتْ بِهٖ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا فِیْهَا وَشَرِّ مَا اُرْسِلَتْ بِهٖ

तर्जुमा: ऐ अल्लाह! मैं तुझसे इस आँधी की ख़ैर व बरकत का, और जो कुछ इसमें है उसकी ख़ैर व बरकत का और जो यह अपने साथ लाई है उसकी ख़ैर व बरकत का सवाल करता हूँ, और इस आँधी की बुराई से और जो इस आँधी में है उसकी बुराई से और जो यह अपने साथ लाई है उसकी बुराई से तेरी पनाह लेता हूँ।

आग बुझाने की दुआ

कहीं आग लगी हुई देखे तो "اَللّٰهُ اَكْبَرُ" कहे और बुझाए
फ़ायदा: मुसन्निफ़(रह०) कहते हैं कि यह अमल "मुजर्रब" है

जले हुए के लिए दुआ

जले हुए शख़्स पर यह पढ़ कर दम करे:

اَذْهِبِ الْبَاْسَ رَبَّ النَّاسِ اِشْفِ اَنْتَ الشَّافِیْ لَا شَافِیَ اِلَّا اَنْتَ

तर्जुमा: दूर कर दे तकलीफ़ को ऐ लोगों के परवरदिगार, शिफ़ा दे दे, तू ही शिफ़ा देने वाला है, तेरे अलावा कोई शिफ़ा देने वाला नहीं।

बदशगूनी का कफ़्फ़ारा

किसी चीज़ से बदशगूनी न ले अगर ऐसा कर बैठे तो उसका कफ़्फ़ारा यह है कि यह कहे

اَللّٰهُمَّ لَا خَیْرَ اِلَّا خَیْرُكَ وَلَا طَیْرَ اِلَّا طَیْرُكَ وَلَا اِلٰهَ غَیْرُكَ

तर्जुमा: इलाही! तेरी ख़ैर व बरकत के सिवा कोई ख़ैर व बरकत नहीं और तेरे शगून के सिवा और कोई शगून नहीं और तेरे सिवा कोई माबूद नहीं।

पेशाब बन्द होजाने के लिए दुआ

जब पेशाब बन्द होजाए या पथरी हो तो यह दुआ पढ़े:

رَبُّنَا اللّٰهُ الَّذِیْ فِی السَّمَاءِ تَقَدَّسَ اسْمُكَ اَمْرُكَ فِی السَّمَاءِ
وَالْاَرْضِ كَمَا رَحْمَتُكَ فِی السَّمَاءِ فَاجْعَلْ رَحْمَتَكَ
فِی الْاَرْضِ وَاغْفِرْ لَنَا حُوْبَنَا وَخَطَایَانَا اَنْتَ رَبُّ الطَّیِّبِیْنَ
فَاَنْزِلْ شِفَاءً مِّنْ شِفَائِكَ وَرَحْمَةً مِّنْ رَحْمَتِكَ عَلٰی هٰذَا الْوَجَعِ

तर्जुमा: हमारा रब अल्लाह है जो आसमान में है, (ऐ हमारे

रब) तेरा नाम पाक है, तेरा हुक्म आसमान और ज़मीन में (बरक़रार) है, तेरी रहमत जैसे आसमान में है ऐसे ज़मीन में भी आम करदे, हमारे गुनाह और ग़लतियाँ माफ़ करदे, तू पाक लोगों का परवरदिगार है पस तू अपने (ख़ज़ानए) शिफ़ा से शिफ़ा और (ख़ज़ानए) रहमत से रहमत उतारदे इस बीमारी पर (कि यह जाती रहे)।

फोड़े-फुन्सी और ज़ख़्म के लिए दुआ

जिस शख़्स के फोड़ा-फुन्सी या ज़ख़्म हो उसका इलाज इस तरह करे कि अपनी शहादत की उँगली ज़मीन पर रख कर यह कहते हुए उठाए: يُشْفٰى سَقِيْمُنَا بِاِذْنِ رَبِّنَا

हमारा बीमार हमारे रब के हुक्म से अच्छा होना चाहिए।

पावँ (हाथ) सुन होजाने के लिए दुआ

जब पावँ (या हाथ) सुन होजाए तो जिससे बहुत ज़्यादा मुहब्बत हो उसका नाम ले।

जिस्मानी दुख, तकलीफ़ के लिए दुआ

जिस शख़्स को कोई जिस्मानी दुख-दर्द या और कोई तकलीफ़ हो वह अपना दायां हाथ तकलीफ़ की जगह पर रखे और तीन बार बिस्मिल्लाह कहे और सात बार यह दुआ पढ़े:

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ وَقُدْرَتِهٖ مِنْ شَرِّ مَا اَجِدُ وَاُحَاذِرُ

तर्जुमा: मैं अल्लाह और उसकी क़ुदरत की पनाह लेता हूँ इस तकलीफ़ की बुराई से जो मुझे हो रही है और जिससे डर रहा हूँ।

आँख दुखने की दुआ

जिस शख़्स की आँखें दुख रही हों वह यह दुआ पढ़े

اَللّٰهُمَّ مَتِّعْنِیْ بِبَصَرِیْ وَاجْعَلْهُ الْوَارِثَ مِنِّیْ وَاَرِنِیْ فِی الْعَدُوِّ ثَأْرِیْ وَانْصُرْنِیْ عَلٰی مَنْ ظَلَمَنِیْ

तर्जुमा: ऐ अल्लाह! तू मुझे मेरी बीनाई से फ़ायदा पहुँचा, और इसको मेरा वारिस (यादगार) बनादे और मेरे दुश्मन (की ज़िन्दगी) में मेरा बदला मुझे (अपनी आँखों से) दिखा दे और जो मुझ पर ज़ुल्म करे उस पर मेरी मदद फ़रमा।

बुख़ार के लिए दुआ

जिस शख़्स को बुख़ार आजाए वह यह दुआ पढ़े:

بِسْمِ اللّٰهِ الْكَبِيْرِ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ مِنْ شَرِّ كُلِّ عِرْقٍ نَّعَّارٍ وَّمِنْ شَرِّ حَرِّ النَّارِ

तर्जुमा: बुज़ुर्ग और बड़े अल्लाह के नाम से, मैं पनाह लेता हूँ ख़ुदाए बुज़ुर्ग और बड़े की हर जोश मारने वाली रग की बुराई से और जहन्नम की आग की जलन की बुराई से।

बीमारी की हालत में दुआ

बीमार शख़्स बीमारी की हालत में 40 बार पढ़े:

لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ (अम्बिया, 87)

तर्जुमा: तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तू पाक है, बेशक मैं ही ज़ुल्म करने वालों में से हूँ।

हदीस शरीफ़ में आया है कि जिस मुसलमान ने अपनी बीमारी की हालत में 40 बार पीछे लिखी हुई आयते करीमा पढ़ ली तो अगर उस बीमारी में मौत होगई तो चालीस शहीदों का सवाब मिलेगा और अगर अच्छा होगया तो उसके तमाम गुनाह बख़्श दिए जाएँगे

क़ुरआनी दुआएँ

क़ुरआनी दुआओ को कुछ वजहों की बिना पर फ़ज़ीलत हासिल है:

जब ख़ुद (हाकिम अर्ज़ी का मज़्मून बतला देता है तो फिर उसकी मनज़ूरी में किसी तरह का शक नहीं रहता, इसी तरह जो दुआएँ अल्लाह तआला ने ख़ुद सिखाई हों तो वे यक़ीनन क़बूलियत के ज़्यादा क़रीब हैं।

इनमे जितनी दीनी व दुनियवी ज़रूरतों की रिआयत की गई है, अगर हम लोग क़ियामत के दिन तक भी सोचें तो मुमकिन नहीं कि ऐसे जामे मज़ामीन तज्वीज़ कर सकें, कभी ऐसा भी होता है कि दुआ के मज़्मून में बेअदबी हो जाती है, जिससे वह दुआ उलटी बवाले जान हो जाती है। जैसे किसी सहाबी (रज़ि०) ने सब्र की दुआ की थी, और हुज़ूर सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया था कि तुमने बला की दरख़्वास्त की। और एक सहाबी ने यह दुआ की थी कि जितना अज़ाब मुझे आख़िरत में होना हो वह सब यहीं होजाए, तो हुज़ूर मक़बूल (सल्ल०) ने उनको तम्बीह फ़रमाई थी। मतलब यह है कि क़ुरआन मजीद की तिलावत के अलावा जिस किसी को ज़्यादा मुहून के लिए दुआओं का विर्द करना हो, वह इन दुआओं का विर्द करे। यह दुआएँ अम्बिया (अलैहि०) की हैं और दुनियावी व उख़रवी दोनों तरह के मामलों को घेरे हुए हैं।

सब्र और दुश्मनों पर फ़तह पाने की दुआ

इस दुआ की वजह से तालूत (अलैहि०) के लशकर ने तादाद में कम होने के बावजूद जालूत के बड़े लशकर पर फतह पाई थी:

رَبَّنَآ اَفۡرِغۡ عَلَيۡنَا صَبۡرًا وَّثَبِّتۡ اَقۡدَامَنَا وَانۡصُرۡنَا عَلَى الۡقَوۡمِ الۡكٰفِرِيۡنَ (अल-बक़रा: 250)

तर्जुमा: ऐ हमारे परवरदिगार! हमपर सब्र डाल दे और (लड़ाई में) हमारे क़दम जमा, और काफ़िरो के गिरोह पर हमको फतह दे।

फ़तह पाने की पूरी दुआ

नबी-ए-करीम रऊफ व रहीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दुआ जंग व जिहाद के वक़्त पढ़ी, अल्लाह तआला ने कुफ़्फ़ार को शिकस्त दी। हम भी इस दुआ को हर वक़्त पढ़ें:

"اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَجۡعَلُكَ فِيۡ نُحُوۡرِهِمۡ وَنَعُوۡذُبِكَ مِنۡ شُرُوۡرِهِمۡ"

तर्जुमा: ऐ अल्लाह हम उन के मुक़ाबले में तुझ को पेश करते हैं और उनके शर से पनाह मांगते हैं।

रंज व मुसीबत के वक़्त की दुआ

اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيۡهِ رٰجِعُوۡنَ (अल-बक़रा: 156)

तर्जुमा: हम अल्लाह ही के क़ब्ज़े में हैं (हम को जिस हाल में चाहे रखे) और हम उसी की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं

रहम व मग़्फ़िरत चाहने की दुआ

ख़ुदा तआला ने इसके पढ़ने वालों की फ़ज़ीलत फ़रमाई है दुआ यह है:

رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ

(अल मुअ्मिनून, 109)

तर्जुमा : ऐ परवरदिगार ! हम ईमान लाए, तू हमे बख़्श दे और हम पर रहम कर और तू सब मेहरबानों से बेहतर है।

☆ यह दुआ दीन व दुनिया की ख़ैर व बरकत चाहने और दोज़ख़ के अज़ाब से बचने के लिए जामे तरीन दुआ है:

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

(अल बक़रह, 201)

तर्जुमा : ऐ हमारे परवरदिगार! हमें दुनिया में भी ख़ैर व बरकत दे और आख़िरत में भी ख़ैर व बरकत दे और हम को दोज़ख़ के अज़ाब से बचा।

☆ यह असहाबे आराफ़ की दुआ है, दोज़ख़ियों को देख कर अल्लाह तआला से यह दुआ करेंगे:

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ

(अअ्राफ़, 47)

तर्जुमा :ऐ हमारे रब! हम को गुनहगार लोगो के साथ (शामिल) न कर।

☆ दुश्मनों के मुक़ाबले में सब्र और अंजाम बेहतर होने और ईमान की सलामती की दुआ

رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ

(अअ्राफ़, 126)

तर्जुमा :ऐ हमारे परवरदिगार! हम पर सब्र डालदे और (अपनी) इत्तिबा की हालत में हम को मौत दे।

☆ यह दुआ ख़ुदा तआला ने मुसलमानों को मां-बाप की मग़्फ़िरत के लिए सिखाई है, इससे मां-बाप की अज़मत और उनके एहतिराम का पता चलता है।

رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِىْ صَغِيْرًا

(बनी इस्राईल, 24)

तर्जुमा : ऐ मेरे परवरदिगार! जिस तरह मेरे मां-बाप ने मुझे छोटे से को पाला है (और मेरे हाल पर रहम करते रहे हैं) इसी तरह तू भी उनपर (अपना) रहम कर।

☆ ख़ुदा तआला ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को यह दुआ सिखाई। यह दुआ ऐसी जामे है कि हर काम के शुरू करने और ख़त्म करने के लिए बहुत मुफ़ीद है।

رَّبِّ اَدْخِلْنِىْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِىْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّىْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا

(बनी इस्राईल, 80)

तर्जुमा : ऐ मेरे परवरदिगार! मुझको अच्छी जगह पहुँचा और मुझको अच्छी तरह निकाल, और अपनी मदद से मुझको (दुश्मनों पर) फ़तहयाबी के साथ ग़लबा दे।

☆ यह मग़्फ़िरत और रहम मांगने की दुआ है जो अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को सिखाई ताकि आपकी उम्मत भी (इस इस्तिग़फ़ार) की पैरवी करे।

رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ

(अल मुअ्मिनून, 118)

तर्जुमा: ऐ मेरे परवरदिगार! (हमारे क़ुसूर) माफ़ कर और (हमारे हाल पर) रहम फ़रमा और तू (सब) रहम करने वालो से बेहतर (रहम करने वाला) है।

रहम और मग़्फ़िरत चाहने की दुआ

और दुश्मनों पर फ़तहयाबी की दुआ है, रसूलुल्लाह (सल्ल०) इन दुआओं को पढ़ते तो फ़रिश्ते आमीन कहते थे।

رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا إِنْ نَسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ ۖ وَاعْفُ عَنَّا ۗ وَاغْفِرْ لَنَا ۗ وَارْحَمْنَا ۚ أَنْتَ مَوْلَانَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ

तर्जुमा: ऐ हमारे परवरदिगार! अगर हम भूल जाएं या चूक जाएँ तो हमको न पकड़, ऐ हमारे परवर्रदिगार! जो लोग हमसे पहले हो गुज़रे हैं जिस तरह उन पर तू ने भारी बोझ डाला था, वैसा भारी बोझ हम पर न डाल, और हमारे परवरदिगार! हमसे इतना बोझ न उठवा जिसकी हमको ताक़त नहीं और हमारे क़ुसूरों को माफ़ कर और हमारे गुनाहों को माफ़ कर और हम पर रहम फ़रमा, तू ही हमारा मालिक है। तू उन लोगों के मुक़ाबले में जो काफ़िर हैं हमारी मदद कर। (अल्-बक़रा-286)

हज़रत मूसा (अ़लैहि०) की दुआ

यह हज़रत मूसा (अ़लैहि०) ने उस वक़्त फ़रमाया था जब बनी इस्राईल को एक क़ातिल की पहचान के सिल्सिले में गाय के ज़िबह करने का हुक्म सुनाया गया और वे लोग हज़रत मूसा (अ़लैहि०) से कहने लगे कि "क्या आप हमसे मज़ाक़ करते हैं?"

أَعُوذُ بِاللَّهِ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ۝

(अल् बक़रह, 67)

तर्जुमा: मैं अल्लाह तआ़ला की पनाह मागता हूँ कि मैं जाहिलो मे होऊँ।

☆ यह दुआ रहम और मग्फ़िरत चाहने के लिए है, इस दुआ के सबब हज़रत आदम (अ़लैहि०) और हज़रत हव्वा (अ़लैहि०) को माफी मिली थी।

رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنْفُسَنَا وَإِنْ لَمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝

(अल् अअ़राफ़, 23)

तर्जुमा : ऐ हमारे परवरदिगार ! हमने अपने आप को खुद तबाह किया, और अगर तू हमको माफ़ नहीं फ़रमाएगा और हम पर रहम नहीं करेगा तो हम बिल्कुल तबाह हो जाएँगे।

अंजाम बेहतर होने की दुआ

यह हज़रत यूसुफ़ (अ़लैहि०) की आख़िरी दुआ है। आपने तमाम दौलत और हुकूमत होने के बावजूद ख़ातिमा बिल-ख़ैर को तरजीह दी, बन्दे के लिए इतने ख़ातिमे से बढ़कर कौन सी दौलत हो सकती है?

فَاطِرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ أَنْتَ وَلِيِّي فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۖ تَوَفَّنِي مُسْلِمًا وَأَلْحِقْنِي بِالصَّالِحِينَ ۝

(यूसुफ़, 101)

तर्जुमा : ऐ आसमानो और ज़मीनों के पैदा करने वाले! दुनिया और आख़िरत मे तू ही मेरा रफ़ीक़ और साथी है, तू मुझको अपनी ताबेदारी की हालत मे (दुनिया) से उठाले और मुझको (अपने) नेक बन्दो मे दाख़िल कर।

☆ अपने और अपने माँ-बाप और तमाम मुसलमानों के लिए बरकत और मग्फ़िरत चाहने की दुआ। यह दुआ हज़रत

इब्राहीम (अ़लैहि०) ने की थी। क़ुरआन मजीद ने इसे सनद और नज़ीर के लिए क़ियामत तक के लिए ईमान वालों के लिए नक़ल करदिया है।

رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَاةِ وَمِن ذُرِّيَّتِي ۚ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ ۝ رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ ۝

(इब्राहीम, 41)

तर्जुमा ऐ मेरे परवरदिगार! मुझको तौफ़ीक़ दे कि मैं नमाज़ पढ़ता रहूँ और मेरी औलाद को (भी) और ऐ हमारे परवरदिगार मेरी दुआ क़बूल फ़रमा। ऐ हमारे परवरदिगार जिस दिन (आमाल का) हिसाब होने लगे, मुझको और मेरे माँ-बाप और सब ईमान वालों को बख़्श देना।

रोज़ी मांगने की दुआ

यह रोज़ी मांगने की दुआ है। हज़रत मूसा (अ़लैहि०) सफर में वे सरो-सामानी की हालत में इसे पढ़ कर हज़रते शुएब (अ़लैहि०) के मेहमान और दामाद हुए थे:

رَبِّ إِنِّي لِمَا أَنزَلْتَ إِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيرٌ ۝

तर्जुमा : ऐ मेरे परवरदिगार! मैं उस भलाई का जो तेरी तरफ से उतरे मोहताज हूँ। (अल-[illegible]-24)

नेक अ़मल की तौफ़ीक़, नेक औलाद और इस्तिक़ामत की दुआ

ज़्यादा उम्र वाले लोगों को चाहिए कि यह दुआ मांगा करें:

رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَصْلِحْ لِي فِي ذُرِّيَّتِي ۖ إِنِّي تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝

(अहक़ाफ़, 15)

☆ फ़रिश्ते यह दुआए मग़्फ़िरत और अंजाम बख़ैर व हुसूले जन्नत, मुसलमानों के लिए मांगते हैं। ईमानदार बन्दों के हक़ में ख़ुदा की यह सबसे बड़ी रहमत और नेमत है कि बन्दे अपने दीनी और दुनियावी फ़ायदे के लिए तो ईमान लाएँ और अ़र्शे इलाही उठाने वाले फ़रिश्ते, ईमानदार बन्दों के हक़ में दुआ किया करें।

رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِينَ تَابُوا وَاتَّبَعُوا سَبِيلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝ رَبَّنَا وَأَدْخِلْهُمْ جَنَّاتِ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدتَّهُمْ وَمَن صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ ۚ إِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ وَقِهِمُ السَّيِّئَاتِ ۚ وَمَن تَقِ السَّيِّئَاتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهُ ۚ وَذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝

तर्जुमा : 'ऐ हमारे परवरदिगार! तेरी रहमत और तेरा इल्म सब चीज़ को घेरे हुए है। तो जो लोग तौबा करते हैं और तेरे रास्ते पर चलते हैं, उनको बख़्श दे और उनको भड़कती आग से बचा। ऐ

हमारे परवरदिगार! उनको हमेशा रहने वाले जन्नतियों में दाखिल कर जिनका तू ने उनसे वादा फ़रमाया है और उनके बाप-दादा और उनकी बीवियों और उनकी औलाद में से जो नेक हो उनको (भी)। बेशक तू ही जबर्दसत, (और) हिकमत वाला है। और उनको (क़ियामत के दिन) खराबियों से मेहफूज़ रख। और जिसको तू उस दिन खराबियों से मेहफूज रखेगा, तो उसपर तू ने (बड़ा) रहम किया। और यही तो बड़ी कामायाबी है। (अल्-मोमिन 7-9)

औलाद मांगने की दुआ

यह औलाद मांगने की दुआ है। जो हजरत जकरिया (अलैहि०) ने बुढ़ापे में की थी अल्लाह ने क़बूल की और हजरत यहया (अलैहि०) पैदा हुए।

رَبِّ هَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآءِ

(आले इमरान, 38)

तर्जुमा: ऐ मेरे परवरदिगार! मुझको अपने पास से पाकीजा औलाद अता कर बेशक तू दुआ का सुनने वाला है।

ज़ुल्म से निजात और मग़्फ़िरत की दुआ

☆ यह दुआ हज़रत इब्राहीम (अलैहि०) और उनके वक़्त के मुसलमानों की है।

رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَاِلَيْكَ اَنَبْنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ
رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا
اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ

(अल् मुम्तहिना, 4-5)

तर्जुमा : ऐ हमारे परवरदिगार! हम तुझी पर भरोसा रखते हैं और तेरी ही तरफ़ रुजू करते हैं और तेरी ही तरफ़ लौट कर जाना है। ऐ हमारे परवरदिगार! हम को काफ़िरों (के ज़ुल्म) का निशाना न बना, और ऐ हमारे परवरदिगार! हमसे हमारे गुनाह माफ़ कर, बेशक तू जबर्दसत (और) हिकमत वाला है।

बेख़्वाबी दूर करने की दुआ

لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْمَلِكُ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ

रात को सोते वक़्त पहले 100 बार दुरूद शरीफ़ पढे उसके बाद इस दुआ को बार बार पढ़ें, इन्शाअल्लाह नीन्द बहुत अच्छी आएगी और बेख़्वाबी की तक्लीफ़ दूर हो जाएगी।

ज़बान का हकलापन ख़त्म करने की दुआ

رَبِّ اشْرَحْ لِيْ صَدْرِيْ وَيَسِّرْ لِيْٓ اَمْرِيْ وَاحْلُلْ عُقْدَةً
مِّنْ لِّسَانِيْ يَفْقَهُوْا قَوْلِيْ

(ताहा, 25-28)

मुश्किलात से छुटकारा पाने की दुआ

وَاُفَوِّضُ اَمْرِيْٓ اِلَى اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ بَصِيْرٌ بِالْعِبَادِ

(अल मुअ्मिन, 44)

नेक औलाद की दुआ

जब हज़रत इब्राहीम (अलैहि०) बेतुल्-मुक़द्दस में तशरीफ़ लाए तो नेक औलाद के लिए यह दुआ मांगी थी:

رَبِّ هَبْ لِيْ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ

(अस साफ्फात, 100)

तर्जुमा ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे ऐसी (औलाद) अ़ता कर (जो) नेक लोगों में से (हो)।

जन्नत वालों की दुआ

☆ ख़ुदा तआला ने यह दुआ उन लोगों की नक़ल फ़रमाई है जो जन्नती होंगे।

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝

(आले इमरान, 16)

तर्जुमा : ऐ हमारे परवरदिगार! हम (तुझ पर) ईमान लाए हैं, तू हमारे गुनाह माफ़ फ़रमा और हम को दोज़ख़ के अज़ाब से बचा।

नेक अमल की तौफ़ीक़ मांगने की दुआ

☆ यह दुआ हज़रत सुलैमान (अलैहि०) ने नेक अमल की तौफ़ीक़ और अंजाम बख़ैर होने के लिए मांगी थी। मालदारों के लिए ख़ास कर मुनासिबे हाल है।

رَبِّ اَوْزِعْنِیْٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِیْٓ اَنْعَمْتَ عَلَیَّ وَعَلٰی وَالِدَیَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَاَدْخِلْنِیْ بِرَحْمَتِكَ فِیْ عِبَادِكَ الصّٰلِحِیْنَ ۝

(अन् नमल, 19)

तर्जुमा : ऐ मेरे परवरदिगार! मुझको तौफ़ीक़ दे कि जैसे-जैसे एहसानात तू ने मुझ पर और मेरे माँ-बाप पर किए हैं, तेरे उन एहसानात का शुक्र अदा करूँ और ज़िन्दगी भर ऐसे नेक काम करता रहूँ, जिन को तू पसन्द फ़रमाए और (मरने के बाद) तू मुझको अपनी रहमत से अपने नेक बन्दों में दाख़िल कर।

बुरी नज़र, जादू और हसद से बचने की दुआ

हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घर वालों में जब कोई बीमार होता तो आप (सल्ल०) उसपर मुअव्वज़ तीन बार पढ़कर दम करते थे।

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۝ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الْعُقَدِ ۝ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۝

(अल-फ़लक़, 1-5)

तर्जुमा : मैं सुबह के रब की पनाह में आया हर चीज़ की बुराई से जो उसने बनाई, और अँधेरे की बुराई से जब सिमट आए (छा जाए) और औरतों की बुराई से, जो गिरहों में फूंक मारें, और बुरा चाहने वाले की बुराई से, जब टोने (नज़र) लगाने लगे (हसद करने लगे)।

☆ यह अपने और तमाम मुसलमानों के लिए निजात व मग़फ़िरत और दुश्मनों की हलाकत की दुआ है जो हज़रत नूह (अलैहि०) ने मांगी थी। माँ-बाप और पूरी उम्मते इस्लामी के लिए दुआए ख़ैर करते रहना रसूलों की सुन्नत है।

رَبِّ اغْفِرْ لِیْ وَلِوَالِدَیَّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَیْتِیَ مُؤْمِنًا وَّلِلْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ

(नूह, 28)

तर्जुमा : ऐ मेरे परवरदिगार! मुझको और मेरे माँ-बाप को और जो शख़्स मेरे घर में ईमान वाला होकर आए और तमाम ईमान वाले मर्दों और औरतों को बख़्श दे।

इल्म में बढ़ोतरी की दुआ

खुदा तआला ने यह दुआ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सिखाई थी, इस दुआ में तवाज़ो भी है और शुक्र भी। (ताहा, 114) رَبِّ زِدْنِي عِلْمًا ۝

तर्जुमा ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे और ज़्यादा इल्म अता कर।

सवार होकर रवानगी की दुआ

यह दुआ नूह (अलैहि०) ने अपने साथियों को कश्ती पर सवार होते वक्त सिखाई थी।

بِسْمِ اللَّهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰىهَا إِنَّ رَبِّي لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ

(हूद, 41)

तर्जुमा अल्लाह के नाम से है इसका चलना और ठहरना। बेशक मेरा रब बख़्शने वाला मेहरबान है।

मग़फ़िरत चाहने की दुआ

☆ इस दुआ के पढ़ने वालों को कियामत के मैदान में नूर दिया जाएगा।

رَبَّنَا أَتْمِمْ لَنَا نُورَنَا وَاغْفِرْ لَنَا ۚ إِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

(तहरीम, 8)

तर्जुमा ऐ हमारे परवरदिगार! हमारे लिए हमारा नूर कामिल करदे और हमारे गुनाह बख़्श दे क्योंकि तू हर चीज़ पर कुदरत रखता है।

ज़ालिम कौम से आजिज़ी के वक़्त की दुआ

☆ यह दुआ हज़रत शुऐब (अलैहि०) ने उस वक्त मांगी जब वे अपनी कौम से नाउम्मीद हुए और उनको यकीन हो गया कि अब वे ईमान नहीं लाऐंगे। जब इनसान अपनी कौम के ज़ुल्म से आजिज़ हो तो यह दुआ मांगे।

رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَأَنْتَ خَيْرُ الْفَاتِحِينَ ۝

(अल् अअ़राफ़, 89)

तर्जुमा ऐ हमारे रब! हम में और हमारी कौम में इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर और तू सबसे बेहतर फ़ैसला करने वाला है।

इख़्तिलाफ़ात दूर करने की दुआ

☆ यह दुआ दीन के बारे में इख़्तिलाफ़ात को ख़त्म करने के लिए नाज़िल हुई:

اَللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ عٰلِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِي مَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝

(ज़ुमर, 46)

तर्जुमा ऐ अल्लाह! आसमानों और ज़मीनों के पैदा करने वाले, छिपे और खुले के जानने वाले तू ही अपने बन्दों में फ़ैसला कर दे, जिस चीज़ में वे आपस में झगड़ रहे थे।

बलाओं से निजात पाने की दुआ

हदीसों में हज़रत यूनुस (अलैहि०) की इस दुआ की बड़ी फ़ज़ीलत आई है और उम्मत ने मुसीबतों व परेशानियों में हमेशा इसको मुजर्रब पाया है।

لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ

(अल् अम्बिया, 87)

तर्जुमा : तेरे सिवा कोई हाकिम (माबूद) नहीं, तू बेऐब (पाक) है, बेशक मैं क़ुसूरवार हूँ।

वस्वसे और आफ़ात से पनाह मांगने की दुआ

☆ वस्वसे और आफ़ात से पनाह मांगने की दुआ है। रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर कुछ यहूद ने जादू किया था, उसके इलाज के लिए अल्लाह तआला ने यह सूरत और इससे पहले वाली सूरत (क़ुलअऊज़ु बिरब्बिल्फ़लक़) नाज़िल फ़रमाई और इनकी तासीर से वह असर अल्लाह के हुक्म से दूर हो गया।

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ مَلِكِ النَّاسِ ۙ اِلٰهِ النَّاسِ ۙ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۙ الَّذِیْ یُوَسْوِسُ فِیْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ مِنَ الْجِنَّةِ وَ النَّاسِ

(अन् नास, 1-6)

☆ हज़रत नूह (अलैहि०) ने किश्ती में सवार होकर यह दुआ मांगी थी:

رَّبِّ اَنْزِلْنِیْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّ اَنْتَ خَیْرُ الْمُنْزِلِیْنَ

(अल् मुअ्मिनून, 29)

तर्जुमा : ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे मुबारक जगह पर उतार, और तू ही सबसे बेहतर उतारने वाला है।

(दीन) पर जमे रहने और रहमत चाहने की दुआ

जो अल्लाह तआला ने ख़ुद सिखाई है। आज कल इस दुआ की बड़ी ज़रूरत है क्योंकि हिदायत के बाद गुमराही एक बहुत बड़ी मुसीबत है। दीने इस्लाम से दूर करने और उसके बारे में शक व शुबह फैलाने वाले बहुत से दुश्मन पीछे पड़े हुए हैं! अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल से इन ज़ालिमों से बचाए।

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَیْتَنَا وَ هَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ۝ رَبَّنَاۤ اِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِیَوْمٍ لَّا رَیْبَ فِیْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا یُخْلِفُ الْمِیْعَادَ

(आले इमरान, 8-9)

तर्जुमा : ऐ हमारे परवरदिगार! हमारे दिलों को हिदायत करने के बाद (ग़लत रास्ते पर) न फेर, और अपने पास से हमको रहमत अता फ़रमा, बेशक तू ही देने वाला है। ऐ हमारे परवरदिगार! तू एक दिन जिस (के आने) में (किसी तरह का) शक ही नहीं, लोगों को (उनके आमाल का बदला देने के लिए) जमा करेगा (तो उस दिन हम पर तेरी मेहरबानी की नज़र रहे) बेशक अल्लाह तआला वादा ख़िलाफ़ी नहीं किया करता।

इस्लामी भाई चारे की दुआ

☆ यह दुआ इस्लामी भाई चारे की तौफ़ीक़ और हसद व कपट के दूर करने के लिए है, जो अल्लाह तआला ने इस उम्मत के (ख़ास कर) पिछले लोगों को सिखाई है।

رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَ لِاِخْوَانِنَا الَّذِیْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِیْمَانِ وَ لَا تَجْعَلْ فِیْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَاۤ اِنَّكَ

رَءُوفٌ رَّحِيمٌ (अल् हश्र 10)

तर्जुमा ऐ हमारे परवरदिगार! हमारे और हमारे भाइयों के गुनाह माफ़ कर जो हमसे पहले ईमान ला चुके हैं, और ऐसा कर कि जो लोग ईमान ला चुके हैं उनकी तरफ़ से हमारे दिलों में किसी तरह का कीना-कपट न आने पाए। ऐ हमारे परवरदिगार ! तू बड़ा शफ़क़त रखने वाला मेहरबान है।

मुसीबत व परेशानी से निजात की दुआ

☆ मुसीबत व परेशानी से निजात पाने की दुआ। यह दुआ हज़रत अय्यूब (अलैहि०) की है जब आपको सख़्त जिस्मानी तकलीफ़ (बीमारी) हो गई थी।

اَنِّیْ مَسَّنِیَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِیْنَ

(अल् अम्बिया 83)

तर्जुमा (ऐ मेरे परवरदिगार!) मुझ को तकलीफ़ हो गई है और तू सबसे बड़ा मेहरबान है (तू मेरे हाल पर रहम फ़रमा और मुझ को शिफ़ा दे)

शैतानी वस्वसों से अमन में रहने की दुआ

☆ शैतानी वस्वसों से महफ़ूज़ रहने की दुआ, जो अल्लाह तआला ने ख़ुद सिखाई है:

رَبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّیٰطِیْنِ وَاَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ یَّحْضُرُوْنِ

(अल् मुअ्मिनून 97-98)

तर्जुमा ऐ परवरदिगार! मैं शैतानों की छेड़ (वस्वसों) से तेरी पनाह मांगता हूँ और ऐ मेरे परवरदिगार! मैं इससे (भी) तेरी पनाह मांगता हूँ कि शैतान मेरे पास आएँ (और भड़काएं)

औलाद मांगने की दुआ

☆ अल्लाह तआला के इशारे से यह दुआ हज़रत ज़करिया (अलैहि०) ने बुढ़ापे में औलाद चाहने के लिए की और 100 साल की उम्र में लड़का पाया।

رَبِّ لَا تَذَرْنِیْ فَرْدًا وَّاَنْتَ خَیْرُ الْوٰرِثِیْنَ

तर्जुमा ऐ मेरे परवरदिगार! मुझको अकेला (यानी बेऔलाद) न छोड़ और (वैसे तो) तू सबसे बेहतर वारिस है। (अल्-अम्बिया- 89)

दुआ की क़बूलियत के लिए

☆ ये अल्लाह के नेक बन्दों की दुआऐं हैं इनके पढ़ने वालों की अल्लाह तआला ने तारीफ़ फ़रमाई और दुआ क़बूल करने का वादा किया है।

رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ
رَبَّنَا اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَیْتَهٗ وَمَا لِلظّٰلِمِیْنَ
مِنْ اَنْصَارٍ رَبَّنَا اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِیًا یُّنَادِیْ لِلْاِیْمَانِ اَنْ
اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَیِّاٰتِنَا
وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰی رُسُلِكَ
وَلَا تُخْزِنَا یَوْمَ الْقِیٰمَةِ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِیْعَادَ

(आले इमरान, 191-194)

तर्जुमा: ऐ हमारे परवरदिगार! तू ने इस (दुनिया) को बे

फ़ायदा नहीं बनाया, तेरी ज़ात पाक है। तो ऐ हमारे रब हमको दोज़ख के अज़ाब से बचाए रखियो। ऐ हमारे परवरदिगार! जिसको तू ने दोज़ख मे डाला उसको (बहुत ही) रुसवा किया और (वहाँ) गुनहगारों का कोई भी मददगार नहीं। ऐ हमारे परवरदिगार! हमने एक पुकारने वाले (यानी नबी) को सुना कि ईमान की मनादी कर रहा था कि अपने परवरदिगार पर ईमान लाओ, तो हम ईमान ले आए, तो ऐ हमारे परवरदिगार! हमारे गुनाह माफ़ फरमा और हमारी बुराइयों को दूर कर और हमारा नेक बन्दों के साथ खातिमा कर और ऐ हमारे परवरदिगार! हमारे जैसे-जैसे वादे अपने रसूलों के ज़रिए तू ने हम से किए हैं, हम को नसीब कर और क़ियामत के दिन हमको ज़लील न कर कि तू वादे के खिलाफ़ नहीं करता।

जिहाद या मुसीबत व परेशानियों में घिरे होने के वक़्त की दुआ

رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَإِسْرَافَنَا فِي أَمْرِنَا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا
وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ

(आले इमरान 147)

तर्जुमा ऐ हमारे रब! हमारे गुनाह और जो हमारे काम में हमसे ज़्यादती हुई (...) बख्श दे और हमारे क़दम जमाए रख, और हमको काफ़िरों पर फ़तह दे।

दुश्मन के ज़ुल्म से निजात पाने की दुआ

काफ़िरों की तरफ़ से ज़ुल्म और सितम जब बहुत ज़्यादा होने लगे उस वक़्त यह दुआ पढ़नी चाहिए। शुरू इस्लाम में जब काफ़िरों के हाथों कमज़ोर मुसलमान मर्द औरत और बच्चे हर

तरह की तकलीफ़ उठा रहे थे उस वक़्त तंग होकर उन्हों ने यह दुआ मांगी थी।

رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ أَهْلُهَا ۚ وَاجْعَلْ لَنَا مِنْ
لَدُنْكَ وَلِيًّا ۚ وَاجْعَلْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ نَصِيرًا

(अन् निसा, 75)

तर्जुमा ऐ हमारे रब! हमको इस बस्ती से निकाल कि यहाँ के लोग ज़ालिम हैं और हमारे लिए अपनी तरफ़ से कोई हिमायती करदे और हमारे लिए अपनी तरफ़ से कोई मददगार करदे।

बन्दगी का इक़रार और शिर्क से पनाह चाहने की दुआ

☆ बन्दगी को जाहिर करने और शिर्क से दूर रहने की दुआ:

إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلّٰهِ رَبِّ
الْعٰلَمِيْنَ ۝ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ۚ وَبِذٰلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا أَوَّلُ
الْمُسْلِمِيْنَ

(अल अनआम, 162 - 163)

अस्नाद

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि जो कोई इस दुआ़ को पढ़े या पास रखे तो जो अल्लाह से मांगे, मिलेगा, अगर फ़क़ीर होगा तो मालदार हो जाएगा और अगर जाहिल होगा तो आ़लिम बन जाएगा, और अगर बीमार होगा तो बीमारी से अच्छा हो जाएगा और सब मुरादें पूरी होंगी, अगर ग़म्गीन होगा तो ख़ुशी होवेगी अगर जेल में बन्द होगा तो छूट जावेगा, अगर ग़ैर शादी शुदा होगा तो शादी हो जाएगी, अगर सफ़र में होगा तो सलामती के साथ वापस आवेगा, अगर सच्चा यक़ीन है और 100 बार पढ़ेगा तो अल्लाह तआ़ला नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को ख़्वाब में दिखावेगा। यह दुआ़ यह है :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يَارَجَائِیْ يَامَنَائِیْ يَادَوَائِیْ يَاشِفَائِیْ يَاكَفَائِیْ كَفٰى يُحْيِیْ
يَاغَفُوْرُ يَاغَفُوْرُ اِغْفِرْ لِیْ خَطِيْئَتِیْ يَوْمَ يُبْعَثُوْنَ يَا اَللّٰهُ
يَا اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ يَارَحْمٰنُ يَارَحْمٰنُ يَارَحْمٰنُ يَارَحِيْمُ
يَارَحِيْمُ يَارَحِيْمُ يَاغَفُوْرُ يَاغَفُوْرُ يَاغَفُوْرُ يَاكَرِيْمُ يَاكَرِيْمُ
يَاكَرِيْمُ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ وَنُوْرِ عَرْشِهٖ مُحَمَّدٍ
وَّاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ بِرَحْمَتِكَ يَآ اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ ۝

अस्नाद

दुआ़ए बुज़ुर्गवार यह है कि एक दिन नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मस्जिद में बैठे थे कि इब्लीस आया, तब आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि ऐ बदबख़्त कहाँ से आया? इब्लीस ने कहा कि या रसूलल्लाह (सल्ल०) मैं बद नहीं हूँ इसलिए कि एक दुआ़ मुझको याद है उसकी वजह से मैं जन्नत में जाऊँगा, सबसे पहले नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सुन कर हैरान हुए, उस वक़्त जिबरील (अ़लैहि०) आए और कहा ऐ रसूलुल्लाह (सल्ल०) यह बदबख़्त सच कहता है लेकिन मरने से 40 साल पहले यह दुआ़ भूल जाएगा। अब आप सुन लीजए कि जो कोई इस दुआ़ को सच्चे यक़ीन के साथ पढ़े बेशक वह जन्नत मे जाएगा।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ يَآاِلٰهَ الْبَشَرِ وَيَاعَظِيْمَ الْخَطَرِ وَيَاوَاسِعَ الْمَغْفِرَةِ وَيَا
عَزِيْزَ الْمَنِّ وَيَامَالِكَ يَوْمِ الدِّيْنِ بِحَقِّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ
نَسْتَعِيْنُ بِرَحْمَتِكَ يَآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يَآاِلٰهَ الْعَالَمِيْنَ وَيَاخَيْرَ النَّاصِرِيْنَ وَيَاغِيَاثَ الْمُسْتَغِيْثِيْنَ
بِرَحْمَتِكَ يَآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ ۝

अस्नाद

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर (रज़ि०) ने कहा कि 600 साल की नमाज़ क़बूल होती है, और हज़रत उसमान (रज़ि०) ने कहा कि 700 साल की नमाज़ क़बूल होती है और हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू ने कहा कि हज़ार साल की नमाज क़ज़ा हुई, क़बूल होती है, सहाबा ने हज़रत से पूछा कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आदमी की उमर इतनी कहाँ है तो आपने फ़रमाया कि नमाज़ तुम्हारे बाप, दादा परदादा और रिश्तेदारों सबकी क़बूल होती है। दुआए बुज़ुर्गवार यह है:

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ نِعْمَائِهٖ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ الْاٰئِهٖ
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ قَبْلَ كُلِّ حَالٍ وَّصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ
مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ ؕ

फ़ज़ाइले दुरूद शरीफ़

مَنْ صَلّٰى عَلَيَّ وَاحِدَةً
صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ عَشْرًا

" जो शख़्स मुझ पर एक बार दुरूद भेजता है, अल्लाह तआला उस पर दस दस बार रहमत भेजते हैं"

तशरीह दुरूद शरीफ़ के बहुत फ़ज़ाइल हैं, जिनके बयान के लिए मुस्तक़िल किताब की ज़रूरत है, यहाँ पर कुछ फ़ज़ाइल बरकत के तौर पर बयान करते हैं :-

(1) जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है कि क़ियामत के दिन मेरे बहुत क़रीब वह शख़्स होगा जो (दुनिया में) मुझ पर बहुत ज़्यादा दुरूद पढ़ता होगा।

(2) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया: जुमा के दिन मुझ पर ख़ूब दुरूद पढ़ा करो, वह मुझ पर पैश होता है।

(3) आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया: जो शख़्स मेरा ज़िक्र करे तो उसको चाहिए कि मुझ पर दुरूद भेजे।

(4) हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया: बड़ा बख़ील है वह जिसके सामने मेरा ज़िक्र हो और वह मुझ पर दुरूद न पढ़े। (तिर्मिज़ी)

(5) इरशाद फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने : जो शख़्स मुझ पर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़े, अल्लाह

तआला उसपर दस रहमतें नाज़िल फ़रमाते हैं, और दस गुनाह माफ़ होते हैं, और दस नेकियाँ उसके नामए आमाल में लिखी जाती हैं। (नसाई)

(6) हज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जो शख़्स मुझ पर ज़्यादा से ज़्यादा दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा वह अर्श के साए में होगा। (ज़ादुस्सईद)

(7) इरशाद फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने: जो शख़्स मेरी क़ब्र पर (हाज़िर होकर) दुरूद शरीफ़ पढ़ता है उसको मैं ख़ुद सुनता हूँ और जो मुझ से दूरी पर पढ़ता है वह मेरे पास (फ़रिश्तों के ज़रिये) पहुँचाया दिया जाता है। (बैहक़ी)

(8) सय्यिदिना उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) फ़रमाते हैं जब तक दुआ के शुरू और आख़िर में दुरूद शरीफ़ न पढ़ा जाए, तो दुआ ज़मीन व आसमान में मुअ़ल्लक़ (लटकी या इटकी) रहती है।

(9) इरशाद फ़रमाया जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो शख़्स हर दिन 100 बार दुरूद पढ़े उसकी 100 ज़रूरतें पूरी की जाएँगी, जिन में से तीस दुनिया में बाक़ी आख़िरत में पूरी की जाएँगी। (ज़ादुस्सईद)

(10) एक हदीस में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जो शख़्स सुबह को दस बार और शाम को दस बार मुझ पर दुरूद भेजे क़ियामत के दिन उसके लिए मेरी शिफ़ाअ़त होगी। (तबरानी)

मौलाना थानवी (रह०) ज़ादुस्सईद में लिखते हैं :

क़ियामत के दिन किसी मोमिन की नेकियाँ अगर कम

होजाएँगी तो जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उँगली के पोरवे के बराबर एक पर्चा निकाल कर मीज़ाने अमल में रख देंगे जिससे नेकियों का पल्ला भारी होजाएगा, वह मोमिन कहेगा मेरे माँ-बाप आप (सल्ल०) पर क़ुर्बान होजाएँ आप (सल्ल०) कौन हैं? आप (सल्ल०) फ़रमाएँगे मैं तेरा नबी हूँ, और यह वह दुरूद है जो तू ने मुझ पर (दुनिया में) पढ़ा था मैंने तेरी ज़रूरत के वक़्त अदा कर दिया।

इसलिए हर मुसलमान को चाहिए कि कम से कम हर सुबह-शाम दस बार दुरूद शरीफ़ पढ़ने की ज़रूर आदत डाले, वरना हज़ारों बार पढ़े तो भी कम है, और जितना ज़्यादा पढ़ेगा उसमें अपना ही फ़ायदा है।

दुआ है कि अल्लाह तआला हर मुसलमान को अपने हबीबे पाक जनाब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सच्ची मुहब्बत और इत्तिबा की तौफ़ीक़ दे और क़ियामत में आप (सल्ल०) की शिफ़ाअ़त नसीब हो, आमीन।



اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاَصْحَابِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ

यह दुरूद शरीफ़ एक ऐसा राज़ है जिसको आरिफ़ों और वलियों के सिवा कोई भी न समझ सका, इसमें बहुत ज़्यादा फ़ायदे हैं, जिनको अगर लिखा जाए तो दुनिया की सियाही और काग़ज़ ख़त्म होजाएँ। सबसे ज़्यादा इस दुरूद शरीफ़ का फ़ायदा यह है कि जब भी रंज व ग़म हो या कोई मुसीबत आजाए, तो फ़ौरन इसको पढ़ा जाए, अल्लाह ने चाहा तो तमाम मुसीबतें मिनटों में ख़त्म होजाएँगी, अँधेरा उजाले में बदल जाएगा, जहमत रहमत में बदल जाएगी।

दुरूदे नारिया यह है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बख़्शिश करने वाला मेहरबान है

اَللّٰهُمَّ صَلِّ صَلٰوةً كَامِلَةً وَّسَلِّمْ سَلَامًا

ऐ अल्लाह ! दुरूद कामिल और सलामे तमाम नाज़िल फ़रमा

تَامًّا عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدِ ِالَّذِىْ

हमारे सरदार व मौलाना हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर जिनके तुफ़ैल गिरह

تَنْحَلُّ بِهِ الْعُقَدُ وَتَنْفَرِجُ بِهِ الْكُرَبُ وَ تُقْضٰى

खुल जाती है और बेचैनियाँ ख़त्म हो जाती हैं और जिनके तुफ़ैल तमाम

بِهِ الْحَوَآئِجُ وَتُنَالُ بِهِ الرَّغَآئِبُ وَحُسْنُ الْخَوَاتِمِ

मुरादें पूरी हो जाती हैं और अच्छा ख़ातिमा नसीब होता है

وَ يُسْتَسْقَى الْغَمَامُ بِوَجْهِهِ الْكَرِيْمِ

और सैराब होता है बादल उनके करीम चेहरे से (उसकी ताज़गी से)

وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ فِىْ كُلِّ لَمْحَةٍ وَّنَفَسٍ

और आल पर, असहाब पर अपने हर पल, सांस में, अपनी

بِعَدَدِ كُلِّ مَعْلُوْمٍ لَّكَ يَا اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ

मालूमात के बराबर गिन्ती में (यानी बे शुमार) ऐ अल्लाह! ऐ अल्लाह! ऐ अल्लाह!

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ طِبِّ الْقُلُوْبِ وَدَوَآئِهَا

وَنُوْرِ الْاَبْصَارِ وَضِيَآئِهَا وَصِحَّةِ الْاَبْدَانِ وَشِفَآئِهَا

तर्जुमा : ऐ अल्लाह रहमत नाज़िल कर हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर, वह जो दिलों के लिए हकीम और इलाज और आँखों के लिए नूर और रौशनी हैं और बदन के लिए तन्दुरुस्ती और शिफ़ाए कुल हैं।

फ़ायदा : जो शख़्स सुबह या शाम को यह दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा तो अल्लाह तआ़ला उसकी हर तक्लीफ़ को दूर करेगा और हर ज़रूरत पूरी होगी, क़र्ज़ा अदा होगा, रोज़ी में बरकत होगी और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की जियारत नसीब होगी।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَاَزْوَاجِهٖ
اُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَذُرِّيَّتِهٖ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ
وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۔

तर्जुमा : ऐ अल्लाह दुरूद भेज हमारे सरदार मुहम्मद (सल्ल०) पर जो उम्मी नबी है और उनकी बीवियों पर जो ईमान वालों की माँ हैं और आप की औलाद पर जिस तरह से तू ने (इब्राहीम अ़लैहि०) पर और इबराहीम (अ़लैहि०) की औलाद पर दुरूद भेजा बेशक तू बुज़ुर्ग व तारीफ़ वाला है।

फ़ायदा : इस दुरूद शरीफ़ के बारे में हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि फ़रमाया हुज़ूर (सल्ल०) ने कि जिस शख़्स की ख़्वाहिश हो कि उसको पूरा सवाब मिले तो मेरे और मेरे अहलेबैत पर यह दुरूद शरीफ़ पढ़ता रहे।

اُدْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ۔

मुझसे दुआ करो मैं ज़रूर क़बूल करूँगा।

(मुअ़मिन, 60)

ग़रीबी, तंगी और रोज़ी का इलाज

"मवाहिबे लदुन्निया" में रिवायत है कि एक शख़्स हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और यह कहा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम दुनिया मेरी तरफ़ से पीठ फेर कर चली गई, हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया कि "फ़रिश्तों की तस्बीह पढ़ा करो" उसने कहा कि हुज़ूर (सल्ल०) फ़रिश्तों की तस्बीह क्या है? हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि "सुबहे सादिक़ के बाद सूरज निकलने से पहले سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ 100 बार पढ़ा करो" यह सुन कर वह शख़्स चला गया और कुछ दिनों बाद आया और कहा कि हुज़ूर सल्ल० ख़ुदा ने मुझे इतना अ़ता किया है कि मेरे घर में रखने की जगह न रही।

बद ख़्वाबी, बेचैनी और नीन्द न आने का इलाज

तिर्मिज़ी शरीफ़ में हज़रत बुरैदा (रज़ि०) से रिवायत है कि एक दिन हज़रत ख़ालिद (रज़ि०) ने हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से रात की बेचैनी और नीन्द न आने की शिकायत की, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि 'ऐ ख़ालिद जब सोने के लिए बिस्तर पर लेटो तो यह दुआ पढ़ो:

दुआ

اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَمَا اَظَلَّتْ وَرَبَّ الْاَرَضِيْنَ وَرَبَّ
الشَّيٰطِيْنِ وَمَا اَضَلَّتْ كُنْ لِّيْ جَارًا مِّنْ شَرِّ خَلْقِكَ
كُلِّهِمْ جَمِيْعًا اَنْ يَّفْرُطَ عَلَيَّ اَحَدٌ مِّنْهُمْ اَوْ يَبْغِيَ عَلَيَّ عَزَّ
جَارُكَ وَجَلَّ ثَنَاؤُكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ ۔

सर के दर्द का इलाज

''मवाहिबे लदुन्निया'' में जामे हुमैदी से नकल किया गया है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दर्द से पनाह मांगते थे और यह दुआ पढ़ते थे

بِسْمِ اللّٰهِ الْكَبِيْرِ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ مِنْ كُلِّ عِرْقٍ نَّعَّارٍ وَّمِنْ شَرِّ النَّارِ ط

इस दुआ को पहले पाँच बार फिर दोबारा सात बार फिर ग्यारह बार पढ़ कर दर्द को झाड़ना बहुत मुफ़ीद है हर बार दर्द की जगह पढ़ने वाला या मरीज़ अपने हाथ से पकड़े, जब दम करने वाला एक बार दम करे, हाथ दर्द की जगह से हटा लिया जाए, अगर दर्द को आराम न हो तो फिर उसी तरह दर्द की जगह को पकड़ कर दुआ पढ़ कर दम किया जाए, इन्शाअल्लाह तीन बार दम करने के बाद दर्द में बहुत सुकून और आराम हो जाएगा, अगर आराम न हो तो फिर चार घंटे के बाद उसी तरह दर्द को झाड़ा जाए, दिन में दो बार इस अ़मल को किया जाए, इन्शाअल्लाह बिल्कुल आराम हो जाएगा।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान और निहायत रहम वाला है।

ख़ासियत इस आयते करीमा के फ़ायदे बहुत ज़्यादा हैं, हर एक अच्छे काम से पहले जैसे कि खाने-पीने से पहले

बिस्मिल्लाह के पढ़ लेने से बहुत बरकत होती है और किसी दुआ के शुरू में बिस्मिल्लाह के पढ़ लेने से वह दुआ क़बूल होती है। उसके अदद 786 होते हैं, उन अदद की गिनती के मुताबिक़ पढ़ के दुआ मांगने से तकलीफ़ें, बीमारियाँ और दुख-दर्द दूर होते हैं।

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ط

तर्जुमा सिवा अल्लाह के कोई इबादत के लायक़ नहीं और मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के रसूल हैं।

ख़ासियत हदीस शरीफ़ में इस कलिमे की कई फ़ज़ीलतें बयान की गई हैं, जो कोई इस कलिमे को दिन में 100 बार पढ़ेगा--तो इन्शाअल्लाह उसका ख़ातिमा बिल-ख़ैर होगा और अगर कोई अपने मरहूम के लिए 75 हज़ार या एक लाख का विर्द करेगा और सवाब पहुँचाएगा तो इन्शाअल्लाह ख़ुदा पाक उसे अ़ज़ाब से निजात देगा और जो अपने लिए विर्द रखेगा तो जन्नत का हक़दार होगा और दोज़ख़ से बच जाएगा।

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ ط وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ○

तर्जुमा : अल्लाह पाक है और सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और अल्लाह बहुत बड़ा है, गुनाहों से बचने की ताक़त और नेकी करने की तौफ़ीक़ नहीं मगर अल्लाह की तरफ़ से जो बहुत बुलन्द और बड़ाई वाला है।

كَلِمَتَانِ خَفِيفَتَانِ عَلَى اللِّسَانِ ثَقِيلَتَانِ فِي الْمِيزَانِ حَبِيبَتَانِ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيمِ

(बुखारी)

दो कलिमे ज़बान पर (पढ़ने में) हलके, मीज़ाने अमल में (कियामत में) भारी होंगे, खुदा को महबूब हैं (वह दो कलिमे यह हैं)

(1) سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ

(2) سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيمِ

हर मुसलमान को चाहिए कि इन कलिमों को हर दिन सुबह व शाम कम से कम एक बार ज़रूर पढ़ लिया करे:

أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِي لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ

तर्जुमा : मैं बख्शिश चाहता हूँ अल्लाह से, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह हमेशा रहने वाला और ज़िन्दा है और मैं उसकी तरफ़ रुजू होता हूँ।

फ़ज़ीलत . जो शख़्स यह पढ़ेगा उसके तमाम गुनाह माफ़ होजाएँगे। हदीस शरीफ़ में है कि जो शख़्स फ़जर और असर की नमाज़ के बाद तीन बार यह दुआ पढ़ेगा उसके तमाम गुनाह माफ़ होजाएँगे चाहे वे गुनाह समुद्र के बराबर हों।

رَبِّ إِنِّي مَغْلُوبٌ فَانْتَصِرْ

तर्जुमा ऐ अल्लाह मैं लाचार हूँ मेरी मदद फ़रमा।

फ़ज़ीलत यह दुआ हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की है, मुसीबत, तक्लीफ़ और क़र्ज़ में फंसा हुआ शख़्स ज़्यादा से ज़्यादा तादाद में पढ़े। तो बहुत फायदा होगा, इसे सुबह व शाम सात या ग्यारह बार पढ़ लेना बेहतर है।

اَللّٰهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْجَنَّةَ الْفِرْدَوْسَ

तर्जुमा ऐ अल्लाह बेशक मैं सवाल करता हूँ जन्नतुल फ़िरदौस के लिए।

فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا وَهُوَ أَرْحَمُ الرّٰحِمِينَ

(यूसुफ़, 64)

तर्जुमा पस अल्लाह बेहतरीन हिफ़ाज़त करने वाला और सबसे ज़्यादा मेहरबान है।

फ़ज़ीलत जिस शख़्स को दुश्मन का खौफ़ हो या और किसी तरह की मुसीबत हो तो इस दुआ को ज़्यादा से ज़्यादा तादाद में पढ़ता रहे इन्शाअल्लाह मुसीबत टल जाएगी। बेहतर है कि सुबह व शाम (11) बार पढ़े इसके विर्द से हिफ़ाज़त व निगरानी होगी। जिसे अपनी याद-दाश्त मज़बूत करनी हो उसे चाहिए कि नमाज़ में अत्तहिय्यात के बाद सलाम फेरने से पहले इसको पढ़े।

● हज़रत आइशा (रज़ि०) की रिवायत से मालूम होता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपने अहले-बैत को जमा करके फरमाया:

जब तुम में से किसी को ग़म या तक्लीफ़ पहुँचे तो यूँ कहे:

اَللّٰهُ اَللّٰهُ رَبِّیْ لَا اُشْرِكُ بِهٖ شَیْئًا ؕ

(इब्ने हिब्बान)

حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِیْلُ ؕ عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ؕ

तर्जुमा अल्लाह हमारे लिए काफ़ी है और बेहतरीन कार-साज़ है।

फ़ज़ीलत हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० रिवायत करते हैं कि जब सय्यिदिना हज़रत इबराहीम (अ़लैहि०) को नमरूद ने आग में डाला तो आपने यह दुआ़ पढ़ी थी और इसकी बरकत से आप आग से मेहफ़ूज़ रहे। इसलिए इस दुआ़ को हर मुसीबत, ग़म और दुख में ज़्यादा से ज़्यादा तादाद में पढ़ना चाहिए।

لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ ۝

(अम्बिया, 87)

तर्जुमा : कोई माबूद नहीं उसके सिवा वह ज़ात पाक है, बेशक मैं ज़ालिमों में से हूँ।

फ़ज़ीलत कई बुज़ुर्गों का कहना है कि क़ुरआन की इस

आयते मुबारका में इस्मे-आज़म है। किसी भी आफ़त और मुसीबत के वक़्त पढ़ने से बहुत फ़ायदे होते हैं।

जब हज़रत यूनुस (अ़लैहि०) को मछली निगल गई थी तो आपने मछली के पेट में इसका विर्द किया था।

❁

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَجْعَلُكَ فِیْ نُحُوْرِهِمْ

وَنَعُوْذُبِكَ مِنْ شُرُوْرِهِمْ ؕ

तर्जुमा ऐ अल्लाह हम दुश्मनों के लिए उनके मुक़ाबले में तुझे रखते हैं और उनकी शरारतों से बचने के लिए तेरी पनाह मांगते हैं।

फ़ज़ीलत पाकीज़गी और पाबन्दी के साथ हर दिन दुआ़ का विर्द ज़्यादा से ज़्यादा तादाद में करने से कई फ़ायदे हैं। रिवायत है कि जब हुज़ूर (सल्ल०) को क़ौम की तरफ़ से कोई डर या ख़ौफ़ महसूस होता तो आप इसे ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ते।

❁

وَاُفَوِّضُ اَمْرِیْٓ اِلَى اللّٰهِ ؕ

اِنَّ اللّٰهَ بَصِیْرٌۢ بِالْعِبَادِ ۝

(मुअमिन, 44)

तर्जुमा और मैं अपने काम अल्लाह पर छोड़ता हूँ बेशक अल्लाह सब बन्दों का निगहबान है।

फ़ज़ीलत :

(1) जब लोगों की तरफ़ से तक्लीफ़ और परेशानी होती

हो तो इसका ज़्यादा से ज़्यादा विर्द हर तालीफ़ से निजात देगा।

(2) जिस शख़्स पर मुक़द्दमा चलता हो या उसको उसका हक़ न मिले तो हर दिन 100 बार पढ़ने से इन्शाअल्लाह उसे कामयाबी होगी।

❁

رَبِّ يَسِّرْ وَلَا تُعَسِّرْ وَتَمِّمْ

بِالْخَيْرِ وَبِكَ نَسْتَعِيْنُ ؕ

तर्जुमा ऐ मेरे ख़ुदा आसान कर और मुश्किल न कर और भलाई के साथ पूरा कर और हम तुझसे मदद मांगते हैं।

फ़ज़ीलत किसी काम में मुश्किलात का सामना हो तो नमाज़े इशा के बाद (100) सौ बार पढ़े और हर नमाज़ के बाद ग्यारह (11) बार पढ़ने से भी कामयाबी हासिल होती है। हर तरह की मुसीबत, परेशानी दूर होगी और हर काम का अच्छा नतीजा निकलेगा और ख़ुदा की मदद हासिल होगी।

❁

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاَعْدَآئِكُمْ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَلِيًّا ۙ

وَّكَفٰى بِاللّٰهِ نَصِيْرًا ۝ (अन् निसा, 45)

तर्जुमा और अल्लाह तुम्हारे दुश्मनों को अच्छी तरह जानता है और अल्लाह काफ़ी दोस्त है और अल्लाह काफ़ी मददगार है।

फ़ज़ीलत जब किसी दुश्मन से डर और नुक़सान का ख़तरा

हो तो इसका विर्द ज़्यादा से ज़्यादा तादाद में करना चाहिए, इसकी बरकत से दुश्मन नुक़सान नहीं पहुँचा सकेगा बल्कि विर्द करने वाला दुश्मन पर ग़ालिब रहेगा।

❁

اَللّٰهُ حَفِيْظٌ لَطِيْفٌ قَدِيْمٌ اَزَلِيٌّ

حَيٌّ قَيُّوْمٌ لَّا يَنَامُ ؕ

तर्जुमा अल्लाह हिफ़ाज़त करने वाला, मेहरबान, हमेशा रहने वाला, ज़िन्दा रहने वाला, जिसे कभी नीन्द नहीं आती।

फ़ज़ीलत जो शख़्स सफ़र में सात बार पढ़े या लिख कर रखे उसे किसी हादसे का सामना न होगा, लिख कर पेटी में रखने वाले को चोरी का ख़तरा न होगा। हर दिन सुबह व शाम ग्यारह बार पढ़ने वाला अमन में रहेगा।

❁

يَا بَدِيْعَ الْعَجَائِبِ بِالْخَيْرِ يَا بَدِيْعُ ؕ

तर्जुमा : ऐ अजीब चीज़ों को भलाई के साथ पैदा करने वाले ऐ नई चीज़ों के ख़ालिक़।

फ़ज़ीलत जब किसी को कोई ज़रूरत हो तो 12 दिन तक हर दिन 13 सौ बार पढ़े इन्शाअल्लाह उसकी ज़रूरत पूरी होगी, हर दिन 100 बार पढ़ने से भी कामयाबी होगी। बहुत छोटी

लेकिन बहुत काम की दुआ है, इस का पढ़ने वाला हर तरह की भलाई से माला-माल हो जाएगा।

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ
صَادِقُ الْوَعْدِ الْاَمِيْنُ ۝

तर्जुमा नहीं है कोई सच्चा माबूद सिवा ख़ुदा के जो बादशाह हक़ और ज़ाहिर है, मुहम्मद अल्लाह के रसूल और वादे के सच्चे अमानतदार हैं।

फ़ज़ीलत जो इनसान हर दिन सौ (100) बार इसका विर्द करेगा उसकी रोज़ी में बरकत होगी, अज़ाबे क़ब्र से बचा रहेगा, मौत के वक़्त उसकी रूह के जन्नत में दाख़िले के लिए तमाम दरवाज़े खुल जाएंगे, यह कलिमा रोज़ाए अनवर (सल्ल०) की जाली मुबारक पर भी लिखा गया है, हज़रत अली (रज़ि०) से रिवायत है।

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ ۝

तर्जुमा ऐ हमेशा जिन्दा रहने वाले और सबको क़ायम रखने वाले तेरी रहमत का वासता देकर फ़रयाद चाहता हूँ।

फ़ज़ीलत हदीस शरीफ़ में आया है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़िक्र व परेशानी के वक़्त पढ़ते थे।

फजर के फ़र्ज़ और सुन्नत के बीच (40) बार पढ़ने से हर

तरह की फ़िक्र, परेशानी और तकलीफ़ से निजात मिलती है और अगर कर्ज़दार हो तो हर दिन सौ (100) बार पढ़ने से क़र्ज़ से निजात मिलती है।

اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِيْ مِنَ النَّارِ ۝

तर्जुमा ऐ अल्लाह मुझे दोज़ख की आग से बचा।

फ़ज़ीलत फ़जर की नमाज़ के बाद अपनी जगह से उठे बग़ैर और किसी से बात किए बिना पढ़ता रहे और अगर उसी दिन या रात को मौत आजाए तो परवरदिगार उसे शहादत का दर्जा अता करेगा।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

فَذَرْنِيْ وَمَنْ يُّكَذِّبُ بِهٰذَا الْحَدِيْثِ ۭ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ
مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ وَاُمْلِيْ لَهُمْ ۭ اِنَّ كَيْدِيْ
مَتِيْنٌ ۝

(अल क़लम, 44 - 45)

तर्जुमा तो जो इस बात को झुठलाता है, उसे मुझ पर छोड़ दो, क़रीब है कि हम उन्हें धीरे धीरे ले जाएंगे, जहाँ से उन्हें ख़बर न होगी और मैं उन्हें ढील दूँगा बेशक मेरी छुपी तदबीर बहुत पक्की है।

तफ़सील मैं उसको सज़ा दूँगा अपने अज़ाब की इस तरह कि उसे गुनाहों और नाफ़रमानियों के बा वजूद सेहत, रोज़ी सब कुछ मिलता रहेगा और वह दम-बदम अज़ाब के क़रीब होता जाएगा।

كٓهٰيٰعٓصٓ كِفَايَتُنَا حٰمٓ عٓسٓقٓ حِمَايَتُنَا

فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝ (अल् बक़रह, 137)

तर्जुमा : यानी फिर क़रीब ही किफ़ायत करेंगे, ख़ुदा तआला उनको और वह सुनने वाला और जानने वाला है।

फ़ज़ीलत : यह क़ुरआन शरीफ़ के अल्फ़ाज़ हैं। इन की हक़ीक़त अल्लाह ही को मालूम है, दुश्मनी और हसद करने वालों से बचने के लिए बहुत ही फ़ायदे मन्द है, जो हाकिम नाराज़ हो तो तीन बार इस आयत को पढ़ कर हाथों पर दम करके पूरे बदन पर हाथ फेरे तो हाकिम मेहरबान हो जाएगा। हर दिन सुबह व शाम सात बार पढ़ने से अल्लाह तआला हर आफ़त व मुसीबत से मेहफ़ूज़ रखेगा।

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِيْ لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَيْءٌ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ

وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝

तर्जुमा : अल्लाह के नाम के साथ कोई चीज़ न ज़मीन पर नुक़्सान पहुँचाती है न आसमान से और वह सब सुनने वाला और जानने वाला है।

फ़ज़ीलत : हदीस शरीफ़ में इस दुआ की बड़ी फ़ज़ीलत आई है और अचानक आफ़तों से और भ्यानक बीमारियों से बचा रहेगा। सुबह व शाम यह दुआ तीन बार पढ़ने से हर आफ़त व मुसीबत से बचाएगी। बच्चे को अगर नज़र होजाए तो इस दुआ को पढ़ कर दम करने से आराम पाएगा और खाने पीने की चीज़ों पर दम करने से हर बीमारी से मेहफ़ूज़ रहेगा।

فَسَهِّلْ يَآ اِلٰهِيْ كُلَّ صَعْبٍ بِحُرْمَةِ سَيِّدِ الْاَبْرَارِ سَهِّلْ

तर्जुमा : ऐ अल्लाह! तू हर मुश्किल को आसान कर दे हुज़ूर मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तुफ़ैल से।

फ़ज़ीलत : यह दुआ हर नमाज़ के बाद पढ़ने से इन्शाअल्लाह तआला जो इच्छा व तमन्ना होगी पूरी होगी, तीन बार पढ़ना बेहतर है।

رَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّبِالْاِسْلَامِ دِيْنًا وَّبِمُحَمَّدٍ نَّبِيًّا

तर्जुमा : हम ख़ुश हुए अल्लाह के रब होने पर और इस्लाम के दीन होने पर और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के नबी होने पर।

फ़ज़ीलत : हदीस शरीफ़ में है कि मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स इस दुआ को सुबह व शाम नमाज़ के बाद तीन-तीन बार पढ़ेगा तो उसको क़ियामत के दिन अल्लाह तआला अपनी रहमत से माला-माल करदेंगे।

رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ۝

(अल् मुअ्मिनून, 118)

तर्जुमा : ऐ मेरे परवरदिगार! (हमारे क़ुसूर) माफ़ कर और (हमारे हाल पर) रहम फ़रमा और तू (सब) रहम करने वालों से बेहतर (रहम करने वाला) है।

يَا خَالِصُ يَا مُخْلِصُ يَا خَلَاصُ بِحَقِّ مِهْتَرْ خِضْرْ

وَالْيَاسَ عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ ۔

तर्जुमा : ऐ बचाने वाले ऐ निजात देने वाले ऐ छुटकारा देने वाले हज़रत ख़िज़्र अलैहि० और हज़रत इल्यास अलैहि० के तुफ़ैल से।

फ़ज़ीलत : किसी शख़्स को मुक़दमे या क़र्ज़ से परेशानी हो या कोई मुसीबत या आफ़त हो बचने के लिए हर रोज़ [illegible] बार पढ़ने से बहुत से फ़ायदे हैं।

✽

فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَآءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيْدٌ ۔

(सूरः क़ाफ़, 22)

तर्जुमा : हमने तुम्हारे ऊपर से तुम्हारी ग़फ़लत का पर्दा हटा दिया है इस लिए आज तुम्हारी आँखों की रौशनी बहुत तेज़ है।

फ़ज़ीलत : यह क़ुरआनी आयत सूरः क़ाफ़ की है, आँखों की रौशनी के लिए हर नमाज़ के बाद सात या तीन बार पढ़ कर अंगूठों पर दम करके आँखों पर फेरने से आँखों की रौशनी क़ायम रहेगी। अगर कम होगी तो और बढ़ जाएगी।

✽

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِیْ دِيْنِیْ وَدُنْيَایَ وَاَهْلِیْ وَمَالِیْ ۔

तर्जुमा : ऐ अल्लाह मैं तुझसे अपने रिश्तेदारों और नातेदारों और औलाद के लिए माफ़ी चाहता हूँ और अपने माल व जान की हिफ़ाज़त चाहता हूँ।

फ़ज़ीलत : हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि इस दुआ के पढ़ने से दुनिया और आख़िरत की भलाई और अपने जान माल और दीन की हिफ़ाज़त होगी। सुबह व शाम [illegible] तीन तीन बार पढ़ें।

✽

اَللّٰهُمَّ لَا تُهْلِكْنَا فُجَاءَةً وَّلَا تَاْخُذْنَا بَغْتَةً وَّلَا تَشْغَلْنَا عَنْ

حَقٍّ وَّلَا وَصِيَّةٍ

तर्जुमा : ऐ अल्लाह हम को अचानक मौत न देना और अचानक बीमारी न देना और अचानक हमारी पकड़ न करना और किसी का हक़ अदा करने और वसिय्यत पर अमल करने से ग़ाफ़िल न करना।

फ़ज़ीलत : यह दुआ हर दिन पढ़ने से अचानक हार्ट फ़ेल की बीमारी से और बिना वसिय्यत की बीमारी से बचा रहेगा।

✽

اَللّٰهُمَّ عَافِنِیْ فِیْ بَدَنِیْ اَللّٰهُمَّ عَافِنِیْ فِیْ سَمْعِیْ اَللّٰهُمَّ عَافِنِیْ

فِیْ بَصَرِیْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ ۔

तर्जुमा : ऐ अल्लाह मेरे पूरे बदन में और मेरे कान में और मेरी आँखों में तन्दुरुस्ती अता कर, तेरे सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं।

फ़ज़ीलत : यह दुआ तन्दुरुस्ती के लिए है, सुबह व शाम ग्यारह ग्यारह बार पढ़ने से बहुत फ़ायदा होगा और बहुत फ़ायदे पाते हैं।

اَفْضَلُ الذِّكْرِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

وَاَفْضَلُ الدُّعَآءِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ط

तर्जुमा : बेहतरीन ज़िक्र لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ है और बेहतरीन दुआ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ط

तशरीह : बेहतरीन ज़िक्र لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ दीने इस्लाम की बुनियाद है, इसलिए बेहतरीन ज़िक्र لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ का इक़रार व इज़हार है, और सबसे बेहतरीन दुआ अल्लाह तआ़ला की नेमतों का एतिराफ़ करना और उसका शुक्र करना है।

❀

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْكُفْرِ فِي النَّزْعِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الْفَقْرِ فِي الشَّيْبِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الْعِلَّةِ فِي الْغُرْبَةِ ط

तर्जुमा : ऐ अल्लाह मैं तुझ से पनाह मांगता हूँ जान निकलते वक़्त कुफ़ से, तेरी पनाह मांगता हूँ, बुढ़ापे में कमज़ोरी और मुहताजी से, मैं पनाह मांगता हूँ ग़रीबी और बीमारी से।

फ़ज़ीलत : हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी (रह०) फ़रमाते हैं यह दुआ हज़रत उवैसे क़रनी (रज़ि०) की है, जो शख़्स हर नमाज़ के बाद पाँच बार पढ़ेगा तो जान निकलते वक़्त अल्लाह तआ़ला उसको अपनी पनाह में रखेगा।

❀

बे ख़्वाबी की तक्लीफ़ दूर करने की दुआ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْمَلِكُ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ ط

रात को सोते वक़्त पहले 100 बार दुरूद शरीफ़ पढ़ें, उस के बाद इस दुआ को बार-बार पढ़ें, इन्शाअल्लाह नीन्द बहुत अच्छी आएगी और बे ख़्वाबी की तक्लीफ़ दूर हो जाएगी।

दुआ और दुआ का वक़्त

अब हम तुम्हें दुआ और दुआ के वक़्त के बारे में कुछ बतलाना चाहते हैं, जो हर तक्लीफ़, बीमारी, मुसीबत, ग़म के दूर करने के लिए अक्सीर का हुक्म रखती है, इसको अबू उमामा (रज़ि०) ने रिवायत किया है और वह यह है:

" मुअज़्ज़िन जब अज़ान देता है तो आसमान के दरवाज़े खुल जाते हैं और दुखी की दुआ क़बूल होती है, जो शख़्स मुसीबत व बेचैनी में फंसा हो वह मुअज़्ज़िन का जवाब दे और حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ ط के वक़्त यूँ दुआ करे:

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ الصَّادِقَةِ الْمُسْتَجَابِ لَهَا دَعْوَةُ الْحَقِّ وَكَلِمَةُ التَّقْوٰى اَحْيِنَا عَلَيْهَا وَاَمِتْنَا عَلَيْهَا وَابْعَثْنَا عَلَيْهَا وَاجْعَلْنَا مِنْ خِيَارِ اَهْلِهَا اَحْيَآءً وَّاَمْوَاتًا ط

तर्जुमा : ऐ अल्लाह! इस सच्ची दुआ के परवरदिगार! जिससे हक़ की बात और कलिमा, तक़्वा क़बूल किए जाते हैं, हमें उसी पर ज़िन्दा रख और उसी पर मौत दे और उसी पर मौत के बाद उठा और ज़िन्दगी में और मौत के बाद उसी के रास्ते पर चलने वाले नेक बन्दों में करदे। (हाकिम)

और उसके बाद हक़ तआला से अपनी ज़रूरत का सवाल आजिज़ी से करे।

❁

यह भी हमें याद रखना चाहिए कि हमारे महबूब मुताअ़ सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम ने सिखाया है कि जब किसी को भी कोई मुश्किल काम का सामना हो तो वह अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू होकर कहे:

اَللّٰهُمَّ لَا سَهْلَ اِلَّا مَا جَعَلْتَهٗ سَهْلًا وَّاَنْتَ تَجْعَلُ
الْحُزْنَ سَهْلًا اِذَا شِئْتَ

तर्जुमा ऐ अल्लाह! कोई काम आसान नहीं है जब तक कि तू उसको आसान न करदे और तू हर ग़म को आसान करदेता है।

(इब्ने हब्बान)

इसी तरह हज़रत इब्ने उमर (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सहाबा (रज़ि०) को फ़ज़अ़ (घबराहट) के वक़्त इन कलिमात के पढ़ने की तल्क़ीन (किया) करते थे:

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ غَضَبِهٖ وَعِقَابِهٖ وَشَرِّ
عِبَادِهٖ وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِيْنِ وَاَنْ يَّحْضُرُوْنِ

तर्जुमा मैं अल्लाह के तमाम कलिमाते ताम्मा से पनाह मांगता हूँ उसके ग़ज़ब से, पकड़ से और उसके बन्दों के शर से और शैतान के वस्वसों से और इससे कि यह मेरे क़रीब हों। (अबू दाऊद, त्रिमिज़ी)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मेरे पास तशरीफ़ लाए जब मैं बीमार था और फ़रमाया कि मैं तुझ पर वह मन्तर न पढ़ूँ जो जिब्रील (अ़लैहि०) ने मुझ पर पढ़ा? मैंने कहा क्यों नहीं मेरे माँ-बाप आप (सल्ल०) पर क़ुर्बान! بَلٰى بِاَبِيْ وَاُمِّيْ

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया:

بِسْمِ اللّٰهِ اَرْقِيْكَ وَاللّٰهُ يَشْفِيْكَ مِنْ دَآءٍ فِيْكَ وَمِنْ شَرِّ
النَّفّٰثٰتِ فِي الْعُقَدِ ۝ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۝

तर्जुमा अल्लाह के नाम से मैं यह रुक़िया (मन्तर) करता हूँ, अल्लाह तुझे शिफ़ा बख़्शे हर बीमारी से जो तुझ में है और गिरहों में पढ़-पढ़ कर फूंकने वालियों के शर से और हसद करने वाले के शर से जब वह हसद करने लगे।

आप (सल्ल०) ने यह रुक़यह् तीन बार किया।

(हाकिम, इब्ने शैबा, इब्ने माजह)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इरशाद है जब कोई शख़्स घर से निकलते वक़्त यह दुआ पढ़ता है:

بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

तो उस वक़्त (ख़ुदा की तरफ़ से) उसे कहा जाता है कि तू हिदायत व किफ़ायत किया गया और हर तरह की तक्लीफ़ों, अचानक आने वाली मुसीबतों से बचा लिया गया है, यह अल्फ़ाज़ सुनते ही शैतान उससे दूर होजाता है और दूसरा शैतान उससे कहता है अब तेरा ऐसे आदमी पर किस तरह क़ब्ज़ा हो सकता है

जो कि हिदायत व किफ़ायत किया गया है और हर तरह की तकलीफ़ों, मुसीबतों और परेशानियों से बचा लिया गया है।

(अबू-दाऊद)

फ़ायदा यहाँ पर एक बात ज़रूरी याद रखनी है और वह यह है कि जिस दिन आप सुबह घर से निकलते वक़्त यह दुआ पढ़ेंगे तो उस दिन आप को कोई हादिसा या और कोई ना ख़ुशगवार वाक़िआ का सामना न होगा, इन्शाअल्लाह तआला।

رَبِّ اَنِّىْ مَسَّنِىَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ

तर्जुमा ऐ अल्लाह मुझे तकलीफ़ पड़ी है और तू सबसे बड़ा मेहरबान है (इस लिए मेरी तकलीफ़ दूर करदे)।

फ़ज़ीलत जो शख़्स नमाज़े फ़जर के बाद किसी से बात किए बिना इसे 100 बार पढ़ेगा, अल्लाह तआला उसकी दीनी व दुनियवी तमन्नाएँ पूरी करेगा।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

اَللّٰهُ حَافِظِىْ اَللّٰهُ نَاصِرِىْ اَللّٰهُ حَاضِرِىْ اَللّٰهُ مَعِىْ

तर्जुमा अल्लाह मेरा निगहबान, अल्लाह मेरा मददगार, अल्लाह मेरे साथ मौजूद, अल्लाह मेरे साथ है।

फ़ज़ीलत यह चार जुम्ले किसी डर या ख़ौफ़ की जगह पर या सफ़र में हो या अंधेरी रात हो ऐसे वक़्त पर पढ़ने से दिल से ख़ौफ़ और हर तरह की मुसीबत व परेशानी से बचा रहेगा।

कलिमाते ख़ैर व बरकत

कोई काम शुरू करो तो कहो	بِسْمِ اللّٰهِ	शुरू अल्लाह के नाम से
छींक आए तो कहो	اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ	शुक्र अल्लाह के लिए है
अल्लाह के नाम पर दो तो कहो	فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	अल्लाह तआला की राह में
कुछ करने का इरादा हो तो कहो	اِنْ شَآءَ اللّٰهُ	अगर अल्लाह ने चाहा
कोई अच्छी ख़बर सुनो तो कहो	سُبْحَانَ اللّٰهِ	अल्लाह तआला पाक है
किसी को तकलीफ़ हो तो कहो	يَا اَللّٰهُ	ऐ मेरे अल्लाह
किसी की तारीफ़ करना हो तो कहो	مَاشَآءَ اللّٰهُ	जो अल्लाह ने चाहा
सो कर उठो तो कहो	لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ	अल्लाह के सिवा कोई नहीं
शुक्रिया अदा करना हो तो कहो	جَزَاكَ اللّٰهُ	अल्लाह तुम्हें बदला दे
किसी को विदा करो तो कहो	فِىْ اَمَانِ اللّٰهِ	अल्लाह की हिफ़ाज़त में
जब ख़ुशगवारी हो तो कहो	فَتَبَارَكَ اللّٰهُ	अल्लाह तआला बरकत वाला है
जब नागवारी हो तो कहो	نَعُوْذُ بِاللّٰهِ	अल्लाह तआला की पनाह चाहते हैं
ग़लत काम पर अफ़सोस करना हो तो कहो	اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ	अल्लाह से माफ़ी चाहता हूँ
जब मदद चाहना हो तो कहो	يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ	ऐ अल्लाह तआला के रसूल (सल्ल०)
मौत की ख़बर सुनो तो कहो	اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ	हम अल्लाह के लिए हैं और अल्लाह की तरफ़ लौट कर जाना है

हुकूकुन्नास

नबी (सल्ल०) की हदीसों की रौशनी में

माँ-बाप के हुकूक:

माँ-बाप के हुकूक दुनिया में सबसे ज़्यादा अहम हैं और बाक़ी तमाम लोगों के हुकूक पर अव्वलिय्यत और फज़ीलत रखते हैं।

नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया:

❑ माँ-बाप के हुकूक की अदायगी, रोज़ा, नमाज़, हज, ज़कात सबसे ज़्यादा है और जिस को उसके माँ-बाप ने आक़ (जायदाद से बे दख़ल कर देना) कर दिया वह जन्नत में न जा सकेगा।

❑ अगर माँ-बाप के नाम पर सदक़ा करता है तो खुद को भी उतना ही सवाब मिलता है जितना माँ-बाप को मिलता है।

❑ एक शख़्स ने कहा कि मेरे माँ-बाप मर गए हैं उनके हुकूक किस तरह आदा करूँ, तो हुक्म हुआ कि उनके लिए नमाज पढ़ और दुआ कर, और जो वसिय्यत कर गए हों उसको पूरा कर, उनके दोस्तों की इज़्ज़त कर और उनके करीबी लोगों से अच्छा सुलूक कर, यह भी इरशाद फ़रमाया कि बाप के मुक़ाबले में माँ का दोहरा हक़ है।

❑ मुसलमानों अपने माँ-बाप के साथ नेकी का बरताव करो ताकि तुम्हारी औलाद भी तुम्हारे साथ नेकी से पेश आए।

(अल-अदबुल मुफ़रद)

❑ अल्लाह तआला की ख़ुशी माँ-बाप की ख़ुशी में है और अल्लाह तआला का ग़ुस्सा माँ-बाप के ग़ुस्से में छिपा है।

(अल-अदबुल मुफ़रद)

❑ कबीरा गुनाहों में सबसे बड़ा गुनाह अल्लाह के साथ (किसी को) साझी ठहराना है, और माँ-बाप की नाफ़रमानी करना है। (बुख़ारी शरीफ़)

❑ तीन शख़्स हैं जिन पर अल्लाह तआला ने जन्नत को हराम कर दिया है, उनमें से एक माँ-बाप का नाफ़रमान भी है।

(अल-अदबुल मुफ़रद)

❑ हर गुनाह के बदले में अज़ाब और हर जुर्म की पकड़ में देरी की जा सकती है लेकिन माँ-बाप की नाफ़रमानी का गुनाह ऐसा सख़्त है कि उसकी पकड़ मरने से पहले ही कर ली जाती है। (अल-अदबुल मुफ़रद)

❑ जो शख़्स अपने माँ-बाप के मरने के बाद उन का कर्ज़ अदा कर देता है और उनकी मानी हुई बात पूरी कर देता है वह अगर्चे ज़िन्दगी में उनका नाफ़रमान रहा हो, फिर भी वह ख़ुदा के नज़्दीक उनका फ़रमाँबरदार समझा जाएगा, और जो शख़्स अपने माँ-बाप के मरने के बाद न उन का कर्ज़ अदा करता है, न मानी हुई मन्नत को पूरा करता है, वह अगर्चे ज़िन्दगी में उनका फ़रमाँबरदार रहा हो, फिर भी ख़ुदा के नज़्दीक उनका नाफ़रमान समझा जाएगा। (अल-अदबुल मुफ़रद)

❑ वह आदमी ज़लील हो, फिर ज़लील हो, फिर ज़लील हो, लोगों ने पूछा ऐ ख़ुदा के रसूल (सल्ल०) कौन शख़्स? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया वह शख़्स जिस ने अपने माँ-बाप को बुढ़ापे की हालत में पाया, दोनों को पाया या किसी एक को, और फिर

(उनकी ख़िद्मत करके) जन्नत में दाख़िल न हुआ। (मुस्लिम)

❑ तुम्हारा माल और तुम अपने माँ-बाप के लिए हो, बेशक तुम्हारी औलाद तुम्हारी पाक कमाई है इस लिए तुम अपनी औलाद की कमाई से बिना रोक-टोक के खाओ। (इब्ने माजह)

❑ जो नेक औलाद भी माँ-बाप पर मुहब्बत भरी एक नज़र डालती है उसके बदले ख़ुदा उसको एक हज्जे मक़्बूल का सवाब बख़्शता है, लोगों ने पूछा ऐ ख़ुदा के रसूल सल्ल०! अगर कोई एक दिन में सौ बार इसी तरह रहमत व मुहब्बत की नज़र डाले? आप (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया जी हाँ अगर कोई सौ बार ऐसा करे तब भी। ख़ुदा (तुम्हारे तसव्वुर से) बहुत बड़ा और (तंग दिली जैसे ऐबों से) बिल्कुल पाक है। (मुस्लिम)

याद रहे कि माँ-बाप का हक़ बहुत ही बड़ा है। यहाँ तक कि अगर उन से औलाद के हक़ में कोइ ऐसा काम भी हो जाए जो इन्साफ़ के ख़िलाफ़ हो, तब भी उनका कहना मानने से मुँह न मोड़ना चाहिए, क्योंकि अल्लाह तआला की रज़ामन्दी और नाराज़गी माँ-बाप की ख़ुशी व नाख़ुशी पर मौक़ूफ़ है, माँ-बाप की ख़िद्मत की आख़िरी हद यह समझना चाहिए कि उनके मरने के बाद उनके मिलने वालों और उनके दोस्तों की इज़्ज़त और उनके साथ अच्छे सुलूक और एहसान से पेश आए। माँ-बाप का कहना न मानने से सिर्फ़ एक ही हालत में मुँह मोड़ा जासकता है और वह यह कि अगर माँ-बाप किसी ऐसे काम को करने के लिए दबाव डालें जो आल्लाह और उनके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्मों के ख़िलाफ़ हो तो ऐसे मौक़ा पर अच्छे ढंग से अपनी मजबूरी का इज़हार करदे।

❑

بسم الله الرحمن الرحيم

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ مَّا اخْتَلَفَ الْمَلَوَانِ وَتَعَاقَبَ
الْعَصْرَانِ وَكَرَّ الْجَدِيْدَانِ وَاسْتَقْبَلَ الْفَرْقَدَانِ وَبَلِّغْ رُوْحَهٗ
وَاَرْوَاحَ اَهْلِ بَيْتِهٖ مِنَّا التَّحِيَّةَ وَالسَّلَامَ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ عَلَيْهِ كَثِيْرًا

तर्जुमा इलाही रहमतें नाज़िल फ़रमा हमारे आक़ा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जहाँ तक रात-दिन आते जाते रहें और एक के बाद दिन और रात आए और फेरा करके दिन-रात और दो तारे फेरा करके और जो क़ुतुबे शिमाली के आस-पास से और इस्तिक़बाल करते रहे और हमारी तरफ़ से आप की रूह को और आप के ख़ानदान की रूहों को तहैयत और बरकत और बहुत सलाम नाज़िल फ़रमाएँ।

फ़ज़ीलत एक शख़्स बहुत ही परेशानी में था उसके दिल में ख़्वाहिश थी कि रहमतुल्लिल-आलमीन सल्ल० से मुलाक़ात हो तो अपनी परेशानियाँ बयान करे, एक रात उसको ख़्वाब में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुलाक़त हुई हुज़ूर ने ख़्वाब में ख़ुश-ख़बरी दी आप ने फ़रमाया "सुलतान महमूद के पास जाओ और जाकर कहो कि आप सोने से पहले 30 हज़ार बार और सुबह जागने के बाद 30 हज़ार बार जिन पर दुरूद भेजते हो, मैं उन्हीं के पास से भेजा हुआ आया हूँ और फिर अपनी परेशानियाँ बयान की, सुलतान महमूद ने उसकी परेशानियो को दूर कर दिया। बादशाह के दरबारी हैरान थे कि सुबह व शाम तीस-तीस हज़ार बार दुरूद शरीफ़ पढते हुए हम ने कभी देखा नहीं है, बादशाह ने उन लोगों से कहा कि यह दुरूद मुझ को आलिमों से

को आलिमों से हासिल हुआ है, उन बुज़ुर्गों का कहना था कि सुबह व शाम तीन-तीन बार पढ़ने से इसका सवाब 30 हज़ार के बराबर होगा। इसलिए मैं सुबह व शाम तीन-तीन बार पढ़ लेना हूँ लिहाज़ा तुम भी पढ़ा करो।

नअ़त

आर्ज़ू है यही अपने दिल मे	मिल के हम सब मदीने को जाएं
धूम से निकले हम अपने घर से	झूमते हम मदीने को जाएं
ऐ ख़ुदा इल्तिजा है यह मेरी	दश्ते अहमद मे यूं मौत आए
जान दे दूं नबी के क़दम पर	और वहीं मुझको दफ़नाया जाए
आँख झपके तो इस तरह झपके	नीन्द आए तो इस तरह आए
उन की चौखट पे हम सो रहें हो	और अज़ाने बिलाली जगाए
लुत्फ़ जब है दरे मुस्तफ़ा सल्ल० पर	सर झुकाते ही दम टूट जाए
आबे कौसर से हो ग़ुस्ले रिज़्वा	हर फ़रिशता जनाज़ा उठाए
या नबी हम को सब कुछ मिला है	मौत पर भी निगाहे करम हो
ख़ाके तैबा हो हम को मुयस्सर	क़ब्र मे नूर से जगमगाए
आबरु मेरे आक़ा बचाना	क्यों कि दुश्मन हुआ है ज़माना
या मुहम्मद न तुम रूठ जाना	चाहे सारा जहाँ रूठ जाए
अज़्मते मुस्तफ़ा क्या बयां हो	शान मेरे नबी की न पूछो
बहरे ताज़ीम सारा ज़माना	जिन की चौखट पे सर को झुकाए
आर्ज़ू है यही अपने दिल मे	मिल के हम सब मदीने को जाएं
धूम से निकले हम अपने घर से	झूमते हम मदीने को जाएं

दुआ मांगने की फ़ज़ीलत का बयान

1- हदीस शरीफ़ में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया:

"दुआ मांगना ऐसा ही है जैसे इबादत करना" फिर आप (सल्ल०) ने (सबूत के लिए) क़ुरआन करीम की यह आयत तिलावत फ़रमाई :-

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ ۝

(अल मुअ्मिन)

तर्जुमा : और तुम्हारे रब ने फ़रमाया है: मुझसे दुआ मांगा करो मैं तुम्हारी दुआ क़बूल करूंगा, बेशक जो लोग (तकब्बुर व घमंड की वजह से) मेरी इबादत से मुँह मोड़ते हैं वे ज़रूर जहन्नम में दाख़िल होंगे ज़लील और रुस्वा हो कर।

2- एक और हदीस में आया है कि:

"रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया: तुम में से जिस शख़्स के लिए दुआ का दरवाज़ा खोल दिया गया (यानी दुआ मांगने की तौफ़ीक़ दे दी गई) उसके लिए रहमत के दरवाज़े खोल दिए गए। अल्लाह तआ़ला से जो दुआएँ मांगी जाती हैं उन में अल्लाह को सबसे ज़्यादा पसन्द यह है कि उससे (दुनिया और आख़िरत में) आफ़ियत की दुआ मांगी जाए।" इसी हदीस में कुछ दूसरे रावियों के मुताबिक़ यह भी है कि فُتِحَتْ لَهُ أَبْوَابُ الْجَنَّةِ (उसके लिए जन्नत के दरवाज़े खोल दिए गए) और कुछ दूसरे रावियों के मुताबिक़ فُتِحَتْ لَهُ أَبْوَابُ الْإِجَابَةِ (उसके लिए क़बूलियत के दरवाज़े खोल दिए गए) आया है। (तीनों जुम्लों का मतलब एक ही है)।

3- एक और हदीस में आया है कि:

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया "दुआ के सिवा कोई चीज़ क़ज़ा (तक़्दीर के फ़ैसले) को रद नहीं कर सकती और नेकी (अच्छे काम) के सिवा कोई चीज़ उम्र को नहीं बढ़ा सकती।"

4- एक और हदीस में आया है कि:

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि " क़ज़ा (ख़ुदा के हुक्म) व तक़्दीर से बचने की कोई तद्बीर फ़ायदा नहीं देती, (हाँ) आल्लाह से दुआ मांगना उस (आफ़त और मुसीबत) में भी फ़ायदा पहुँचाता है जो उतर चुकी, और उस (मुसीबत) में भी जो अभी तक नहीं उतरी और बेशक मुसीबत उतरने को होती है कि इतने में दुआ उससे जा मिलती है, पस क़ियामत तक इन दोनों में कश्मकश होती रहती है (और इनसान दुआ की वजह से उस मुसीबत से बच जाता है)"

5- एक और हदीस में आया है कि:

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि "अल्लाह तआ़ला के यहाँ दुआ से ज़्यादा और किसी चीज़ की अहमियत नहीं।"

6- एक और हदीस में आया है कि:

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि "जो शख़्स अल्लाह तआ़ला से कोई सवाल नहीं करता, अल्लाह तआ़ला उस शख़्स से नाराज़ होजाते हैं। उसी हदीस में कुछ दूसरे बयान करने वालों के अल्फ़ाज़ में مَنْ لَمْ يَدْعُ اللّٰهَ غَضِبَ عَلَيْهِ (जो अल्लाह तआ़ला से दुआ नहीं मांगता अल्लाह तआ़ला उस से नाराज़ होजाता है) आया है (दोनों का मतलब एक ही है)।

7- एक और हदीस में आया है कि

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सहाबा से ख़िताब करके फ़रमाया "तुम अल्लाह से दुआ मांगने में लापवराही (और कोताही न करो) इसलिए कि दुआ (करते रहने) की हालत में कभी कोई शख़्स (अचानक आने वाली आफ़त से) हलाक न होगा।"

8- एक और हदीस शरीफ़ में आया है कि

आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया "जो शख़्स यह चाहे कि अल्लाह तआ़ला उस की दुआ सख़्तियों और मुसीबतों के वक़्त क़बूल फ़रमाएँ उसको चाहिए कि वह फ़राख़ी और ख़ुशहाली में भी ज़्यादा से ज़्यादा दुआ मांगा करे।"

9- एक और हदीस में आया है कि:

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि "दुआ मोमिन का हथ्यार है, दीन का सुतून है और आसमान व ज़मीन का नूर है।"

10- एक हदीस शरीफ़ में आया है कि:

एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम एक ऐसी क़ौम के पास से गुज़रे जो (किसी मुसीबत में) फंसी हुई थी, तो (उनकी हालत देख कर) आप (सल्ल०) ने फ़रमाया "क्या ये लोग अल्लाह से आफ़ियत की दुआ नहीं मांगा करते थे।"

11- एक और हदीस में आया है कि :

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि "जो भी मुसलमान (किसी चीज़ के) मांगने के लिए अल्लाह तआ़ला की तरफ़ अपना मुँह उठाता है (और दुआ मांगता है) अल्लाह तआ़ला उस को वह चीज़ ज़रूर देते हैं, या वही चीज़ उस को तुरंत दे देते हैं या उसके लिए (दुनिया या आख़िरत में) उसको ज़ख़ीरा कर देते हैं।"

अल्लाह के ज़िक्र की फ़ज़ीलत का बयान

1- हदीसे क़ुदसी में आया है कि अल्लाह तआ़ला फरमाते हैं

" मैं अपने बन्दे के ख्याल के साथ हूं (जैसा वह मेरे बारे में गुमान रखता है मैं वैसा होता हूं) और मैं उस के साथ होता हूं जब वह मेरा जिक्र करता है। चुनान्चे अगर वह अपने दिल में मेरा जिक्र करता है तो मैं भी अपनी तन्हाई मे उसे याद करता हूं और अगर वह किसी मज्मा में मेरा जिक्र करता है तो मैं भी उस के मज्मा से अच्छे मज्मा में (फ़रिश्तों के मजमा में) उनका जिक्र करता हूं।"

2- एक और हदीस में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फरमाया.

" क्या मैं तुम्हें वह अमल न बतलाऊँ ? जो तुम्हारे अ़मलों मे सबसे अच्छा है और तुम्हारे मालिक (परवरदिगार) के नजदीक सबसे ज्यादा पाकीजा है और तुम्हारे दरजात को सबसे ज्यादा ऊँचा करने वाला है और सोना-चांदी के (अल्लाह के रास्ते में) खर्च करने से भी बेहतर है और इससे भी बेहतर है कि तुम अपने दुश्मन से (मैदाने जिहाद मे) मुक़ाबला करो और फिर तुम उन के गले काटो और वे तुम्हारे गले काटें (सहाबा ने कहा) क्यों नहीं या रसूलल्लाह (सल्ल०) ज़रूर बतलाइए, आप (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया (वह अ़मल) अल्लाह का ज़िक्र है।"

3- एक और हदीस में आया है कि:

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया "कोई सदक़ा (अच्छा अ़मल) अल्लाह के ज़िक्र से बेहतर नहीं है।"

4- एक और हदीस में आया है कि:

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बतलाया कि

"अल्लाह तआ़ला के कुछ फ़रिश्ते (इस पर लगे हुए) हैं कि रास्ता में घूम-फिर कर अल्लाह का जिक्र करने वालों को तलाश करते रहते हैं, पस जब वह किसी जमाअ़त को अल्लाह का जिक्र करते हुए पाते हैं तो आपस में एक दूसरे को आवाज़ देते हैं कि आओ अपने मक़सूद (ज़िक्रुल्लाह) की तरफ आ जाओ, तो वह सब फ़रिश्ते मिल कर आसमाने दुनिया तक उन जिक्र करने वालों को अपने बाज़ुओं के साथ में ले लेते हैं" हदीस आख़िर तक।

5- एक और हदीस में आया है कि:

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फरमाया "उस शख़्स की मिसाल जो अपने रब का जिक्र करता है और उस शख़्स की मिसाल जो अपने रब का जिक्र नहीं करता " जिन्दा" और " मुर्दा" जैसी है।"

6- एक और हदीस में आया है कि.

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बतलाया " जब भी कोई जमाअ़त अल्लाह तआ़ला का जिक्र करने के लिए बैठती है तो फ़ौरन रहमत के फ़रिश्ते उनको चारों तरफ से घेर लेते हैं और (अल्लाह की) रहमत उनको ढांप लेती है, सुकून व इत्मीनान उनपर बरसने लगता है। और अल्लाह तआला उन (फ़रिश्तों) से इन जिक्र करने वालों का तज्किरा करने लगते हैं जो उसके पास (मौजूद रहते) हैं।"

7- एक और हदीस में आया है कि:

एक सहाबी ने कहा " या रसूलल्लाह (सल्ल०) 'इस्लाम' के (अज्र व सवाब को वाजिब करने वाले) अहकाम तो बहुत हो गए, आप तो मुझे कोई ऐसी चीज़ बतला दीजिए जिसको मैं मज़बूत पकड़ लूँ" (और बराबर करता रहूँ) आप ने फ़रमाया: " तुम्हारी ज़बान बराबर अल्लाह के ज़िक्र से तर व ताज़ा रहनी चाहिए।

8- एक और हदीस में आया है कि:

"एक सहाबी (मआज़ इब्ने जबल रज़ि०) कहते हैं कि आख़िरी बात जिस पर मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से अलग हुआ हूँ वह यह है कि मैं ने आप (सल्ल०) से पूछा : कौन सा अ़मल अल्लाह को सबसे ज़्यादा पसंद है? आप (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया: (वह अ़मल यह है) कि तुम्हें इस हालत में मौत आए कि तुम्हारी ज़बान अल्लाह के ज़िक्र से तर हो।"

9- एक और हदीस में आया है कि:

"इन्हीं सहाबी (मआज़ रज़ि०) ने कहा: या रसूलल्लाह सल्ल० आप मुझे (कुछ) वसिय्यत कीजिए, आप ने फ़रमाया : अपनी ताक़त भर अल्लाह का तक़्वा (ख़ौफ व डर) को अपने ऊपर ज़रूरी करलो और हर पत्थर व पेड़ के पास (यानी हर जगह) अल्लाह का ज़िक्र किया करो और जो भी कोई बुरा काम कर बैठो फ़ौरन अल्लाह तआ़ला के सामने उस से तौबा करो, छुपे हुए गुनाह की तौबा छुपी हुई और खुल्लम-खुल्ला गुनाह की तौबा खुली हुई"

10- एक और हदीस में आया है कि:

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि "किसी भी शख़्स ने कोई अ़मल ऐसा नहीं किया जो अल्लाह के ज़िक्र से ज़्यादा उसको अल्लाह के अ़ज़ाब से बचाने वाला हो।"

11- इसी रिवायत में आया है कि:

"सहाबा (रज़ि०) ने कहा: (या रसूलल्लाह सल्ल०) न अल्लाह की राह में जिहाद? आपने फ़रमाया (हाँ) न अल्लाह के रास्ते में जिहाद, सिवा उस शख़्स के जो अपनी तलवार से दुश्मनों के गले इतनी ज़्यादा तादाद में काटे कि वह (तलवार) टूट जाए, (आख़िर के अल्फ़ाज़) आप (सल्ल०) ने तीन बार फ़रमाए।"

12- एक और हदीस में आया है कि:

" अगर एक इनसान की गोद में दिरहम (रुपए भरे) हों और

वह उन को (बराबर) बाँट रहा हो और दूसरा इनसान बराबर अल्लाह का ज़िक्र कर रहा हो तो अल्लाह का ज़िक्र करने वाला उस (दिरहम बाँटने वाले) से बुलन्द और अफ़्ज़ल होगा।"

13- एक और हदीस में आया है कि:

" रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जब तुम बहिश्त के बाग़ों से गुज़रा करो तो ख़ूब सेर होकर चर लिया करो (यानी ज़िक्रुल्लाह की नेमत ख़ूब अच्छी तरह हासिल कर लिया करो) सहाबा ने कहा: बहिश्त के बाग़ क्या हैं? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया: "ज़िक्र के हलक़े" (मज्मे)

14- एक और हदीसे क़ुद्सी में आया है कि:

" अल्लाह तआ़ला फ़रमाएंगे: आज तमाम मेहशर को मालूम हो जाएगा कि करम (इज़्ज़त व एहतिराम) के लायक़ कौन लोग हैं? तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पूछा गया: या रसूलल्लाह (सल्ल०) ये इज़्ज़त और एहतिराम के लायक़ कौन लोग हैं? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया: वे मस्जिदों में ज़िक्र की मज्लिसों को मुन्अक़िद करने वाले (ज़ाकिरीन) हैं।"

15- एक और हदीस में आया है कि:

" हर इनसान के दिल में दो कोठरियाँ होती हैं एक में फ़रिश्ता (रहता है) और दूसरी में शैतान। पस जब वह शख़्स अल्लाह के ज़िक्र में लग जाता है तो शैतान पीछे हट जाता है और जब अल्लाह का ज़िक्र नहीं करता तो शैतान अपनी चोंच उस के दिल में रख देता है (यानी उस के दिल पर बैठ जाता है) और (तरह-तरह के) वस्वसे डालता रहता है।"

16- एक और हदीस में आया है कि:

" जिस शख़्स ने फजर की नमाज जमाअ़त के साथ पढ़ी और फिर सूरज निकलने तक (वहीं) बैठा हुआ अल्लाह का ज़िक्र करता

रहा, फिर दो रकअतें (इशराक़ की) पढ़ीं (फिर मस्जिद से वापस आया) तो उस को एक "हज" और एक "उमरे" के बराबर सवाब मिलेगा। पूरे (हज और उमरे) का, पूरे हज और उमरे का, पूरे हज और उमरे का।"

इसी रिवायत के दूसरे अल्फ़ाज़ यह हैं "वह एक हज और एक उमरे का सवाब ले कर (मस्जिद से) लौटेगा।"

17- एक और हदीस मे आया है कि:

" (ज़िक्रुल्लाह से ग़ाफ़िल लोगों (के बीच) अल्लाह का ज़िक्र करने वाला उस मुजाहिद जैसा है जो (मैदाने जंग से) भागने वालों (की जमाअत) में डटा रहा।"

18- एक और हदीस में आया है कि:

" जो कोई जमाअत किसी भी मज्लिस में जमा हुई और अल्लाह का ज़िक्र किए बिना वहाँ से उठ गई तो यूँ समझो कि वह एक मरे हुए गधे की लाश (पर इकट्ठा हुए थे और उसे खा कर) उठ गए और उनकी यह मज्लिस क़ियामत के दिन उनके लिए बड़ी हस्रत व अफसोस का सबब होगी।"

19- एक और हदीस में आया है कि:

" जो शख्स भी किसी रास्ते पर (किसी काम के लिए) चला और इस (बीच) मे अल्लाह का ज़िक्र नहीं किया तो यह (ग़फ़लत) उस के लिए हस्रत व महरूमी का सबब होगी। और जो शख्स भी अपने बिस्तर पर लेटा और उस ने अल्लाह का ज़िक्र नहीं किया तो यह (ग़फ़लत) उस के लिए हस्रत व महरूमी का सबब होगी।"

20- एक और हदीस में आया है कि:

" एक पहाड़ दूसरे पहाड़ को उस का नाम लेकर आवाज़ देता है कि ऐ फ़लाँ (पहाड़) क्या तेरे पास से कोई ऐसा इनसान निकला है जिस ने (निकलते वक़्त) अल्लाह का ज़िक्र किया हो तो जब वह

(जवाब में) कहता है "हाँ" तो वह खुश होता है (और उस को) मुबारक बाद देता है, हदीस के अल्फ़ाज़ आखिर तक।"

21- एक और हदीस में आया है कि

" अल्लाह के नेक बन्दे वे है जो अल्लाह के ज़िक्र के लिए सूरज, चांद, हिलाल और सितारों और सायों की देख-भाल रखते हैं (और हर वक़्त और मौक़ा के मुनासिब अल्लाह का ज़िक्र करते हैं)

22- एक और हदीस में आया है कि:

(क़ियामत के दिन) जन्नत वाले किसी चीज़ पर अफसोस न करेंगे सिवाए उस साअ़त के जो उन पर गुज़र गई और उस मे उन्हों ने अल्लाह का ज़िक्र नहीं किया (क्या अच्छा होता कि उस साअ़त मे भी हम अल्लाह का ज़िक्र करते और उसका बदला और सवाब पाते)

23- एक और हदीस में आया है कि:

" तुम इतना ज्यादा अल्लाह का ज़िक्र किया करो कि लोग तुम को दीवाना कहने लगें"

24- एक और हदीस में आया है कि:

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सहाबा (रज़ि०) को हुक्म फ़रमाया करते थे कि वे तक्बीर (اَللّٰهُ اَكْبَرُ) तक्दीस (سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ) और तहलील (لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ) की तादाद का ध्यान रखा करें और उन्हें उंगलियों पर गिना करें, फ़रमाया इस लिए कि क़ियामत के दिन उन उंगलियों से पूछा जाएगा और उन्हें (बोलने की ताक़त दे कर) बुलवाया जाएगा (और वे बतलाएँगी कि कितनी तादाद में तक्बीर व तक्दीस व तहलील की थी)।

25- एक और हदीस में आया है कि:

"रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने औरतों को मुख़ातब करते हुए फ़रमाया "तुम अपनी तस्बीह (سُبْحَانَ اللّٰهِ) तक्दीस

(سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ) और तहलील (لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہُ) को अपने ऊपर ज़रूरी करलो और (कभी) उन से ग़फ़लत न करो कि तुम अल्लाह की रहमत से फ़रामोश (महरूम) कर दी जाओगी।''

26- एक और हदीस में आया है कि:

'' हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को सीधे हाँथ की उँगलियों पर तस्बीह पढ़ते हुए देखा है।''

27- एक और हदीस में आया है कि:

'' रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि: मुझे सुबह की नमाज के बाद से सूरज निकलने तक अल्लाह का ज़िक्र करने वाले लोगो के साथ बैठना इससे ज़्यादा पसंदीदा है कि मैं हज़रत इसमाईल (अ़लैहि०) की औलाद के चार ग़ुलामों को आज़ाद करूँ, और (इसी तरह) मैं उन लोगों के साथ बैठूँ जो अ़सर की नमाज़ के बाद से सूरज डूबने तक अल्लाह का ज़िक्र करते रहते हैं, यह मुझे इससे ज़्यादा पसंद है कि मैं चार ग़ुलाम (इसमाईल अ़लैहि० की औलाद से) आज़ाद करूँ।''

28- एक और हदीस में आया है कि:

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया ''अकेले सफ़र करने वाले आगे बढ़ गए, सहाबा ने कहा (या रसूलल्लाह सल्ल०) ये अकेले सफ़र करने वाले कौन लोग हैं? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया '' ज़्यादा तादाद में अल्लाह का ज़िक्र करने वाले मर्द और औरतें।''

इसी रिवायत के दूसरे अल्फ़ाज़ में है अल्लाह के ज़िक्र के आशिक़, ये अल्लाह का ज़िक्र उन के (गुनाहों के) बोझ हलके करता रहता है, चुनान्चे वे क़ियामत के दिन (अल्लाह के दरबार में) हलके-फुलके हो कर आएंगे।

29- एक और हदीस में आया है कि:

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बतलाया कि ''अल्लाह तआ़ला ने हज़रत यहया बिन ज़करिया (अ़लैहि०) को पाँच बातों का हुक्म दिया कि वे ख़ुद भी उनपर अ़मल करें और बनी इसराईल को भी हुक्म दें कि वे भी उन पर अ़मल करें (रिवायत करने वाले ने) पूरी हदीस बयान की, यहाँ तक कि हज़रत यहया ने कहा कि मैं तुम को हुक्म देता हूँ कि तुम (बहुत ज़्यादा) अल्लाह का ज़िक्र किया करो इसलिए कि ज़िक्र करने वाले की मिसाल उस शख़्स जैसी है जिसका पीछा करते हुए दुश्मन बड़ी तेज़ी के साथ निकला हो और वह (शख़्स भागते भागते) एक महफ़ूज़ क़िले तक पहुँच गया हो और उसमें पनाह लेकर दुश्मन से अपनी जान बचा ली हो, बिल्कुल इसी तरह अल्लाह का बन्दा (अपने दुश्मन) शैतान से अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र के सिवा और किसी चीज़ से अपने आपको नहीं बचा सकता।''

30- एक और हदीस में आया है कि:

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि ''ख़ुदा की क़सम दुनिया में कुछ लोग नरम-नरम गद्दों पर लेट कर भी (सोने के बजाए) अल्लाह का ज़िक्र किया करते हैं, उन्हें अल्लाह तआ़ला जन्नत के ऊंचे दरजात में दाख़िल फ़रमाएगा।''

31- एक और हदीस में आया है कि:

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि ''बेशक वे लोग जिन की ज़बानें हमेशा अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र से तर (व ताज़ा) रहती हैं, वे मुस्कराते हुए जन्नत में जाएँगे।''

दुआ मांगने के आदाब का बयान

दुआ मांगने के कुछ आदाब तो रुक्न की हैसियत रखते हैं और कुछ शर्त की हैसियत रखते हैं और कुछ मामूरात हैं (जिन को अपनाने का हुक्म दिया गया है) और कुछ मन्हियात हैं (जिनसे रोका गया है) वे आदाब ये हैं

1 खाने, पीने, पहनने और कमाने (रोज़ी कमाने के असबाब) में हराम से बचना। (शर्त)

2- अल्लाह जल्ल शानुहू के लिए इख्लास। (रुक्न)

3- दुआ मांगने से पहले कोई नेक काम करना (जैसे सद्क़ा देना, या नमाज़ पढ़ना वग़ैरा) सख्तियों और मुसीबतों के वक़्त ख़ास तौर पर अपने नेक आमाल का ज़िक्र करना (यानी उनके वसीले से दुआ मांगना (मुस्तहब)।

4- (नापाकी और नजासत, गन्दगी और ग़लाज़त से) पाक और (मैल कुचैल से) साफ़ (व सुथरा) होना। (मुस्तहब)

5- वुज़ू करना। (मुस्तहब)

6- क़िब्ला की तरफ़ रुख़ करना। (मुस्तहब)

7- (दुआ मांगने से पहले) नमाज़े (हाजत) पढ़ना। (मुस्तहब)

8- (दुआ मांगने के लिए) दोज़ानू बैठना। (मुस्तहब)

9- (दुआ मांगने से) पहले और बाद में अल्लाह तआला की हम्द व सना करना। (मुस्तहब)

10- इसी तरह (दुआ के) शुरू और आख़िर में नबी अलैहि० पर दुरूद व सलाम भेजना। (मुस्तहब)

11- दोनों हाथ फैला कर दुआ मांगना। (मुस्तहब)

12- (मांगने वाले की तरह) दोनों हाथ ऊपर उठाना। (मुस्तहब)

13- दोनों हाथों को मोंढों तक उठाना। (मुस्तहब)

14- दोनों हाथों को खुला रखना। (मुस्तहब)

15- (दुआ के वक़्त ज़बान व अमल से) अल्लाह तआला के दर्जे और रुतबे के मुताबिक़ अदब व एह्तिराम को अपनाना। (मुस्तहब)

16- (दुआ मांगने में) आजिज़ी व इन्किसारी को अपनाना। (मुस्तहब)

17- गिड़-गिड़ाना। (मुस्तहब)

18- दुआ मांगने के वक़्त आसमान की तरफ़ निगाह उठाना। (मकरुह)

19- अल्लाह तआला के "असमाए हुसना" और आला सिफ़ात का वासता दे कर दुआ मांगना। (मुस्तहब)

20- दुआ में जान बूझ कर तुक बन्दी करने से न बचना। (मकरुह)

21- दुआ में जान बूझ कर नग़मा सराई और ख़ुश इलहानी को अपनाना। (मकरुह)

22- अम्बिया अलैहिस्सलाम के वसीले से दुआ मांगना। (मुस्तहब)

23- अल्लाह के नेक बन्दो (अवलिया अल्लाह) के वसीले से दुआ मांगना। (मुस्तहब)

24- दुआ में आवाज़ को हलकी रखना (धीमी आवाज में दुआ मांगना)। (मुस्तहब)

25- अपने गुनाहों का इक़रार करना। (मुस्तहब)

26- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जो दुआएँ सही हदीसों में आई हैं उन्हीं को अपनाना, क्योंकि आप ने किसी दूसरे को बतलाने की ज़रूरत ही नहीं छोड़ी है, (यानी वे तमात ज़रूरतें और हाजतें जिन के लिए इनसान दुआ मांगता है आप ने उन सब के लिए दुआएँ बतला दी हैं)। (मुस्तहब)

27- जामे (तमाम ज़रूरियात पर हावी) दुआएँ इख़्तियार करना। (मुस्तहब)

28- दुआ ख़ुद अपनी तरफ़ से शुरू करे और फिर अपने माँ-बाप और तमाम मोमिन भाइयों के लिए दुआ करे (यानी पहले अपने लिए फिर दर्जा ब-दर्जा दूसरे लोगों के लिए दुआ मांगे। (मुस्तहब)

29- अगर इमाम हो तो अकेले अपने लिए दुआ न मांगे बल्कि अपने और तमाम मुक़्तदियों के लिए दुआ मांगे, जैसे "मेरी" की जगह "हमारी" या "मैं" की जगह "हम" के अल्फ़ाज़ कहे)। (मुस्तहब)

30- पूरे यक़ीन और भरोसे के साथ दुआ मांगना (कि अल्लाह तआला दुआ यक़ीनन क़बूल करते हैं और मैं बिना किसी शक व शुबह के दुआ मांगता हूँ, साथ ही दुआ को अपनी तरफ़ से किसी चीज़ पर मौक़ूफ़ न करे, जैसे यह न कहे कि अगर तू चाहे तो मेरा क़र्ज़ आदा करदे, बल्कि इस तरह दुआ मांगे "इलाही मेरा कर्ज आदा करदे" (रुक्न)

31- ख़ूब शौक़ और लगन के साथ दुआ मांगे (बे दिली से दुआ न मांगे)। (मुस्तहब)

32- दिल (की गहराइयों) से पूरी कोशिश व लगन से दुआ मांगे और दिल (दुआ की तरफ़) पूरी तरह मुतवज्जह हो और

अल्लाह से अच्छा गुमान रखे। (रुक्न)

33- एक ही दुआ बार बार मांगने का कम से कम दर्जा तीन बार है, (यानी हर दुआ कम से कम तीन बार मांगे) (मुस्तहब)

34- किसी दुआ पर अड़ा न रहे (कि मेरी यह दुआ तुझे क़बूल करनी ही होगी)। (मकरूह)

35- किसी गुनाह की या क़ता रहमी (नाता तोड़ने) की दुआ न करे। (शर्त)

36- जो चीज़ तैशुदा हो चुकी है उस (के ख़िलाफ़) दुआ न मांगे (जैसे इलाही तू मुझे औरत से मर्द या मर्द से औरत बना दे) (शर्त)

37- दुआ में हद से न गुज़रे कि किसी ना मुम्किन काम की दुआ मांगे। (शर्त)

38- अल्लाह की रहमत में तंगी न करे (जैसे इलाही तू मेरी ही मग़्फ़िरत कर और किसी की न कर)। (मकरूह)

39- अपनी तमाम ज़रूरतें (छोटी हों या बड़ी कितनी ही छोटी क्यों न हों) अल्लाह से मांगे। (शर्त)

40- दुआ मांगने वाला और सुनने वाला दोनों आमीन कहें। (मुस्तहब)

41- दुआ से फ़ारिग़ होकर दोनों हाथ मुहँ पर फेरे। (मुस्तहब)

42- दुआ की कबूलियत मे जल्द बाज़ी न करे, जैसे यूँ कहे "दुआ पूरी होने में ही नहीं आती" या "मैंने दुआ की थी क़बूल ही नहीं होई।" (शर्त)

ज़िकरुल्लाह (अल्लाह के ज़िक्र) के आदाब का बयान

उलमाए (क़ुरआन व हदीस) ने फ़रमाया है कि:

1- ज़िक्र करने वाला जिस जगह पर ज़िक्र करे वह जगह (उन तमाम चीज़ो से जो तवज्जोह को हटाने और ख़्यालात को मुंतशिर करने वाली हों) ख़ाली और पाक व साफ़ होनी चाहिए।

2- और ज़िक्र करने वाले में (दुआ के आदाब में) ऊपर लिखी हुई बातों (जैसे इख़्लास, ख़ुशू व ख़ुज़ू, ज़ाहिरी व बातिनी पाकी व सफ़ाई वग़ैरा) होनी चाहिए (इस्लिए कि ज़िक्रुल्लाह सबसे अफ़्ज़ल इबादत है इसलिए उस में दुआ से बहुत ज़्यादा ताज़ीम व एह्तियात व एह्तिमाम की ज़रूरत है)।

3- और ज़िक्र करने वाले का मुँह और ज़बान बिल्कुल पाक व साफ़ होनी चाहिए, अगर किसी चीज़ की महक मुँह में हो तो मिस्वाक करके उस को ज़रूर दूर कर लेना चाहिए।

4- अगर किसी जगह बैठ कर ज़िक्र कर रहा हो तो रुख़ क़िब्ले की तरफ़ होना चाहिए।

5- और आजिज़ी व इन्किसारी, सुकून व इत्मीनान, वक़ार व एह्तिमाम और दिल की पूरी तवज्जोह के साथ ज़िक्र के लिए बैठे।

6- और जो भी ज़िक्र करे उसका मतलब भी अच्छी तरह समझे और उसमें ग़ौर व फ़िक्र करे।

7- और अगर किसी ज़िक्र का मतलब न जानता हो तो (किसी आलिम से) पूछ ले और समझ ले।

8- और तादाद ज़्यादा करने के ख़्याल से जल्द बाज़ी न करे। इसी लिए उलमा ने कलिमए तय्यिबा के ज़िक्र में ला इलाह इल्लल्लाह में "ला" के मद को ख़ूब अच्छी तरह खींचने (और इल्लल्लाह पर ज़ोर देने) को मुस्तहब फ़रमाया है।

9- और जो भी ज़िक्र हुज़ूर अलैहिस्सलाम से साबित है चाहे वह वाजिब हो या मुस्तहब, जब तक उस को ज़बान से इस तरह अदा न करे कि ख़ुद सुन ले उस वक़्त तक उसका कुछ एतिबार नहीं (यानी दिल ही दिल में सोचना ज़िक्र नहीं कहलाता)।

10- और सबसे ज़्यादा फ़ज़ीलत वाला ज़िक्र क़ुरआने अज़ीम है सिवा उन अज़्कार के जो हुज़ूर अलैहिस्सलाम से ख़ुसूसियत के साथ साबित हैं (कि उस जगह वही ज़िक्र करना चाहिए जो आप (सल्ल०) ने बतलाया है, जैसे रुकूअ में आप ने سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْم बतलाया है और सजदे में سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلٰى इसलिए रुकूअ और सजदे में यही पढ़ना चाहिए, क़ुरआन नहीं पढ़ना चाहिए, इसी लिए आप ने रुकूअ और सजदे में क़ुरआन पढ़ने से रोका है)।

11- और ज़िकरुल्लाह की फ़ज़ीलत तह्लील لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰه तस्बीह سُبْحَانَ اللّٰه तक्बीर اَللّٰهُ أَكْبَر में मुन्हसिर नहीं है बल्कि किसी भी अमल (क़ौल या फ़ेल) में अल्लाह तआला की इताअत करने वाला, अल्लाह का ज़िक्र करने वाला है। (और वह अमल ज़िक्र है।)

12- और जब बन्दा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मन्क़ूल मुख़्तलिफ़ अज़्कार, मुख़्तलिफ़ हालात और मुख़्तलिफ़ अवक़ात में रात दिन, सुबह शाम पाबन्दी के साथ

पढ़ता रहेगा तो अल्लाह तआला के यहाँ बहुत ज़्यादा ज़िक्र करने वाले मर्दों और औरतों में शामिल हो जाएगा (जिन का ज़िक्र क़ुरआने अज़ीम में आया है)

13- और जिस शख़्स का कोई वज़ीफ़ा रात या दिन के किसी हिस्से में या किसी नमाज़ के बाद या इन के अलावा और भी किसी वक़्त और हालत में मुक़र्रर हो (और वह पाबन्दी के साथ उसको पढ़ा करता हो) अगर किसी दिन वह छूट जाए तो उसको बाद में ज़रूर पढ़ लेना चाहिए और जिस वक़्त भी मुम्किन हो उसको पढ़ लेना और पूरा करलेना चाहिए और उस दिन बिल्कुल ही न छोड़ना चाहिए ताकि वह पाबन्दी की आदत बाक़ी रहे, उसकी क़ज़ा में काहिली बिल्कुल न करनी चाहिए (कि बहुत नुक़्सानदेह है)

ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन हज़रत उमर (रज़ि०) ने फ़रमाया

अपनी अवक़ात को न भूलो कि

• तुम क्या थे और क्या बन गए, तुम्हारे बड़े-बड़े मकानात और इकट्ठा किया हुआ माल हरगिज़ तुम्हारी बख़्शिश न करा सकेगा।

उन वक़्तों का बयान जिन में दुआ क़बूल होती है

जिन वक़्तों में दुआ क़बूल होती है वे यह हैं:

1- शबे क़दर (ज़्यादा उम्मीद यही है कि शबे क़दर रमज़ान के आख़िर के दस दिनो की ताक़ रातों में यानी 21, 23, 25, 27 या 29वीं रात में आती है। 21वीं और 27वीं रात के बारे में सबसे ज़्यादा गुमान है)।

2- अरफ़ा का पूरा दिन (ज़िल्हिज्जा की नवीं तारीख़)।

3- रमज़ानुल मुबारक का (पूरा) महीना।

4- जुमे की रात (यानी जुमेरात और जुमे के बीच वाली रात)।

5- जुमे का पूरा दिन।

6- (हर दिन) रात का दूसरा आधा हिस्सा।

7- (हर दिन) रात का पहला तिहाई हिस्सा।

8- (हर दिन) रात का आख़िरी तिहाई हिस्सा।

9- (हर दिन) रात के आख़िरी हिस्से में।

सबसे ज़्यादा दुआ क़बूल होने की उम्मीद जुमा की (दुआ क़बूल होने की) साअत में है। उस साअत के वक़्त (के बारे में अलग-अलग हदीसो के तहत नीचे लिखे हुए अक़्वाल हैं):

(1) यह साअत इमाम के ख़ुत्बे के लिए (मिम्बर पर) बैठने से लेकर नमाज़े जुमा के ख़त्म होने तक है।

(2) जमाअत खड़ी होने के वक़्त से लेकर सलाम फेरने तक है।

(3) दुआ करने वाला जब खड़ा हुआ जुमे की नमाज़ पढ़ रहा

हो वही वक़्त है।

(4) कुछ उलमा कहते हैं कि जुमा के दिन असर की नमाज़ के बाद से सूरज गुरूब होने तक है।

(5) कुछ उलमा कहते हैं कि जुमा के दिन की आखिरी साअत है।

(6) कुछ उलमा कहते हैं (जुमा के दिन) सुबहे सादिक़ से ले कर सूरज निकलने तक है।

(7) कुछ उलमा कहते हैं (जुमा के दिन) सूरज निकलने के बाद है।

(8) मशहूर सहाबी अबू ज़र ग़िफ़ारी (रज़ि०) का मानना यह है कि क़बूलियत की साअत जुमा के दिन दोपहर सूरज ढलने के थोड़ी देर बाद से एक हाथ के बराबर सूरज ढलने तक है।

(9) इमामे नववी (रह०) का कहना है कि :

(इस साअत का ठीक-ठीक वक़्त कि उसके अलावा हो ही नहीं सकता, वह है जो "सहीह मुस्लिम" में हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ि०) से साबित है (कि क़बूलियत का वक्त इमाम के ख़ुत्बे के लिए मिम्बर पर बैठने से लेकर नमाज़ ख़त्म होने तक है। (यही सबसे पहला क़ौल है)

उन हालतों का बयान जिन में दुआ क़बूल होती है

(दुआ करने वाला नीचे लिखी हुई हालतों में दुआ करे तो उम्मीद है कि अल्लाह तआला ज़रूर क़बूल फ़रमाएंगे)

1- नमाज़ की अज़ान होने के वक़्त (यानी अज़ान सुनने अज़ान का जवाब देने और अज़ान की दुआ पढ़ने के बाद दुआ करे)।

2- अज़ान और तक्बीर के बीच (यानी अज़ान व इक़ामत के

बीच जहाँ भी मौक़ा मिल जाए दुआ करे)।

3- जो शख़्स किसी मुसीबत या परेशानी में फंसा हुआ हो حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ के बाद दुआ करे।

4- अल्लाह की राह में (जिहाद) में सफ़ें बाँधने की हालत में दुआ करे।

5- जब घमासान की जंग हो रही हो, एक दूसरे पर हमले कर रहे हो उस हालत में दुआ करे।

6- फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद (यानी जमाअत से नमाज़ पढ़े और सलाम फेरने के बाद) दुआ करे।

7- और (नमाज़ में) सजदे के अन्दर (मगर वही दुआ मांगे जो क़ुरआन व हदीस मे आई हो)।

8- क़ुरआने करीम की तिलावत (से फ़ारिग़ होने) के बाद।

9- ख़ास कर ख़त्मे क़ुरआन के बाद (चाहे ख़ुद ख़त्म किया हो, चाहे किसी दूसरे ने)

10- ख़ास कर क़ुरआन ख़त्म करने वाले की दुआ।

11- ज़म्ज़म का पानी पीने की हालत में(यानी ज़म्ज़म के कुए पर खड़े होकर पानी पिए और दुआ करे)।

12- मरने वाले की रूह निकलते वक़्त (ख़ुद मरने वाला भी दुआ करे और वहाँ मोजूद लोग भी दुआ करें, इसी तरह) मय्यित के पास आने के वक़्त दुआ करे।

13- मुर्ग़ की अज़ान के वक़्त(यानी मुर्ग़ की अज़ान सुन कर दुआ करे)।

14- मुसलमानों के (दीनी) इज्तिमाआत मे (उन मुसलमानों के साथ या अकेले मे दुआ करे)

15- ज़िक्र की मजलिसों मे (चाहे ज़िक्रुल्लाह का हल्क़ा हो, चाहे क़ुरआन व हदीस की तालीम का, चाहे वाज़ व नसीहत का)

16- इमाम के वलज़्ज़ाल्लीन कहने के बाद।

17- मय्यित की आँखें बन्द करते वक़्त।

18- नमाज़ की इक़ामत (तक्बीर) के वक़्त।

19- बारिश बरसने के वक़्त, इमाम शाफ़ई (रह०) ने अपनी किताब "अल-उम्म" में इस हदीस को मुर्सलन रिवायत किया है और फ़रमाया है कि "मैं ने बहुत से उलमाए हदीस से बारिश बरसने के वक़्त दुआ क़बूल होने (की हदीस को सुना और) याद किया है।

20- इमामे जज़री (रह०) फ़रमाते हैं

काबा मुकर्रमा को देखने के वक़्त (चाहे मक्का मुअज़्ज़मा पहुँच कर पहली बार देखे, या जिस वक़्त भी काबा पर निगाह पड़े दुआ करे)।

उन जगहों का बयान जिन में दुआ क़बूल होती है

1- तमाम मुक़द्दस मक़ामात। इमाम हसन बसरी (रह०) ने मक्के वालों के नाम एक ख़त लिखा, उसमें वे (मक्का मुअज़्ज़मा में) दुआ के क़बूल होने के ये मक़ामात बयान करते हैं:-

(1) तवाफ़ की जगह (मताफ़) में।

(2) मुल्तज़िम के पास (ख़ान-ए-काबा का वह हिस्सा जिससे तवाफ़ करने वाले चिमटते हैं, यह हजरे अस्वद और काबा के दरवाज़े के बीच चार हाथ के बराबर जगह है)।

(3) मीज़ाब (ख़ान-ए-काबा की छत के परनाला) के नीचे।

(4) बैतुल्लाह के अनदर।

(5-6) सफ़ा और मरवा (पहाड़ियों) पर।

(7) मस्आ (सफ़ा और मरवा के बीच दौड़ने की जगह) में।

(8) मक़ामे इबराहीम के पीछे।

(9) (मैदाने) अरफ़ात में (जहाँ 9 ज़िल्हिज्जा को ज़वाल के

बाद से ग़ुरूब तक ठहरते हैं और यही हज का अहम रुक्न है)।

(10) मुज़्दलिफ़ा में (जहाँ हाजी लोग अरफ़ात से वापस आकर मग़रिब व इशा की नमाज़ पढ़ते हैं और रात गुज़ारते हैं।

(11) मिना में (जहाँ दसवीं तारीख़ को हाजी जमरों पर कंकरियाँ मारते, क़ुर्बानी करते हैं)

(12-13-14) तीनों जमरों के पास (यह तीन टीले हैं जिन पर हाजी कंकरियाँ मारते हैं)

2- इमाम जज़री (रह०) फ़रमाते हैं:-

"अगर नबी अलैहिस्सलाम (के रौज़-ए-अक़दस) के पास दुआ क़बूल न होगी तो फिर किस जगह क़बूल होगी (यानी रौज़-ए-अक़दस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तो दुआ क़बूल होने की वह मुक़द्दस जगह है कि उसको तो फ़ेहरिस्त में सबसे पहले रखा जाना चाहिए।

इसके अलावा मुल्तज़िम के पास दुआ की क़बूलियत की एक हदीसे मुसल्सल भी हमें मक्का के रावियों से पहुँची है।

दुआ की क़बूलियत पर शुकराना

जिस शख़्स की जब भी कोई दुआ क़बूल हो तो ये कलिमात शुक्र के तौर पर अदा करे:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ بِعِزَّتِهٖ وَجَلَالِهٖ تَتِمُّ الصَّالِحَاتُ ۰

अल्लाह की ज़ाते पाक का बहुत-बहुत शुक्र है जिसकी इज़्ज़त व बड़ाई के सदक़े में अच्छे काम पूरे होते हैं।

उन लोगों का बयान

जिनकी दुआएँ बारगाहे इलाही में (जल्द) क़बूल होती हैं

(हदीसों मे साबित है कि नीचे लिखे हुए लोगों की दुआएँ ख़ास कर क़बूल होती हैं:

1- मजबूर व लाचार और बे सहारा लोग।

2- मज़लूम और सितम रसीदा लोग (एक रिवायत में है कि) अगर्चे वे गुनहगार हों (एक रिवायत में है) अगर्चे वे काफ़िर ही हों।

3- बाप की दुआ (अपनी औलाद के लिए)

4- इमामे आदिल की दुआ (अदल व इन्साफ़ करने वाले ख़लीफ़ा या बादशाह या हुक्मराँ की दुआ अपनी रिआया के लिए)

5- हर अच्छे काम करने वाले की दुआ।

6- माँ-बाप के साथ अच्छा सुलूक करने वाली और ख़िदमत करने वाली औलाद की दुआ (अपने माँ-बाप के लिए)

7- मुसाफ़िर की दुआ।

8- रोज़ा दार की दुआ रोज़ा इफ़्तार करने के वक़्त।

9- एक मुसलमान की दुआ अपने दूसरे मुसलमान भाई के लिए उस की पीठ पीछे ।

10- हर मुसलमान की दुआ जब तक कि वह किसी पर ज़ुल्म करने या क़ता रहमी (रिश्ते दारों के हक़ मारने) की दुआ न करे या (दुआ करके मायूसी या शिकायत के तौर पर) यह न कहे कि मैंने दुआ मांगी थी वह क़बूल ही नहीं हुई।

11- एक और हदीस में आया है कि "अल्लाह तआला के कुछ (अज़ाबे जहन्नम से) आज़ाद (मुक्त) किए हुए बन्दे हैं जिन में से हर एक की दिन रात में एक "दुआ" (ज़रूर) क़बूल होती है।"

और जामे अबू मन्सूर मे (एक रिवायत) है कि " सच्ची दुआ हाजी की होती है यहाँ तक कि वह (अपने घर हज से) लौट आए।"

इस्मे-आज़म और दुआ की क़बूलियत में उसके असर का बयान

1- एक हदीस में आया है कि :

"अल्लाह तआला का वह इस्मे-आज़म जिसके साथ जो भी दुआ की जाए अल्लाह तआला उसको क़बूल करते हैं और उसके साथ जो भी अल्लाह से सवाल किया जाए अल्लाह तआला उसको पूरा कर देते हैं, इस आयते करीमा मे है:

لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ

(अल् अम्बिया, 87)

(ऐ अल्लाह) तेरे सिवा कोई माबूद नहीं है तू पाक है, बेशक मैं ही ज़ुल्म करने वालों मे से हूँ।

2- एक और हदीस में आया है:

अल्लाह तआला का वह इस्मे-आज़म जिस के साथ अल्लाह से जो भी दुआ मांगी जाए (ज़रूर) देता है और जो भी दुआ की जाए अल्लाह (ज़रूर) क़बूल करता है, यह है:-

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ بِاَنِّیْ اَشْهَدُ اَنَّكَ اَنْتَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ الْاَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِیْ لَمْ یَلِدْ وَلَمْ یُوْلَدْ وَلَمْ یَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ

इलाही! मैं तुझसे सवाल करता हूँ इस लिए कि मैं गवाही देता हूँ कि तू ही अल्लाह है, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं है, तू अकेला है, बेनयाज़ है, जिस से न कोई पैदा हुआ और न वह किसी से पैदा हुआ और न ही कोई उस के बराबर का (हमसर) है।

कुछ रिवायतों में इसी हदीस के अल्फ़ाज़ यह हैं

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ بِاَنَّكَ اَنْتَ اللّٰهُ الْاَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِیْ لَمْ یَلِدْ وَلَمْ یُوْلَدْ وَلَمْ یَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ

ऐ अल्लाह! मैं तुझ से सवाल करता हूँ इस लिए कि तू ही अल्लाह है, अकेला है, बेनियाज़ है जिस से न कोई पैदा हुआ, न किसी से पैदा हुआ न कोई उस का हमसर है न वह किसी से पैदा हुआ।

3- एक और हदीस में आया है कि

अल्लाह तआला का वह बुज़ुर्ग नाम जिस से जब भी दुआ की जाए अल्लाह ज़रूर क़बूल फ़रमाते हैं और जो भी मांगा जाए अता कर देते हैं, यह है

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ بِاَنَّ لَكَ الْحَمْدَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِیْكَ لَكَ الْحَنَّانُ الْمَنَّانُ بَدِیْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ یَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

ऐ अल्लाह! मैं तुझ से सवाल करता हूँ, इस लिए कि तेरी ही सब तारीफ़ है, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं है तू अकेला है, तेरा कोई शरीक नहीं है, (तू) बहुत ज़्यादा मेहरबान है, बहुत ज़्यादा एहसान करने वाला है, आसमानों और ज़मीन का तू ही (बे मिसाल) ईजाद करने वाला है, ऐ (बड़ाई व) जलाल और (इकराम व) एहसान के मालिक!

और कुछ रिवायतों में یَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ की जगह یَا حَیُّ یَا قَیُّوْمُ (ऐ हमेशा ज़िन्दा रहने वाले, और सब को क़ायम रखने वाले) भी उस के आख़िर में आया है।

4- (1) وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ

(बक़रा, आ० 163)

और तुम्हारा माबूद तो वही एक माबूद है उस के अलावा कोई माबूद नहीं, वह बड़ा ही रहम करने वाला और बहुत ही मेहरबान है

(2) الٓمّٓ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ

(आले इमरान, आ० 1)

अलिफ़० लाम० मीम० अल्लाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं वही (हमेशा) ज़िन्दा रहने वाला और (सब का) क़ायम रखने वाला है।

5- एक और हदीस में आया है कि अल्लाह का इस्म-आज़म तीन सूरतों में है

(1) सूरः बक़रः (2) सूरः आले-इमरान (3) सूरः ताहा

6- क़ासिम (बिन अब्दुर-रहमान) ने कहा है

मैं ने (इस हदीस के बाद) इस को तलाश किया तो اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ को इस्मे आज़म पाया।

7- इमाम जज़री (रह०) फ़रमाते हैं -

" मेरे नज़दीक इस्म-आज़म اَللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ है ताकि (सब) हदीसें मुवाफ़िक़ व मुताबिक़ हो जाएँ, और इसलिए भी कि तबरानी की "किताबुद-दुआ" की हदीस जो यूनुस बिन अब्दुल-आला से रिवायत है वह भी इस की ताईद करती है।

अल्लाह बेहतर जानने वाला है।

और कहते हैं

यह क़ासिम अब्दुर-रहमान के बेटे शाम के रहने वाले ताबई हैं हज़रत अबू उमामा (रज़ि०) के भरोसेमन्द शागिर्द हैं।

❁

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

صَلَوٰتُ اللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَاَنْبِيَآئِهٖ وَرُسُلِهٖ وَجَمِيْعِ خَلْقِهٖ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلَيْهِ وَعَلَيْهِمُ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ

तर्जुमा:

ख़ुदा और फ़रिश्ते और पैग़म्बरों, नबियों, रसूलों और पूरी मख़्लूक़ की तरफ़ से दुरूद और रहमत हो हमारे सरदार पर जिन का नाम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है और आप (सल्ल०) की उम्मत पर और सब पर दुरूद व सलाम, रहमत व बरकत नाज़िल हो।

फ़ायदा :

जो शख़्स जुमे के दिन एक सौ (100) बार और हर दिन तीन बार यह दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा तो अल्लाह तआला पूरी मख़्लूक़ की गिन्ती के बराबर सवाब अता करेगा और क़ियामत के दिन आप (सल्ल०) की जमाअत के साथ रहेगा और हुज़ूर (सल्ल०) हाथ पकड़ कर जन्नत में दाख़िल करेंगे।

फ़ज़ाइले दुरूद शरीफ़

हज़रत अब्दुल-वह्हाब शारानी (रह०) ने "मीज़ान" में नक़ल फ़रमाया है कि जो शख़्स इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ेगा इतना सवाब पाएगा कि अगर हज़ार फ़रिश्ते 70 दिन तक या 70 फ़रिश्ते हज़ार दिन तक इसके सवाब को लिखें तो न लिख सकेंगे; वह यह है :

جَزَى اللّٰهُ عَنَّا سَيِّدَنَا مُحَمَّدًا
صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ
بِمَا هُوَ اَهْلُهٗ

एक और दुरूद शरीफ़ बहुत ज़्यादा सवाब वाला यह है:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
وَّعَلٰٓى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
فِى الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ وَفِى
الْمَلَاِ الْاَعْلٰٓى اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ

दुआए ख़ैर

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

ऐ अल्लाह! ऐ ग़फ़ूरुर-रहीम !! हमारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा, ऐ अल्लाह हम गुनाहों से शर्मिन्दा हैं। ऐ अल्लाह हम गुनाहों से तौबा करते हैं, तू हमारी ख़ताओं को माफ़ कर, ऐ अल्लाह जो गुनाह जान कर किए हैं, उन्हें भी माफ़ फ़रमा और जो अन्जाने में हुए हैं उन्हें भी माफ़ कर। ऐ अल्लाह हमारे मर्दों और औरतों को नमाज़ का पाबन्द बना दे। ऐ अल्लाह हमारी इबादतों को क़बूल कर, ऐ ग़फ़ूरुर-रहीम सब मुसलमानों को नेक बना दे, ऐ अल्लाह हमें हर तरह की बुरी आदतों से बचा, ऐ अल्लाह ऐसे काम की तौफ़ीक़ दे जिससे लोग अच्छाई के साथ याद करें, मुसलमानों को हर आफ़त व मुसीबत से बचा। ऐ अल्लाह इस्लाम का बोल बाला हो, मुसलमानों को दीन व दुनिया में इज़्ज़त दे, ऐ अल्लाह क़ैदियों को क़ैद से आज़ाद करदे, ऐ अल्लाह बीमारों को शिफ़ा दे, ऐ अल्लाह लाचारों को क़ुव्वत और ताक़त दे, ऐ अल्लाह हमें शिर्क और बिद्अत से बचा, ऐ अल्लाह हमें मरते वक़्त कलिमा नसीब कर, ऐ अल्लाह हमारे तमाम दुख-दर्द सदमे दूर करके हमारे घर को आबाद रख, ऐ अल्लाह हमारे घर वालों में सब में सच्ची मुहब्बत और प्यार अता कर, ऐ

अल्लाह बिछड़ों को मिला दे, ऐ अल्लाह रूठे हुओं को मना दे, ऐ अल्लाह हमारी दिली तमन्नाएँ पूरी फ़रमा, मुसलमानों को देश प्रदेश में चैन, अमन और सलामती अता कर, ऐ अल्लाह तंगदस्तों की तंगदस्ती दूर कर, ऐ अल्लाह जो बे औलाद हैं उन्हें औलाद अता कर, ऐ अल्लाह हमारी औलाद और उसकी नस्ल से जो उसके बाद चले उन सब को भी नेक कीजियो, ऐ अल्लाह जो सफ़र में हैं उन्हें ख़ैरियत से रखियो, ऐ अल्लाह हमारे मुर्दों की मग़फ़िरत फ़रमा, उनकी क़ब्रों पर रहमत नाज़िल कर, उनकी रूहों को ठंडा रख, उनको ऊँचे दरजात अता कर, ऐ अल्लाह तेरे तमाम मुसलमान बन्दों को प्यारे नबी की शिफ़ाअत नसीब हो, ऐ अल्लाह आख़िरत में अपना दीदार नसीब करना, जन्नतुल-फ़िरदौस के ऊँचे दरजात अता करना, पुल-सरात पर साबित क़दम रखना, ऐ अल्लाह हमारे आमाल नामे दाएँ हाथ में अता करना, और आख़िरत में रुसवाई से बचाना, ऐ अल्लाह दुनिया की तमाम मुश्किलात को दूर कर दीजियो, ऐ अल्लाह काफ़िरों और दुश्मनों के फ़रेब और धोके से मुसलमानों को निजात दीजिए, या अल्लाह हमारी यह दुआ क़बूल फ़रमा, आमीन सुम्म आमीन।

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ
وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

दुआए मुस्तजाब

इस बुज़ुर्गवार दुआ की यह अस्नाद है, जो कोई हर दिन इस दुआ को पढ़े अगर हर दिन न पढ़ सके तो हफ्ते में एक बार पढ़े अगर हफ्ते में भी न पढ़ सके तो महीने में एक बार पढ़े, अगर महीने में भी न पढ़ सके तो उमर भर में एक बार पढ़े, अगर खुद भी न पढ़ सके तो किसी दूसरे से पढ़वा कर सुन ले, अगर सुन भी न सके तो इस दुआए शरीफ को अपने पास निगाह के सामने रखे, अल्लाह तआला उस बन्दे पर दोज़ख के दरवाज़े बन्द कर देगा और उस के लिए बहिश्त के दरवाज़े खोल देगा और जो बन्दा इस दुआ को पढ़ कर खुदा तआला से अपनी हाजत मांगेगा अल्लाह तआला उस को अता फरमाएगा और सात चीज़ों से महफूज़ रहेगा।

(1) सख्ती से (2) दुनिया की तक्लीफ से (3) मौत के वक्त की सख्ती से (4) अज़ाबे क़ब्र से (5) मुन्कर और नकीर के सवालों से (6) कियामत की सख्ती से (7) दोज़ख के अज़ाब से और अल्लाह तआला बहिश्त में उस के लिए अपना दीदार नसीब करेगा और उस बन्दे को अल्लाह तआला मक्कारों के मकर, और चुगल खोरों की चुगली से और सालों के ज़ुल्म और ज़ालिमों के ज़ुल्म और बुरा कहने वालों की ज़बान और शैतान की शरारत और सांप व बिच्छू की आफत और बिजली की सख्ती और दोनो जहान की 70 हज़ार मुसीबतों से महफूज़ रहेगा और इस की बरकत से छोटे-बड़े सब गुनाह माफ कर देगा अगर्चे उस के गुनाह

दरख्तों के पत्तो और बारिश की बूंदो और परिंदो और जानवरों से भी ज्यादा होंगे, हक तआला माफ फरमा देगा, और उस के आमाल में हजार नेकी लिखेगा, आदमी के बदन में 70 हजार बलाएँ हैं, जो कोई इस दुआ को पढेगा या इस को अपने पास रखेगा तो ऐसी बलाओं से महफूज़ रहेगा, जैसे सर का दर्द, कनपटी का दर्द, आँख का दर्द, कान का दर्द, दांतो का दर्द, सीने का दर्द, कमर का दर्द, घुटनो का दर्द, हड्डियों का दर्द, बच्चे के पैदा होने के वक्त का दर्द इस के अलावा हर तरह के दर्दों और तक्लीफों से बचा रहेगा और जो बीमारी होगी जैसे नासूर और मसाने की पथरी, पेट के कीड़े, खून का बन्द होना, या बहुत ज़्यादा निकलना और भूत-परेत के असर से महफ़ूज रहेगा।

जिस के पास यह दुआ होगी अगर वह बादशाहो की मज्लिस या कचेहरी मे जाएगा तो बड़ी इज्जत पाएगा, घर मे आएगा तो सब लोगों में उसका अदब व एहतिराम होगा और सब लोग उसको दोस्त रखेंगे, जब उसको दफन करेंगे तो अज़ाबे कब्र न होगा, बल्कि उसकी कब्र कुशादा हो जाएगी और इस दुआ की बरकत से तमाम मुसीबतों और अफतों से महफूज रहेगा, और उसकी दीनी व दुनियवी मुश्किलात आसान होंगी इस में शक न करे कि कुफ़ का डर है। अल्लाह तआला कुफ्र से हमारी हिफ़ाज़त फरमाए।

इस दुआए बुज़ुर्गवार की खासियत बहुत हैं मगर यहाँ कुछ ही लिखी गई हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سُبْحٰنَكَ اَنْتَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ

سُبْحٰنَكَ اَنْتَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ

سُبْحٰنَكَ اَنْتَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ الْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ

سُبْحٰنَكَ اَنْتَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ

سُبْحٰنَكَ اَنْتَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ الْمُصَوِّرُ الْحَكِيْمُ

سُبْحٰنَكَ اَنْتَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ

سُبْحٰنَكَ اَنْتَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ الْبَصِيْرُ الصَّادِقُ

سُبْحٰنَكَ اَنْتَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ

سُبْحٰنَكَ اَنْتَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ

سُبْحٰنَكَ اَنْتَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ الْمُبْدِئُ الْمُعِيْدُ

سُبْحٰنَكَ اَنْتَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ

سُبْحٰنَكَ اَنْتَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ الصَّمَدُ الْمَعْبُوْدُ

سُبْحٰنَكَ اَنْتَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ الْوَاحِدُ الْمَاجِدُ

الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ

दुआए कुनूत

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ وَنَسْتَغْفِرُكَ وَ
نُؤْمِنُ بِكَ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ وَنُثْنِىْ
عَلَيْكَ الْخَيْرَ وَنَشْكُرُكَ وَلَا نَكْفُرُكَ وَ
نَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ يَّفْجُرُكَ اَللّٰهُمَّ اِيَّاكَ
نَعْبُدُ وَلَكَ نُصَلِّىْ وَنَسْجُدُ وَاِلَيْكَ نَسْعٰى
وَنَحْفِدُ وَنَرْجُوْا رَحْمَتَكَ وَنَخْشٰى عَذَابَكَ
اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ ❖

ऐ अल्लाह! हम तुझ से मदद चाहते हैं और तुझ से माफी मांगते हैं और तुझ पर ईमान लाते हैं और तुझ पर भरोसा करते हैं और तेरी ही तारीफ करते हैं और तेरा शुक्र करते हैं और तेरी नाशुकरी नहीं करते और अलग करते और छोड़ते हैं उस शख्स को जो तेरी नाफरमानी करे, इलाही हम तेरी ही इबादत करते हैं और तेरे ही लिए नमाज पढ़ते और सजदा करते हैं और तेरी ही तरफ दौड़ते और खिदमत के लिए हाजिर होते हैं और तेरी रहमत की उम्मीद करते हैं और तेरे अजाब से डरते हैं बेशक तेरा अजाब काफिरों को मिलने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ اِنَّآ اٰمَنَّا بِكَلَامِكَ وَكِتَابِكَ وَاٰمَنَّا بِرَسُوْلِكَ رَبَّنَا
تَقَبَّلْ مِنَّا هٰذِهٖ مُنَزِّلَ الْقُرْاٰنِ يَا حَلَّ الْمُشْكِلَاتِ
فَتَوَكَّلْ ضُعْفِيْ بِحُرْمَةِ سَيِّدِ الْاَبْرَارِ يَا حَلَّ
الْمُشْكِلَاتِ وَنَوِّرْ قُلُوْبَنَا بِتِلَاوَتِ الْقُرْاٰنِ وَنَوِّرْ قُلُوْبَنَا
بِحُرْمَةِ الْقُرْاٰنِ وَنَبِيِّ الْاٰخِرِ زَمَانٍ اَللّٰهُمَّ يَا رَزَّاقَ
الْمُفْلِسِيْنَ وَيَآ اَرْحَمَ الْمَسَاكِيْنِ وَيَا خَيْرَ النَّاصِرِيْنَ
اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ بِرَحْمَتِكَ يَآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

चाँद देख कर जब पहला पीर हो तो क़ुरआन मजीद की पहली मन्ज़िल ख़त्म करे और उसके बाद यह दुआ तीन बार पढ़े इसी तरह सातों मन्ज़िलें ख़त्म करे। यह दुआ तीन बार पढ़ी जाए, इसका बहुत ज़्यादा सवाब है, बेशुमार बरकतें हासिल होंगी।

दुआउ ख़त्मिल्-क़ुरआन

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ اٰنِسْ وَحْشَتِيْ فِيْ قَبْرِيْ ۚ اَللّٰهُمَّ
ارْحَمْنِيْ بِالْقُرْاٰنِ الْعَظِيْمِ وَاجْعَلْهُ لِيْٓ
اِمَامًا وَّنُوْرًا وَّهُدًى وَّرَحْمَةً ۚ اَللّٰهُمَّ
ذَكِّرْنِيْ مِنْهُ مَا نَسِيْتُ وَعَلِّمْنِيْ مِنْهُ مَا
جَهِلْتُ وَارْزُقْنِيْ تِلَاوَتَهٗ اٰنَآءَ الَّيْلِ وَ
اٰنَآءَ النَّهَارِ وَاجْعَلْهُ لِيْ حُجَّةً يَّا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ اٰمِيْن

नमाज़ों के अवक़ात

हर महीने की अलग अलग

नफ़्ल नमाज़, रोज़े और वज़ाइफ़

मुहर्रमुल्-हराम

सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इरशाद फरमाते हैं कि मुहर्रम का महीना बहुत बरकत वाला महीना है, आशूरा की रात और आशूरा के दिन की इबादत के बेहद फ़ज़ाइल हैं। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मुहर्रम का चाँद देख कर चार बार सूरए इख़्लास पढ कर अपने ऊपर दम करना बहुत अफ़्ज़ल है।

नफ़्ल नमाज़

रात के पहले हिस्से में इशा की नमाज़ के बाद आठ रकअ़त नमाज़ चार सलाम से पढ़े और हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास ग्यारह ग्यारह बार पढ़े, इन्शाअल्लाह इस नमाज़ की बरकत से क़ियामत के दिन अल्लाह पाक इस नमाज़ के पढ़ने वाले और उसके घर वालों की शिफ़ाअ़त फ़रमाएगा।

रात के पहले हिस्से में इशा की नमाज़ के बाद मुहर्रम के महीने मे चार रकअ़त नमाज़ दो सलाम से पढ़े और सूरए फ़ातिहा के बाद हर रकअ़त में सूरए इख़्लास ग्यारह-ग्यारह बार पढनी है

फिर सलाम के बाद यह दुआ ग्यारह बार पढ़े:

سُبُّوحٌ قُدُّوسٌ رَبُّنَا وَرَبُّ الْمَلٰٓئِكَةِ وَالرُّوْحِ

इस नमाज़ के पढ़ने से अल्लाह तआ़ला की बारगाह से बेशुमार इबादात का सवाब अ़ता किया जाएगा।

नफ़्ल नमाज़ पहली तारीख़ मुहर्रमुल्-हराम

पहली तारीख़ को नमाज़े ज़ुहर के बाद दो रकअ़त नमाज़ पढ़े पहली रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास 13 बार, दूसरी रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास 12 बार पढ़े फिर सलाम के बाद यह दुआए मुकर्रम एक बार पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ اللّٰهُ الْاَبَدُ الْقَدِيْمُ هٰذِهٖ سَنَةٌ جَدِيْدَةٌ اَسْئَلُكَ فِيْهَا

الْعِصْمَةَ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ وَالْاَمَانَ مِنَ السُّلْطَانِ

الْجَابِرِ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ ذِىْ شَرٍّ وَّمِنَ الْبَلَآءِ وَالْاٰفَاتِ وَاَسْئَلُكَ

الْعَوْنَ وَالْعَدْلَ عَلٰى هٰذِهِ النَّفْسِ الْاَمَّارَةِ بِالسُّوْٓءِ وَالْاِشْتِغَالِ

بِمَا يُقَرِّبُنِىْٓ اِلَيْكَ يَا بَرُّ يَا رَءُوْفُ يَا رَحِيْمُ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامْ

तर्जुमा: " ऐ अल्लाह तू ऐसा है जिस का न आग़ाज़ है न अंजाम, यह नया साल है, तुझसे पनाह मांगता हूँ इस साल में शैताने मर्दूद से और पनाह ज़ालिम बादशाह से और हर शरीर के शर से और बलाओं और आफ़तों से और पनाह मांगता हूँ तुझ से मदद और इन्साफ़ उस नफ़्स पर जो बुराई सिखाता है और मांगता हूँ वह चीज़ जो मुझ को तेरे क़रीब करे, ऐ नेक कार! ऐ मेहरबान! ऐ रहम करने

वाले' ऐ बुज़ुर्गी और इनाम वाले'

अल्लाह पाक इस दुआ और नमाज पढ़ने वाले के तमाम गुनाह माफ फरमाएगा और इन्शाअल्लाह तआला वह दुनिया से ईमान के साथ जाएगा।

नफ़्ल नमाज़ शबे आशूरा

आशूरा की रात मे नमाजे इशा के बाद चार रकअत नमाज दो सलाम के साथ पढ़े, हर रकअत मे सूरए फातिहा के बाद आयतल-कुर्सी तीन-तीन बार, सूरए इख्लास दस-दस बार पढ़े, सलाम के बाद सूरए इख्लास एक सौ बार पढ़ कर अपने गुनाहो की तौबा करे और अल्लाह पाक से बख्शिश की दुआ करे, इन्शाअल्लाह तआला ख़ुदावन्दे करीम अपनी रहमते कामिला से इस नमाज के पढ़ने वालो के तमाम गुनाहों को माफ फरमाएँगे।

शबे आशूरा नमाज़े इशा के बाद आठ रकअत नमाज़ चार सलाम से पढ़े हर रकअ़त मे सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख्लास 25-25 बार पढ़नी है फिर सलाम के बाद दुरूदे पाक 70 बार, इस्तिग्फार 70 बार पढ़ कर दुआए मग्फिरत करे, अल्लाह रब्बुल-इज्जत इस नमाज़ के पढ़ने वालों की क़ब्र को रौशन करके अज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़ रखेगा और कियामत के दिन उस की मग्फिरत होगी, इन्शाअल्लाह तआला।

आशूरा की रात मे इशा की नमाज के बाद चार रकअत नमाज दो सलाम के साथ पढ़े, हर रकअत में सूरए फातिहा के बाद सूरए इख्लास पाँच पाँच बार पढ़े।

यह नमाज़ गुनाहो की बख्शिश के लिए बहुत अफ्ज़ल है, अल्लाह तआला इस नमाज के पढने वाले के तमाम गुनाहों को

माफ़ फ़रमा कर मग्फ़िरत फ़रमाएगा, इन्शाअल्लाह तआला।

आशूरा की रात में इशा की नमाज के बाद चार रकअत नमाज़ दो सलाम के साथ पढ़े और सूरए फ़ातिहा के बाद हर रकअ़त में आयतल-कुर्सी तीन-तीन बार, सूरए इख्लास तीन-तीन बार पढ़े, सलाम के बाद सूरए इख्लास एक सौ बार पढ़े, इन्शाअल्लाह तआला अल्लाह पाक इस नमाज के पढने वाले को बहिश्त मे हर तरह की नेमतें अता फ़रमाएगा।

यौमे आशूरा (आशूरा का दिन)

आशूरा के दिन सूरज निकलने के बाद दो रकअत नमाज पढ़े, हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद जो भी सूरत याद हो पढले और सलाम के बाद एक बार इस दुआ को पढ़ ले

दुआए आशूरा

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يَاقَابِلَ تَوْبَةِ اٰدَمَ يَوْمَ عَاشُوْرَآءَ

يَافَارِجَ كَرْبِ ذِى النُّوْنِ يَوْمَ عَاشُوْرَآءَ

يَا جَامِعَ شَمْلِ يَعْقُوبَ يَوْمَ عَاشُورَآءَ
يَا سَامِعَ دَعْوَةِ مُوسٰى وَهٰرُونَ يَوْمَ عَاشُورَآءَ
يَا مُغِيثَ اِبْرَاهِيمَ مِنَ النَّارِ يَوْمَ عَاشُورَآءَ
يَا رَافِعَ اِدْرِيسَ اِلَى السَّمَآءِ يَوْمَ عَاشُورَآءَ
يَا مُجِيبَ دَعْوَةِ صَالِحٍ فِي النَّاقَةِ يَوْمَ عَاشُورَآءَ

يَا نَاصِرَ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
يَوْمَ عَاشُورَآءَ يَا رَحْمٰنَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَرَحِيمَهُمَا
صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
وَّصَلِّ عَلٰى جَمِيعِ الْاَنْبِيَآءِ وَالْمُرْسَلِينَ وَاقْضِ
حَاجَاتِنَا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَاَطِلْ عُمْرَنَا فِي
طَاعَتِكَ وَمَحَبَّتِكَ وَرِضَاكَ وَاَحْيِنَا حَيٰوةً
طَيِّبَةً وَّتَوَفَّنَا عَلَى الْاِيمَانِ وَالْاِسْلَامِ بِرَحْمَتِكَ
يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ ط اَللّٰهُمَّ بِعِزِّ الْحَسَنِ وَاَخِيهِ
وَاُمِّهِ وَاَبِيهِ وَجَدِّهِ وَبَنِيهِ فَرِّجْ عَنَّا مَا نَحْنُ
فِيهِ ط

फिर सात बार पढ़े:-

سُبْحَانَ اللّٰهِ مِلْءَ الْمِيزَانِ
وَمُنْتَهَى الْعِلْمِ وَمَبْلَغَ الرِّضٰى وَزِنَةَ الْعَرْشِ
لَا مَلْجَاَ وَلَا مَنْجَا مِنَ اللّٰهِ اِلَّا اِلَيْهِ ط سُبْحَانَ
اللّٰهِ عَدَدَ الشَّفْعِ وَالْوِتْرِ وَعَدَدَ كَلِمَاتِ اللّٰهِ
التَّامَّاتِ كُلِّهَا نَسْئَلُكَ السَّلَامَةَ بِرَحْمَتِكَ
يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ ط وَهُوَ حَسْبُنَا وَنِعْمَ الْوَكِيلُ ط
نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيرُ ط وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ
اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ ط وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى
سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ
وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ عَدَدَ ذَرَّاتِ
الْوُجُودِ وَعَدَدَ مَعْلُومَاتِ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ
الْعٰلَمِينَ ۝

बारगाहे रब्बुल-इज्जत से इस नमाज और दुआ के पढ़ने वाले को बेशुमार इबादत का सवाब मिलेगा।

आशूरा के दिन चार रकअत नमाजे जुहर से पहले पढ़े हर रकअत में सूरए फातिहा के बाद सूरए जिल्जाल एक बार सूरए काफिरून एक बार, सूरए इख्लास एक बार, सलाम के बाद 70 बार दुरूदे पाक पढ़ कर अपने गुनाहों से तौबा करे [illegible] तआला खुदावन्दे कुद्दूस इस नमाज के पढ़ने वाले [illegible]

गुनाहों को माफ़ फ़रमा कर मग़फ़िरत फ़रमाएगा।

ज़ुहर की नमाज़ से पहले यौमे आशूरा को 6 रकअत नमाज़ तीन सलाम के साथ इस तरह पढ़े कि हर रकअत में सूरए फ़ातिहा जो पहली है, सूरए फ़ातिहा के बाद पहली रकअत में सूरए शम्स एक बार, दूसरी में सूरए क़द्र एक बार तीसरी में सूरए ज़िलज़ाल एक बार चौथी में सूरए इख़्लास एक बार, पाँचवीं में सूरए फ़लक़ एक बार छठी में सूरए नास एक बार पढ़े। सलाम के बाद सर सजदे में रख कर सूरए काफ़िरून एक बार पढ़ कर जिस मुराद के लिए दुआ करें इन्शाअल्लाह तआला दरबारे ख़ुदावन्दी में क़बूल होगी।

ज़ुहर की नमाज़ से पहले यौमे आशूरा चार रकअत नमाज़ दो सलाम के साथ इस तरह पढ़े कि हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद 15 बार सूरए इख़्लास हर चार रकअत में पढ़े और यह नमाज़ हज़रत इमाम हसन (रज़ि०) और हज़रत इमाम हुसैन (रज़ि०) को बख़्श दें।

नफ़्ल रोज़ा

मुहर्रमुल-हराम में रोज़ा रखने की बहुत फ़ज़ीलत है।

पहली तारीख़ से दस तारीख़ तक रोज़ा रखे या पहली तारीख़ का और नवीं दस्वीं का रोज़ा रखना अफ़ज़ल है।

वज़ाइफ़

मुहर्रम की पहली रात से आशूरा की रात तक हर एक दिन इशा की नमाज़ के बाद एक सौ बार कलिमए तौहीद पढ़ना गुनाहों की बख़्शिश के लिए बहुत अफ़ज़ल है।

मुहर्रमुल-हराम की पहली रात से आशूरा की रात तक

नमाज़े इशा के बाद अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ 100 बार यह दुआ पढ़ना भी बहुत अफ़ज़ल है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ اَللّٰهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ
لِمَا مَنَعْتَ وَلَا رَآدَّ لِمَا قَضَيْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ ۔

आशूरा के दिन किसी भी वक़्त वुज़ू करके 70 बार पढ़े

حَسْبِيَ اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ ۔

गुनाहों की मग़फ़िरत के लिए यह वज़ीफ़ा पढ़ना भी बहुत अफ़ज़ल है।

सफ़रुल्-मुज़फ़्फ़र

हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि सफ़र का महीना बड़ी सख़्ती वाला महीना है, आप (सल्ल०) इस महीने के शुरू होने पर अफ़सुर्दा और ख़त्म होने पर ख़ुशी का इज़्हार फ़रमाते थे। फ़रमाया कि सफ़र के महीने में एक लाख बीस हज़ार बलाएँ आसमान से उतरती हैं, लेकिन जो लोग इस महीने में इबादते इलाही में अपना वक़्त गुज़ारेंगे उनपर इन बलाओं का असर न होगा और अल्लाह पाक उनके गुनाहों को माफ़ फ़रमाएगा।

नफ़्ल नमाज़

सफ़र के महीने का चाँद ... नमाज़े मग़रिब और

नमाज़े इशा के बीच चार रकअत नमाज़ दो सलाम के साथ पढ़े, हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास ग्यारह-ग्यारह बार पढ़नी है फिर सलाम फेरने के बाद एक हज़ार बार इस दुरूदे पाक को पढ़े:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ ؕ

अल्लाह तआला इस नमाज़ और दुरूदे पाक के पढ़ने वाले के तमाम गुनाहों को माफ़ फ़रमा कर इन्शाअल्लाह मग़फ़िरत फ़रमाएगा।

इशा की नमाज़ के बाद रात के पहले हिस्से में चार रकअत नमाज़ पढ़े, पहली रकअत मे सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए काफ़िरून 15 बार, दूसरी में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास 15 बार, तीसरी में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए फ़लक़ 15 बार, चौथी रकअत में सूरए फ़ातिहा के बद सूरए नास 15 बार पढ़े। यह नमाज़ इशा की नमाज़ के बाद पढ़नी चाहिए फिर सलाम फेरने के बाद एक सौ बार पढ़े اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝ फिर 70 बार दुरूदे पाक पढ़ना है, नमाज़े इशा के वित्र और नफ़्ल इस नमाज़ के बाद पढ़ना चाहिए, इस नमाज़ के पढ़ने वाले को अल्लाह पाक तमाम बलाओं मुसीबतों से मेहफ़ूज़ रखेगा, इन्शाअल्लाह तआला।

सफ़र आख़िरी चार रकअत

सफ़र के महीने के आख़िरी बुध जिस को चहार शंबा कहते हैं, चाश्त के वक़्त गुस्ल करके दो रकअत नमाज़ पढ़े, हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद ग्यारह-ग्यारह बार सूरए इख़्लास पढ़े फिर सलाम के बाद 70 बार यह दुरूदे पाक पढ़े:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ ؕ

फिर एक बार यह दुआ पढ़नी चाहिए:

اَللّٰهُمَّ صَرِّفْ عَنِّيْ سُوْٓءَ هٰذَا الْيَوْمِ وَاعْصِمْنِيْ مِنْ سُوْٓئِهٖ
وَنَجِّنِيْ عَمَّآ اَصَابَ فِيْهِ مِنْ بَحْرُسَاتِهٖ وَكُرُبَاتِهٖ بِفَضْلِكَ يَا
دَافِعَ الشُّرُوْرِ يَا مَالِكَ النُّشُوْرِ يَآ اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ وَصَلِّ عَلٰى
مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهِ الْاَمْجَادِ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ ؕ

इन्शाअल्लाह तआला इस नमाज़ और दुआ की बरकत से अल्लाह पाक उसे तमाम बलाओं और परेशानियों से मेहफ़ूज़ रखेगा।

आख़िरी बुधवार को नमाज़े ज़ुहर के बाद दो रकअत नमाज़ पढ़े, हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास तीन-तीन बार पढ़े, सलाम के बाद सूरए अलम नशरह 80 बार, सूरए वत्तीन 80 बार, सूरए नसर 80 बार और सूरए इख़्लास 80 बार पढ़े, यह नमाज़ रिज़्क़ की बढ़ोतरी के लिए बहुत अफ़ज़ल है।

बुधवार को नमाज़े अ़सर से पहले चार रकअत नमाज़ दो सलाम के साथ पढ़े और हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए कौसर 70-70 बार, सूरए इख़्लास पाँच-पाँच बार पढ़े, सलाम के बाद यह दुआए मुकर्रम एक बार पढ़नी है:

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ يَا شَدِيْدَ الْقَوِيِّ يَا شَدِيْدَ الْمِحَالِ
يَا مُفَضِّلُ يَا مُكَرَّمُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ بِرَحْمَتِكَ يَآ اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ ؕ

इस नमाज़ और दुआ के पढ़ने वाले को उस दिन की तमाम आफ़ात से अल्लाह तआला महफ़ूज़ रखेगा।

दुआ

आख़िरी बुधवार को नमाज़े फ़जर से लेकर नमाज़े इशा तक हर नमाज़ के बाद ये आयाते क़ुरआनी एक बार पढ़ कर पानी पर दम करके ख़ुद भी पिए और दूसरों को भी पिलाए:

سَلَامٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ○ سَلَامٌ عَلٰى نُوْحٍ فِى الْعٰلَمِيْنَ ○ سَلَامٌ عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ ○ سَلَامٌ عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ○ سَلَامٌ عَلٰٓى اِلْيَاسِيْنَ ○ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِيْنَ ○ سَلَامٌ هِىَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ○

ये सात आयाते क़ुरआनी उम्र में बढ़ोतरी और जान व माल की हिफ़ाज़त के लिए बहुत अफ़्ज़ल हैं।

रबीउ़ल्-अव्वल

रबीउ़ल्-अव्वल का महीना बहुत मुतबर्रक और फ़ज़ीलत वाला महीना है और इसी बर-गुज़ीदा महीने में शाहे दो आलम हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुनिया में तशरीफ़ लाए इस लिए यह बड़ी रहमत व बरकत का महीना है।

नफ़्ल नमाज़

रबीउल्-अव्वल के महीने की पहली तारीख़ को इशा की

नमाज़ के बाद 16 रकअ़त नमाज़ आठ सलाम के साथ पढ़े, हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास तीन तीन बार पढ़नी है फिर सलाम के बाद एक हज़ार बार यह दुरूदे पाक पढ़ना है:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ النَّبِىِّ الْاُمِّىِّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ

इस नमाज़ की बहुत फ़ज़ीलत है और इन्शाअल्लाह तआला इस नमाज़ और दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले रसूले अकरम सल्ल० की ज़ियारत से फ़ैज़याब होंगे लेकिन वुज़ू करके सोना ज़रूरी है।

इस माहे मुबारक की 12 तारीख़ को नमाज़े ज़ुहर के बाद हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रूह को हदया पहुँचाने की नियत से बीस रकअ़त नमाज़ दस सलाम के साथ पढ़े, हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास 21–21 बार पढ़े।

इन्शाअल्लाह तआला इस नमाज़ के पढ़ने वाले को हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत नसीब होगी। इस नमाज़ के पढ़ने वाले तौहीद पर क़ायम हों और शिर्क से दूर हों और यह ज़रूरी है कि वुज़ू करके सोए।

वज़ाइफ़

रबीउल्-अव्वल की 12वीं, 13वीं और 14वीं रात को इशा की नमाज़ के बाद इस दुआ को 7 हज़ार सात सौ 41 बार पढ़े दुआ यह है:

يَا بَدِيْعَ الْعَجَائِبِ بِالْخَيْرِ يَا بَدِيْعُ

यह दुआ रोज़ी में बढ़ोतरी के लिए बहुत अफ़्ज़ल है, मगर

यह ध्यान रहे कि 12 तारीख पीर या जुमेरात या जुमे की हो।

रबीउल्-अव्वल के महीने में सबसे ज्यादा दुरूदे पाक पढ़ने की बहुत फजीलत है, ज्यादा से ज्यादा इस महीने में दुरूद शरीफ पढ़ना चाहिए।

पहली तारीख से 12 तारीख तक हर दिन इशा की नमाज के बाद एक हजार बार यह दुरूद शरीफ पढ़ना बहुत अफ्ज़ल है

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ نِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ

इस दुरूद शरीफ को पढ़ कर बा वुज़ू होकर सो जाए तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जियारत नसीब होगी।

रबीउस्-सानी

रबीउस्-सानी का महीना भी बहुत फ़ज़ीलत वाला महीना है और इस माहीने में भी ज़्यादा से ज़्यादा दुरूदे पाक पढ़ना चाहिए।

नफ़्ल नमाज़

पहली रात में नमाजे मग़रिब के बाद और इशा से पहले आठ रकअत नमाज चार सलाम के साथ पढ़े, और पहली रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए कौसर तीन बार, दूसरी में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए काफ़िरून तीन बार फिर तीसरी, चौथी, पांचवीं, छठी, सातवीं और आठवीं रकअतों में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास तीन-तीन बार हर रकअत में पढ़नी है। इन्शाअल्लाह तआला इस नमाज़ के पढ़ने वाले को बेशुमार नमाज़ों का सवाब मिलेगा।

रबीउस्-सानी के महीने की पहली, 15वीं, 29वीं रात को इशा की नमाज़ के बाद चार रकअत नमाज़ दो सलाम से पढ़े, हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास पाँच-पाँच बार पढ़नी है। इन्शाअल्लाह तआला इस नमाज़ के पढ़ने वाले की परवरदिगारे आलम हश्र के दिन मग़फ़िरत फरमाएगा।

जमादिउल्-अव्वल

जमादिउल्-अव्वल का महीना भी बहुत फज़ीलत वाला महीना है और इस की इबादत का बहुत सवाब है।

नफ़्ल नमाज़

इस महीने की पहली तारीख को मग़रिब की नमाज़ के बाद आठ रकअत नमाज चार सलाम के साथ पढ़नी है, इस तरह कि हर रकअत में सूरए फातिहा के बाद सूरए इख़्लास ग्यारह-ग्यारह बार पढ़े, यह नमाज बहुत अफ़्ज़ल है और इसके पढ़ने से इन्शाअल्लाह तआला बेशुमार इबादात का सवाब परवरदिगार की तरफ से अता किया जाएगा।

पहली तारीख को नमाज़े इशा के बाद बीस रकअत नमाज दस सलाम के साथ पढ़े, हर रकअत मे सूरए फातिहा के बाद सूरए इख़्लास एक एक बार पढ़नी है, सलाम के बाद एक सो बार दुरूद शरीफ़ पढ़े।

इन्शाअल्लाह तआला इस नमाज़ की बरकत से अल्लाह पाक उसे बे शुमार नमाजो का सवाब अता करेगा।

जमादिउस्-सानी

जमादिउस्-सानी का महीना बड़ी ख़ैरो बरकत का महीना है और इस महीने की इबादत बहुत अफ़ज़ल है, यह महीना रजब के महीने के इस्तिक़बाल के लिए है और इसकी इबादत का मक़सद रजब के महीने की हुरमत है।

नफ़्ल नमाज़

पहली तारीख़ को नमाज़े इशा के बाद 12 रकअ़त नमाज़ 6 सलाम के साथ पढ़े, हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास एक-एक बार पढ़नी है।

इन्शाअल्लाहुल् अज़ीम इस नमाज़ के पढ़ने वाले को परवरदिगारे आ़लम बहुत बड़ी इबादत का सवाब अ़ता फ़रमाएगा।

जमादिउस्-सानी की 21वीं रात से आख़िरी तारीख़ तक हर दिन हर रात को नमाज़े इशा के बाद 20 रकअ़त नमाज़ दस सलाम के साथ पढ़नी हैं, हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास एक-एक बार पढ़े, अल्लाह तआ़ला इस नमाज़ के पढ़ने वाले को हुरमते रजबुल-मुरज्जब का सवाब अ़ता करेगा, यानी इस नमाज़ का मक़सद है कि रजब के मुबारक महीने का इस्तिक़बाल इबादते इलाही से किया, इसलिए इस नमाज़ की बड़ी फ़ज़ीलत है।

नफ़्ल रोज़ा

जमादिउस्-सानी की आख़िरी तारीख़ को रोज़ा रखना रजबुल्-मुरज्जब के इस्तिक़बाल के लिए अफ़ज़ल है।

रजबुल्-मुरज्जब

रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि रजब के महीने की बेशुमार फ़ज़ीलतें हैं, इस मुबारक महीने की इबादत बहुत अफ़ज़ल है। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इरशादे गरामी है कि जब रजब के महीने का चाँद देखो तो पहले एक बार यह दुआ पढ़ो:

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْ رَجَبٍ وَّشَعْبَانَ وَبَلِّغْنَا اِلٰى شَهْرِ رَمَضَانَ ؕ

नफ़्ल नमाज़

रजब के महीने की पहली रात को इशा की नमाज़ के बाद दस रकअ़त नमाज़ पाँच सलाम के साथ पढ़े, हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए काफ़िरून तीन-तीन बार और सूरए इख़्लास तीन बार पढ़े, इन्शाअल्लाह तआ़ला इस नमाज़ के पढ़ने वाले को अल्लाह पाक क़ियामत के दिन शहीदों में शामिल करेगा और हज़ार दर्जे उसके बुलन्द करेगा।

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ
وَهُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ؕ اَللّٰهُمَّ لَا مَانِعَ
لِمَا اَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ ؕ

पहली रात को इशा की नमाज़ के बाद चार रकअ़त नमाज़ दो सलाम के साथ पढ़े, हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए

अलम-नशरह एक बार, सूरए इख़्लास एक बार, सूरए फलक एक बार, सूरए नास एक बार पढ़े, जब दो रकअत का सलाम फेरे तो कलिमए तौहीद 33 बार और दुरूद शरीफ़ 33 बार पढ़े, फिर दो रकअत की नियत बाँध कर पहली दो रकअत की तरह पढ़े फिर सलाम के बाद कलिमए तौहीद 33 बार, दुरूद शरीफ़ 33 बार पढ़ कर जो भी ज़रूरत हो अल्लाह पाक से मांगे, इन्शाअल्लाह तआला हर हाजत क़बूल होगी।

रजब के महीने की पहली तारीख को ज़ुहर की नमाज के बाद दो रकअत नमाज़ पढ़े, हर रकअत में सूरए फातिहा के बाद सूरए इख़्लास पाँच- पाँच बार पढनी है, सलाम के बाद अपने पिछले गुनाहों से तौबा करे, इन्शाअल्लाह तआला बारगाहे रब्बुल-इज़्ज़त से इस नमाज़ के पढने वाले के तमाम गुनाह माफ़ हो कर मग़्फ़िरत होगी।

रजब के महीने की हर जुमा की रात को नमाजे इशा के बाद दो रकअत नमाज़ पढ़े, पहली रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए बक़रा का आख़िरी रुकू آمَنَ الرَّسُوْلُ से كٰفِرِيْنَ तक सात बार पढ़े, फिर दो रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए हश्र की आख़िरी आयात "हुवल्लाहुल् लज़ी" से "अल्-हकीम" तक सात बार पढ़े, सलाम के बाद बारगाहे इलाही में जो भी हाजत और दुआ मांगेगा इन्शाअल्लाह तआला क़बूल होगी, हर मुराद के लिए यह नमाज़ बहुत अफ्ज़ल है।

लैलतुर-रग़ाइब: इसी महीने में होती है और इसी महीने के पहले जुमे की रात का नाम लैलतुर-रग़ाइब है इस रात मे मग़्रिब के बाद 12 रकअत नफ्ल छे सलाम के साथ अदा की जाती है, हर रकअत में الحمد के बाद اِنَّا اَنْزَلْنَا तीन बार और सूरए इख़्लास 12

बार पढ़े, इसके बाद 70 बार पढ़े:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ ؕ

फिर सजदे में जाकर 70 बार पढ़े:

سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَبُّ الْمَلٰٓئِكَةِ وَالرُّوْحِ

और फिर सर उठाए और 70 बार कहे:

رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَتَجَاوَزْ عَمَّا تَعْلَمُ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْاَعْظَمُ ؕ

फिर दूसरा सजदा इसी तरह करे, फिर जो दुआ मांगेगा क़बूल होगी, इन्शाअल्लाह तआला।

रजब के महीने के पहले जुमा को ज़ुहर और असर के बीच चार रकअत नमाज़ एक सलाम के साथ पढ़े, हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद आयतल-कुर्सी सात बार, सूरए इख़्लास पांच बार पढ़े, सलाम के बाद 25 बार यह पढ़े:

لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْكَبِيْرِ الْمُتَعَالِ ؕ

फिर एक सौ बार यह इस्तिग़्फार पढ़े:

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ غَفَّارُ الذُّنُوْبِ

وَسَتَّارُ الْعُيُوْبِ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ ؕ

इसके बाद एक सौ बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर जो भी दुआ करे, चाहे वह दीनी हो या दुनियवी इन्शाअल्लाह तआला बारगाहे इलाही में ज़रूर क़बूल होगी।

15वीं रात को इशा की नमाज़ के बाद दस रकअत नमाज़ पाँच सलाम के साथ पढ़े, हर रकअत मे सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास तीन-तीन बार पढ़े।

नमाज़ के बाद यह दुआ पढ़े:

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِىْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَىٌّ لَّا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ اِلٰهًا وَّاحِدًا اَحَدًا صَمَدًا فَرْدًا وِتْرًا لَّمْ يَتَّخِذْ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا

इस नमाज़ के पढ़ने वाले के गुनाह ऐसे झड़ जाते हैं जैसे दरख़्त के सूखे पत्ते झड़ जाते हैं।

रजब के महीने की किसी जुमा की रात को नमाज़े इशा के बाद दो रकअ़त नमाज़ पढ़े, दोनों रकअ़तों में सूरए फ़ातिहा के बाद आयतल्-कुर्सी ग्यारह बार, सूरए ज़िल्ज़ाल ग्यारह बार, सूरए तकासुर ग्यारह बार पढ़े, सलाम के बाद बारगाहे इलाही में अपने गुनाहों की मग़्फ़िरत तलब करे, इन्शाअल्लाह तआ़ला इस नमाज़ के पढ़ने वाले के तमाम गुनाह माफ़ फ़रमा कर अल्लाह पाक उसकी बख़्शिश फ़रमाएगा।

नफ़्ल नमाज़ शबे मेराज

रजब के महीने की 27वीं रात को 12 रकअ़त नमाज तीन सलाम के साथ पढ़े, पहली चार रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए क़दर तीन-तीन बार हर रकअ़त में, सलाम के बाद 70 बार बैठ कर यह दुआ पढ़े: لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ

दूसरी चार रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए नस्र तीन-तीन बार हर रकअ़त में पढ़े, फिर सलाम के बाद बैठ कर 70 बार पढ़े:

اِنَّكَ قَوِىٌّ مُّعِيْنٌ وَّاحِدٌ دَلِيْلٌ بِحَقِّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ

तीसरी चार रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास तीन-तीन बार हर रकअ़त में सलाम के बाद बैठ कर 70 बार सूरए अलम-नश्रह पढ़े फिर बारगाहे इलाही में दुआ मांगे, इन्शाअल्लाह तआला जो हाजत होगी वह अल्लाह तआला क़बूल फ़रमाएगा।

रजब के महीने की 27वीं तारीख़ को नमाज़े ज़ुहर के बाद चार रकअ़त नमाज एक सलाम से पढ़े, पहली रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए क़दर तीन बार, दूसरी में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास तीन बार, तीसरी में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए फ़लक़ तीन बार, चौथी में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए नास तीन बार पढ़े, सलाम के बाद दुरूदे पाक एक सौ बार पढ़े। यह नमाज़ हर मुराद के लिए इन्शाअल्लाह तआला बहुत अफ़ज़ल है।

रजब के महीने के आख़िर में दस रकअ़तें पाँच सलाम के साथ पढ़े, हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए काफ़िरून तीन बार और सूरए इख़्लास तीन बार पढ़े, फिर नमाज के बाद हाथ उठाए और यह मुक़द्दस दुआ पढ़े:

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِىْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَىٌّ لَّا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهِ الطَّاهِرِيْنَ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِىِّ الْعَظِيْمِ

फिर मांग तू अपने रब से हाजत अपनी, क़बूल की जावे गी दुआ तेरी और करेगा अल्लाह तआला तेरे और दोज़ख़ के बीच सत्तर ख़न्दक़, हर एक ख़न्दक़ की चौड़ाई पाँच सौ साल की राह होगी और लिखेगा अल्लाह तआला तेरे लिए हर रकअ़त के बदले

सवाब हज़ार रकअ़त का, जब सुनी यह हदीस सलमान ने तो इस बहुत ज़्यादा इनाम पर ख़ुदा के शुक्र के लिए रोते हुए सजदे में गिर पड़े।

वज़ाइफ़

रजब के महीने की पहली तारीख़ से हर नमाज़ के बाद तीन बार इस दुआ को पढ़ने की बहुत फ़ज़ीलत है:

أَسْتَغْفِرُ اللهَ الْعَظِيْمَ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَىُّ الْقَيُّوْمُ اِلَيْهِ تَوْبَةُ عَبْدٍ

ظَالِمٍ لَا يَمْلِكُ نَفْسَهٗ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا وَّلَا مَوْتًا وَّلَا حَيٰوةً وَّلَا نُشُوْرًا ۝

रजब के महीने की 15वीं तारीख़ को किसी नमाज़ के बाद एक बार यह इस्तिग़फ़ार पढ़ना बहुत अफ़ज़ल है, इस दुआ के पढ़ने वाले की तमाम बुराइयाँ मिटा कर अल्लाह पाक उन को नेकियों में बदल देगा।

أَسْتَغْفِرُ اللهَ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَىُّ الْقَيُّوْمُ غَفَّارُ الذُّنُوْبِ

وَسَتَّارُ الْعُيُوْبِ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ ۝

रजब के महीने की किसी तारीख़ को ज़ुहर की नमाज़ या मग़रिब या इशा की नमाज़ के बाद सूरए कहफ़ एक बार, सूरए यासीन एक बार, सूरए हामीम एक बार, सूरए दुख़ान एक बार, सूरए मआ़रिज एक बार पढ़े, फिर सूरए इख़्लास एक हज़ार बार पढ़े, अल्लाह पाक इन सूरतों के पढ़ने वाले पर ख़ास रहमत व बरकत नाज़िल फ़रमाए गा।

नफ़्ल रोज़ा

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि

रजब के महीने के रोज़ों की बहुत बड़ी फ़ज़ीलत है और सबसे ज़्यादा 27 तारीख़ के रोज़े का बहुत बड़ा सवाब है, इस रोज़े से अ़ज़ाबे क़ब्र और दोज़ख़ की आग से महफ़ूज़ रहेगा, रजब के महीने के एक रोज़े का सवाब हज़ारों नफ़्ली रोज़ों के बराबर है।

शाबानुल-मुअ़ज़्ज़म

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है कि शाबानुल मुअ़ज़्ज़म का महीना बहुत ही बरगुज़ीदा महीना है और इस मुबारक महीने की इबादत का बेहद सवाब अल्लाह तआ़ला अ़ता फ़रमाता है।

नफ़्ल नमाज़

शाबानुल-मुअ़ज़्ज़म की पहली रात को इशा की नमाज़ के बाद 12 रकअ़त नमाज़ छे सलाम के साथ पढ़े, हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास 15-15 बार पढ़े, सलाम के बाद 70 बार दुरूदे पाक पढ़ कर अपने गुनाहों से तौबा करे, इन्शाअल्लाह तआ़ला इस नमाज़ की बरकत से अल्लाह पाक उस के गुनाह माफ़ फ़रमा कर जन्नत में दाख़िल फ़रमाएँगे

शाबान के महीने के पहले जुमे की रात को नमाज़े इशा के बाद आठ रकअ़त नमाज़ एक सलाम से पढ़े और हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास ग्यारह-ग्यारह बार पढ़े और उसका सवाब ख़ातूने जन्नत हज़रते फ़ातिमा (रज़ि०) को बख़्शे, ख़ातूने जन्नत फ़रमाती हैं कि मैं उस वक़्त तक जन्नत में क़दम न

रखूँगी जब तक कि इस नमाज़ के पढ़ने वाले को अपने साथ जन्नत में दाख़िल न कर लूँ ।

शाबान के महीने के पहले जुमे की रात को नमाजे इशा के बाद चार रकअत नमाज़ एक सलाम के साथ पढ़े और हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास तीन-तीन बार पढ़नी है, इस नमाज की बहुत फ़ज़ीलत है और अल्लाह तआला की तरफ से उसे उमरे का सवाब अता होगा।

शाबान के पहले जुमे को मग़्रिब की नमाज़ के बाद और इशा की नमाज़ से पहले दो रकअत नमाज़ पढ़े, और हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद एक बार आयतल कुर्सी, दस बार सूरए इख़्लास, एक बार सूरए फ़लक़, एक बार सूरए नास पढ़नी है, इन्शाअल्लाह तआला यह नमाज़ ईमान में बढ़ावे के लिए बहुत अफ़्ज़ल रहेगी।

14 शाबानुल्-मुअ़ज़्ज़म

शाबान की 14वीं तारीख़ को मग़्रिब की नमाज़ के बाद दो रकअ़त नमाज़ पढ़े, हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए हश्र की आख़िरी तीन आयात एक-एक बार और सूरए इख़्लास तीन-तीन बार पढ़े।

इन्शाअल्लाह तआला यह नमाज़ गुनाहों की मग्फ़िरत के लिए बहुत अफ़्ज़ल ह ।

शबे क़दर

आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इरशाद फ़रमाते हैं कि शाबानुल मुअ़ज़्ज़म की 15वीं रात की इबादत बहुत अफ़्ज़ल है। फ़रमाया कि इस रात को अल्लाह पाक अपने बन्दों के लिए

अपनी रहमत के बेशुमार दरवाज़े खोल देता है और फ़रमाता है कि कौन है जो आज की रात मुझ से बख़्शिश मांगे और मैं उस को दोज़ख के अज़ाब से निजात दे कर उसकी मग़्फ़िरत करूँ।

फ़रमाया आप (सल्ल०) ने कि इस रात की इबादत करने वाले पर दोज़ख की आग अल्लाह पाक हराम कर देता है।

शाबान की 15वीं रात को ग़ुसल करे, अगर किसी तकलीफ़ की वजह से ग़ुसल न कर सके तो बा वुज़ू होकर दो रकअत तहियतुल-वुज़ू पढ़े, हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद आयतल-कुर्सी एक बार, सूरए इख़्लास तीन तीन बार पढ़नी है, यह नमाज़ बहुत अफ़्ज़ल है।

शाबान की 15वीं रात को दो रकअत नमाज पढ़नी है, हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद आयतल-कुर्सी एक बार, सूरए इख़्लास 15-15 बार, सलाम के बाद दुरूद शरीफ़ एक सौ बार पढ़ कर रोज़ी में बरकत की दुआ करे, इन्शाअल्लाह तआला इस नमाज़ की बरकत से रिज़्क़ में ख़ूब इज़ाफ़ा होगा।

शाबान की 15वीं रात को आठ रकअ़त नमाज़ चार सलाम के साथ पढ़े, हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए क़दर एक-एक बार, सूरए इख़्लास 25 बार पढ़नी है, गुनाहों की मग़्फ़िरत के लिए यह नमाज़ बहुत अफ़्ज़ल है, इन्शाअल्लाह इस नमाज के पढ़ने वाले की अल्लाह पाक बख़्शिश फ़रमाएगा।

शाबान की 15वीं रात को आठ रकअ़त नमाज़ दो सलाम के साथ पढ़े, हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास दस-दस बार पढ़नी है, अल्लाह पाक इस नमाज़ के पढ़ने वाले के लिए बेशुमार फ़रिश्ते मुक़र्रर करेगा जो उसे क़ब्र के अ़ज़ाब से निजात की और बहिश्त में दाख़िल होने की ख़ुशख़बरी देंगे।

शाबान की 15वीं रात को 14 रकअ़त नमाज़ सात सलाम के साथ पढ़े, हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए काफ़िरून एक बार, सूरए इख़्लास एक बार, सूरए फ़लक़ एक बार, सूरए नास एक बार पढ़नी है, सलाम के बाद आयतल कुर्सी एक बार फिर सूरए तौबा की आख़िरी आयात لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ से عَظِيْمٌ तक एक बार पढ़े, दुआ़ की क़बूलियत के लिए, चाहे दीनी हो या दुनियावी यह नमाज़ बहुत अफ़्ज़ल है।

शाबान की 15वीं रात को मग़रिब की नमाज़ के बाद छे रकअ़तें दो दो रकअ़त करके पढ़े, पहली बार ख़ैर के साथ उम्र में इज़ाफ़े की, दूसरी बार बलाओं के दूर होने की, तीसरी बार मख़्लूक़ का मोहताज न होने की नियत से, हर दो रकअ़त के बाद सूरए यासीन एक बार या सूरए इख़्लास 21 बार और उसके बाद दुआए निस्फ़ शाबानुल-मुअ़ज़्ज़म पढ़े।

दुआ निस्फ़ शाबानुल्-मुअ़ज़्ज़म

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ يَا ذَا الْمَنِّ وَلَا يُمَنُّ عَلَيْهِ ط يَا ذَا الْجَلَالِ
وَالْاِكْرَامِ يَا ذَا الطَّوْلِ وَالْاِنْعَامِ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ
ظَهْرُ اللَّاجِيْنَ وَجَارُ الْمُسْتَجِيْرِيْنَ ط وَاَمَانُ
الْخَآئِفِيْنَ اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتَ كَتَبْتَنِيْ عِنْدَكَ فِيْ
اُمِّ الْكِتٰبِ شَقِيًّا اَوْ مَحْرُوْمًا اَوْ مَطْرُوْدًا اَوْ مُقَتَّرًا

عَلَيَّ فِي الرِّزْقِ فَامْحُ اللّٰهُمَّ بِفَضْلِكَ شَقَاوَتِيْ
وَحِرْمَانِيْ وَطَرْدِيْ وَاقْتِتَارَ رِزْقِيْ وَاَثْبِتْنِيْ
عِنْدَكَ فِيْ اُمِّ الْكِتٰبِ سَعِيْدًا مَّرْزُوْقًا مُّوَفَّقًا
لِّلْخَيْرَاتِ ط فَاِنَّكَ قُلْتَ وَقَوْلُكَ الْحَقُّ فِيْ
كِتَابِكَ الْمُنَزَّلِ عَلٰى لِسَانِ نَبِيِّكَ الْمُرْسَلِ
يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَيُثْبِتُ وَعِنْدَهٗ اُمُّ الْكِتٰبِ ۝
اِلٰهِيْ بِالتَّجَلِّى الْاَعْظَمِ ط فِيْ لَيْلَةِ النِّصْفِ مِنْ
شَهْرِ شَعْبَانَ الْمُكَرَّمِ الَّتِيْ يُفْرَقُ فِيْهَا كُلُّ اَمْرٍ
حَكِيْمٍ وَّيُبْرَمُ اَنْ تَكْشِفَ عَنَّا مِنَ الْبَلَآءِ وَالْبَلْوَآءِ
مَا نَعْلَمُ وَمَا لَا نَعْلَمُ ط وَاَنْتَ بِهٖ اَعْلَمُ ط اِنَّكَ اَنْتَ
الْاَعَزُّ الْاَكْرَمُ ط وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلَّمَ ط وَالْحَمْدُ
لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

नफ़्ल नमाज़ 15 तारीख़

शाबान की 15 तारीख़ को नमाज़े ज़ुहर के बाद चार रकअ़त नमाज दो सलाम के साथ पढ़े, पहली रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए जिल्ज़ाल एक बार, सूरए इख़्लास दस बार, दूसरी रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए तकासुर एक बार,

सूरए इख़्लास दस बार, तीसरी रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए काफ़िरून तीन बार, सूरए इख़्लास दस बार, चौथी रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद आयतल्-कुर्सी तीन बार, सूरए इख़्लास 25 बार पढ़े, इस नमाज़ की बहुत फ़ज़ीलत है, अल्लाह पाक इस नमाज़ के पढ़ने वाले पर क़ियामत के दिन ख़ास नज़रे करम फ़रमाएँगे और इन्शाअल्लाह इस नमाज़ की बरकत से दीन व दुनिया की भलाई हासिल होगी।

रात में क़ुरआन शरीफ़, दुरूद शरीफ़, सलातुत्-तस्बीह और वज़ाइफ़ पढ़ें हज़रत अली (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि जो शबे क़दर में नमाज़े इशा के बाद सात बार "इन्ना अन्ज़ल्ना" पढ़े, हर मुसीबत से निजात मिले, हज़ार फ़रिश्ते उसके लिए जन्नत की दुआ करते हैं।

शबे क़दर की दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ عَفُوٌّ كَرِيْمٌ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّىْ

يَا غَفُوْرُ يَا غَفُوْرُ يَا غَفُوْرُ

सलातुत्-तस्बीह की फ़ज़ीलत

हदीस शरीफ़ में आया है कि जो यह नमाज़ पढ़ता है उस के अगले, पिछले, खुले, छुपे, पुराने, नए, जान भूझ कर, भूल कर, छोटे, बड़े तमाम गुनाह बख़्शे जाते हैं। यह नमाज़ ज़वाल के बाद ज़ुहर की नमाज़ से पहले अदा करनी चाहिए या दूसरे वक़्त में चाहे हर दिन या हर आठवें दिन या महीने मे एक बार या साल में एक बार, नहीं तो तमाम उम्र में कम से कम एक बार ज़ुरूर पढ़े।

पढ़ने का तरीक़ा

चार रकअत नफ़्ल सलातुत्-तस्बीह की नियत बाँधे, पहले "सुब्हानकल्लाहुम्म" पूरा पढ़े, फिर 15 बार سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ पढ़े अगर इसके साथ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ○ पढ़ें तो ज़्यादा सवाब है फिर "अल्हम्दु" और सूरत पढ़ें फिर दस बार रुकूअ में, फिर दस बार रुकूअ से जब खड़े हों, फिर दस बार पहले सजदे में, फिर दस बार जब पहला सजदा करके बैठें, फिर दस बार दूसरे सजदे में, फिर दस बार दूसरा सजदा करने के बाद (दूसरी रकअत के लिए खड़े होने से पहले) पढ़ें, इसी तरह चारों रकअतें पढ़ें, यह ध्यान रहे कि शुरू में क़िरअत से पहले 15 बार पढ़नी है, फिर दस-दस बार पढ़नी है।

(मिश्कात, आलमगीरी, शामी)

और बेहतर यह है कि पहली रकअत में सूरए "अल्हाकु-मुत्तकासुर" दूसरी में "वल्अस्र" और तीसरी में "कुल्याअय्युहल्-काफ़िरून" चौथी में "कुल्हुवल्लाहु" पढ़ें। (ग़ायतुल अवतार) अगर किसी को ये सूरतें याद न हों तो कोई और सूरतें पढ़ें।

वज़ाइफ़

शाबान के महीने में हर दिन हर नमाज़ के बाद इस दुआ को पढ़ना गुनाहों की मग़्फ़िरत के लिए बहुत अफ़्ज़ल है:

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ اِلَيْهِ تَوْبَةُ عَبْدٍ

ظَالِمٍ لَا يَمْلِكُ لِنَفْسِهٖ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا وَّلَا مَوْتًا وَّلَا حَيٰوةً وَّلَا نُشُوْرًا

रसूले अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इरशाद फ़रमाते हैं कि शाबानुल्-मुअ़ज़्ज़म के महीने में जो कोई तीन हज़ार बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर मुझ को बख्शेगा हश्र के दिन उस की शिफ़ाअ़त करनी मुझ पर वाजिब हो जाएगी।

शाबानुल्-मुअ़ज़्ज़म की 14वीं तारीख़ को नमाज़े असर के बाद सूरज छिपने के वक़्त बा वुज़ू होकर 40 बार यह कलिमात पढ़े:

لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ؕ

अल्लाह पाक इस दुआ के पढ़ने वाले के चालीस साल के गुनाह माफ़ फ़रमा देगा।

15वीं रात को सूरए बक़रा का आख़िरी रुकू ''आमनर्रसूलु'' से ''काफ़िरीन'' तक 21 बार पढ़ना अमन व सलामती, और जान व माल की हिफ़ाज़त के लिए बहुत अफ़्ज़ल है। 15वीं शब में सूरए यासीन तीन बार पढ़ने से नीचे लिखे हुए फ़ायदे हैं।

रिज़्क़ में बढ़ोतरी, लम्बी उम्र, अचानक आने वाली आफ़तों से हिफ़ाज़त।

शाबान की 15वीं रात में सूरए दुख़ान सात बार पढ़नी बहुत अफ़्ज़ल है। इन्शाअल्लाह तआ़ला परवरदिगारे आलम 70 ज़रूरतें दुनिया की और 70 ज़रूरतें आख़िरत की कबूल फ़रमाएगा।

नफ़्ल रोज़ा

शाबान के महीने की 15वीं तारीख़ के रोज़े की बड़ी फ़ज़ीलत है। जो कोई यह रोज़ा रखेगा अल्लाह तआ़ला उसके पचास साल के गुनाह माफ़ फ़रमाएगा।

रमज़ानुल-मुबारक

हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इरशाद फ़रमाते हैं कि रमज़ान का महीना बहुत ही बरकत और फ़ज़ीलत वाला महीना है और यह सब्र व शुक्र और इबादत का महीना है और इस मुबारक महीने की इबादत का सवाब सत्तर दर्जा अता होता है जो कोई अपने परवरदिगार की इबादत करके उसकी ख़ुशनूदी हासिल करेगा उसका बहुत बड़ा बदला ख़ुदावन्द तआ़ला अता फ़रमाएगा।

पहली शबे क़दर

हुज़ूर अनवर सरकारे दोआलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इरशाद फ़रमाते हैं कि मेरी उम्मत में से जो मर्द या औरत यह तमन्ना करे कि उस की क़ब्र नूर की रौशनी से चमके तो उसे चाहिए कि रमज़ान के महीने की शबे क़दरों में ज़्यादा से ज़्यादा अल्लाह की इबादत करे ताकि इन मुबारक और मुतबर्रक रातों की इबादत से अल्लाह पाक उसके नाम-ए-आमाल से बुराइयाँ मिटा कर नेकियों का सवाब अता फ़रमाए।

शबे क़दर की इबादत सत्तर हज़ार रातों से अफ़्ज़ल है।

21वीं रात में चार रकअ़त नमाज़ दो सलाम के साथ पढ़े, हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए क़दर एक-एक बार, सूरए इख़्लास एक-एक बार पढ़े, सलाम के बाद सत्तर बार दुरूदे पाक पढ़े।

इन्शाअल्लाह तआ़ला इस नमाज़ के पढ़ने वाले के हक़ में फ़रिश्ते दुआए मग़फ़िरत करेंगे।

21वीं शब को दो रकअ़त नमाज़ पढ़े, हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए क़दर एक-एक बार, सूरए इख़्लास तीन-तीन बार पढ़नी है, सलाम के बाद नमाज़ ख़त्म करके 70 बार इस्तिग़्फ़ार पढ़े।

इन्शाअल्लाह तआ़ला इस नमाज़ और शबे क़दर की बरकत से अल्लाह पाक उस की बख़्शिश फ़रमाएगा।

दूसरी शबे क़दर

मुबारक महीने की 23वीं रात को चार रकअ़त नमाज़ दो सलाम के साथ पढ़े और हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए क़दर एक-एक बार, सूरए इख़्लास तीन-तीन बार पढ़े।

इन्शाअल्लाह तआ़ला गुनाहों की मग़्फ़िरत के लिए यह नमाज़ बहुत अफ़्ज़ल है ।

23वीं शबे क़दर को आठ रकअ़त नमाज़ चार सलाम के साथ पढ़नी है, हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए क़दर एक-एक बार, सूरए इख़्लास एक-एक बार पढ़े, सलाम के बाद 70 बार कलिमए तम्जीद पढ़े और अल्लाह तआ़ला से अपने गुनाहों की बख़्शिश चाहे, अल्लाह तआ़ला उसके तमाम गुनाह माफ़ फ़रमा कर इन्शाअल्लाह तआ़ला मग़्फ़िरत फ़रमाएगा।

तीसरी शबे क़दर

रमज़ान के महीने की 25 तारीख़ की रात को चार रकअ़त नमाज़ दो सलाम के साथ पढ़े, सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए क़दर एक-एक बार, सूरए इख़्लास पाँच-पाँच बार हर रकअ़त में पढ़नी है, सलाम के बाद कलिमए तय्यिबा एक सौ बार पढ़ना है,

बारगाहे रब्बुल-इज़्ज़त से इन्शाअल्लाह तआ़ला बेशुमार इबादत का सवाब अ़ता होगा।

25वीं शब को चार रकअ़त नमाज़ दो सलाम के साथ पढ़े, हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए क़दर तीन-तीन बार, सूरए इख़्लास तीन बार पढ़े, सलाम के बाद 70 बार इस्तिग़्फ़ार पढ़े, यह नमाज़ गुनाहों की बख़्शिश के लिए बहुत अफ़्ज़ल है।

25वीं शबे क़दर को दो रकअ़त नमाज़ पढ़नी है, हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए क़दर एक-एक बार, सूरए इख़्लास 15-15 बार पढ़े, सलाम के बाद 70 बार कलिमए शहादत पढ़ना है।

यह नमाज़ अ़ज़ाबे क़ब्र से निजात के लिए बहुत अफ़्ज़ल है।

चौथी शबे क़दर

27वीं शबे क़दर को 12 रकअ़त नमाज़ तीन सलाम के साथ पढ़े, हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए क़दर एक-एक बार, सूरए इख़्लास 15-15 बार पढ़नी है, सलाम के बाद 70 बार इस्तिग़्फ़ार पढ़े, अल्लाह तआ़ला इस नमाज़ के पढ़ने वाले को नबियों की इबादत का सवाब अ़ता फ़रमाएगा। इन्शाअल्लाहुल अज़ीम

27वीं शब को दो रकअ़त नमाज़ पढ़े, हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए क़दर तीन-तीन बार, सूरए इख़्लास 27 बार पढ़ कर गुनाहों की मग़्फ़िरत तलब करे, इन्शाअल्लाह तआ़ला उसके तमाम पिछले गुनाह अल्लाह पाक माफ़ फ़रमाएगा।

27वीं शब को चार रकअ़त नमाज़ दो सलाम के साथ पढ़नी है, हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए तकासुर

एक-एक बार, सूरए इख़्लास तीन-तीन बार पढ़े, इस नमाज़ के पढ़ने वाले पर अल्लाह पाक मौत की सख़्ती आसान करेगा। इन्शाअल्लाह तआला उसपर से अज़ाबे क़ब्र भी माफ़ हो जाएगा।

27वीं शब को दो रकअ़त नमाज़ पढ़े, हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास सात-सात बार, सलाम के बाद 70 बार यह तस्बीहे मुअ़ज़्ज़म पढ़नी है: أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ

الَّذِيْ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ وَأَتُوْبُ إِلَيْهِ

इन्शाअल्लाह तआला इस नमाज़ के पढ़ने वाले अपने मुसल्ले से न उठेंगे कि अल्लाह पाक उसके और उसके माँ-बाप के गुनाह माफ़ फ़रमा कर मग़्फ़िरत फ़रमाएगा और अल्लाह तआला फ़रिश्तों को हुक्म देगा कि इस के लिए जन्नत को संवारो और फ़रमाया कि वह जब तक तमाम बहिश्ती नेअ़मतें अपनी आँख से न देख लेगा उस वक़्त तक मौत न आएगी, मग़्फ़िरत के लिए यह नमाज़ बहुत अफ़्ज़ल है।

27वीं शब को दो रकअ़त नमाज़ पढ़े, हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए अलम-नश्रह एक-एक बार, सूरए इख़्लास तीन-तीन बार पढ़े, सलाम के बाद 27 बार सूरए क़दर पढ़े, इन्शाअल्लाहुल अज़ीम बेशुमार इबादात के बराबर सवाब के लिए यह नमाज़ बहुत अफ़्ज़ल है ।

27वीं शब को चार रकअ़त नमाज़ पढ़े, हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए क़दर तीन-तीन बार, सूरए इख़्लास 50-50 बार पढ़े, सलाम के बाद सजदे में सर रख कर एक बार यह कलिमात पढ़े:

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ أَكْبَرُ

उसके बाद जो हाजत दुनियावी हो या दीनी तलब करे, वह इन्शाअल्लाह तआ़ला बारगाहे बारी तआ़ला में क़बूल होगी ।

पाँचवीं शबे क़दर

29वीं रात को चार रकअ़त नमाज़ दो सलाम के साथ पढ़े, हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए अल-क़दर एक-एक बार, सूरए इख़्लास तीन-तीन बार पढ़े, सलाम के बाद सूरए अलम-नश्रह 70 बार पढ़े, यह नमाज ईमान में इज़ाफ़े के लिए बहुत अफ़्ज़ल है।

इन्शाअल्लाहु तबारक व तआ़ला इस नमाज़ के पढ़ने वाले को दुनिया से कामिल ईमान के साथ उठाया जाएगा।

रमज़ान के महीने की 29वीं रात को चार रकअ़त नमाज़ दो सलाम के साथ पढे, हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए क़दर एक-एक बार, सूरए इख़्लास पाँच-पाँच बार पढे, सलाम के बाद दुरूद शरीफ़ एक सौ बार पढ़े।

इन्शाअल्लाह तआ़ला इस नमाज़ के पढ़ने वाले को दरबारे ख़ुदावन्दी से बख़्शिश और मग़्फ़िरत अ़ता की जाएगी ।

वज़ाइफ़

रमज़ान के महीने की पहली रात को इशा की नमाज़ के बाद एक बार सूरए फ़तह पढ़ना बहुत अफ़्ज़ल है।

रमज़ान के महीने की पहली रात को नमाज़े तहज्जुद के बाद आसमान की तरफ़ मुँह करके 12 बार यह दुआ़ पढ़नी बहुत अफ़्ज़ल है:

لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ الْحَقُّ الْقَيُّوْمُ الْقَائِمُ عَلٰى كُلِّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ

इसके पढ़ने वाले को बेशुमार नेअ़मतें अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से अ़ता की जाएँगी।

रमज़ानुल्-मुबारक के महीने में रोज़ाना हर नमाज़ के बाद इस दुआए मग़फ़िरत को 3 तीन बार पढ़ना बहुत अफ़ज़ल है.

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَىُّ الْقَيُّوْمُ

اِلَيْهِ تَوْبَةَ عَبْدٍ ظَالِمٍ لَّا يَمْلِكُ نَفْسُهٗ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا

وَّلَا مَوْتًا وَّلَا حَيٰوةً وَّلَا نُشُوْرًا

रमज़ान शरीफ़ में हर नमाज़े इशा व तरावीह के बाद हर दिन तीन बार कलिमए तय्यिबा पढ़ने की बहुत फ़ज़ीलत है। पहली बार पढ़ने से गुनाहों की मग़फ़िरत होगी, दूसरी बार पढ़ने से दोज़ख से आज़ाद होगा, तीसरी बार पढ़ने से जन्नत का हक़दार होगा।

रमज़ान के महीने की 21वीं रात को 21 बार सूरए क़द्र पढ़ना भी बहुत अफ़ज़ल है।

23वीं रात को सूरए यासीन एक बार, सूरए रहमान एक बार पढ़नी बहुत अफ़ज़ल है।

25वीं रात को सात बार सूरए दुख़ान पढ़े, इन्शाअल्लाह तआ़ला अल्लाह पाक इस सूरत के पढ़ने की वजह से क़ब्र के अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रखेगा।

25वीं रात को सात बार सूरए फ़तह पढ़ना हर मुराद के पाने के लिए बहुत अफ़ज़ल है।

27वीं रात को सातों हा० मीम० पढ़े, यह सातों हा० मीम० अज़ाबे क़ब्र से निजात और गुनाहों की मग़फ़िरत के लिए बहुत अफ़ज़ल हैं।

27वीं रात को सूरए मुल्क सात बार पढ़नी गुनाहों की मग़फ़िरत के लिए बहुत फ़ज़ीलत वाली है।

रमज़ानुल्-मुबारक की 29वीं रात को सात बार सूरए वाक़िआ पढ़े इन्शाअल्लाह तआ़ला रोज़ी में इज़ाफ़े के लिए बहुत अफ़ज़ल है।

रमज़ान के महीने की किसी भी रात में इशा की नमाज़ के बाद सात बार सूरए क़दर पढ़नी बहुत अफ़ज़ल है। इन्शाअल्लाह तआ़ला इस के पढ़ने से हर मुसीबत से निजात हासिल होगी।

जुमुअ़तुल्-विदाअ़

रमज़ानुल्-मुबारक के आख़िरी जुमे को नमाज़ ज़ुहर के बाद दो रकअ़त नमाज़ पढ़े, पहली रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए ज़िल्ज़ाल एक बार, सूरए इख़्लास दस बार, दूसरी में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए काफ़िरून तीन बार पढ़े, सलाम के बाद दस बार दुरूद शरीफ़ पढ़े। फिर दो रकअ़त नमाज़ पढ़े, पहली रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए तकासुर एक बार, सूरए इख़्लास दस बार, दूसरी रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद आयतल कुर्सी तीन बार, सूरए इख़्लास 25 बार, सलाम के बाद दुरूद शरीफ़ दस बार पढ़े।

इस नमाज़ के बेशुमार फ़ज़ाइल हैं और इस नमाज़ के पढ़ने वाले को अल्लाह पाक क़ियामत के दिन बे शुमार इबादात का सवाब अ़ता फ़रमाएगा। इन्शाअल्लाह तआ़ला

शव्वालुल्-मुकर्रम

सरवरे काइनात सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि शव्वालुल् मुकर्रम बड़ी अज़मत व बड़ाई वाला महीना है और इस महीने की इबादत का बहुत सवाब है।

नफ़्ल नमाज़

शव्वालुल् मुकर्रम की पहली रात को इशा की नमाज़ के बाद चार रकअत नफ़्ल दो सलाम के साथ पढ़े, हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास 21-21 बार पढ़नी है, इन्शाअल्लाह तआला इस नमाज़ के पढ़ने वाले के लिए अल्लाह पाक जन्नत के दरवाज़े खोल देगा और दोज़ख़ के दरवाज़े बन्द कर देगा।

शव्वाल की पहली रात को इशा की नमाज़ के बाद चार रकअत नमाज़ दो सलाम के साथ पढ़ें, हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास तीन-तीन बार, सूरए फ़लक़ तीन-तीन बार, सूरए नास तीन-तीन बार पढ़े, सलाम के बाद कलिमए तम्जीद 70 बार पढ़ कर अपने गुनाहों से तौबा करे, अल्लाह पाक इस नमाज़ की बरकत से इन्शाअल्लाह तआला उस के गुनाह माफ़ फ़रमा कर उसकी तौबा क़बूल फ़रमाएगा।

ईदुल्-फ़ितर

शव्वाल की पहली तारीख़ को ज़ुहर की नमाज़ के बाद आठ रकअत नमाज़ चार सलाम के साथ पढ़े, हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास 25-25 बार पढ़नी है। सलाम के

बाद 70 बार सुब्हानल्लाह 70 बार इस्तिग़फ़ार और सत्तर बार यह दुरूद शरीफ पढ़ना है:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ

इन्शाअल्लाहुल अज़ीम इस नमाज़ के पढ़ने वाले की अल्लाह पाक सत्तर हाजतें दुनिया की और सत्तर हाजतें आख़िरत की क़बूल फ़रमाएगा और उसके लिए अपनी रहमत के बेशुमार दरवाज़े खोल देगा।

नफ़्ल रोज़ा

शव्वालुल-मुकर्रम के महीने की दूसरी तारीख़ से छे रोज़े रखने की बड़ी फ़ज़ीलत है, फ़रमाया रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो शव्वाल के छे रोज़े रखे तो अल्लाह पाक उसे हज़ार रोज़ों का सवाब देगा और उसपर दोज़ख़ की आग हराम कर देगा और उस के नाम-ए-आमाल में बे शुमार नेकियो का सवाब अता करेगा, चाहे ये रोज़े बराबर रखे या दूसरी का रख कर छोड़ दे मगर इसी महीने में तमाम रोज़े पूरे करने होंगे।

ज़ीक़ादा

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि ज़ीक़ादा का महीना बहुत बुज़ुर्गी वाला महीना है और इस महीने की इबादत बहुत अफ़ज़ल है।

नफ़्ल नमाज़

जीक़ादा के महीने की पहली रात को इशा की नमाज़ के बाद चार रकअत नमाज़ दो सलाम के साथ पढ़े, हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास 23-23 बार पढ़नी है, सलाम के बाद अपने गुनाहों से तौबा करके अल्लाह तआला से मग़फ़िरत तलब करे, इन्शाअल्लाह तआला इस नमाज़ की बरकत से अल्लाह पाक उसकी बख़्शिश फ़रमाएगा और हश्र के दिन उसका चेहरा सूरज से ज़्यादा रोशन होगा।

जीक़ादा के महीने की हर रात को इशा की नमाज़ के बाद दो रकअत नमाज़ पढ़े, हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास तीन-तीन बार पढ़नी है, इन्शाअल्लाह तआला इस नमाज़ के पढ़ने वाले को अल्लाह तबारक व तआला की तरफ़ से हर रात उमरे का सवाब मिलेगा।

जीक़ादा के महीने में हर जुमे के बाद चार रकअत नमाज़ दो सलाम के साथ पढ़े, हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास 21-21 बार पढ़नी है।

इस नमाज़ के पढ़ने वाले को इन्शाअल्लाह तआला हज व उमरे का सवाब अल्लाह पाक अता फ़रमाएगा।

नफ़्ल रोज़ा

जीक़ादा के महीने में जो कोई किसी दिन एक रोज़ा रखे, अल्लाह पाक उस को उमरे का सवाब अता फ़रमाएगा।

और

इस महीने में पीर के दिन जो कोई रोज़ा रखे उस को बे शुमार इबादात का सवाब मिलेगा।

ज़िल्-हिज्जा

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि अल्लाह पाक ने ज़िल्-हिज्जा के महीने को बड़ी बुज़ुर्गी और फ़ज़ीलत का महीना फ़रमाया है, आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि "इस महीने के दस दिन बहुत मुतबर्रक हैं और इस की इबादत का सवाब बहुत है, और फ़रमाया कि दस दिन में तीन दिन यौमे तरवियह यानी 8 तारीख़, यौमे अरफ़ा यानी 9 तारीख़, यौमे नहर ज़िल-हिज्जा की 10वीं तारीख़, यह तीन दिन तमाम दिनों से ज़्यादा मुबारक हैं और इसकी इबादत का बेशुमार सवाब भी है।

नफ़्ल नमाज़

ज़िल्-हिज्जा के महीने की पहली रात को इशा की नमाज़ के बाद चार रकअत नमाज़ दो सलाम के साथ पढ़े, हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास 25-25 बार पढ़नी है, अल्लाह पाक इस नमाज़ के पढ़ने वाले को बे शुमार नमाज़ों का सवाब अता फ़रमाएगा इन्शाअल्लाह तआला

पहली रात से ले कर 10वीं रात तक हर दिन इशा की नमाज़ के बाद दो रकअत नमाज पढ़े, हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए कौसर तीन-तीन बार, सूरए इख़्लास तीन-तीन बार पढ़नी है, इन्शाअल्लाह तआला इस नमाज की अज़मत की वजह से अल्लाह पाक उसके नाम-ए-अ'माल में बेशुमार नेकियाँ अता फ़रमा कर बेशुमार बुराइयाँ मिटा देगा।

ज़िल हिज्जा के महीने की पहली रात से 10वीं रात तक

हर दिन इशा की नमाज़ के बाद दो रकअत नमाज़ पढ़े, पहली रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद आयतल कुर्सी एक बार, सूरए इख़्लास 15 बार, दूसरी रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए बक़रा का आख़िरी रुकू एक बार, सूरए इख़्लास 15 बार पढ़े, इस नमाज़ के पढ़ने वाले के गुनाह अगर रेत के ज़र्रों के बराबर भी हों तब भी परवरदिगारे आलम अपनी क़ुदरत कामिला से उसके गुनाह मुआफ़ फ़रमा कर इन्शाअल्लाह तआला मग़्फ़िरत फ़रमाएगा।

ज़िल्-हिज्जा की दूसरी रात को इशा की नमाज़ के बाद चार रकअ़त नमाज़ दो सलाम के साथ पढ़े और हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद आयतल कुर्सी तीन बार, सूरए इख़्लास तीन बार, सूरए फ़लक़ तीन बार, सूरए नास तीन बार पढ़नी है।

सलाम के बाद ग्यारह बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर दुआ के लिए हाथ उठा कर नीचे लिखी हुई दुआ पढ़े :

سُبْحَانَ ذِی الْعِزَّةِ وَالْجَبَرُوْتِ سُبْحَانَ ذِی الْقُدْرَةِ وَ
الْمَلَكُوْتِ سُبْحَانَ ذِی الْحَیِّ الَّذِیْ لَا یَمُوْتُ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ
ھُوَ یُحْیٖ وَیُمِیْتُ وَھُوَ حَیٌّ لَّا یَمُوْتُ سُبْحَانَ اللّٰہِ رَبِّ الْعِبَادِ
وَالْبِلَادِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ کَثِیْرًا طَیِّبًا مُّبَارَکًا عَلٰی کُلِّ حَالٍ اَللّٰہُ
اَکْبَرُ کَبِیْرًا رَبَّنَا جَلَّ جَلَالُہٗ وَقُدْرَتُہٗ بِکُلِّ مَکَانٍ ط

दुआ के बाद फिर ग्यारह बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में जो भी दुआ मांगे इन्शाअल्लाह तआला क़बूल होगी।

ज़िल्-हिज्जा की पहली जुमेरात की रात को दो रकअत नमाज़ पढ़े, हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए कौसर एक

बार, सूरए इख़्लास एक बार पढ़े, सच्चे दिल से इस नमाज़ का पढ़ने वाला अपनी ज़िन्दगी में ही अपना मर्तबा बहिश्त में देख लेगा, इन्शाअल्लाह तआ़ला।

ज़िल्-हिज्जा के पहले जुमे को नमाज़े ज़ुहर के बाद छे रकअ़त नमाज़ तीन सलाम के साथ पढ़नी है, हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास 15-15 बार पढ़ें फिर सलाम के बाद दस बार नीचे लिखे हुए कलिमात पढ़ें:

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ الْمَلِكُ الْحَقُّ الْمُبِیْنُ ط

अव्वल आख़िर ग्यारह-ग्यारह बार दुरूद पाक पढ़ कर नमाज़ की क़बूलियत और बख़्शिशे गुनाह के लिए ख़ुदा तआ़ला से दुआ मांगें, इन्शाअल्लाह तआ़ला अल्लाह पाक अपनी क़ुदरते कामिला से इस नमाज़ के पढ़ने वाले को उसके गुनाह माफ़ फ़रमा कर बहिश्त में दाख़िल फ़रमाएँगे।

वज़ाइफ़

ज़िल्-हिज्जा की पहली तारीख़ और छठी तारीख़ को नमाज़े फ़जर या ज़ुहर के बाद नीचे लिखे हुए कलिमात 100 बार पढ़ें:

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْكَ لَہٗ لَہُ الْمُلْكُ وَلَہُ الْحَمْدُ یُحْیٖ
وَیُمِیْتُ وَھُوَ حَیٌّ لَّا یَمُوْتُ بِیَدِہِ الْخَیْرُ وَھُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ط

ज़िल्-हिज्जा की दूसरी और 7वीं तारीख़ को फ़जर की नमाज या ज़ुहर की नमाज़ के बाद नीचे लिखे हुए कलिमात एक सौ बार पढ़ना है:

اَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْكَ لَہٗ اِلٰھًا وَّاحِدًا
اَحَدًا صَمَدًا فَرْدًا وِّتْرًا وَّلَمْ یَتَّخِذْ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ط

ज़िल्-हिज्जा की तीसरी और 8वीं तारीख़ को नमाज़े फ़जर या ज़ुहर के बाद नीचे लिखे हुए कलिमात एक सौ बार पढ़ने हैं:

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ اَحَدًا صَمَدًا
لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ؕ

ज़िल्-हिज्जा की चौथी और नवीं तारीख़ को नमाज़े फ़जर या ज़ुहर के बाद नीचे लिखे हुए कलिमात एक सौ बार पढ़ने हैं:

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ
يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ؕ

अशर-ए-ज़िल्-हिज्जा में हर दिन बा वुज़ू हो कर किसी भी वक़्त सूरए फ़जर का पढ़ना बहुत अफ़्ज़ल है।

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जो कोई इन मुबारक दिनो की अज़्मत को सामने रखते हुए सूरए फ़जर का विर्द करेगा, हक़ तआला हिसाब के दिन उस की मग़्फ़िरत फ़रमाएगा और उसके लिए उस दिन कोई ख़ौफ़ न होगा।

ज़िल्-हिज्जा के दस दिन बराबर ज़्यादा से ज़्यादा सूरए ज़ुहा पढ़ने की बड़ी फ़ज़ीलत है। आप (सल्ल०) इरशाद फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला इस सूरत के पढ़ने वाले को इन्शाअल्लाह तआला दोज़ख़ की आग से निजात अ़ता फ़रमाएगा।

ईदुल-अज़्हा के दिन किसी वक़्त बा वुज़ू होकर क़ुरआने करीम की कम से कम 100 आयात तिलावत करे, अल्लाह पाक उसे बहिश्त की बे शुमार नेअ़मतें इन्शाअल्लाह तआला अ़ता फ़रमाएगा।

नफ़्ल रोज़ा

ज़िल्-हिज्जा के महीने की पहली तारीख़ से 9 तारीख़ तक के रोज़ों की बड़ी फ़ज़ीलत है और सबसे ज़्यादा 7, 8, 9 तारीख़ के रोज़े रखने के बहुत फ़ज़ाइल हैं, अल्लाह पाक इन रोज़ों का बहुत सवाब अ़ता फ़रमाएगा।

दिन और रात की नफ़्लें

नमाज़े शंबह (हफ़्ता)

हफ़्ते की रात को इशा की नमाज़ के बाद 12 रकअ़त नमाज़ छे सलाम के साथ पढ़ें, हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद क़ुरआने पाक से जो भी सूरत याद हो पढ़ी जा सकती है, इन्शाअल्लाह तआला इस नमाज़ के पढ़ने वाले को अल्लाह पाक अपनी रहमत से उसके गुनाह माफ़ करके मग़्फ़िरत फ़रमाता है और उसको बहिश्त में ऊँचा मक़ाम अ़ता करेगा।

नमाज़े यक-शंबह (इत्वार)

इत्वार के दिन ज़ुहर की नमाज़ के बाद चार रकअ़त नमाज़ दो सलाम के साथ पढ़े, हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए बक़रा का आख़िरी रुकूअ़ आमनर-रसूलु से काफ़िरीन तक एक-एक बार पढ़ें, ख़ुदावन्दे करीम इस नमाज़ के पढ़ने वाले को

हर रकअत के बदले में हज़ार रकअत का सवाब अता करेगा और इन्शाअल्लाह तआला उस की तमाम दुनिया व आख़िरत की दुआएं क़बूल करेगा।

नमाज़े दोशंबह (पीर)

पीर की रात को इशा की नमाज़ के बाद दो रकअत नमाज़ पढ़े और हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास 15-15 बार पढ़नी है, सलाम के बाद आयतल कुर्सी 15 बार और इस्तिग़फ़ार 15 बार पढ़े, अल्लाह तआला इस नमाज़ के पढ़ने वाले के तमाम ज़ाहिर व बातिन के गुनाह माफ़ फ़रमा कर इन्शाअल्लाह तआला मग़फ़िरत फ़रमाएगा।

नमाज़े सह-शंबह (मंगल)

मंगल की रात को इशा की नमाज़ के बाद 12 रकअत नमाज़ छे सलाम के साथ पढ़ें, हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए नस्र पांच बार पढ़ें, इन्शाअल्लाह तआला इस नमाज़ के पढ़ने वाले को ख़ुदावन्दे करीम मग़फ़िरत फ़रमा कर बहिश्त में आला दर्जे का महल अता फ़रमाएगा।

नमाज़े चहार शंबह (बुध)

बुध के दिन सुबह दस ग्यारह बजे के बीच या ज़ुहर की नमाज़ के बाद 12 रकअत नमाज़ छे सलाम के साथ पढ़नी है, और हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए इख़्लास तीन बार, सूरए फ़लक़ तीन बार, सूरए नास तीन बार पढ़ें, अल्लाह तबारक व तआला इस नमाज़ के पढ़ने वाले के गुनाह माफ़ फ़रमाकर मग़फ़िरत फ़रमाएगा और इन्शाअल्लाह तआला उस पर से क़ब्र का

अज़ाब हटा दिया जाएगा और क़ियामत के दिन उसे सच्चे लोगों में शामिल किया जाएगा।

नमाज़े पंज-शंबह (जुमेरात)

जुमेरात की रात को इशा की नमाज़ के बाद दो रकअत नमाज़ पढ़े, हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद आयतल कुर्सी पाँच बार, सूरए इख़्लास पाँच बार, सूरए फ़लक़ पाँच बार, सूरए नास पाँच बार पढ़ें, सलाम के बाद इस्तिग़फ़ार 15 बार पढ़नी है।

अल्लाह तबारक व तआला इस नमाज़ के पढ़ने वाले को इन्शाअल्लाह तआला क़ियामत के दिन सिद्दीक़ों और शहीदों के साथ उठाएगा, इस नमाज़ को पढ़ कर अपने माँ-बाप को बख़्शने का बहुत सवाब है।

नमाज़े जुमा

जुमे के दिन सुबह दस ग्यारह बजे के बीच चार रकअत नमाज़ दो सलाम के साथ पढ़े, पहली रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए अअ्ला एक बार, सूरए इख़्लास 15 बार, दूसरी रकअत में सूरए फ़ातिहा के बाद सूरए कौसर एक बार, सूरए इख़्लास 15 बार पढ़े, फिर इसी तरह से दो रकअत और पढ़नी हैं।

अल्लाह तआला इस नमाज़ के पढ़ने वाले की हर दुआ क़बूल फ़रमाएगा और इन्शाअल्लाह तआला उसकी क़ब्र में रोशनी होगी और दोज़ख़ से निजात पाकर बहिश्त में दाख़िल किया जाएगा।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के फ़रमान

(1) لَيْسَ الْمُؤْمِنُ الَّذِىْ يَشْبَعُ وَجَارُهٗ جَائِعٌ اِلٰى جَنْبِهٖ

"वह शख़्स मोमिन नहीं हो सकता जो ख़ुद पेट भर कर खाए और उस का पड़ोसी भूखा रहे।" (बैहक़ी)

(2) لَا تُكَلِّمَنَّ بِكَلَامٍ تَعْتَذِرُ مِنْهُ غَدًا

"कोई ऐसी बात न कर जिस के लिए कल तुझे पछताना पड़े।" (मिश्कात शरीफ़)

(3) اُعْطُوا الْاَجِيْرَ اَجْرَهٗ قَبْلَ اَنْ يَّجِفَّ عِرْقُهٗ

"मज़दूर की मज़दूरी उसका पसीना सूखने से पहले अदा कर दो।" (इब्ने माजा)

(4) اِذَا قُمْتَ فِىْ صَلٰوتِكَ فَصَلِّ صَلٰوةَ مُوَدِّعٍ

"जब तू नमाज़ के लिए खड़ा हो तो यह समझ कर पढ़ कि (तेरी ज़िन्दगी की) यह आख़िरी नमाज़ है।" (मिश्कात शरीफ़)

या

रात को सोने से पहले तू अपने गुनाहों की माफ़ी मांग, हो सकता है कि यह रात तेरी ज़िन्दगी की आख़िरी रात हो।

(तालीमुल-क़ुरआन)

फ़जर की नमाज़ के बाद, सूरए यासीन और सूरए फ़जर
ज़ुहर की नमाज़ के बाद, सूरए फ़त्ह
अ़सर की नमाज़ के बाद, सूरए अन-नबा
मग़रिब की नमाज़ के बाद, सूरए वाक़िअह
इशा की नमाज़ के बाद, सूरए सज्दह और सूरए मुल्क

यह हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हर दिन पढ़ कर सोया करते थे।

रोज़ी के लिए सूरए मुज़म्मिल तीन या सात बार पढ़े। इन्शाअल्लाह तआ़ला कामयाबी व कामरानी नसीब होगी।

22- मुहर्रम को काबतुल्ला की बुनियाद पड़ी
18- ज़िल्-हिज्जा को कावतुल्लाह तय्यार हुआ
25- ज़ीक़ादा को नुबुव्वत का एलान फ़रमाया
27- रजबुल्-मुरज्जब को मेराज पर तशरीफ़ ले गए
12 रबीउल्-अव्वल को आप (सल्ल०) दुनिया में तशरीफ़ लाए

अगर आप इन तारीख़ों में रोज़ा रखें तो अल्लाह तआ़ला आप को एक रोज़े के बदले में एक हज़ार रोज़ों का सवाब अ़ता फ़रमाएगा।

दुआ़इया अश्आ़र

इलाही ब हक़्क़े बनी फ़ातिमा
कि बर क़ौले ईमाँ कुनी ख़ातिमा

अगर दअ़वतम रद कुनी दर क़बूल
मन व दस्तो दामाने आले रसूल

ज़बाँ पे कलिमा हो सर हो नबी के क़दमों पर
जुमा का दिन हो शबे क़दर में बुला लेना

इलाही ज़िक्र से ग़ाफ़िल न रखना बाद मुर्दन भी
लेहद में भी करें ज़िक्रे इलाही हड्डियाँ मेरी

ख़ुदा के ज़िक्र से क़ायम है यह निज़ामे हयात
ये दिल की धड़कनें हर वक़्त सदा देती हैं

उम्र हो तेरी बसर हम्दे ख़ुदा में माजिद
नाम हो तेरा मुहम्मद सल्ल० के सना ख़्वानों में

रसूले ख़ुदा (सल्ल०)
की प्यारी बातें

1- सच्चाई: सच्चाई पर जमे रहो, सच्चाई में निजात है।

2- अमानत्दारी: जिस शख़्स में अमानतदारी नहीं उसमें ईमान नहीं।

3- पर्हेज़गारी (तक़्वा): ख़ुदा के नज़दीक इज़्ज़त वाला वह है जो सबसे ज़्यादा पर्हेज़गार हो।

4- सादगी: आराम तलबी से बचो, अल्लाह के बन्दे ऐश पसंद नहीं होते।

5- तवक्कुल: अल्लाह ही पर भरोसा करो, लेकिन अपनी कोशिश और मेहनत को न छोड़ो।

6- रहम्-दिली: तुम ज़मीन वालों पर रहम करो, आसमान वाला तुम पर रहम करेगा।

7- एआ़नत (मदद): अपने भाइयों की मदद करना एक महीने किसी मस्जिद में एतिकाफ़ करने से अफ़्ज़ल है।

8- सुलह: सुलह करना नमाज़ और सदक़े से बेहतर है।

9-अफ़्व व हिल्म: तुम में ज़्यादा ताक़तवर वह है जो गुस्से में अपने अपको क़ाबू में रखे और ताक़त होते हुए बदला लेने से रुका रहे।

10- तलाश: ख़ुदा की तलाश में भटकते फिरने की कोई ज़रूरत नहीं, देखने की नज़र से देखो तो ख़ुदा शहे-रग से ज़्यादा क़रीब है।

11- बुज़ुर्गी: ख़ुदा के बन्दों में वही शख़्स बुज़ुर्ग है जो ख़ुदा को मुहब्बत की नज़र से देखता है।

12- तक़्वियते ईमान: जिस तरह ज़बान बाल से पाक है इसी तरह ईमान को बे ईमानी से पाक रखना चाहिए।

मुनाजात

अब दुआ के वास्ते ऐ मोमिनो — हाथ अपने सब उठाओ दोस्तो
और पुकारो हम ज़बां हो करके सब — फ़रयाद है फ़रयाद है सुनले ऐ या रब
दर को तेरे छोड़ कर जाएँ कहाँ — तेरे बन्दो का ठिकाना है कहाँ
तू ही ख़ालिक़ तू ही मालिक है ख़ुदा — दूसरा कोई नहीं तेरे सिवा
आग को तू ने बनाया बाग़ था — और ख़लीलुल्लाह को बचवा लिया
राह दरिया में दिया मूसा को है — और बचाया चाह से यूसुफ़ को है
और आदम ने ख़ता जब है किया — फेंका है तू ने ज़मीं पर ऐ ख़ुदा
अपनी बख़्शिश के लिए आदम ने तब — बहुत रोए और पुकारे मेरे रब
पर नहीं बख़्शिश हुई आदम की है — सैकड़ों बर्सों तलक रोया किए
जब मुहम्मद का वसीला है लिया — ऐ ख़ुदा तब तू ने आदम को कहा
तेरी दुआ मक़बूल अब तो हो गई — जोश पर रहमत है आई उस घड़ी
माफ़ अब तेरी ख़ता हम ने किया — देख ऐ आदम तुफ़ैले मुस्तफ़ा सल्ल०
तो आज हम भी सब तेरी दरगाह में — सब मुहम्मद सल्ल० का वसीला लाए हैं
वास्ते अब तू रसूलुल्लाह सल्ल० के — अस्हाबे नबी अहले नबी के वास्ते
बख़्श दे सारे गुनाह जो हम ने किए — रहमत से तेरी और तेरे फ़ज़्ल से
हर बला से और मुसीबत से बचा — रास्ता हम को ख़ुदा सीधा चला
जो कि इस मज्लिस में हैं हाज़िर ख़ुदा — उनके पूरा दिल का हो हर मुद्दआ
ख़ुश रहे सब उम्मते ख़ैरुल्-वरा — पूरी हो उम्मीद सब की ऐ ख़ुदा

दे शिफ़ा बीमार को मालिक मेरे — जो सफ़र में है ख़ुशी से भेज दे
और दे औलाद को औलाद दे — कर दे घर को उनके रौशन रब मेरे
और रोज़ी दे हमें रिज़्के हलाल — मेहरबानी से तेरी ऐ ज़ुल-जलाल
रोज़ी में ऐसी बरकत सब को दे — मुंह से अपने ही तमामी बस कहे
ज़िन्दगी में तन्दुरुस्ती सब को दे — रात दिन तेरा ज़िक्र लब पर रहे
छोड़ दे तू क़ैदियों को क़ैद से — और ख़ुशी से उनके घर पर भेज दे
कर न तू मुहताज हमको किसी का भी — रब हमें मुहताज तेरे दर का ही
वक़्त जब सकरात का होवे ख़ुदा — लब पर हो कलिमा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल०
हश्र में भी हूँ नबी के साथ मैं — हो हमारा हाथ उनके हाथ में
क़ादिरी की यह दुआ है ऐ ख़ुदा — इसको कर मक़बूल बहरे मुस्तफ़ा सल्ल०

हर मुसीबत और हर बला से बचा
और रसूलुल्लाह सल्ल० का जल्वा दिखा

मुफ़ीद और कार आमद बातें

● ख़ैरात करने से माल बढ़ता है ● एहसान दुश्मन को भी ज़ेर कर देता है ● हक़ीक़त यक़ीन की माँ है ● इनसान का सबसे बड़ा दुश्मन नफ़्स है ● जो ख़ुद अपना सुधार नहीं कर सकता उससे दूसरों का सुधार मुम्किन नहीं ● ख़ामूशी फ़ुज़ूल बातों से बेहतर है ● मुहब्बत के बिना ख़ूबसूरती ज़हर है ● दिल की सफ़ाई सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरती है ● जो मुहब्बत आप अपने माँ-बाप से करोगे वही मुहब्बत आप की औलाद आपसे करेगी ● दुनिया एक बैंक है तुम को इस में से वही चीज़ मिलेगी जो तुम ने एकट्ठा की है ● दुनिया में सबसे मुश्किल काम अपना सुधार है और सबसे आसान दूसरों की तन्क़ीद करना है ● अमन चाहते हो तो अपने कान और आँख का इस्तेमाल करो लेकिन ज़बान बन्द रखो ● उम्र के किसी हिस्से में भी औरत को अपनी मरज़ी पर न छोड़ना चाहिए ● बीमारी घोड़े की चाल से आती है और चिंवटी की चाल से जाती है ● आदमी को ख़ुद उसके अलावा कोई दूसरी चीज़ नुक़सान नहीं पहुँचा सकती ● औरत का दिल उसके दिमाग़ पर हुकूमत करता है ● सच बोलने वाला दुश्मन, झूठे दोस्त से अच्छा है ● दूसरों की ग़लतियाँ भूल जाओ लेकिन अपनी एक भी न भूलो ● ज़बान अगर्चे तलवार नहीं लेकिन तलवार से तेज़ है ● जो शख़्स यह चाहता है कि उसकी ज़िन्दगी सुख से गुज़रे वह अपने दिल से लालच निकाल दे।

अन्मोल बातें

- रिश्वत इन्साफ़ को खा जाती है
- तौबा गुनाह को खा जाती है
- ग़ीबत अमल को खा जाती है
- नेकी बदी को खा जाती है
- ग़ुस्सा अक़्ल को खा जाता है
- झूठ रिज़्क़ को खा जाता है
- सबसे बड़ी बहादुरी बदला न लेना है
- सबसे अच्छी ख़ैरात माफ़ कर देना है
- सबसे अच्छा नशा मख़्लूक़ की ख़िदमत है
- ख़ैरात से माल कम नहीं होता है
- तद्बीर से बढ़ कर कोई अक़्लमन्दी नहीं
- इल्म से बढ़ कर कोई दौलत नहीं
- तकब्बुर इल्म को खा जाता है
- इन्साफ़ ज़ुल्म को खा जाता है
- तवाज़ो से दर्जा बुलन्द होता है
- फ़िक्र उम्र को खा जाती है

माँ की अज़मत

❑ माँ के बिना घर क़ब्रिस्तान की तरह लगता है।

(औरंग ज़ेब आलमगीर)

❑ सख़्त से सख़्त दिल को माँ की पुरनम आँखों से मोम किया जा सकता है। (अ़ल्लामा इक़बाल)

❑ दुनिया की ख़ूबसूरत चीज़ माँ सिर्फ़ माँ है।

(मुहम्मद अ़ली जौहर)

❑ माँ की मुहब्बत हक़ीक़त की आईना दार है।

(अलताफ़ हुसैन हाली)

❑ माँ की हमदर्दी की उम्मीद रखने के बजाए माँ का हमदर्द होना चाहिए। (अरस्तू)

❑ अगर मुझे मेरी माँ से अलग कर दिया जाए तो मैं पागल हो जाउँगा। (हकीम लुक़मान)

❑ माँ और फूल में मुझे कोई फ़रक़ नज़र नहीं आता।

(नादिर शाह)

अच्छी बातें

❊ इल्म के साथ अ़मल और दौलत के साथ सख़ावत न हो तो दोनों बेकार हैं।

❊ दौलत, इज़्ज़त के, शौकत हिकमत के, हुस्न इबादत के, सूरत सीरत के और शुजाअ़त सख़ावत के मुक़ाबले में हेच है।

❊ मुबारक हैं वे लोग जो अपनी तदबीर उस वक़्त तक भी करते रहते हैं जब ज़माना उनका मज़ाक़ उड़ा रहा होता है।

❊ हयात ख़ुद नहीं बनती बनाई जाती है।

❊ चिराग़ ख़ुद नहीं जलते जलाए जाते है।

❊ दौलत से लड़का ख़रीदा जासकता है, बेटा नहीं।

❊ दौलत से ज़ेवरात ख़रीदे जासकते हैं, ख़ूबसूरती नहीं।

❊ दौलत से चापलोसी ख़रीदी जासकती है मुहब्बत नहीं।

❊ दौलत से किताबें ख़रीद सकते हैं इल्म नहीं।

❊ दौलत से नरम नरम बिस्तर ख़रीदे जासकते हैं नींद नहीं।

❊ पैसा ज़िन्दगी ले सकता है दे नहीं सकता।

❊

तस्दीक़ सेहते मत्न

786
92

मैं ने अवराद व वज़ाइफ़ पर मुश्तमिल हर एक क़ुरआनी सूरत और हदीसे नबवी का मुताला किया और इसको ग़लतियों से पाक पाया।



मुहम्मद इक़्बाल नईमी

Research & Registration Officer Auqaf
Sind & K.M.C. Karachi.

بسم الله الرحمن الرحيم

ख़त्मे ख़्वाजगान

चिशती सिलसिले का बहुत अहम और बहुत ख़ास, बा बरकत और मुतबर्रक अ़मल है।

यह अ़मल मुक़द्दमात में कामयाबी के लिए, रोज़ी की तंगी दूर करने के लिए, बलाओं को हटाने के लिए और हर जाइज़ मुश्किल को आसान करने के लिए बेहतरीन है।

यह अ़मल अकेले भी पढ़ा जा सकता है और बहुत से लोगों के साथ में बेठ कर भी पढ़ा जा सकता है।

तरकीब

निहायत एह्तिमाम से जगह को पाक किया जाए, इतर और ख़ुशबू भी मोजूद हो, ख़ुशू, ख़ुज़ू के साथ अल्लाह की क़ुदरत पर भरोसा रखते हुए अ़मल शुरू किया जाए, तादाद जानने के लिए सौ बादाम बीच में रख लें उन पर गिन्ती करते रहें, फिर इस तरह शुरू करें, पहले एक बार अल्हम्दु शरीफ़ और तीन बार क़ुल-हुवल्लाह पढ़ कर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और उन की अवलाद पर और अवलियाए इज़ाम की रूहों को सवाब पहुँचाएँ।

सूरए फ़ातिहा	एक बार
सूरए अलम्-नशरह	एक बार
दुरूद शरीफ़	एक बार
क़ुल-हुवल्लाह	एक बार
दुरूद शरीफ़	एक बार

(1)	اَللّٰهُمَّ يَا مُجِيْبَ الدَّعَوَاتِ	सौ बार
(2)	اَللّٰهُمَّ يَا قَاضِيَ الْحَاجَاتِ	सौ बार
(3)	اَللّٰهُمَّ يَا كَافِيَ الْمُهِمَّاتِ	सौ बार
(4)	اَللّٰهُمَّ يَا دَافِعَ الْبَلِيَّاتِ	सौ बार
(5)	اَللّٰهُمَّ يَا رَافِعَ الدَّرَجَاتِ	सौ बार
(6)	اَللّٰهُمَّ يَا مُسَبِّبَ الْاَسْبَابِ	सौ बार
(7)	اَللّٰهُمَّ يَا شَافِعَ الْاَمْرَاضِ	सौ बार
(8)	اَللّٰهُمَّ يَا خَيْرَ الرَّازِقِيْنَ	सौ बार
(9)	اَللّٰهُمَّ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ	सौ बार
(10)	اَللّٰهُمَّ اٰمِيْنَ ؕ	सौ बार

फिर एक बार सूरए फ़ातिहा, 3 बार क़ुल शरीफ़ पढ़ कर फ़ातिहा पढ़ें और उसका सवाब हुज़ूर नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रूह को पहुँचा कर हज़रत सय्यिदिना गौसे पाक (रह०) की रूह को पहुँचा कर हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती (रह०) की रूह को पहुँचाएँ और दुआ माँगें। अल्लाह क़बूल फ़रमाए। आमीन

हफ़्ता	لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ ۝
इत्वार	لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ الْمُبِیْنُ
पीर	لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ عَزِیْزًا جَلِیْلًا یَا عَزِیْزُ یَا جَلِیْلُ
मंगल	سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْمِ
बुध	لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ خَالِصًا مُّخْلِصًا
जुमेरात	لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَیْءٍ وَّهُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ
जुमा	اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدِ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ وَعَلٰٓی اٰلِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ ؕ

(दूसरा नुस्ख़ा) इसे इस्तेमाल करने से नमाज़ न पढ़ने की बीमारी जल्द दूर हो जाती है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الْعَظِیْمَ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَیْهِ مِنْ جَمِیْعِ مَا كَرِهَ اللّٰهُ قَوْلًا وَّفِعْلًا وَّحَاضِرًا وَّنَاظِرًا اَوْ ضَمِیْرًا ؕ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ وَاَتُوْبُ اِلَیْهِ وَمَنْ یَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ غَفَّارُ الذُّنُوْبِ سَتَّارُ الْعُیُوْبِ مُقَلِّبُ الْقُلُوْبِ ! كَشَّافُ الْكُرُوْبِ ! اَتُوْبُ اِلَیْكَ تَوْبَةَ عَبْدٍ ظَالِمٍ لَّا یَمْلِكُ لِنَفْسِهٖ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا وَّلَا مَوْتًا وَّلَا حَیٰوةً وَّلَا نُشُوْرًا ؕ اَلتَّوْفِیْقُ مِنَ اللّٰهِ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ عَلَی التَّقْصِیْرِ سُبْحَانَكَ مَا عَبَدْنَاكَ حَقَّ عِبَادَتِكَ ؕ

दिनों के नाम	कम से कम सौ सौ बार पढ़ें
हफ़्ता	يَا هُوَ يَا اَللّٰهُ يَا خُدَا
इत्वार	يَا رَحْمٰنُ يَا رَحِيْمُ
पीर	يَا وَاحِدُ يَا اَحَدُ
मंगल	يَا صَمَدُ يَا لَطِيْفُ
बुध	يَا حَیُّ يَا قَيُّوْمُ
जुमेरात	يَا حَنَّانُ يَا مَنَّانُ
जुमा	يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

पहले ग्यारह बार दुरूद शरीफ़ पढ़ें

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

يَا مُفَتِّحَ الْاَبْوَابِ وَيَا مُسَبِّبَ الْاَسْبَابِ

और ऐ सबब पैदा करने वाले असबाब के, ऐ खोलने वाले दरवाज़ों के

وَيَا مُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ وَ الْاَبْصَارِ

और ऐ फेरने वाले दिलों के और निगाहों के

وَيَا غِيَاثَ الْمُسْتَغِيْثِيْنَ

और ऐ फरयाद सुनने वाले फरयाद करने वालों के

وَيَا دَلِيْلَ الْمُتَحَيِّرِيْنَ وَيَا مُفَرِّجَ الْمَحْزُوْنِيْنَ

और ऐ खुशी देने वाले मुसीबत के मारों को और ऐ रास्ता बताने वाले भटके हुओं के

اَغِثْنِيْ اَغِثْنِيْ اَغِثْنِيْ

मेरी फरयाद सुन ले! मेरी फ़रयाद सुन ले! मेरी फ़रयाद सुन ले!

تَوَكَّلْتُ عَلَيْكَ يَا رَبِّيْ وَفَوَّضْتُ اِلَيْكَ اَمْرِيْ

भरोसा किया मैंने तुझ पर ऐ मेरे पालनहार और सौंप दिया मैंने तुझको अपना काम

يَا رَبُّ يَا رَبُّ يَا رَبُّ

ऐ परवरदिगार! ऐ परवरदिगार! ऐ परवरदिगार!

يَا اَللّٰهُ

ऐ अल्लाह!

يَا بَاسِطُ يَا رَزَّاقُ يَا فَتَّاحُ يَا كَرِيْمُ

ऐ सखी! ऐ रहमत के दरवाज़े खोलने वाले! ऐ रोज़ी देने वाले! ऐ खुशी देने वाले!

तमाम परेशानियों के लिए कीमया है।

कोई मुनासिब वक़्त मुक़र्रर करके हर दिन 21 बार पढ़ें।

अशआरे दुआइय्या

करम मांगती हूं रहम मांगती हूं
इलाही मैं तुझसे दुआ मांगती हूं
अता कर तू शाने रहीमी का सदक़ा
दिलादे इलाही करीमी का सदक़ा

न मांगूंगी तुझसे तो मांगूंगी किससे
मैं तेरी हूं तुझसे दुआ मांगती हूं
करम मांगती हूं रहम मांगती हूं
इलाही मैं तुझसे दुआ मांगती हूं

इलाही तुझे वास्ता पंजतन का
वह शादाब गुन्चा दिलों के चमन का
इलाही तुझे वास्ता मक़बूल रब का
उन ही के सदक़े करम मांगती हूं

तू दामन हमारा मुरादों से भर दे
करम की नज़र से दुआ मांगती हूं
जो मुफ़लिस हैं उनको दौलत अता कर
जो बीमार हैं उनको सेहत अता कर

करम मांगती हूं रहम मांगती हूं
इलाही मैं तुझसे दुआ मांगती हूं
ग़रीबों पर रहम कर या इलाही
मरीज़ों की ख़ातिर दुआ मांगती हूं

इलाही हम सब को मसरूर रखना
बलाओं से हमको सदा दूर रखना
मुसीबत में सबरो रज़ा मांगती हूं
हूं रहमत की तालिब दुआ मांगती हूं

परेशानियां हमको घेरे हुए हैं
परेशानियों की ख़ातिर दुआ मांगती हूं
करम मांगती हूं रहम मांगती हूं
इलाही मैं तुझसे दुआ मांगती हूं

हुआ है न मायूस तेरा सवाली
फिरा है न कोई तेरे दर से ख़ाली
हम सब जमा हैं यहां तेरी ख़ातिर
मैं सब की तरफ़ से दुआ मांगती हूं

बहक़्क़े अली व बहक़्क़े पैग़म्बर
बहक़्क़े बतूल और शब्बीरो शब्बर
क़सम चौदह मासूम की देके यारब
करम की नज़र से दुआ मांगती हूं

करम मांगती हूं रहम मांगती हूं
इलाही मैं तुझसे दुआ मांगती हूं

जब कभी घबराके मैंने दुआ की
ख़्वाब में सरकार ने मुझ से कहा

काम बिगड़े तेरे सब बन जायेंगे
तेरे सारे मुद्दआ मिल जायेंगे

अब ख़ुदावन्दा है तेरा पासबां
ले लिया है उसने तेरा इम्तहां

इस क़दर मायूस क्यों होता है तू
मुझ को क्या इस क़दर रोता है तू

मैं यह बोला ए मेरे [illegible] जनाब
मेरी [illegible] का [illegible] है [illegible]

मुद्दआ सारा उम्र में [illegible] नहीं
अब [illegible] में आ गई है अदालत

यूं तो दुनिया जिसने दोज़ख़ है [illegible]
बख़्शा दे [illegible] मेरे सारे अब क़ुसूर

पढ़ा करो नमाज़ राहे निजात है

एक रोज़ मोमिनो! तुम्हें मरना ज़रूर है
पढ़ते रहो नमाज़ यह क़ौले हुज़ूर है

पढ़ते रहो नमाज़ तो चेहरे पे नूर है
पढ़ते नहीं नमाज़ तो अपना क़ुसूर है

अगर किया तो आप सज़ा ज़रूर पाओगे
रोज़े न नमाज़ी दोज़ख़ में जाओगे

जिस रोज़ के तख़्त पे बैठेगा किब्रिया
उस वक़्त क्या कहोगे जब आयेगा ख़्याल

शर्मिन्दा होगे उस घड़ी सर को झुकाओगे
जन्नत तो क्या मिलेगी जहन्नम में जाओगे

तौबा करो ख़ुदारा नमाज़ें पढ़ा करो
सज्दा फ़र्ज़ में [illegible] [illegible]

मस्जिद ख़ुदा का घर है इबादत से काम है
दुनिया का काम करना तो मुतलक़ हराम है

पढ़ते हैं नमाज़ जो जमाअत में सर नगर
तैयार कर रहे हैं वो जन्नत में अपना घर

फ़रमाए ख़ुदा ने उस शाहे [illegible] ने
मुस्लिम व बुख़ारी में लिखी है यह ख़बर

जो तर्क की नमाज़ तो वह नार हो गया
जिस ने पढ़ी नमाज़ तो वह पार हो गया

पढ़ते रहो नमाज़ तो यह बेहतर काम है
दीने रसूले पाक का उस में क़याम है

[illegible]
[illegible]